

प्राचीन हस्तलिखित षोडशियों का विवरण

[पहला खण्ड]

सम्पादक

डॉक्टर धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री

विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना

प्रकाशक
विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रथम संस्करण ; विद्वत्मास २०११, मन् १६५६ ई०

द्वितीय संस्करण २०१५, मन् १६५८ ई०

सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल्य

मुद्रक
ज्ञानपीठ प्राइवेट लिमिटेड,
पटना-४

सूची

वक्तव्य	क
दो शब्द	ग
अक्षरों का सक्षिप्त परिचय	झ
हस्तलिखित पोथिया का विवरण	१
प्राचीन हस्तलिखित संस्कृत-पोथिया का विवरण	१५१
परिशिष्ट—१ अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ	२०५
संस्कृत-अथ	२०६
परिशिष्ट—२ अथा की अनुनमणिका	२०७
अक्षरों की अनुनमणिका	२०६
संस्कृत अक्षर	२१०
परिशिष्ट—३ महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों का विवरण	२११
संस्कृत—महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के विवरण	२२१

श्री तातसगच्छीय ज्ञान मन्दिर, षडपुर

— १९९९ —

संकेत-विवरण

वि० सं०
 क्र० सं०
 ग्रं० सं०
 फ०
 ई०
 ना० प्र० स० का०
 खो० वि०
 र० का०
 लि० का०
 पृ० स०
 प्र० पृ० प०
 पु० क्र० सं० का०
 खो० वि० ग्रं०
 वि० रा० भा० प० १ ख०
 आ० शा० भ० ज० ग्रं०
 क० प्रा० ता० ग्र०
 ज० मि० भ० आ० सू०
 वि० रि० मो० मा० डि० कै० मि०

मी० सी० पार्ट
 मी० एम्० मी० ख०
 एच्० पी० एस्० ख०
 बी० एम्०
 मी० पी० बी०
 डिम्० कैट० एम्०

विक्रमी सवत्
 क्रम-संख्या
 ग्रन्थ-संख्या
 फसली मन्
 ईसवी सन्
 नागरी प्रचारिणी-मभा, काशी
 खोजवि-वरणिका
 रचनाकाल
 लिपिकाल और लिपिकाग
 पृष्ठ-संख्या
 प्रति-पृष्ठ पक्तियाँ
 पुस्तकालय क्रम-संख्या-काव्य
 खोज-विवरण-ग्रन्थ
 विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् १ खड
 आमेशान्त्र-भडार-जयपुर (जैन)-ग्रंथ-मूची
 कन्नडप्रान्तीय तालपत्रीय ग्रन्थ-सूची
 जैन-मिद्वान्त-भवन, आरा-सूची
 विहार निमर्च मोमायटी डिक्लिप्टिव कंटलॉग
 ऑफ मैन्क्रिप्ट्स
 कंटलोगम कंटलोगोगम क्रिप्ट्स भाग
 कलकत्ता-संस्कृत-कॉलेज-खण्ड
 हरप्रसादशास्त्री-खण्ड
 ब्रिटिश म्यूजियम
 सेंट्रल प्रोविन्स एण्ड वरार
 डिक्लिप्टिव कंटलॉग ऑफ संस्कृत मैन्क्रिप्ट्स
 गवर्मेण्ट ओरियण्टल मैन्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी,
 मद्रास

वक्तव्य

[द्वितीय संशोधित संवर्द्धित संस्करण]

परिपद् क प्राचिन हस्तालिखित प्रथमाथ विभाग द्वारा रूगहीत पुरानी पाथियों के विवरण का यह प्रथम खण्ड पहले पहल विक्रमाब्द २०११ में प्रकाशित हुआ था। यह नवीन संस्करण उभा का संशोधित और संवर्द्धित रूप है। इस संस्करण में पहले संस्करण में अंकित गुप्तुनी और बेंगला की पुरानी पाथियों के विवरण नहीं हैं। केवल संस्कृत और हिंदी की पाथियों के ही विवरण अलग अलग इसमें दिये गये ह।

पहले संस्करण से इसमें विशेषता यह है कि हिंदी की ३७ पुरानी पाथियों के नये विवरण प्रकाशित हैं। उन पुरानी पाथियों में से अधिकांश ऐसी ही हैं, जिनसे बिहार राज्य के अनक ज्ञात अज्ञात ऋषियों की रचनाएँ स्पष्ट हई हैं।

पहले संस्करण से दूसरी विशेषता इसमें यह है कि इसकी पृष्ठ-संख्या क्रमबद्ध है और इउक आरम्भ में प्रयुक्तारों का सात्वत परिचय दे दिया गया है तथा तान परिशिषों में विरनेषणमक तग से ज्ञानय विषयों के सम्बन्ध में सविस्त सूचनाएँ संकलित कर दी गई हैं।

स विवरण का दूसरा खण्ड भी प्रकाशित हो चुका है। इस प्रथम खण्ड में प्रथम संस्करण का प्रकाशन समित संख्या में ही हुआ था। साहित्यिक अनुसंधान में सलग विद्वानों ने उषका बहुत उपयोग समझकर अपनाया। फलस्वरूप उसका यह परिष्कृत संस्करण प्रकाशित किया गया है। आशा है कि इस संस्करण से साहित्यिक गवेषणा के कार्य में यथाचन सहायता मिलेगी।

इस संस्करण में सम्मिलित नई पाथियों जिन सज्जनों से प्राप्त हुई ह उनका हार्दिक धन्यवाद तत हुण हम आशा करते हैं कि वे भविष्य में इस प्रकार परिपद् के प्रथम-समूह काय में सहयोग करते रहेंगे।

महाशिवरानि शकाद् १८७६
फरवरी, १९५८ ई

शिवपूजन सहाय
(सचासक)

निवेदन

[प्रथम संस्करण]

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् की ओर से सम्मत् बिहार राज्य में दम्तीर्णित प्राचीन पौधियों और दुर्लभ मुद्रित पुस्तकों की गोज कराई जाती है। गोज का काम सर्वत्र भ्रमरा करके श्री रामनारायण शास्त्री करते हैं। यह काम परिषद् के मान्य सदस्य और बिहार-राज्य के शिक्षा विभाग के उपनिर्देशक डॉ० वसन्ध्र ब्रह्मचारी शास्त्री के नस्त्राजवान में होना है। श्री ब्रह्मचारीजी की देख-रेख में श्री रामनारायणजी सभी संगृहीत पौधियों का परिचयानमक विवरण तैयार करते हैं, जो डॉ० शास्त्री द्वारा सम्पादित होकर 'साहित्य में क्रमशः प्रकाशित होता रहता है। क्रमशः छपे हुए उन विवरण के कुछ अतिरिक्त पृष्ठ, प्रैमात्मिक 'साहित्य के प्रत्येक अक्षर में अलग रखा लिये जाने हैं। उन्हीं में से एक ही पौधियों का विवरण इस पुस्तिका में प्रकाशित किया जा रहा है। यह संग्रह केवल अनुसंधानकर्ता विद्वानों (रिसर्च-स्त्रालरों) की सुविधा के लिए, बहुत नीमित मर्यादा में प्रकाशित हुआ है। आशा है, विद्वज्जन इनसे लाभ उठावेंगे।

इन विवरण पुस्तिका की पृष्ठ-संख्या क्रमबद्ध नहीं है। किन्तु पौधियों का मर्यादा क्रम ठीक है। विवरण का दूसरा गड्ड क्रमबद्ध पृष्ठ-संख्या के साथ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायगा।

इस संग्रह में प्रकाशित एक सौ पुस्तकों के विवरणों में हिन्दी के अनिर्दिष्ट कुछ मरुतन, बंगला और गुरुमुखी पौधियों के भी विवरण हैं। जिन उदात्त मज्जनों की रूपा और महायना में परिषद् को दस्तलिखित प्राचीन पौधियाँ प्राप्त हुई हैं, उनके नाम और पते तो विवरण में दे ही दिये गये हैं, पर यहाँ हम परिषद् की ओर से उन सबको हार्दिक अन्यावाः देने हैं। विस्वास है कि परिषद् के प्रथम शोधक श्री रामनारायण शास्त्री बिहार-राज्य में जहाँ कहा जायेंगे, वहाँ महदय मज्जनों से, उनको मग्रहणीय प्रथों का दान अवश्य प्राप्त होगा। पौधियों देनेवाले महदय मज्जनों को यह स्मरण रखना चाहिए कि जहाँ-तहाँ बिल्ली पसी हुई पौधियों से साहित्यिक गवेषणा का काम सुविधा से नहीं हो सकता है। इसलिए बिहार-सरकार की महायता से परिषद्-पुस्तकालय में अलभ्य पौधियों का एक संग्रहालय बनाया गया है, जिनमें पौधियों देनेवाले मज्जनों भी पधार कर सुरक्षित रखी हुई पौधियों से लाभ उठा सकते हैं।

शिवपूजन सहाय
(परिषद्-मंत्री)

दो शब्द

[द्वितीय संस्करण]

तीन वर्ष पूर्व (म० २०११ वि० में) हमने परिषद्-समूहालय में संकलित एक सांख्यिकीय तालिका के अन्तर्गत 'साहित्य में प्रकाशित, विवरणात्मक लेखों की पुनर्मुद्रित (रिपिन्ट) प्रतियों की पुस्तकाकार प्रकाशित किया था । उसके इतना शीघ्र समाप्त हो जाना की उम्मीद नहीं थी । किन्तु अनुभवितरु सुखी सुविधों ने उसे इस प्रकार अपनाया कि आज हम उसका द्वितीय संस्करण प्रस्तुत कर रहे हैं ।

इस किन्हीं सुसंपादित और परिष्कृत संस्करण में हिंदी एवं संस्कृत भाषा की सम्मानित पाठियों के विवरण प्रथम तथा द्वितीय ही गये हैं, प्रथमों की संख्या भी वगैरह एक ही रखावन (१० हिंदी और ५१ संस्कृत) कर दी गई है । इस विवरण में पूर्व-संस्करण में आई हुई पाठियों के अनिर्दिष्ट हिंदी की संख्यावन (२१५ साहित्य २२५ और चाहे ६२२ ३५) अथ पाठियों के विवरण सम्मिलित कर लिये गये हैं । विवरण के तृतीय परिशिष्ट में मद्रास-संस्कृत-हस्त-लेखों के समय तथा अथ प्रकाशित नाम विवरणिकाओं में उनके उद्देश्य के उद्देश्य कर दिया गया है ।

इस समूह में ५१ प्रकाशकों (हिंदी—३४, संस्कृत—१७) के १५१ प्रथमों (१० हिंदी और ५१ संस्कृत) के विवरण हैं जिनमें चान्दमण्डी रचनाएँ हैं (हिंदी—१८ और संस्कृत—२२) जिनके प्रकाशक साहित्यिक-जगत् के लिए अपेक्षित एवं अज्ञान हैं (प्रथम-परिशिष्ट में देखिए) ।

निम्नलिखित तालिका में विद्वान् शान्दी के अनुसार प्रत्येक शान्दी में रचित तथा लिपिबद्ध प्रथमों की संख्या का निर्देश किया गया है । इनके अनिर्दिष्ट प्रथमों में रचना काल का उद्देश्य नहीं हुआ है ।

विद्वान् शान्दी के अनुसार प्रथमों के रचना काल और लिपि-काल

शान्दी	इस शान्दी में रचित पाठियों की संख्या	इस शान्दी में लिपिबद्ध पाठियों की संख्या
सप्तदशी	१	५
अष्टदशी	५	५
नवदशी	१	५
दशमदशी	२	२५
बीसवीं	१	४८

* १२ की संख्या जिनकी की संख्या है, इनमें ५४ पाठियों सम्मिलित हैं ।

उस संस्करण में अप्रकाशित पोथियों की संख्या भी बढ़ि हुई है, जिनके फलस्वरूप निम्नलिखित विहारी एवं अन्य अज्ञात ग्रन्थकारों की विशेष चर्चा हुई है—

अवतार मिश्र, परमानन्द, भुवान्स्वामी, कुशानमिह और हरियान ।

उनके संबंध में संक्षिप्त परिचयान्मक टिप्पणी ग्रन्थ-विवरण के प्रारंभ में दे दी गई है । उनमें गूरजदान, लालचदान, पदुमनदान, कुंजनदान, शिवनाथदान, कृष्ण (कारण) दास, के ग्रन्थों पर परिपत्र के इस विभाग का खोज कार्य जारी है । अंत गूरजदास और उनकी कृति 'रामजन्म' का पाठन हो रहा है । 'मृत कवि दरिया एक अनुशीलन' के दूसरे सट—'ग्रिया ग्रन्थावली' के लिए नूत दरिया के ग्रन्थों का पाठान्तर-विश्लेषण भी हो चुका है । प्रतिवर्ष एक हस्तलिखित ग्रंथ अपने मूल रूप में समीक्षान्मक अध्ययन के साथ प्रकाशित करने का विचार है ।

हम उन महाशुभावों के कृतज्ञ हैं, जिन्होंने परिपत्र-ग्रहालय के लिए उदात्तापूर्वक हस्तलिखित पोथियों का दान किया है । ग्रन्थ-विवरण-प्रयोग में उनके दान का उल्लेख कर दिया गया है । विशेष रूप से हम श्री नाथु चतुरीदाम्जी तथा श्री प० गणेश चौधे के अनुगृहीत हैं, जिन्होंने नूत दरिया के ग्रंथों तथा महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित पोथियों का दान कर परिपत्र-ग्रहालय की श्री वृद्धि की है ।

वसंत-पंचमी
२०१४ वि०

धर्मेन्द्रब्रह्मचारी शास्त्री
अध्यक्ष,
प्राचीन हस्तलिखित-ग्रन्थ-अनुसंधान-विभाग

दो शब्द

(प्रथम सस्करण)

भारत के प्राचीनतम साहित्य का मुख्यतः दो व्यापक सनाएँ दी गई हैं—श्रुति और स्मृति। 'श्रुति' का आशय उस मूल साहित्य से है, जिसे मानव जाति ने प्रथम प्रथम पाया। इस साहित्य का मुख्य स्रोत 'श्रुति अथवा श्रवण' था और प्राचीन गुरु-परम्परा के अभाव में इसे ईश्वरीय वाणी मानकर परम समाधान का पात्र बनाया गया। किन्तु वह साहित्य जो इस मूल श्रुति-साहित्य के आधार पर निर्मित हुआ और जिसे गुरु-परम्परा से लागू स्मृति (स्मरण) द्वारा रचित करते रहे वह 'स्मृति' के नाम से प्रचलित हुआ। इस प्रसंग में यह कहना कठिन है कि श्रुति और स्मृति दोनों प्रकार का माखिक साहित्य प्रथम प्रथम लिपिबद्ध कब हुआ। किन्तु इतना तो अशुद्धि रूप से माना जायगा कि पाणिनि के व्याकरण की रचना के समय तक लिपिकला का आविष्कार हो चुका था।

प्रथम प्रथम जो लिपिबद्ध साहित्य हमें प्राप्त है वह मुख्यतः शिलालेखों, मुद्राओं, अथवा ऐतिहासिक महारव रखनेवाली इस प्रकार की अयाय वस्तुओं पर अंकित मिलता है। जब बौद्धों और जैनो ने अपने विपुल अपभ्रंश, पालि तथा प्राकृत साहित्य का निर्माण किया और उनका अधिकारिक स्वरूप करना चाहा तब प्रयोगों का भूतपत्र अथवा तालपत्र पर लिखकर सुरक्षित करने की प्रथा चलाई। प्राचीन काल में जितने बौद्धों के विहार और जैनियों के मंदिर थे, उनमें सपद्ध हस्तलिखित ग्रंथों का सप्रहालय रहा करता था। जैन धर्मावलम्बी इन सप्रहालयों को शास्त्र भण्डार, सरस्वती भण्डार, भारती भाण्डागार अथवा सत्तेप में केवल भण्डार' कहा करते थे। आज भी राजस्थान तथा अजमेर स्थित अनेकानेक मंदिरों में जैन ग्रंथों की विपुल निधि सुरक्षित है। काश्मीर काशी, मिथिला, नदिया (बंगाल) आदि कनिषथ प्रदेशों अथवा स्थानों में वैदिक अथवा हिन्दू धर्म से संबद्ध स्मृत-भाषा का प्रचुर साहित्य हस्तलिखित रूप में संचित है। बौद्धों के भा. तच्छिला विक्रमशिला और नालन्दा विहारों तथा विश्वावद्यालयों में बटुमन्थक ग्रंथ सुरक्षित थे जिनमें से अनेक ग्रंथ इतरधर्मियों द्वारा भस्मसात् भी कर दिये गये।

वर्तमान युग में जब मुद्रण के आविष्कार ने ज्ञान की सामग्री का सप्रभुलभ बनाया, तब विद्वानों का ध्यान इस ओर गया कि हस्तलिखित ग्रंथों की अमूल्य निधि का प्रकाश में लाया जाय। फलतः इस प्रकार के ग्रंथों की खोज और उनके नवध में सज्जित सूचनाओं के प्रकाशन का कार्य सन् १८८८ ईसवी से आरंभ हुआ। पहले पहल यह कार्य मुख्यतः स्मृत ग्रंथों की खोज तक सीमित था। डॉ. कीलहान, वूलर पीगमन बरनल तथा भण्डारकर आदि विद्वानों ने पश्चिमोत्तरीक साम्राज्य एवं प्रादेशिक सरकारों के साहाय्य से स्मृत ग्रंथों का खोज के आधार पर, सर्पह प्रकाशित किये और उन सबों का मिलाकर आर्कैव सांख्य न एव बृहत् परिचयानक मुद्रण—'कैटेलोगस कैटेलोगरु' के नाम से अनुमथितु नगर क सम्मुख प्रस्तुत किया। स्मृत ग्रंथों तथा जैनधर्मग्रन्थों की खोज के लिये क बटुमन्थ परिचयानक तकलन नियमान्त है।

हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों के मसूह तथा उनके संबंध में सूचनाओं के प्रकाशन का व्यवस्थित रूप से कार्य करने का प्रयत्न सर्वप्रथम काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने किया और सन १९०० ईसवी में श्री वाघू श्यामसुन्दरदास के तत्त्वावधान में खोज-विभाग की स्थापना हुई। सभा ने अबतक १६ रिपोर्टें तैयार की हैं, जिनमें केवल १२ छप सनी हैं और शेष अभी लाल फीते के जटा-जूट में बिलीन हैं। उन रिपोर्टों का प्रकाशन सरकार के आर्थिक अनुदान पर ही अत्यल्पित रहा है। अतः अप्रकाशित रिपोर्टों के उद्धार के लिए कर्मगणवतरण होगा, यह अनिश्चित है। हिन्दी-साहित्य का प्रत्येक विद्यार्थी यह स्वीकार करेगा कि हमारे साहित्य और संस्कृति के नवीन इतिहास तथा नवीन चेतना के निर्माण में हस्तलिखित ग्रंथों की खोज ने बहुत बड़ी देन दी है।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के तत्त्वावधान में हस्तलिखित पोथियों के मसूह और अनुसंधान का कार्य १९५१ ईसवी के फरवरी मास में प्रारंभ हुआ है। तीन वर्ष के अल्पकालिक अनुसंधान के फलस्वरूप अबतक ७७७ हस्तलिखित ग्रंथ सप्रहालय में संकलित हो चुके हैं। प्रान्त के विभिन्न ग्रंथालयों में संगृहीत १५० ग्रंथों का विवरण-पत्र भी तैयार किया जा चुका है। संकलित ग्रंथों का संक्षिप्त विवरण बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के सम्मिलित मुखपत्र 'साहित्य' में क्रमशः प्रकाशित होता रहा है। उन प्रकाशित विवरणों की पुनर्मुद्रित प्रतियाँ का कुछ अंश पुस्तकाकार प्रस्तुत किया जा रहा है।

उस मसूह में १०० हस्तलिखित ग्रंथों के विवरण हैं, जिनमें ४२ हिन्दी, १ गुजराती, ५ बंगाली और १ तालपत्र पर लिखित मिथिलाक्षर-ग्रंथ हैं। जेप ५१ नागरी लिपि में लिखित संस्कृत ग्रंथ हैं। हमें आशा है कि अनुशीलन-शील सुधी-समाज के लिए यह नक्षिप्त विवरण अनुसंधान-कार्य में मार्ग-निर्देश का कार्य करेगा। नक्षिप्त विवरणों को तैयार करते समय यह ध्यान रखा गया है कि हस्तलिखित ग्रंथों के उद्धार अपने मौलिक अविकल रूप में आवे।

हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों में अनेक पोथियाँ ऐसी हैं जो अबतक अप्रकाशित हैं और उनपर यदि सम्यक् अनुसंधान किया जाय तो हिन्दी तथा बिहार के साहित्यिक इतिहास पर अभिनव प्रकाश पड़ेगा। अबतक, परिषद् में तथा राज्य के विभिन्न पुस्तकालयों में संगृहीत पोथियों से पचीस ऐसे कवियों, लेखकों का पता चला है, जिनके संबंध में अनुसंधान-अनुशीलन की नितात आवश्यकता है। उन पचीस में स्यारह ऐसे हैं, जिनके ग्रंथों की नक्षिप्त सूचनाएं प्रस्तुत मसूह में आई हैं। ये निम्नलिखित हैं—

१. श्रीसंतसूरजदास—इनके द्वारा लिखित 'रामजन्म'-नामक ग्रंथ मिला है। रचना से प्रतीत होता है कि ये बिहार-प्रांत के ही संत थे। 'रामजन्म' पर एक ममालोचनात्मक अध्ययन डा० धर्मन्द्रब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा 'साहित्य' में प्रकाशित हो रहा है।

२. श्री लालचदास—ये यथासंभव गोस्वामी तुलसीदासजी से भी पूर्व आविर्भूत हुए थे और इन्होंने कृष्ण-संबंधी प्रबंध-काव्य की रचना की थी। इनका दोहों और चौपाइयों में लिखित श्रीमद्भागवत प्राप्त हुआ है। परिषद्-सप्रहालय में इनके तीन ग्रंथ हैं। इस विवरण में सबसे पहला ग्रंथ इन्हीं का है। इनके दो ग्रंथ भी मन्मूलाल पुस्तकालय, गया में सुरक्षित हैं। नागरी-प्रचारिणी सभा की खोज-रिपोर्ट, मिश्रवधु-विनोद तथा शिवसिंह-सरोज में भी इनकी चर्चा की गई है। श्री लालचदासजी का जन्म-स्थान चरेली (उत्तर प्रदेश) था। इनकी साहित्य-भूमि बिहार थी। इन्होंने विगोपत; दरभंगा जिले के रोसवा के ग्रामपास समय-यापन किया।

३ श्री पदुमनदास—य रामगं राज्य के आश्रित कवि थे। इन्होंने हितोपदेश का हिंदी पद्यनुवाद किया था जो इस विवरण में है। इनके द्वारा लिखित दो और प्रथम मन्तूनाल पुस्तकालय, गया में हैं। इनकी रचना में रामगं-राज्य की मजिप्त बशाबली भी दी हुई है।

४ श्री शिवनाथदास—दरिया-पथ के एक साधु। इन्होंने इसी मत से सम्बंधित एक मौलिक प्रथम की रचना की है। ये प्रसिद्ध दरियापथी मठ, सेलपा (सारन जिला) में रहते थे।

५ श्री कुंजनदास—शिवपुराण के आधार पर लिखित दाह और चौपाइयों में 'शिवपुराणरत्न', इनकी मौलिक रचना है। ये शाहाबाद जिले के निवासी थे। इनकी रचना से ज्ञान होता है कि इनके गिण्य पूर्व बिहार के मुंगेर और भागलपुर जिलों में अधिक थे।

६ श्री कृष्णकारखदास—बिहार प्रान्त के दरभंगा जिले के रोसड़ा के निवासी एक साधु। ये समस्त कबीर के समकालीन साधु थे। रोसड़ा में इनका एक मठ भी है। कबीर पद्यों में इनका एक पृथक् शाखा मानी जाती है। इनकी तीन रचनाएँ प्राप्त हुई हैं। इनके द्वारा लिखित अन्य अनेक हस्तलिखित प्रथम रोसड़ा-मठ में सुरक्षित हैं।

७ श्री मामदास—इनका निवास स्थान मिजापुर जिले के अकौल नामक ग्राम में था। यह ग्राम पूर्वीय रेलपथ के विन्ध्याचल स्टेशन से एक स्टेशन आगे, अष्टभुजा के करीब, विरोहा स्टेशन के समीप है। इनके द्वारा लिखित 'श्री रामायण विशालकाय प्रथम' है। यह प्रथम लगभग २० वर्ष प्राचीन है। इनकी रचना पर अवधी का प्रभाव अधिक है। यह प्रथम और प्रथमकार हिंदी-जगत् के लिए नहीं है।

८ श्री श्रीमट्ट—इनकी रचना 'युगलस्तोत्र' है। इसमें इन्होंने प्रथमपात्र प्रभावित भाषा में राधा और कृष्ण के संबंध में बड़ा ही रोचक वर्णन किया है। इनकी अन्य रचनाएँ भी मन्तूनाल पुस्तकालय गया में हैं। अपनी रचना में इन्होंने विभिन्न रागों के पद गाये हैं। इनके संबंध की सूचना काशी-नागरी प्रचारिणी की खोज रिपोर्ट में भी है। इनके प्रयोग में इनके निवास-स्थान आदि के संबंध में कोई भी चर्चा नहीं है।

९ श्री परमानन्ददास—इन्होंने अपने प्रथम 'कबीर भातु प्रकाश' में अपना कोई भाषापरिचय संकेत नहीं दिया है। इनके प्रथम से इनका विशाल अभ्ययन तथा सभी धार्मिक संप्रदायों के मन्तव्यों से विस्तृत परिचय ज्ञात होता है।

१० श्री नगनारायण सिंह—य सारन जिले के पटेहा नामक ग्राम के निवासी साहित्यिक थे। यद्यपि ये बहुत प्राचीन कवि नहीं हैं तथापि 'पृथक् बतमानकाल' के माहिरियों में इनकी गणना होगी। इन्होंने हिंदी मस्कृत और फारसी में प्रथम रचना की है। विवेक इस विवरण में देगा।

११ श्री अग्रधकिशोर सहाय—य बिहार प्रान्त के पटना जिले के बालनगंज के आसपास कचनपुर ग्रामवासी थे। इन्होंने बितौर की लड़ाई और राजपूत इतिहास से सम्बंधित दो-दो रचना की थी। इनकी रचना बितौरद्वार का प्रवाद बड़ा ही सुंदर है।

इन ग्यारह कवियों के अनिर्दिष्ट जिन अज्ञात साहित्य संप्रदायों का पता चला है। इनके विवरण पृथक् सप्त में सम्मिलित किया जायेगा। बिहार के चंपारन जिले में प्रचलित सरभंग मठों की कवियों भी सगरीत होकर परिषद् सभालय में आ गई हैं। इन कवियों का सांस्कृतिक

साहित्यिक अथ यथन यथाममय प्रथाकार प्रकाशित क्रिया जायगा। परिपद् न यह भी निश्चय किया है कि क्रमशः प्रतिवर्ष गूलप्रथ भी सुट्टिन तथा प्रकाशित क्रिये जायं।

विवरण प्रस्तुत करते समय यह ध्यान रखा गया है कि उद्धरण आदि उसी रूप में रम्ब जाय, जिनमें वे गूल पोथी में हैं। फलन श, प, स, अथवा ह्रस्व, दीर्घ आदि को अविकल रूप से उतार दिया गया है और उनका शुद्ध रूप नहीं दिया गया है। व और व के संबंध में यह जान लेना चाहिए कि प्रायः पाठियों में व वना ही लिखा गया है जैसा नागरी का व और व को नागरी व के नीचे बिंदु (व) देकर संकेतित किया गया है। किंतु उद्धरण देने समय छापे की सुविधा को ध्यान में रखकर उचरित व और व को क्रमशः व और व न लिखकर व और व ही लिखा गया है।

एक बात और। हस्तलिखित पोथियों में प्रायः छद् के एक चरण को उकाई मानकर उस प्रकार लिखा गया है, जिनमें शब्द एक-दूसरे में पृथक् नहीं मानस पडते। या तो समग्र चरण या पोथी की समग्र पंक्ति के ऊपर एक ही लकीर दे दी गई है, अथवा जहाँ एक लकीर नहीं है, वहाँ उन पंक्ति अथवा चरण का प्रत्येक अक्षर समान दूरी पर अलग-अलग, किंतु एक-दूसरे से सटाकर, लिखा हुआ है।

आधुनिक लेखों और पुस्तकों के पढ़नेवालों को हस्तलिखित पोथियों के पढ़ने में इस कारण कुछ कठिनाई अथवा शंका होगी, क्योंकि पढ़ते समय अपने मन से एक में मिने हुए शब्दों को अलग-अलग करके पढ़ना और समझना होगा।

नागरी के य का उच्चारण प्रायः ज के समान होता है, किंतु किमी अक्षर के साथ संयुक्त होने पर य के समान होता है। जहाँ संयुक्त न होंत हुए भी य का उच्चारण अंत स्व य के समान शब्द है, वहाँ प्रायः उसके नीचे बिंदु (य) दे दिया गया है। सर्वन्य प का उच्चारण प्रायः ख के समान माना गया है और उर्मा कारण दुष (दुष), शापा (शापा) और वपानि (वपानि) आदि प्रयोग किये गये हैं। अर्थात् के लिपिकार अन्य प्रकार की भी बहुत-सी अशुद्धियाँ करते थे, जिनका परिचय मूल उद्धरणों से पाठकों को मिल जायगा। पोथियों जहाँ-जहाँ से संगृहीत हुई हैं, उन स्थानों अथवा पुस्तकालयों के नाम विवरण के साथ ही दे किये गये हैं।

हम इस सग्रह को व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक नहीं बना सके हे क्योंकि यह रिप्रिन्टों का संकलन-साध है और प्रथम भी प्रथम है। किंतु हमें आशा है कि अगले संग्रहों को हम पूर्वनिर्धारित योजना के अनुसार साहित्यिक-जगत् को भेंट कर सकेंगे।

इस सग्रह को तैयार करने तथा नामग्री सुट्टान में हमारे शोषकर्ता श्री रामनारायण शास्त्री ने जिस तत्परता तथा लगन से कार्य किया है, वह अभिनन्दनीय है।

श्रीमहावीर-जयंती,
त्रैलोक्य १३, सं० २०११ वि०



धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री
अ वक्त,
प्राचीन हस्तलिखित-ग्रंथ-शोध-विभाग
विहार-राष्ट्रभाषा-परिपद्

ग्रथकारों का मञ्चित परिचय

[प्रथमों के नाम के शान्त (अकेले) कष्टकात्तगत स्थाना विवरणका में सम्मन्वि प्रथो को प्रथम-सम्पारों हैं ।]

१—अथनाम मित्र (६१) नाममन्त्र के रचयिता चपारम तिला (बरकरिया प्रम)-निवासी रानाकाल १६९४ वि ।

२—अथधरिशीर वना (-) पण्डितों के बचनपुर प्राम निवासी म० १६९४ वि में वर्तमान 'साहस्य वाचस्पति' उपाधि से भूषित हिन्दी और संस्कृत के प्रख्यातक ।

३—अथानन्द त्रि (५८) के कनार के रचयिता । इनकी सुख्यत —काङ्गार काकमजरी, काकाजलम और आउनमजरी—चार रचनाओं का उल्लेख मिलता है ।

४—अथगदास (२३ क २७ ३० ८० ८३ ८४) त्रिगुण-वाच्यधारा के प्रतिष्ठित मूलकवि का पण्य के प्रथमक जन्म १४४४ वि निर्वाण-म० १४०४ वि० । रामानन्द के शिष्य और धर्मदास के गुण । इस विवरण में इनके निम्नांकित प्रथम हैं—

१—दनुमानपथ—लि का०—१०७८ उल्लेखितक राज में प्राप्त कपीर महिष में यह प्रथम नवपथ है ।

२—राज्य—यह रचना नागरी चांगिणी समा (काशी) का भी राज में मिल चुका है ।^१

३—शब्दार्थी—सुहृद् प्रथम के समान ।

४—काक—कबीर का प्रथम दशमक प्रथम । इस विवरण प्रथम की पण्डुलिपि १८४० (= १७४८ वि०) का है ।

५—नागरी प्रथम—मूलमहमा विषयक कपीर का यह प्रथम समस्त काकश्रित है । नागरी प्रथमरानी समा (कशी) का इस प्रथम की एक ही गाज में मिली है ।^२

६—रामानन्द—यह प्रथम कपीर पथ की दशम-पथना का काकश्रित विवरण है । समस्त काकाय काकश्रित । नागरी प्रथमरानी समा (कशी) का इसे का समानग पण्डितर रचयिता प्रथम हुआ है ।^३

१ यह पण्डित नागरी प्रथम रानी के काकश्रित का मूल है । इस प्रथम में यह पथ काकश्रित प्रथम प्रथम के मूल है ।

२ — ६ वि. नागरी प्रथम का काकश्रित विवरण पण्डित काकश्रित का मूल है ।

३ — ६ वि. नागरी प्रथम का काकश्रित विवरण पण्डित काकश्रित का मूल है ।

४ — ६ वि. नागरी प्रथम का काकश्रित विवरण पण्डित काकश्रित का मूल है ।

५—कु जनदास—(२१) 'शिवपुराणरत्न' के प्रयकार, निहार-राज्यान्तर्गत शाहानाद जिने के 'पंवार' ग्राम-निवासी, रचना-काल अज्ञात ।

६—कृपाराम—(८५) सं० १८५५ वि० के लगभग वर्तमान, रामानुज-संप्रदाय के भक्तकवि । ना० प्र० न०, का० को भी यह ग्रंथ—'भागवत-भाषा'—खोज में मिला है । 'समयबोध' के ग्रंथकार इनसे भिन्न हैं ।

७—कृष्ण (कारख) दास (३८)—'त्रिचारगुणावली' के प्रयकार ; निहार-राज्यान्तर्गत दरभंगा जिने के रोसदा-वासी । कहा जाता है कि ये संभवतः कबीर साहब के समकालीन थे । कबीर-ग्रंथ की प्रचलित शाखाओं में 'वचन-वर्गीय' शाखा के संभवतः प्रवर्तक ।

८—केशवदास (७३, ८६, ९७, ९८, १००,)—श्रीवृद्धा-नरंज मधुकरग्राह और उनके पुत्र राजकुमार इन्द्रजीत सिंह के आश्रित, श्रीवृद्धा (बुन्देलखंड)-निवासी सनातन ब्राह्मण । सुप्रसिद्ध प्रयकार ।

इनके निम्नलिखित हस्तलेख इस ग्रंथ में हैं—

१—विज्ञानगीता—दो हस्तलेख ।

२—रसिकप्रिया—दो हस्तलेख ।

३—राम-चन्द्रिका—एक हस्तलेख ; समय—सं० १७६३ वि० = (१७३६ ई०) । इनकी रचनाएँ नागरी-प्रचारिणी नभा (काशी) को खोज में मिली हैं । कवि का अनुमित समय सन् १६०० ई० है ।

९—गुरु नानक साहब (१५)—'सतनाम विहंगम' के प्रयकार, निख्त-ग्रंथ के प्रसिद्ध संस्थापक, तिलावरी (पंजाब)-निवासी, जाति के वेदी खत्री ; सं० १५२६-१५६६ तक वर्तमान, नामदेव छीरी के समकालीन^२, वर्णानामक तथा उपदेश-शैली में महत्त्वपूर्ण रचना । इनके शिष्यों में इन प्रवचनों का विशेष प्रचार है । निखतमत के प्रासद्ध ग्रंथ 'जगुजी साहब' तथा 'सुखमणि साहब' के आचार पर ही इस ग्रंथ की रचना हुई है । नागरी-प्रचारिणी नभा, काशी को इनकी अन्य तीन—सुखमनी, अष्टांग-योग, नानकजी की साखी और गुरुनानक-वचन—पांडु-लिपियों खोज में मिली हैं । विस्तार के लिए दे०—खोज-विवरणिका, १६०२, प्र०-सं० २१८, १६०६-१६०८, प्र०-सं० १६६, १६०६—१६११, प्र०-सं० २०५, २०७ ;

१. दे०—ना० प्र० सं०, काशी की खोजविवरणिका—	१६०३—२५ ई० का	प्र०-सं० २०७
"	१६०६—०८ ई० "	" २३३
"	१६०६—३१ ई० "	" १६२
"	१६३०—३५ ई० "	" ११३
"	१६०६—११ ई० "	" २०५

१९२३ २५, प्र०-स० २८३ १९२६ २८, प्र -स० ३१५
 १९२६-३१, प्र०-स० २३६ १९३२-४, प्र०-स० १५१।

१०—गोस्वामी तुलसीदास (२३, ४ ५ १० ३६, ४० ४१ ४२, ६६ ७४, ७५, ८१ ६६)—हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ सतकाव । निम्नलिखित रचनाओं की कुल सतरह प्रतियाँ मिली हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है—

क्रम-संख्या	प्रथम नाम	प्रतियाँ	निपिठाल
१	रामचरितमानस	१५	१८५८ वि० १९२२ वि , १८४७ वि०, १८८८ वि०, १८५६ वि०, १८६४ वि० १८३६ वि , १६०६ वि० ।
२	विनय पत्रिका	१	१८ ६ वि० ।
३	छापय रामायण	१	X

११—चरनदास (६६)—चरणदासी-नरदास के प्रवर्तक प्रसिद्ध सन देहरा (अलवर राम स्थान)-निवासी घूसर बनियों सुनदेन के शिष्य और सहजों का क गुरु जन्म—१७६० वि मृत्यु—१८३८ वि , प्रथम नाम रणजित । काव्य के अठारह प्रथम नागरी प्रचारिणी सभा (कारी) को खान में मिले हैं ।^६

१२—आमदास (२८)—‘शारामार्गव के प्रथम अकाङ्क्षी ग्राम, विष्णुचल (मिनापुर)-निवासी, जाति के ब्राह्मण साधु स० १८१८ वि के लगभग वर्तमान । नागरी प्रचारिणी सभा (कारी) को इनके प्रथम खान में मिले हैं ।^७ रामायण पिंगल-नामक इनकी दूसरी रचनगोज में मिली है ।

द०—नागरी प्रचारिणी सभा (कारी) की ग्राज निवर्तिका सन् १९२२ २२, सन् १९२३ २५ प्र -स० १९२ ।

१३—धर्मदास (२३-ख, २३-घ, २६ २६, ३७ ६)—कबीरदास के शिष्य उ० १४५७ के लगभग वर्तमान कबीरपथ के प्रचारक कबीरपथ में खान से पूर्ण का नाम तुलसीदास जाति के बनिया और बौध्दवगड़ (मध्यप्रदेश) निवासी । धर्मपत्नी ‘अमीना मे नारायणदास और चूडामन नामक दो पुत्र, नागरी प्रचारिणी सभा (कारी) का इनकी अनेक पाणियों खान में मिली हैं ।^८

१ ७ —नागरी-प्रचारिणी सभा (कारी) का ग्राज विवरण-१९०५ प्र -स १७ १८, १६, १६०६-८, प्र -स १४७ १६ ६-११ प्र स०-६५ १ ६१७-१६ ७ -स० ३७ १६ -२२ प्र -स० २६ १९२१-२५ प्र -स ७६ १९२६-२८ प्र -स० ७- १९२६-३१ प्र -स ६५ १९१२-३४ प्रथम-संख्या ३८ ।

२ नागरी-प्रचारिणी सभा (कारी) का ग्राज विवरण १९०१ प्रथम-संख्या १ १६ ३ प्रथम-संख्या १४५ ।

३ ७०—जा० प्र० स०, का ग्रा० वि -१६ ६-८ ६० प्र -स०-१५८ १९२३-२५—प्र०-स० १०० १९३२-३४, प्र०-स० ५३ ।

१४—नगनारायण सिंह (२४)—बिहार-प्रान्तस्थ सारन जिले के 'पटेही' ग्राम-निवासी ; अनेक हिन्दी-संस्कृत-ग्रथकारों के आश्रयदाता ; फारसी, हिन्दी और संस्कृत के समान कवि ।

१५—चन्द्रदास (६)—स्वामी विठ्ठलदास के शिष्य , सं० १६०४ वि० के लगभग वर्तमान , तुलसीदास के भाई; अष्टछाप के कवियों में प्रमुख, इनके अन्य ग्रंथों की पाण्डुलिपियों नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को खोज में उपलब्ध हुई है । दे०—ना० प्र० म०, का०—ग्यो० वि० १६०१, प्र०-न० ११, ६६ १६०२, प्र०-१० २०० ए, बी, सी, डी, ई ; १६०३, प्र०-सं० १५३ ; १६०६—११, प्र०-न० २०८ बी, डी, ए, नी, ई, एफ, १६१७-२०, प्र०-न० ११६ ए, १६२०—२२, प्र०-नं० ११३ डी, ई-१६२३—२५ प्र०-सं० २६४ , १६२६-२८ प्र०-नं० ३१६ ए, बी, नी, डी, ई, एफ, जी , १६२६—३१, प्र०-न० २८१ ।

अथतः इनकी निम्नलिखित पन्द्रह पोथियाँ खोज में उपलब्ध हुई हैं—

१—अनेकार्थमंजरी (नाममाला), २—भवर्गान्त, ३—नाममजरी या मानमजरी, ४—फूलमजरी, ५—रानीमर्गा, ६—रामपञ्चाय्यायी, ७—रुक्मिणी-मंगल, ८—विरहमजरी, ९—दशमस्कंध भागवत, १०—नामचिन्तामणि-माला, ११—जोगलीला, १२—श्यामसगई, १३—नाउकेतपुराण-भाषा, १४—रममंजरी और १५—विरह-मजरी ।

१६—नाभाजी, नामादास (६, १०, ११)—स्वामी अत्रदास के शिष्य और प्रियादास के गुरु, महम्माल के प्रसिद्ध लेखक , सं० १६१७ के लगभग वर्तमान, अत्रदास के समकालीन । इनका उपनाम नारायणदास था । नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को इनकी रचनाएँ खोज में मिली हैं ।^१

१७—गदुसनदाम (२२)—बिहार-प्रान्तस्थ हजारीबाग जिले के रामगढ़-राज्य के आश्रित काव्य, कर्ण काव्यस्थ, दामोदरलाल के पुत्र, न० १७३८ (= १६८१ ई०) के लगभग वर्तमान । इनके ग्रंथ अथतः अप्रकाशित हैं । नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को इनकी रचनाएँ खोज में मिली हैं ।^२

१८—परमानन्द (६२)—विरहमाना के रचयिता, बिहार-राज्य के आहाबाद जिले के कोरी ग्रामवासी कवि, नं० १७८५ (= १७६८ ई०) के लगभग वर्तमान ।

^१ ना० प्र० म० (काशी), १६००—प्र०-न० १५, ७७, १६०६—प्र०-न० १२१, १६०६

—११, प्र०-म० २००, २११ ।

^२ दे०—ना० प्र० म०, का०—१६०६—२६, प्र०-नं०, ३ ६ ।

१६—नरमानंददाम (३३)—पतन प्रान्तस्थ दौदा (सुहस्र) ग्रामवासि स १६३५
(=) १८७८ के लगभग वर्तमान। ना प्र स
का को स्नकी रचना खान में मिली है।

२०—बिहारीलाल (७)—हिन्दी क प्रसिद्ध कवि खालियार राज्य क निवासी १७३०
वि० के लगभग वर्तमान माधुर चौबे जयपुर-नरेश जयसिंह
मित्रा के आश्रित कृष्णदास क शुद्ध चर्चोंन सतसई पर टीका
लिखी है। य नवरत्नों में गिन जाते हैं। बिहारीसतसई का
पाण्डुलिपियों ना० प्र स (काशा) को खान में मिला
ह, तिनका लिपिकाल है—

क्र-सं	लिपिकाल	खान विवरण-काल	प्र-सं	
१	१७१६ वि	१६०६०	११५	
	१७७५ वि०	१६०१६	२७	
३	१८०३ वि	१६०२६०	/	
४ (गका)	१८१७ वि (गका-काल १७७७ वि०)	१६०१६	५२	
५	"	"	१६०४६०	१२६
	" १८२३ वि०	"	१६०१६०	७५
७	" १८५० वि	} १६०६-१६०८ ६०	६६	
८	" १८५१ वि			
९	" १८२८ वि०	१६२६-२८ ६०	६८ ए	
१०	" सं० १८५४ (= १७८३ ६०)	१६२६-२८ ६	६८ बी	
११	" सं० १८६८ वि० (= १८५१ ६०)	१६२६-२८ ६०	-६८ सी	
१२	" सं १६०० वि (= १८५३ ६)	१६२६-२८ ६०	६८ डी	
१३	" —	१६२६-२८ ६०	६८ ई	
१४	" १७६२ वि (= १७०५) ६०	१६२६-३१ ६०	५३ सी	

इसके अतिरिक्त इसी विवरणिका में देविए प्र०-सं० ५३ ए और बी।

अन्य पाण्डुलिपियों भी इस खान में मिली हैं। विस्तार के लिए दे०—ना० प्र० स
(का०) क्र० वि —१६२०-२२, प्र-सं २०, २३, २५ और ६०।

२१—भुवाल (२७)—भगवद्गीता के—दाहे-चौपाइयों में—स्थांतरकार उपनाम—
जनभुवाल और भुवालम्बामा नागरी प्रचारिणी-सभा (काशी) के
खान विवरण में भी इनकी पाण्डुलिपि का खर्चा हुई है। दे—
खान विवरण—१६०६-११ ई, प्र सं १३०। उक्त पाण्डुलिपि
का हस्तलेख-समय है १७६२ वि।

२२—रामानन्द (७८)—‘मिह्रात-पटल’ के प्रथकार, प्रसिद्ध सुधारक और कवी के गुरु, रचनाकाल संभवतः पन्द्रहवीं शती, ना० प्र० सं०, का० को इनकी रचना मिली है ।^१

२३—रामप्रसाद शुद्ध (१६)—‘वैद्यरत्नार्णव’ के प्रथकार । रचनाकाल १२७७ फ० = १८७० ई० = १६७७ वि० ।^२

२४—ज्ञानचदास—(१, ८२)—बरेली-निवासी • हर्षिचरित्र के प्रथकार न० १५७७ वि० = १७७० ई० के लगभग वर्तमान । ‘शिवसिंहमरोज’ और ‘मिश्रबंधु-विनोद’ में मात्र नाम-चर्चा ; शिवसिंह ने इनका र० का० न० १६५२ माना है और जालिदास दूत हजाग में भी इनके नामोल्लेख की चर्चा की है ।^३ नागरी प्रचारिणी-सभा (काशी) को भी खोज में प्रथकार के हस्तलेख मिले हैं । १६०६-८ ई० की खोज-रिपोर्ट में इनका र० का० १५६५ वि० है ।^४

ना० प्र० सं० (काशी) के एक हस्तलेख में इनका र० का० है सं० १५७५ = १४६८ ई० और दूसरे में सं० १५८४ वि० = १५२८^५ ऐसा प्रतीत होता है कि १५२५ वि० और १५८५ वि० में ८ और २ का व्यत्यय लिपिकार की अनवधानता का परिणाम है । कहा जाता है कि कवि की काव्य-रचना-भूमि बिहार-राज्य के दरभंगा (रोसना) जिले में थी ।

२५—शिवनाथ दास (२५) ‘शिव-सागर’ के दरियापंथी प्रथकार, बिहार-राज्य के नारन जिलान्तर्गत तेलपामठ-निवासी, संभवतः इनकी अन्य कई रचनाएँ उक्त मठ में सुरक्षित हैं ; प्रथ अप्रकाशित ; लि० का० संभवतः सं० १८५० वि० = १७६३ ई० है ।

२६—नंदलाल कवि (१६-ख)—रामरतनगीता के प्रथकार, रचना अप्रकाशित, कुछ अनुसंधायकों के मत से इस ग्रंथ के प्रथकार कुशल सिंह हैं । इनका र० का० सं० १६७७ वि० लगभग था । कहा जाता है कि ‘अनुसंधायकों’ और ‘रामरतनगीता’ के प्रथकार कुशलसिंह^६ फफूँद के

१ दे०—ना० प्र० सं० का०, खो० वि० १६०२ ई०, ग्रं०-सं०-६५

“ ” ” १६०६-११ ई० ” २०५

” ” ” १६२६-२८ ई०, पू० सं० ७८३ (ग्रं०-सं० ११७-तृतीय परिशिष्ट, अष्टाद रचनाकारों की कृतियाँ)

२ न० प्र० सं० (काशी) को भी ‘सुखजीवनप्रकाश’ के प्रथकार जहानगजनिवासी ‘रामप्रसाद’ खोज मिले हैं, जिसका र० का० १८७४ ई० = १६३२ वि० है (दे०—ना० प्र० सं० का०, खो० वि० १६२६-३१ ई० ग्रं० सं० २२६०) । दोनों ग्रंथ के प्रथकार एक ही ‘रामप्रसाद’ संभव हैं ।

३ दे०—शिवसिंहमरोज की पू० सं० २८२ और ४४४ ।

४ दे०—ना० प्र० सं० का०, खो० वि० १६०६-२८ ग्रं० सं० १६६३, खो० वि० १६२३ २५ ग्रं० सं० २३८

५ दे०—ना० प्र० सं० का०, खो० वि० १६२६-२८ ई० ग्रं० सं० २३१ ए०, २६१ बी० ।

६ दे०—त्रैमासिक ‘साहित्य’ (वर्ष ६, अंक ७)—कवि कुशलसिंहकृत ‘रामरतनगीता’ शीर्षक लेख ; श्रीपरमानन्द पाण्डेय, (पू० सं० ६२)

१६—परमानंददास (३३)—पञ्चम प्रान्तस्थ दीदा (मुम्बई) प्रन्वय ५ - १९३६
 (=) १८७८६ क लामा व...
 का को इनकी रचना मात्र में लि है।

१७—बिहारोलाल (७)—हिन्दी के प्रसिद्ध कवि श्री...
 वि के लगभग वतन न...
 मिर्जा क आश्रित कृष्णदास क...
 लिखी है। ये नवरत्नों में गिन कत है।
 पाण्डुलिपियों ना प्र म (१८७८) क...
 है, निनका लिपिकाल है—

क्र.सं.	लिपिकाल	खज विवरण	क्र.सं.
१	१७१६ वि	१८०० ६	१
२	१७७२ वि०	१८०१ ३०	२०
३	१८०३ वि	१८ २६०	८
४ (मीका)	१८१७ वि (गका-काल १७७७ वि०)	१६ १२०	२२
५ "	"	१८०४ ६०	१२६
६ "	१८२३ वि	१८०१ ६	२२
७ "	१८२० वि	१६ ६-१६०००	२६
८ "	१८२१ वि		
९ "	१८२८ वि०	१६२६-८००	६८-
१० "	स १८४ (= १७८३ ६०)	१६ ८-८६	१८६
११	स० १८६८ वि (= १८४१ २०)	१६ ८-८६०	-६८६
१२	स १६० वि (= १८४३ ६०)	१६ ८-८००	६८६
१३	—	१६२६-८६	११ ६
१४	१७६२ वि (= १७ २) ६०	१६ ६-१००	२६ ६

इसक अतिरिक्त इसी विवरणिका में देखिए प्र... २३ एकर... ६।

अथ पाण्डुलिपियों भी इसी खान में मिली है। वि... २० ६०
 (का) खा० वि — १६२ — २२ प्र-स २०, २३, २६ ६।

२१—भुवाल (६७)—भगवद्गीता क—गह-वै...
 जनभुवाल आर भुव...
 खोज विवरण में मा इनका पा...
 राज विवरण—१६ ६-११ ६०, ६ ६० ।
 का हस्तलेख—समय है १७६५ वि०।

५३—ग, ५३—ग, ५४, ५५, ५६, ५७—फ, ५७—ख,
 ५७—ग, ५७—घ, ५८, ५९, ६०—क, ६०—ग,
 ६०—ग, ६०—घ, ६१—क, ६१—ख, ६२—क, ६२—ग,
 ६२—ग, ६३, ६८, ६४—क, ६५—ग, ६४—ग,
 ६५—घ) बिहार - प्रान्तस्थ शाहानाद जिलान्तर्गत धरुघा-
 निवाणी, जन्म सं० १७३१ वि० और मृत्यु सं० १८३७ वि०,
 पीरन शाह के पुत्र, दरियापंथ के प्रवर्तक । ' नागरी-प्रचारिणी-
 सभा (काशी) को भी उनकी रचनाएँ खोज में मिली हैं ।
 इस विवरण में उनके ग्रंथों की सत्तावन पारडुलिपियाँ हैं ।

३०—सूरदास (४३)—हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि, बल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव भक्त और अष्टछाप
 के कवियों में प्रमुख, ब्रजवासी, सं० १५४० वि० में १९२० वि० तक
 वर्तमान । नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी), लि० का०—सं० १८६२,
 सं० १८७३, सं० १८६६ और सं० १८५३) और मन्मन्नाल
 पुस्तकालय (गया) (लि० का० सं० १८५७ और १९२४) के
 संग्रहालयस्थ हस्तलेख में यह पारडुलिपि प्राचीन है । इसका लिपिकाल
 सं० १८२५ वि० है ।

३१—हरिदास (८७)—'रासनीला' के नवोपलब्ध ग्रंथकार, 'हरिदासस्वामी की बानी'
 नामक ग्रंथ के रचयिता, हरिदास में भिन्न^२; सं० १७२७ वि० के
 लगभग वर्तमान ।

१ दे०—पत्रकवि दरिया एरु अनुशीलन, डा० धर्मदत्तवारीशास्त्री, प्रकाशक-राष्ट्रभाषा-परिषद्-पटना-३ ।
 २. दे०—ना० प्र० सं० का०, खो० वि०.११०५, प्र०-स-६७, खो०-वि० १९०६-२१, सं०-सं० १०६ बी ।

हस्तलिखित पोथियों का विवरण

- [१] श्रीमद्भागवत (हरि चरित्र)—प्रयत्नकार—लालचदास । प्रयत्नेखक X । अवस्था—
अत्यन्त प्राचीन हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ-संख्या—१८७ ।
प्रति पृष्ठ पंक्तियाँ लगभग ४ । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
लेखनकाल—सन् १८१८ आषाढ सुदी ७ रविवार ।

प्रारम्भ—पुत्रीवधपुत्रति नहीआही वरु अपन मुनदेहु वीवाही
वीनतीकीहसीस मुन्नार । देहुप्रसाद माही बीस्न गासाद '

अन्त—असे जगदीस्वरजाहै तेहीसेमहुनरनाहै ॥

चरनसरन जन लालच हरीमुमरह मनमाह

इतिश्रीहरीचरीने दसम स्कंधे श्री भागवते महापुराने बीस्न वैकुंठ
सीधारननोनाम ऐकानवैमा अध्यायौ ।'

निर्णय—भागवत महापुराण अध्याय २ से अध्याय ६१ तक । दाहे और
चौपाइयों में रचना की गई है ।

टिप्पणी—(१) यह ग्रंथ अत्यन्त प्राचीन है । प्रथम के प्रत्येक पृष्ठ पर पृष्ठ-संख्या
के साथ 'लालच लिखा हुआ है जो प्रयत्नकार के नाम का मूचक
है । प्रथम के अनेक स्थलों में और अध्यायों के अन्तमें दाहों में
यह नाम आया है । यथा—पृष्ठ ४६ में—

'जनलालच क ठापुर मोक वेद पर पान ।

वैरी रूप तो थावे पावै पद नीरखान ।

(२) प्रथम के लिपिकार न आदि या अन्त में अपना परिचय नहीं दिया है ।
प्रथम की लिखावट ठीक नहीं है । भाषा राम-चरित-मानस की सी है ।

(३) ग्रंथ की लिखावट में 'व' के लिए 'घ' और 'घ' के लिए 'व' लिखा है
य में नीचे बिना देकर 'य' लिखा गया है ।

(४) यह प्रथम धारामेश्वरप्रसाद गुप्त मंत्री—वैदिक-पुस्तकालय पुनपुन,
(पटना) क सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

- [२] संपूर्ण रामायण—ग्रंथकार—गाम्वासी तुलसीदास । लिपिकार—गथादास पाण्डे ।
अवस्था—अच्छी । पाया मन्त्रि । पृष्ठ-संख्या—२३ । प्र०-पृ०
५० । लगभग ६० । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लेखनकाल—

सं० १६२२, आश्विन कृष्ण सप्तमी, तारीख ११ ।

प्रा०—“जड् चेतन जग जीव जत म्कल राममय जानि ।
वंदौ नवके पटकमल मदा जौरि जुग पानि ।
देव दनुज नर नाग पग ग्रेत पितर गवर्ष ।
वंदौ किन्नर रजनिचर कृपा करहु अय सर्व ॥७॥”

अन्त—“यह सुभ शंभु उमा शवादा सुप नपादन समन त्रिपादा
भव मंजन गंजन मंढेहा जन रजन सज्जन प्रिय एहा ।”

विषय—भगवान् रामचन्द्र की जीवन-कथा ।

टि०—(१) यह ग्रंथ लीथो किया हुआ है । इसमें कथा से सम्बन्ध रखनेवाले चित्र भी डिये हुए हैं ।

(२) ग्रंथ के अन्त में लिखा है—“यह ग्रंथ मवत् १६२२ आश्विन कृष्ण सप्तमी, ता० ११ को अनन्तराम अग्रवाल के यहाँ श्री गयादत्त पारडे के द्वारा आनन्दवन छापाखाने में छपा । स्थान श्री काशी विश्वनाथपुरी, सुहल्ले शिव, लयघाट में ।” छापाखाने का अभिप्राय लीथो-छापाखाने से है ।

(३) यह ग्रंथ श्री विष्णुदेव शर्मा, जर्नादार (राम-खोरमपुर, डा० द्वि-रौर, बेगूसराय, जि० सुनेर) ने प्राप्त हुआ है ।

[३] रामायण—ग्रंथकार—गो० तुलसीदास । लिपिकार—X । अवस्था—ग्रन्थान्त प्राचीन, देशी कागज । पृष्ठ-संख्या—१७७ । प्र० पृ० ५० लगभग ४२ । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लेखनकाल—सं० १८४७, फागुन सुदी पंचमी, बुधवार ।

प्रारंभ— (चौपाई)

“चहुजुगतीनीकालतीहूलोका भयेनामजपीजीववीमोका
वृत्तिपुरानसंतमतऐहू सकलसुकीतफलनकल मनेहू
ध्यानप्रथमयुगमखडुजपुजी दयापर परितोखनपरीपुजी
कलीकेवलमलसुलमलीना पापपवोनीवीजनमनमीना”

अन्त— (सोरठा)

“नीअरखुवीरवीवाहजमप्रे मगावहीसुनही
तीन्हकहपरमउछाहु मगलाएतन रामजम
इतिश्रीरामचरित्रे मानशेगकलकनीकलुखवीधमीनोनाम
अपीरखीमगतीवीग्याननोनामप्रथमपानशमापनवालकाडमंपूरन
पडीतजनसोवीनतीमोरी छटलवाइलपरहव सवजोरी सीभमम्नु”

विषय—श्रीरामचन्द्रजी की कथा । ऋत्नल बालकाड है ।

टि०—(१) ‘राम-चरित-मानस’ की प्रकाशित अन्य प्रतियों से इसमें पाठ-भेद है ।
यथा—प्रारम्भ के ‘चहु जुग’ में, प्रकाशित प्रतियों में, ‘वेद-पुरान-

सत-मत एहू के स्थान पर 'सूतिपुरान और ध्यान प्रथम-सुग मख विधि दूने के स्थान पर 'मख दुन पुनी लिखा है। अत के सोरठा में— सियरखुवीर विवाह जा सप्रेम गावहि सुनहि के स्थान पर खु वीर विवाह जस प्रेम गावही है।

इसी प्रकार 'अन्य कई स्थानों पर सीतानाथ के लिए 'जानकीनाथ शब्द आया है।

- (०) प्रथ में मात्राओं का ह्रस्व दीर्घ का कोड विचार नहीं है।
 (१) प्रथ में दाहे-चापाइयों की मर्या नहीं दी गई है।
 (४) ग्रन्थ के प्रारम्भ के ६ पृष्ठ नहीं हैं। प्रारम्भ दोहा-स ४२ के बाद चौपाइ से हुआ है।
 (५) यह प्रथ श्री रामेश्वरप्रसाद (मन्त्री वैदिक पुस्तकालय पुनपुन पन्ना) से प्राप्त हुआ है।

[४] रामायण—प्रथकार—गो तुलसीदास। लिपिकार—X। अवस्था—अत्यन्त प्राचीन देशी वागन। पृ० स० ६। प्र० पृ० ५० लगभग ४०। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—स० १४८८, आषाढ बदी पाठी, मंगलवार।

प्रारम्भ— श्रीगनेसाण्ड धीमगवानजी सहाए श्रीगगावीसहाए श्रीहनुमानजी सहाए श्रीपौषयचोध्याका श्रीतुलसीदासजीका—

(इञ्जोक)—वामाकेचवीमातीसुधरतूतादेवायगामस्तके
 भालेवालावीधुगूरलेच रले अस्वारसी ब्यालर
 सवीगिएवीसुनीभूखनवर सवाधीप सरव
 सायऐसवगतसीवससीनीभग श्री शकरपातुमा ॥१॥
 प्रस्ततामास्वागताभीखेकस्थान वनवास दुखीतानद
 सुसातु ज धरपुनदनवममदाधुमजुलभगनप्रदा ॥२॥
 नीलातुदस्यामलरामलमीतास्थाम्बुपीत वामभाग
 पानो महासाएक चारचाप नमामीरामरघुवसनाथ

(दो०)—धीगुश्चरनशराच रन नीतमनसुदुरसुधार
 रनारघुवरवीमलम जोदाएककलचारी

अ त— (मारग)

भरतचरीनकरनम तुलसीजेशादरकह्री
 सीयारामपदप्रेम अरसीणगेहरीप, वीरसी

विषय—श्रीरामचन्द्रजी की कथा। अथाव्यारामात्र।

टि०—(१) अत्र प्रकाशित प्रतिनों से पाठ भेद है। यथा—अन्त की पंक्ति में (प्रकाशित प्रात में)—'तुलसी जो सादर सुनहि है, और इसमें 'तुलसी न सादर कहना है। अन्तिम चरण में अवधि होइ भवरस

विरति' है। इन ग्रन्थ में—'अवधि होऐ हरि-पठवीरती' है। इसी प्रकार अन्य स्वलों पर भी पाठ-भेद है।

- (२) ग्रंथ-सप्त्या ३ और ४ के लिपिकार एक ही व्यक्ति प्रतीत होते हैं; क्योंकि दोनों की लिपि और लेखनशैली एक-ही है। ग्रंथ-सं० ३ को सं० १८४७, फागुन सुदी पंचमी को ममाप्त करने के बाद, ३ मास ६ दिन में, ग्रं०-सं० ४ (अयोध्याकांड) को, १८४८ संवत् में आपाठ वदी पष्ठी को ममाप्त किया है।
- (३) इन दोनों ग्रंथों का लिपिकार ही भागवतमहा-पुराण (ग्रंथ-सं० १) का भी लिपिकार है। इन दोनों के लिखने के बाद संवत् १८५८ में उमे लिखा है।
- (४) बाल-नाट के ममान ही इनमें भी दोहों और चौपाइयों में संख्या नहीं दी हुई है।
- (५) यह ग्रन्थ भी श्रीरामेश्वरप्रसाद (मंत्री, वैदिक पुस्तकालय, पुनपुन, पटना) से प्राप्त हुआ है।

[५] संपूर्ण रामायण—ग्रन्थकार—गो० तुलसीदास। लिपिकार—चुनीलाल। अवस्था—प्राचीन, देशी कागज। पृ०-सं० २९७। प्र० पृ० पं० लगभग—४४। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लेखनकाल—सं० १८५६, वैशाख सुदी २, मंगलवार।

प्रारम्भ—

(चौपाई)

“वीधूवदनी सबभातीगवारी मोहन वमन वीनाउरनारी।
सत्रगुनरहीतबुद्धवीक्रीत वानी रामनाम जस अंकीतवानी ॥”

अन्त—

(दोहा)

“मोसमदीननदीनहीत तुम्हसमानरघुवीर।
असवीचारी रघुवंसमनी तरहवीगम भौभीर
कामीहीनारीपीअारीजीमी लोभीहीप्रीयजीमीदाम
तीमीरखुनायनीरतर • प्रीअलानहुमोहीराम ॥ संपूरन
इति रामचरित्रे मानसेमकलकलीकलुखवीवंशानो वीमलवीअानसवादीनो
नाम सप्तमोपानउतरकाडसमापतह मीवीरस्तु सुभमस्तु ॥
इति श्री पोथी रामायेंशातोकाड कीततुलशीदाशकथासंपूरनजथादरसतथा
लीखते ममदोपनहीजेते 'पडीतजन गो वीनती मोरी छटल अछर
पठवशवजोरी ॥”

दसपत दासनके दामसेवक चुनीलाल काएथकान वाशीदेरानीपुर कशवा ॥ शवत् १८५६ शाल मीती वैशाखसुदी २ रोज मंगल को पोथी तैयार हुआ पोथी के मालीक पुशीहालशाह जौनपुरी श्रुत हुकम-शाह के वीददीह शाह वाशीदे रानीपुर कशवा—श्रुवे वीहार ।”

विषय—श्रीरामचन्द्र-कथा ।

टि०-(१) लिपि प्राचीन तथा अस्पष्ट । मात्रा, ह्रस्व, दीर्घ आदि का भेद नहीं । प्रायः सभी स्थानों में ह्रस्व इकार क लिए लीप इकार का प्रयोग किया गया है ।

- (२) यह ग्रन्थ स्पष्ट करता है कि लिपिकार यद्यपि जौनपुर के किन्हीं शाहजी क यहाँ रहत थे, तथापि उनका निवास-स्थान बिहार प्रांत था ।
(३) यह ग्रन्थ श्रीरामदरि (भत्री आय वैष्णव-मुस्तबानय, गुरापुर पन्ना) क सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

[६] नन्दकोप (नाममाज्ञा प्रथम खंड)—प्रथकार—नन्ददाउ । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, अव्यवस्थित । पृष्ठ सं—२४ । प्र प प लगभग ३० । लिपि—नागरी । रचना-काल—X । लिपिकाल—X ।

प्रा०—॥ 'लतानाम ॥ व्रतती विसतीव लरी विसनीलतावीतान ॥
अमरवेति भीमिमूलवनीतीमनुअदेपौमान ॥१११॥
प्रिनम नाम ॥ इन्द्रयितरल्लमसपागीतम परम सुपान ॥
पिय प्यार ।'

अत—॥ 'जुगल नाम ॥ जमल जुगल जुग उमयपुनिमेधुनवीवीवीय ॥
जुगलकिशोर वशा सदा नदलाल के हीय ॥२७१॥'
इति श्री नाम माना प्रथम खंड नन्दकोप नदलालदाम्यवृत भाषामनित समाप्तम् ॥ त्रिदिरस्तु शुभमस्तु ।

वि—हिन्दी भाषा क शब्दों क पद्याय ।

टि०—ग्रन्थ क अंत में नाम का पद्याय दकर २७१ सं० से स्पष्ट होता है कि ग्रन्थ बड़ा हागा । प्रारम्भ में ११० नामों क पृष्ठ नहीं हैं । ग्रन्थ पत्ती हुई अवस्था में प्राप्त हुआ है ॥ पृष्ठ १० तक नहीं हैं । नाममाला प्रथम खंड से ज्ञात होता है कि ग्रन्थ के अंत भी खंड हैं । यह ग्रन्थ कविराज श्री नन्दनाथ वैद्य (महला—जोगसर भागनपुर) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

[७] (क) सतनाम—(भगत महातम कथा)—प्रथकार—X । लिपिकार—गायननाम । अवस्था—ठीक नहीं है । ग्रन्थ जीण-शीण है । पृष्ठ-सं—२३ । प्र० पृ प , लगभग ४० । आकार प्रकार—८" X ७" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लेखनकाल—सं० १२७८, वैशाख शुक्ल पंचमी रविवार ।

प्रा०— मन्गी करै यात्री क की नद ॥ जान नारी पर चीत न टालाइ ॥
प्रसै गवान भद्रव माया ॥ स्वती युद धीह भरै पीसाया ॥
रैये राम भगति का अही ॥ शगरी सवा करै नारी ॥'

श्रुत—

(दोहा)

“संतन्ही के प्रसंग ते ॥ पापी उनी को पाऐ ॥
जे सो चन्दन क साथ मे ॥ श्रीरो काठ बजाऐ ॥
संत की संगती जो करै ॥ पावै अन्त सुग वाप ॥
भरती प्रतीग्या देनी कै ॥ जन को भगै जो त्राम ॥”

इति श्री भग्ती महात्म दुग्हरन जमत्रान नेत्रारन मरुल मानत्रगार
जमराए दुत संम्वादे नारद मंन दीठा वों नो श्री संगार भग्मायो नो
नाम द्वादशमो अघ्याय ॥१२॥ नपूरन ।

इति श्री भग्त महात्म ऋष नम्पूरन समापतह । जो देगा सो लीगा मम
दोष नहीं श्रुत मरुल मंत सौ वीनती मोरी लुटल अचर मंत्रा पठव
सब जोगी पोथीक मालीक श्री श्री श्री स्वामी गोपालदासजी मोक्षम
शा० तेघरा प्रग० मलकी पुडा शुदी तीन तीथा रोज ऐनिवार को अठई
पहर दीन उठते तैश्वर भेल दसगत . ”

वि०—भक्ति, मत्सगति और मोक्ष के आधार पर नारद के नाथ राजा का
संवाद देहे और चौपाइयो में ।

टि०—प्रव के, प्रारम्भ के ५ पृष्ठ नहीं है । इन प्रव के नाथ ही दो प्रव और
भी संबद्ध हैं, जिनका विवरण नीचे है । यह प्रव कबीर मठ रोमदा,
(दरभंगा) के महत श्रीअवधदास नाथ के मौजन्म में प्राप्त हुआ है ।

(ख) भौपालबोध—(भूपालबोध,—ग्रन्थकार—X । लिपिकार—गोन्दरलान । अरस्था—
प्राचीन, देशी कानज, विपर्यस्त । पृष्ठ-सं०—६, प्र० पृ० ५० लगभग—
४० । आकार-प्रकार—८" X ७" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचना-
काल—X । लेखनकाल—सं० १२७८, आषाढ शुदी चतुर्दशी, शनिवार ।

प्रा०—“चौपाई ॥ वर्मदासो नचनं ॥

धर्मदान कहे वडी घोरा । कैने जीवन भारत घोरा ॥”

श्रुत—

(सोरठा)

“सोहं साईं महौऐ ॥ सबद नार तामे कही ॥

ऐती श्री ग्रन्थ भौपालबोध संमपूरन समापतह जो देपा गोलीपा मम
दोष नेही श्रुते मरुल संत नौ वीनती मोरी लुटल अचर मंत्रा पठव न
जोरी मीती आषाढ शुदी चतुरथी रोज मनीचर कै डेढ पहर दीन उठते
ग्रन्थ तैश्वर भेल ग्रन्थ के गान्धीक श्री गोसाईं गोपालदास साकीन
तेघरा प्रगने मलकी द अर्धीन सत गोन्दरलाल साकीन प्रौनी प्रगने
मलकी ता० २६ असाढ रोज शनीचर स० १२७८ नाल ॥’,

वि०—धर्मराज, ज्ञानी और भूपाल के परस्पर वार्तालाप द्वारा जीवन, ज्ञान,
मोक्ष और जीव के संबध में विवेचन । नाथी, दोहा, सोरठा और
चौपाइयो में रचना ।

टि०—इस ग्रंथ के साथ दो पृष्ठों का नंदावास लिखित 'श्रमरगूल' भी है। क और स दोनों ग्रंथ एक चिह्न म एक साथ ही हैं। यह ग्रंथ श्री महंत अबधदाम साहन—रासडा (दरभंगा) कबीरमठ—के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[८] असज्जनमुखचपेटिका—ग्रंथकार—रामा प्रमात्राय। लिपिकार—भीष्मदाम। अवस्था—अच्छी। ग्रंथ अपूर्ण। पृष्ठ-सं—८। प्र पृ० प० लगभग—२४।
 आकार प्रकार—१४' X २१"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी।
 रचनाकाल—X। लिपिकाल—भवन् १९१०।

प्रा०— श्रीमतेरामानुजनाय नमः श्रीमद्भागवत नौम यस्यै कस्य प्रसादत
 अज्ञातानपि जानात नमः सवागमानपि १
 रामा प्रमात्राय कृता सज्जनमुखचपेटिका तामहतु भीमास्ये मा
 भीमद्भागवतद्विपा २
 तद्व भाषाया कुव्व दुज्जनाना हरिद्विपा मुखचपेटिका सर्वे महातो
 हृदिधीयता ३

कवित्त—वे आ पुराण मूत्र सकल सराहै जाहि
 ताहि ना बतावै वापदेव कृत भडुआ
 शकर सराहै मधुसूदन सराहै जाहि
 श्रीधरा सराहै ताहि मानो नहि गडुआ
 वीर एहै जाहि धवचक्रवर्ति गान का प्रमाण सब
 नागोजी तिलक किया दुतिआकै कडुआ
 भडाही प्रमाण किया विदित जहान माहि
 कैसे कै सुभावीं सार वयल कह अडुआ १

अत—' कहि कहि थकि गया वेद आ पुराण मुनि
 जानत जहान मन लाग भरुआए हैं।
 मूलि है पुराण राह गहि है गवार बौह ता
 त कविना शकार हमहु बताए है ॥
 नीक लागै सोइ करा जुहा भार सोइ परो
 तुम शा तो हम नाहि क्या कहु पाए है।
 दीन देपि मरल भरासं दाम चामही के
 मै ता सधुआइ वश कहु कलपाए है ॥४२॥
 हाथ जारि माय नाइ यागजी के लाविला क
 चरण कमल रज मेरो धन ऐही है।
 नाम तुकदेव ना वपाने ए भागवत
 भागवत आप कृष्णचन्द्र के सनेही है ॥
 जासु रीति भाति मूत्र सकल सराहि गए

ताहि को भाव कहैवैया कौन देहो है ।
 तहा मेरो जीभि तो गवाही देत मकुवत
 हारि मानि रहत न जात कहि भेही है ॥४३॥
 यदि गारपा भवेदीपा परलोक हितान्मन ।
 भवट्टिभञ्च तथा नदिमदीयता मयम् सर्वश ॥४४॥
 नोचे कहरा या प्रोक्ता मगीकारतया शुभा ।
 गृह्णीत सुबियो गाली भवतो हि मु नावव ॥४५॥
 अतिस्मृतिममाचारविरोधावेशगेपत ।
 कृते यम मना सर्वाक वाय्या सुत चपेटिका ॥४६॥
 उति श्रीमज्जानकी प्रयाडकृता गज्जनसुख चपेटि नमाप्ता सवत्
 जुनेमेदम लिप्यत भीष्मदान वैरागी कवीर ६वी ॥”

वि०—उम ग्रंथ में लोक-प्रचलित श्रवतारवाद, पुराण आदि मम्मतमिद्वान्तों
 को आलोचना की गई है ।

टि०—कवीरमन में सम्बन्धित विचार । ईश्वर के सम्बन्ध में भी विवेचन ।
 वेद, पुराण, उपनिषद्, भागवत आदि पर लेखक के अपने विचार ।
 कवीरदान की जमी तीखी भाषा का प्रयोग । यह ग्रंथ, महंत श्री
 श्रवतदान नाहवजी, कवीरमठ, (रोसडा, दरभंगा) के सौजन्य में
 प्राप्त हुआ है ।

[६] भक्तमाल—ग्रंथकार—नाभास्वामी । लिपिकार—भीष्मदान । श्रवस्था—प्राचीन,
 हाथ का बना देशी नागज । पृष्ठ-सं०—३५४ । प्र० पृ० ५० लगभग—
 ३३ । आकार-प्रकार—११" × ६" । भाषा—हिन्दी । लिपि-नागरी ।
 रचनाकाल—X । लिपिमाल—सवत् १६०७, फाल्गुन शुक्ल
 एकादशी, रविवार ॥

प्रा०—“श्रीकवीरसाहिवाय नमः ॥ श्री हरिगुरुवैसनवभ्यो नमः ॥ अथ श्री
 भक्तमाल ग्रीकामहित लिप्यते ॥ तहा अर्थ भक्तमाल मैं लिख्यो है ॥
 भक्त भक्ति भगवतरु नो व्यारिन रूप लिख्ये है ॥
 तहाँ हरि को मन्पन लिख्यो जाय । क्योंकि कठिन है कवित्त ॥
 रूप की श्रवावि अमी औरन बनाई विधि जाके लिपि को लाल देवता
 मनाडवो ताकि मोभालपिबेको बैठत ।
 गरव करि अतत हि मन होत घूमि धन नाडवो ।
 असी मीति आप आप कूर कहिवाय गये चतुर
 चितेरे निहें कहों लों गिनवाडवो ॥ कृत्न प्राण श्यारे वह चित्रनि
 विचित्र गति कान्ह एन वने वाके चित्त को बनाडवो ॥१॥
 लिखन बैठी जाकी छवि गहि गहि गरव गरूर ।
 भये न केते जगत क चतुर चितेरे कूर

चतुर चित्त ना लिख रचि पचि मूरति बाल ।
 यह चित्तबनि वह सुरिचलनि कैसे लिखै जमा ॥
 कठिन लिखन अतिसय महा कैसे कै लिखि जाय
 यशुदा सुन क बरन यपु कहा मोहि ममुकाम ॥
 उत्तर मन गात आन मै राक कै हितचित्त माते करि एक ॥
 लिखै मधुर मूरति विसर जीवन गुम्प टेका ॥१॥'

कवित्त

अत— समर में लषा जाय गिरिहृ गिरया जाय
 गगन में फिरया जाय पावक न दहिया
 कानन म रखा नाय।वरह हृ सषा जाय
 पाल कर गषा जाय आर कहा कहियो ।
 हलाहल पिया जाय करतब किया जाय
 सर्व सुनियो जाय माखि का कहिवा ।
 और दुख पाहु स दुमह कठिन औसा
 जैसे काह कर संग एक क्षिण रहियो ॥

विषय— शीघ्र जीवन सम्बन्धी प्रसिद्ध पाथी ।

टि०— इस प्रथ में एक साथ ही कई टीकाकारों की टीका प्रतीत होती है। लेखन शैली प्राचीन है। टीकाकार प्रियदास हैं—दूसरे टीकाकार नारायणदास हैं। ज्ञात होता है नारायणदास ने मूल की टीका की है और प्रियदास ने उन टीका की भी टीका की है। प्रथ क अन्त में लिखा है—

अस्तुति श्री मूलकार नारायणदास ज की ॥ छपै ॥

नमा नमा महाराज नमा श्री नामा स्वामी
 गुण निधान गब जालवान नृप अतर जामी
 भक्त माल सुख जाल भक्तिरस अमृत मीनी
 भगनुमिधु का तरन धर्म नाका यह कीही
 मागत धम मध मुकषा का चतुर्वे प्रगण्या मही
 जेन जालनाम कै आम यह चरण सरण रापा मही ॥१॥

गहा—बार बार चढ़न करा नामा आमा अने
 काटनागा भा च का श्री भक्तमाल सुख देन ॥
 अथ निखन प्रार्थना (सम्भवत दयका अभिप्राय है—लेखक की पाठकों
 क प्रात अभ्यथना)—

नामा स्वामी मूल कृत नितक प्रियाभृनु कीह
 वैस्नव पुनि पयाय कर लाल अनुग भिखी नीह १
 जा अप्पन पूव किय वैस्नवदास प्रमाण
 ता मम मथन मीन कृत खेम दम गुर जाण २

पुनः कं टिप्पणं नमुक्तिं हितं टोरं टोरं जीनं
कीन्द्रं दामं दामं न दामं हृतं नानं दामं मतवीनं ३”

उन्में ज्ञान होना है कि प्रारम्भ में 'तिलकप्रिया' टीका किसी ने की थी। बाद में 'वैष्णवदान', 'लोमदान' और 'नागमशास्त्र' तथा 'प्रियादान' ने व्याख्या की है।

टीकाकार ने गीता के अनिर्दिष्ट विहारी और गुरु के श्री उद्धरण लिखे हैं। प्रथम के छन्द में लिपिकार ने अपने विषय में लिखा है—

“श्रोता वचना जुगल नो दीनै नग वर जेहि
लघु दीशान अक्षर पद्यो सो नव वाचिय जेहि
नामा हृत जो नून है टीका जग प्रियादान
पुनः वैष्णव टिप्पण दीयो भक्तमाल गुण गण ॥
पागुन माह क पत ने शुभ पद के बीच
तिथी एकादशी जानिये मयादन के बीच
मस्मत नन्दन के माह पगाह नान
भीष्मदान पुस्तक लिपी गरीजग परमान ॥६॥
मूल गाय के दक्षिण पङ्कजना स्थान
तथा बैठि पूरण कीये गुरु पद रङ्गिनि ध्यान ॥७॥”

इस ग्रंथ के प्रसृतसंधान ने स्थापना है, उद्यमहरत्र की नामश्री प्राप्त हो। यह ग्रंथ अवधदान गद्य मूल, (जरीरमठ, गोगड़ा, दरभंगा) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

[१८] भक्तमाल—प्रत्यकार—नाभाजी। लिपिकार—भीष्मदान। अवस्था—अन्ती। प्राचीन, हाथ का बना, देखी जागज। पृष्ठ-संख्या—६३। प्र० पृ० पं० नगमग २६। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—कार्तिक, शुक्ल, तृतीया २० १६३१, (मन् १८७७) गुरुवार।

प्रारम्भ—“श्री गणेशाय नमः ॥ प्रथम श्री भक्तमानदीया गीत लिख्यते ॥ टीका करता गो मगनाचरग ॥”

कवित्त ॥

“महाप्रभु कृष्णचैतन्यमनहरन वृ के
चरन दो ध्यान में नाम मुख गाईये ॥
ताही नमै ना नाम मै आभ्या दई नई
धाणि टीका विस्तार भक्तमाल को सुनाईये ॥
कीजिये कवित्तत्रय छंद अति प्य ने लगे
जगे जगमाही कहानी विमार्तये ॥
जानौ निज मति सैप सुखी भगवत
एकदुखी नये किसी सैप ही कर्माये ॥

अथ गका का नाम स्वरूपवरनन ॥

गवि क्विता मृषणा लगे तप मृगा

ओ गवा पुनिकत ले मिगा है ॥

अक्षर मधुरता अनुप्रास उमुकाइ अति

द्ववि द्व मा भरी मी लगाइ है ॥

कान्य की कडाइ निन सुपन मना होत

नाभाजू कडाइ ताँ पौनिक मुनाइ है ॥

हृदय सरना जा पै सुनल सगा यह

भक्तिरस बाधना मुनाम गीका गा है ॥

अत— स्वाग्र्य क साधवे कौ आनक आराधवे कौ

गिनिक बाधवे का गारत मुमाय कौ ॥

कामल कृपा लहर सतनिकौ सगाचार

दुर्जननुदारता सार्व वरो प्रलयाय कै ॥

आलसी आलाम सुपधाम रामचद्र भूयो

ग्यौ भवसिधमादि पूयो धन पाय कै ॥

करमी कुचाल गाल मालाहुन तिलक भात

अये भक्त मालहि कीजे कहलाय कै ॥६३०॥

नामा स्वामी जू की अस्तुति ॥

अथ ॥ 'नमो नमा महाराज नमा श्री नाभा स्वामी

गुन निधान सन जान काल त्रिये अतरजामी

भक्तमाल सुप जालभक्ति रस अमृत भीनी

अक्त सिंधु का तरन परम नोका गह कीनी

भागीत धर्म सब कथन का चतुर वेद प्रगथी मही ॥

उन लालदास कै आस यह चरन सरन राधा सही ॥६३१॥

दाहा— बार बार वदन कम्नामा आमा अनेन ॥

कहयो गामा वेद का भक्त मान सुप दैन ॥१॥

इति श्री भक्तमाल मूल गीका सहित सम्पूर्ण समाप्त ॥१॥

विषय— भक्तिकाव्य ।

टि०-१—यह भक्तमाल गीक है । गका की शैली प्राचीन है । भाषा

रामचरित-मालस से मिलनी जुलनी है । यद्यपि—यायी के आरम्भ

या अन्त में गीकाकार के नाम का स्पष्ट संकेत नहीं है तथापि कुछ

स्थानों से प्रकट होता है कि इसक टीकाकार श्री लालचन्द्रमजी हैं ।

इनक और भी ग्रंथ हैं । उनसे भाषा-साम्य है । प्रक के अंत में

अनन्तदास के नाम नाम की आर संकेत कर रहा है । इनके

अन्य ग्रंथों में भी नाम के लिए ये शब्द आये हैं ।

२—प्राची की लिपि प्राचीन है। लिपि पुरानी होने के कारण ही अप्रपञ्च है। लिपिकार ने अपने मन्त्र में लिखा है—‘प्रथ लिपि ममाप शीया भीमदाम मय्य पठनाथं ॥१॥ पण्डि देशदग्ध्या नाहजदा रोड के पान दिलिनमर के अग्रद्वेषाना ग्राम मो जान कोसपोरम मोहै प्रमानतामधि वैठिकै प्रथ पृग शीया भीम गुम्पडधरि ध्यान ॥१॥ नष शीष पण्ड ग्रीम को लिपत मनो अति कण्ड। मूरप हाथ न डिजीयो नपन लिपौ नपन अण्ड ॥१॥ समतसो विनती मोगी कृटल अतर लेव नव जोरी ॥’

उसमें लिपिकार के ग्यान आदि का संकेत मिलता है।

वह प्रथ कथीर पथी (तिघड़ा, सुगेर) के प्रसुग नाउ के सौजन्य ने प्राप्त हुआ।

[११] भक्तमाल—प्रथकार—नाभासुजामी। लिपिकार—X। अषस्था—अन्धी। टाघ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सख्या—१६। प्र० पृ० ५० लगभग—३०। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—X।

प्रारम्भ—‘श्री सद्गुरु कवीर माण्डवायनम ॥ वदेर श्रीगुरो श्रीयन् पठकमल श्री गुरुवैष्णवदान।

श्री रूपमाप्रजानसहगणरघुनाथन्विडमतम् ॥ न मजीवं नाहेतं माधभूतं परिजनमहित कृष्णचैतन्य देव श्री गधाकृष्णपादनर सहगणतसितान् श्री विमात्राचिताश्रवम् ॥१॥

चेतोमूर्गैर्जनाना मलतनगता श्री प्रियादासटीका गंधद्रव्यादिनेपाहारि-भक्त्यैजनी समन्तात्। सानटापर्वशास्त्र अथखिलकुलमोशानलता श्री नाभामालाकारेण कृपाचरतिहरिहृदि श्रीमतीभक्तिमाला ॥२॥

ब्रह्म ॥ वदोभक्त सुमाल लालिताशिली मत्तनहरण ॥

मेष्टत कठिन कराल भाल अकवदुगुजन्मके ॥

धंदोतवधूरिगुण नागरनागरमह ॥

कृपा सजीव-निमूर्खिव्याधिहरण करुणा भवन ॥१॥

रसिकनलोगभूपजोरिपान विनतिकरत ॥

महाराजमुखस्वरूप भक्तमालहि विधि कह्यौ ॥”

पद ॥

अन्त—‘मीठेमीठेचापिवेरलपार्इभीलनी ॥

कौनसी अचार बरतीनही रंगरूप

रतीजाति हू मैं कुलहीनी बनी है कुचिलनी ॥

जुठे फल पाये राम सकुचे न भाष जानि

तुमती प्रभु औसी कीनी रस की रसीलनी

कौनमी तुपस्या कीनी वैकुंठ पदई दीनी

विमान मैत्रगातान श्रेया है नुर्नीलनी ॥
 नाबी प्रीतिकर काइ ताममीरातुभरै माः प्रीति
 ही योनरि ग ग् गाकुल की अटीरनी ॥१॥

गकार ॥ भक्तयाहमेकया प्राथ शुद्धयामा प्रियस्थिता ॥
 भक्ति पुनातिमरिग्य स्वपाकानपि भंभवान् ॥१॥

विषय— भक्तिकाव्य । नाशनिक और माहेदिक ।

टि०-१—इस ग्रंथ में गीता पुराण आदि क श्लोकों क उल्लेख द्वारा टीकाकार न ग्रंथ क विषय की पुष्टि की है । ग्रंथ के मूल और टीका को प्रारम्भ करने क पूर्व गीताकार न विभिन्न विषयों पर अपने मत दिये हैं । आत्मा के सम्बन्ध में पृ० स० ४ में— गीताया ॥ नैनं द्विदति शस्त्राणि नैनं दहति पावकं न चैनं कनेदयत्यापो न शोषयति मासत १॥ सा जीव नित्य है ॥ पूरव अघ्यासचन्वौभाषै है इत्यादिकन कोलय विक्षेप है परन्तु जीव का नहीं ॥ शयकालप्रयावस्थाविषेअपरिच्छिन्न है याने ध्यान ॥'

गीताकार न अपन विषय में पृ० स० ३ में लिखा है—“श्री अमनरायनदास प्रियाप्रियप्रगनी जीवन रसिकरसाल प्रभु तदा पुनिविस्तुप्रभुमर्षजमहेय रविरागिवरुण कुवेर शप गणेश सुरेश ॥१॥

जाकी सत्ता पाय क समही हात ममर्थ
 अपन अपन दाम क सकल ममारत अथ
 जब जब रात्रम देत दुप बाहुकीनवसाय ॥
 व्याकुल किरत विहान अति महाकष्ट का पाय ॥

पाधी क टीकाकार प्रयादाम ह । ग्रंथ अपूर्ण है । गीता क पुव भूमिका विस्तृत है । पाधी का भाषा अर्थ और मंत्र में मिलती-जुलती है ।

२—पोधी के लिपिकार का नाम प्रारम्भ या अत म नहीं है । लिपि की शैली प्राचीन और अस्पष्ट है । लिपिकार काइ कबीरपंथी वैष्णव साधु प्रतीत हैं । प्रारम्भ में नन्दगुरु-कबीर का नाम लिया गया है । गीता अच्छी है । मा० ला यह संकेत मूल ग्रंथ क लिए है । ग्रंथ में उद्धरण गीता वामन पुराण और पद्म पुराण से किये गये ह । ग्रंथ की पृष्ठ सं —४ में हनुमन्नाटक में भी उद्धरण किया गया है । ग्रंथ अनुसंधेय है ।

३—यह ग्रंथ कबीर स्थान (तपसा मुग) में प्राप्त हुआ ।

[१०] सतनाम—ग्रंथकार—X । लिपिकार—X । अवस्था—अज्ञेय । पृष्ठ सं०—१८ ।
 प्र पृ ५ लगभग—१८ । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
 निर्वचन—X ।

प्रारम्भ—(पतले अक्षरों में)

“कलकार है जगत को भावी सुतत्रत तीनों अक्षर त न्यागे न हिमहीने
ही बात यौ प्रवान वेद मन तो
ताहिते कहत है कवीर तीन अंरु जोर मोर और कहैगते अगत को । २
(मोटे अक्षरों में) क ब्रह्म श्रमीनामेपु ॥ विद्यमाण विशिष्यते रमंते श्रवभुतानं । यत
कवीरस्य उच्यते ॥३

(पतले अ०) टीका ॥ जल में कवीर और बल में कवीर
पात्र तत्त में बने कवीर तीनि गुन में कवीर है ।
विद्यमाण जान यौ विगमना है
जन हेके स निमु दिन उथा उगन में नीर है
थावर और दंगम जत जीव जगत मो है
रली भरपुर जैसे जटित जजीर है
ताहिते कहत है कवीर तीनि अंरु जोरि
मोरि मोरि और हिनगावै त अधीर है ॥३॥

(मोटे अ०) मूल ॥ क मुख मागोरो दाता ॥ बीज जान तयव च
रहितोआदि अंतेण । यत कवीरस्य उच्यते ॥४॥

(पतले अ०) टीका । कहत ककार नुप नागर दातार यहै
ध्यान को श्यामाशुर जान बीज बानी है
रटत रकार मोर हित आदि अंत मध्य
कहत नहत जाकी अकथ कहानी है
गुगै कै मो गुर जोई बाये मोई म्वाट जानै
नुपचाप होईक कज वान न बपानी है ।
ताहिते कहत है कवीर तीनी अंरु जोरि
मोरि मोरि और ही कहैगे ने अजान है ॥४॥”

अन्त—मूल ॥ (मोटे अक्षरों में) कपटस्या पट ज्ञेया ॥ पिचारो परमार्थक ।
रागद्वेष विनासश्च ॥ यत कवीरस्य उच्यते ॥२६॥

(पतले अक्षरों में) टीका ।—रुपट प्रछेदा ॥

“सवते सिरे है पर सुन्य पर कर्न काज कारन ॥

ककार सब जगणि शतार यह ॥

कहत बकार सो विचार करौ ॥

बार बार जन जग माह जानौ मानो मार शार यह ॥

राम राम रटवहै आठो जाम काम सोई सोई निजा

नाम धाम धाम है रकार यह ॥

ताही ते कहत है कवीर तीणि अरु जोरि मोरि माथै ॥

और नर्क निरधार यह ॥३४॥

(माट अक्षरों में) मूल ॥ कमुन्नाय जया भावा ॥ विमला चन्द्रजियागता ॥
धारना मुभ लोकाना । यत कबीरस्य उच्यते ॥३५॥

नियम— कबीरस्य का द्वागानक भाग्य ।

१—यह पुस्तिका अपूर्ण है । आरम्भ और अन्त के पृष्ठ फट जाने के कारण प्रथम का नाम प्रथकता लिपिकार काल आदि के मूषम में ज्ञात नहीं होता है । अन्त के कुछ पृष्ठों पर सतनाम लिखा है । यह नाम प्रथम के लिए उपयुक्त प्रतीत नहीं होता । इसमें के आरम्भ वणा के आधार पर कबीर की स्तुति दारानिक पद्धति से की गई है । मूल प्रथम मन्त्र श्लोक में है और उसकी नीचा हिन्दी पद्य में । मूल श्लोक के प्रथम के पदान्त में यत् कबीरस्य उच्यते और हिन्दी पद्य के प्रथम के अन्त में तीनी अक्षर जोरि आदि ह । ममी ४८ पद ह किन्तु पृष्ठ-म० २ म आरम्भ होकर पृष्ठ-म० १७ तक लगाता ह । बाप के दो पृष्ठ नहीं ह । १०वें पृष्ठ में दो पक्तियों मात्र हैं ।

२—पुरितका की लिपि स्पष्ट और सुन्दर है । लिपि-शैली, यद्यपि प्राचीन है तथापि व 'ओ' 'ब' क्रमशः अपने स्वरूप में ही लिखे गये हैं । 'स' के लिए 'य' और 'च' के लिए 'य' तथा 'य' के लिए 'य' के नीचे विन्दु देकर 'य' लिखा गया है । किन्तु 'य' यहाँ अपने शुद्ध रूप में ही लिखा गया है ।

३—यह पुरितका कबीरपथी मठ (तिघरा मुगेर) के एक साधु के मौजन्म से प्राप्त हुआ ।

प्रथकार—X । लिपिकार—प्रेमदास । अन्तथा—अच्छी बीच-बीच में पद्य है । पृष्ठ—१५० । प्र पृ प लगभग—२८ । आकार—
। लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ—॥मगल॥

दिनन कहा दयाल भक्ति की पन करा ॥
मरया आपकी लाज यह ग्राह्य जिन करा ॥१॥
नउ द्वार विकार धारना का वगै ॥
भगी मुरति नहीं टहराय नगन कैसे लगे ॥ ॥
पाच तस्य गुन तीन का साधर सा लीया ॥
जम रापै मिल माय ता जंदन फाँदिया ॥३॥
त्रिगुण फामि फनी आप माया मद जान में ॥
भौ मागर क बीच महा जचान में ॥४॥
मोछ मुक्कन जब हाय दया जन पै करा ॥
देरा कदा कर्म विकार दम कानी करी ॥५॥

मानव कर्मीरपदि छोर अरज एफ मानिय ॥
हमे पतीत उधारि मरन मारिथ प्यानये ॥६॥”

अन्त—॥टेक॥

“मन करि धीत पायाकरि बानी ब्रत जान करि वाती
पंच नत ते रीप गजोया पल अषय दिन गती ॥१॥
चित बंदन ओ ध्यान पुगधन अनहद घट बजाई
अज पापुनि भाव करि भोजन मन ना भोग लगाई ॥२॥
चवर मुन अषयान गावना नावक पाट लगाई
भीतर हरि पुजि पर मे गुर अन्म पुहुप चटाई ॥३॥
मष मृदग गग हर धुनि उपजे अनहर वाजे वीन
ब्रह्मा विष्णु महेश नागद मङ्गल नाच लोलीन ॥४॥
काल निरुदन मुर नर वदन मतन पुरन अधार
कहै कबीर भक्ति येक मार्ग आनागमन निवारि ॥५॥”

विषय— कबीर नादित्य । दार्शनिक ।

टि०-१—पोथी के प्रारम्भ या अन्त में पोथी का नाम नहीं दिया हुआ है । प्रतीन होता है—कबीरदान के अनेक ग्रन्थों का टसमें लघुकाय, संक्षिप्त संग्रह है । इसमें नाबी, रमैनी, मंगला, गगलाविलास और नेहरा तथा होरी आदि है । रचना सुन्दर, दृश्य और दार्शनिक है । स्थान-स्थान पर नियुक्त, रहस्वारी भावना का बड़ा ही गम्भीर पुट है । यों तो पाच ग्रन्थेय पय के अन्त में 'कहै कबीर' ऐसा लिखा है किन्तु पृष्ठ नख्या ३५ और ३६ में श्री धर्मदानजी का नाम आया है जो श्री सत कबीर साहन जी ही शिष्य-परम्परा में से कोई सम्भव हों । 'सतगुरु' की सर्वत्र चर्चा है । ग्रन्थ अनुसंधेय है ।

२—पोथी की लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है । प्रारम्भ के ७ पृष्ठ फटे हुए हैं और ८ से प्रारम्भ होने पर भी दो पृष्ठ जीर्ण हैं । अन्त में भी पोथी अपूर्ण है । पृष्ठ १० १०१ तक दी गई है, बाट क ४६ पृष्ठों में न० नहीं दी गई है ।

३—यह पोथी श्री कबीरमठ, (तिषका, मुगेर) में प्राप्त किया ।

[१४] युगलक्ष्मोत्र—ग्रन्थकार—श्री मद्द । लिपिकार—X । अवस्था—अच्छी । प्राचीन देशी ऋगज । पृष्ठ—१० । प्र० पृ० पं० लगभग—२८ । आकार— । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ—रगविभास—

“उठत भोग लालज के नगतें लुंजकी कसत रायिकाप्यारी
खिसी खिसी परत नीलपट सिरतें नशीवदनी नब चौबनवारी
सनभावती लाल गिग्धरजू की रचिहै विधाता सुहृथ नबानी

नै धा भङ्गुरति रग भीनें प्राय सहित दखे निकुज विहारी ७
 प्रात सुप्ति मिला भगल गाव लाल लन्ती को मन्वी लन्तवें
 रहमिकेनिकहिहीयें भाइ राधामाधव अधिक हिताइ
 प्रेम मन्त्रमकें वचन सुनाइ सुदरी हरिमुख दर्शन पाव
 भाल विशाल कमलदलननी म्यामास्याम परम सुखनी
 जै जै पुरकरताल बजाव गीतवाद्य सुचाल मिलावें
 हीयेंहाव भावलियें थारारतिघृतज्यातिवात विहारा
 तनमनमुक्ता चोक पुराव थारानि श्री भङ्ग अमिङ्ग परचावें १'

अत— रागकेतारी—

कृती कुमुदनी मरु सुना
 "मुनातीर धीर दाऊ विहरत कमल नील क' भाइ
 नील वरन स्यामा रुच कीनी अरुन वरन ता हरिमन भाइ
 गी भङ्ग लपनी रह अमनकर मानी मरकतमीन बनक जाराइ १०२
 स्यामा स्यामपदपावै साइगुरु मतति अति रीत जा हाइ नद
 गुवन शृपमानु सुतापद मचै तजै मन अति जाइ
 श्री भङ्ग अन्कि रह स्वामिपन आनक हे मनि सब छाइ १०३

दाहा— धा भङ्ग प्रगणित जुगलसत पनै कटाप्रेकाल
 जुगलकाल अवलोकमें मिनै निपैजजान १०४
 इति श्री युगल सत सपूर्ण ।

विषय— कृष्णमन्त्रिकाय ।

१०-१—दम प्र ३ में कविचर भट्ट न राम और कृष्ण न प्रेम का बन्धा ही
 आकर्षक और मनोरञ्जक वर्णन किया है। दमकी भाषा प्रजभाषा
 साहित्य में मिलती-जुलती है। प्रजभाषा न कवियों के समान ही
 विभिन्न रागों में रचना की गई है। एक राग के बाद दाहा का
 समावेश है। वर्णन बधा ही राचक और हृद्य है। शैली मन्दर
 है और भाषा प्रभावकारी है। प्रथम अलुमधय है। प्रथम के प्रारम्भ
 के दो पृष्ठ पढ़ें ।

—प्रथम की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है।

३—यह प्रथम श्री कवीरमठ सानपुर के महतनी के मौजय स प्राप्त किया ।

[१५] सतनाम विहगम—प्रथकार—गुरु नानक साव । निापकार—X । अवस्था—
 अन्त्री प्राचीन शैली कागज । पृष्ठ—१९, १ । प्र० पृ० ५० लग
 भग—३० । आकार—X । लिपि—गुरुमुखी । रचनाकाल—X ।
 लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ—माखी ॥ हुक्म रजा चलनानानकालाम्बयानानाकमकापरमारथतवअमाकहया
 सिधुजामिननरदनाआवनजाननागभूखवजमारमबइसनोदुकुमपरमरवरनेवीचहै ॥

अन्त— “वाहेगुम्निर्माणहैजापयाहोमपुनीत निमपगपतनानकातराविहगम चीट,
 पौडी— बोवैवमकरलेततसजीया अमृतनामहोतहिचीया
 हैहैहटामूधकरिरावैपी अमृतएहोमनननतिरापै
 जगे ग्यान क्रिया मनमाहीजोचीनेमो भरमैनाही
 रारेरागबहुत अनकार नानक जबजव उतर पार
 इतीविहगमंपरन मुलाचुकावजणअम्बरलागकनामोव पढावा ।
 बोले भाई वाहेगुरुजी, सतगुरुजी, वन्य गुरुजी, वाहेगुरुजी ।
 एऊत्रोकार मतगुरुप्रमाद ॥”

विषय— जपुजी साहब (गुरुजी की प्रथम वाणी)

टि०-१—गुरुनानक साहब के जीवन की एक कथा है—“गुरुनानक साहब सुमेरु पर्वत पर गये, वहाँ गुरुगोरखनाथ और मछेन्द्रनाथ उपस्थित थे। उनके साथ उस समय उनके शिष्य भाई मरदानजी (सुसलमान) और भाई बालाजी (हिन्दू) थे। वहाँ उन लोगों की गोष्ठी हुई। उस स्थान पर श्री गुरुनानकजी ने जो कुछ कहा, वह ‘श्री जपुजी साहब’ नाम से प्रसिद्ध है।” यह ग्रन्थ-साहब का एक गुटका है।

२—इस ग्रन्थ में ‘जपुजी साहब’ के अतिरिक्त ‘सुखमणी साहब’ भी हैं। ‘सुखमणी साहब’ पंचवें गुरु अर्जुनदेव का लिखा है। इसमें उक्त दोनों ग्रन्थों की टीका है। टीकाकार ने मूल ग्रन्थ की टीका के अतिरिक्त अपने भी विचार दिये हैं। ग्रन्थ में, वाणी, साखी और शब्द का प्रयोग है। ‘वाणी’ सर्वथा और चौपाई को कहते हैं। यह एक छन्द है। ‘साखी’ वाणी की व्याख्या है। वाणी को ही ‘शब्द’ भी कहते हैं।

३—इसमें बहुत-सी वाणियों ऐसी हैं, जो प्रकाशित और उपलब्ध ‘गुरुग्रन्थ साहब’ और सुखमणी साहब जपुजी साहब, में नहीं हैं। ग्रन्थ अनु-मंवेय है। यह ग्रन्थ (टीका) अप्रकाशित है।

४—ग्रन्थ के लिपिकार कोई उदासीन-संप्रदाय (सिक्ख संप्रदाय की एक शाखा) के माधु हैं। मूल ग्रन्थ और टीका के अतिरिक्त लिपिकार ने अपनी ओर से भी कहीं-कहीं कुछ लिखा है। लिपिकार ने अपने को ‘विहंगम’ कहा है। विहंगम का अर्थ होता है—अहन्ता एवं अभिमान में रहित। गुरुमुखी में, सिक्खों की भाषा में, ‘माधु’ को विहंगम कहते हैं। ‘अतिथि’ के लिए भी इस शब्द का प्रयोग होता है। उस लिपिकार ने ग्रन्थ की समाप्ति के बाद ग्रन्थ के लिए भी इसी शब्द का प्रयोग किया है। ‘इती विहंगम सम्पूर्ण’ और ‘तिसे परापत नाननका तरा विहंगम चीट’ में दो बार ‘विहंगम’ शब्द आया है। ग्रन्थ में अनेक

स्वर्णों पर यह शब्द चूराया गया है। स्वर्ण प्रतीत हाता है कि लिपिकार कोइ साधु मित्र है या इम नाम का बाद अन्य व्यक्ति।

५—प्रथ में रगनस्थान पर लिपि में बाड़ा अंतर है जिसमे ज्ञात होता है कि या ता भिन्न भिन्न लिपिकारों ने मिलकर लिखा है या लेखनी भिन्न हान क काग्य ऐसी मित्रता है। प्रथ को समाप्त करन के बाद पुन लिखा है—

राम तथा कृष्ण अगम अगाचर अलख है रूप न लखा जाय।
जान की है दीदार किया है का अनार” अति। १७ पृष्ठ और लिखा है। लिपिकार न प्रथ क प्रारम्भ या अन्त में लिपिकाल की आर सक्त नहीं किया है। अनुमान है यह दो गौ साल पूव की पाथी है। इसकी जोष प्रथमत प्राचीन और अस्पष्ट है। पोथी म कइ स्थलों पर उगामी-प्रदाय के अन्त की मी समाचा है। यह प्रथ श्री गुणानव गहब का है। प्रारम्भ क कुछ पृष्ठ फटे हैं। यह प्रथ बिहार राष्ट्रनापा-परिषद् के नम्रहानव में सुरक्षित है। गुहप्रसादजी एम० ए० माहसराय बिहार शरीफ (पटना) क सौजन्य से प्राप्त।

[१६] (क) रामजन्म—प्रथकार—श्री मत्त मूर्यदासनी। लिपिकार—श्री जगेरवर लाल। प्रवस्था—प्राचीन हाथ का बना कागज। पृष्ठ—६०। प्र० पृ० ५०। लगभग—२६। आकार-प्रकार—X। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—वैशाख शुक्ल १४, रविवार—सन् १२८७ साल स १६३७ वि० १८८ ६०।

प्रारम्भ—श्री गनसबीसहाये श्री गगानी सग सहाये श्री बालीजी सग सहाये श्री सरासनाजा सग सहाये श्री पाथी रामजन्म ॥

पता ॥ श्री श्री गुञ्चरनसराज र नीजमनसुरसुधार
बरनोरधुवरबीमलस जोताएकफलचारी
रेकमरासाएकवल एकआसबीसवाम
रेकमरासागमपर आपहीतुलसीदास

शुभीरिनी—बीरीपाकरानववनन पगुवदाकरचारी गौरीसकरकठेवसा सरासनीहीरदेमहेस ताहरचरनमनाराध सार्थीकराप्रभुमार भुलाअध्वर परगामहु गौरीके पुत्र गनस

चौपाइ—बरनागनपतीवीरवीनीवीनाया रामरूपतुमपुरवहुआवा
बरनासगउताअननबानी रामरूपतुममलीगतीजानी
बरना बसुधा धरैनाभाग रामरूपमणे जगप्रतीपाला
बरनोचाइसु नकीबारी रामरूपननरारमनीमानी

अन्त— ॥ पता ॥

सम रानी असवालही बेग कहा ता पाप
मिता समकी माता राम समका बाप

- चौपाई — रामजन्मकाजोनरपट्टचटैवरमपापछँजाइ
सुनीके ग्यानजोनरकरड रामजन्मरुवाअनुमरड
- दोहा— पाशरहापहुतडीननकेमेडीमकतनाक्रोणे,
लीगनीवान्नात्राचराडामगुरुकहोए
- दोहा— मात नग्ग अपन्नग सुन्न वरीअ तुलाऐकसंग
तुलैनाताहीमकलमीली जोमुगलहै मतमग
- दोहा— नामपहलु देवमनीमी ग्यानतुमहारकपाठ
लोचनपटनीगत्रीका परानजाहीकेहीवाट
ऐलीश्रीपोथीरामजन्मसमपुरनस्मापतजोपत्रीमोटेग्यामोलीखाममदोपनादीअते
पडीतजनमोमीनतीमोरीअटलअछरलेवमजोरीअमखतजगवलाल”

विषय— भगवान श्रीरामचन्द्र के जीवन से सम्बन्धित काव्य ।

टि०-१—यह पोथी संत मर्यादास की लिखी है । भाषा कुछ अवधी, भोजपुरी और कुछ-कुछ मागधी में मिलती-जुलती है । इस संत के नाम और रचनाओं का उल्लेख अयतक के किसी भी ‘हिन्दी-साहित्य के इतिहास’ में नहीं हुआ है । अयकार संतश्रेणी के कवि प्रतीत होते हैं, क्योंकि स्वान-स्वान पर जीवन-चरित्र से हटकर इन्होंने दार्शनिक विवेचन भी किया है । कथा का आधार ‘रामचरितमानस’ है । कथा संक्षेप में कही गई है । केवल दोहो और चौपाइयों में रचना है । कुछ स्वानो पर अन्य रागों का भी मिश्रण है । इस रचना पर भक्तिकाल का प्रभाव प्रतीत होता है । अय सुपाठ्य और विवेच्य है ।

२—लिपिकार ने पोथी के अन्त में अपना परिचय देते हुए लिखा है—
“दमखतजगेवलाल जीलागोरखपुरहाल परस्हरलकलकता महलै टंडडल-
बगान मनबाहसै ८७ सालमहीनावैसाखसुदी १४ दीन अतवार के तईआर
हुआ ।” इससे ज्ञात होता है कि यह पोथी कलकत्ता में लिखी गई
है । लिपि पुरानी और स्पष्ट है ।

३—यह पोथी शहीद-द्वारका-पुस्तकालय, गुशारपुर (पटना) से पं०
वासुदेवजी साहित्याचार्य के सौजन्य से, प्राप्त हुई है ।

[१६] (ख), रामरतनगीता—अयकार—श्री नंदलाल कवि । लिपिकार—श्री जुगेश्वरलाल ।
अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ—६४ । प्र० पृ०
प० लगभग—३२ । आकार-प्रकार—X । भाषा—हिन्दी । लिपि—
नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—पौष कृष्ण ६, शनिवार
सन्, १२८७ साल, सं० १६३७ वि० १८८० ई० ।

प्रारम्भ—“श्री गनेसजी सहाए श्री महादेवजी सहाए श्री सरोसतीजी सहा श्री
गगाजी सहाए श्री पोथीरामरतनगीता ।

टोहा— पहीनेगुरकगाणेधीहगुररचावदान
 पानीभापीव भया अलखपुखनीरवान
 अलखपुखनीरवानहे कलखैनाकाणे
 हकातावाहीलखैचानाहीधरकाणे

चौपा— सीरीगुरधीमनकउरननगावों वहीपरमागाबीदगुनगावों
 नीरीकीरीननगअमीनवानी गुरपरमाकडुकहोवमानी
 ऐकसमैसीरीनगुगद आरजुनदग मणे ऐक ठाइ
 धूपनीपलेआगतीकीहा चरनाक ले माथ दीहा
 हाथजारीअरजुनभाठाठै तुमकमाआमोहकम बा

टोहा— तीनीपाककेठाडुरप्रभु भाव्यी वचन ।
 बीनतीकरा अधीनहाणे दीन तु नंदलाल

चौपा— ससोकेपरभुआहैचीनमारकहतहीनापदुनाकरचारे
 श्रीकारीसनवानेबीहसा आरजुनकहैमुनोजदुरा

टोहा— रामरतनगीताकर अरजुनकीह अजुसार
 सकनसीरीमी मुनैचीतदेइ सुकतीहाणेममार

अन्त०— ॥ चौपाद ॥

दिवनकपाणैहेगीतामानुषपणैमाहाएनीरचीता

गीत पणैमुनैचीतसा दुखदारीदिसभजाऐपराइ

आपुत्रीजापरानीहाइगीत मुनैपुत्रकलहाइ

बरम्हम्यानमत्रएहआही परभततुवरी आरजुनराखा

तीनेंताकजाभरीपुरीराखा

सीरीमुखगातास्मपुरनभेटआरजुनकैमसैछुगीगणैउ

टोहा— सीरीकीरीमन आरजुनमीलै गुणकीहऐकपाव

स भगवंतहीतभणै कृमल सीधपणहान ममारन

विषय— राम-नाम महिमा का दार्शनिक विवेचन ।

टि०-१—संघकार का नाम संघ क आदि या अन्त में नहीं है । प्रारम्भ के पद्यों में एक स्थान पर बीनती करी अधीन हाणे गीनचपु नंदलाल' पण आया है । 'नंदलाल भगवान् श्री कृष्ण क लिए आया है क्योंकि इस पद क पूर्ण श्रीकृष्ण का प्रसंग है । यदि गीनचपु स श्रीकृष्ण का बाध हो सकला है तो यह ('नंदलाल) संघकार क नाम की आर सक्त कर रहा है ।

२—पापी की भाषा अर्था और पच्छिमी भातपुरी स मिनती-जुलनी-मी है ।

३—इस पाद्य में राम-नाम की मन्त्रिमा व माथ-साथ दार्शनिक विचार की है, जैसे —

आरजुनमनोकीगनकहरी रामभजन त गबसुगअहरी

मरीनामारत्राप वैका ताकरशुमीगुरभैमनगद

महीमामोरीजोपावैमोहीममाहोएमोए
सभमीली ।

वचनमोरसुनोजदुराड नाम ङ महीमा कहतना आऽ
एहेमामीकोईकहतना आवै नामके महीमाकहतन आवै
आरजुनउठीकैअस्तुतीलाड जोगजीवनकहायुम्माड
तेहीतेमकलपापवहीजाड नमवरममोहीचीतदेड
जहीबीधीमोरहोएउधारा मोही नंभाग्योनदकुमारा”

६१ पृष्ठ के इन पद्यों में नाम, योग, वर्म आदि के सम्बन्ध में संकेत है। पूरे ग्रंथ में डगी प्रकार कृष्ण-अर्जुन के परस्पर-संवाद के रूप में विषय का विवेचन किया गया है।

४—ग्रंथ में ‘ए’ के लिए ‘ऐ’ का और ‘ऐ’ के लिए ‘एय’ का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार ‘प’ के स्थान पर ‘म’ और ‘म’ के स्थान पर ‘स’ के नीचे त्रिन्दु देकर प्रयोग हुआ है।

५—ग्रंथ विवेच्य और सुपाठ्य है।

(क) और (ख) दोनों पाठियों एक ही जिल्द में हे तथा दोनों के लिपिकार भी एक ही हैं। ग्रंथ की लिपि प्राचीन और शैली भी पुरानी होने के कारण अस्पष्ट है।

६—यह पोथी शहीद-द्वारका-पुस्तकालय में, ५० वासुदेवजी साहित्याचार्य, प्रवानाभ्यापक, डी० ए० वी० मिडल स्कूल, खुशपुर (पटना) के सौजन्य से प्राप्त हुई।

७] ज्ञान-दीपक—ग्रंथकार—सत दरिया माहव । लिपिकार—बुधनदास फकीर । अवस्था—अच्छी, हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ-सं०—१८७ । प्र० पृ० ५० लगभग—३६ । आकार—६" X १०" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—साद्र, कृष्ण, १८६५, बुधवार ।

प्रारम्भ—“बाहा माहव जीदा जाग्रीत हस उचारन सुक्रीत दरीआ माहव सतगुरु ग्रंथ भाखल ग्यान दीपक नाखी प्रेमजुक्ती नीजुमूल है गुरगभीकरो मूया दा आ दीपक जवही बरे दरसननामश्रया प्रथम ही सतगुरु नतकरमा उ दा आ मे उकर दरसन पाड नीतून घरी जवही गुरु मीले उ आनद-मंगल ललीत लोभए उ भौतरनी गुरग्यान अनूपा नो मम ही टैव मे उ नरुपा प्रगटकरो फीरि रायु नमोड जेन फनी मनी नाही जात वीगोड पत्र माव ऊमी अक नीखा पोवै प्रेम वीरला कोई यता ग्यान अकुर रत राहा जो समिता चला प्रवाह प्रेम रश रमिता तामे मत सुघट भव तरनी अति सुररूप माप्राजात नावरनी पटे सत सुय जानि पुनिता भव-शात्र नाही होद्विअनीता जठ जनता मे देपि भुलाना लहरी उतग मम ग्यान छपाना लहरी फिरंग फिरता रहै मदमयिता के मूल परे भवन मे मरभि कै भए वो कठीन तन सुल

सुधर शत मनि मुकूता जैरा शामा शाभित बूधि जनतै शे
निन निज ऊरध गाँ गुन ग्याना ॥'

अत — भए धा मपुरन ग्यान सतगुरु पन पावन फरा उवर वमत मूचान जी हिं
गयीनी वा वीवेक एह ममत अठारह सैं सैंतीस भादौ पौथी अमार
मावा वा मजन वरइनी गौ दरी आ गवन वा चार भाटा वनीवार मुक
गवन कीना छपलाना वा जन सन्द वीवेकी आ मेटे नकल सभ सोक ॥
समत १८६१ प्रथ ग्यान दीपक सपुरन भइल वार सुध क मरकार
साहाबा मोचपुर प्रगन ननवारी तपवीमी मौचि धरकधा तप्त पौराथै
प्रवाना समुगलेना दरीआ माहब का अरधान है प्रथ ग्यान दीपक मर
नन कीआ सुधनदास फकीर दरीआ पथी ।

नियम— नत परम्परा की नियुंण धारा का दार्शनिक विवेचन ।

टि०-१—पाथा क पदन म पात हाना है कि दरिया माहब की यह अतिम कृति
है । इत पोथा का अतिम पद "समत अठारह सतीस भादौ पोथी
अमार भादौ वनी वार सक गवन कीवो छपलोक में स्पष्ट सकेत
है कि उनके देहात के बाट उनक नन विचारों का सप्रह किया गया है ।

२—नारया माहब बिहार प्रात क आरा (शाहाबाद) जिले के घर
कधा' प्राम के निवामी थे । इनके विचार अतिकतर सत कबीर के
विचारों से मिलते ह । इन्होंने नियुंण विचार धारा को परिपुष् करते
हुए ननो प्रथ लिभे हैं ।

३—म महान् मत-सम्बन्धी अवेपण आर इनकी कृतियों क प्रकाशन स
जहाँ हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि हागी वहाँ बिहार प्रदेश का भी गौरव
बढेगा । यह पोथी पन्नामिनी क भाग्यन-निवामी प घासुदेव
शम्माजी क मौजन्य से प्राप्त हुइ ।

[१२] रामचरित मानम—प्रथकार—गो० तुलसीदास । लिपिकार—धी रामसहाय सिंह ।
प्रबन्ध—अष्टी, कागज—हाथ का दना पेशी । पृष्ठ-स०—
२६६ । प्र पृ ५ लगभग—४२ । आकार—१०" X ७ १/४" ।
भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—४ । लिपिकान—
पाप शुक्ल गममी मंगलवार स १८६४ वि० ।

प्रारम्भ— जरी शुमीरत शीधी हाए गननाएक करीवर वदन
करहु अनुग्रह शाण कुधी राशी पुम गुन शदन
मुक हाए वाचान पगु चन गीरीनर गहन ।

अन्त— "ननि गीरामचरित मानस गकन कनीक लुक वाशगना नाम उपकाह
रामानेन क्कतनुलशीतरागपुन्य पया दरसत तथा लीक्यते म्मदाप
नदीअन पन्तिजनशागीनती मारी छुग्न अत्रनेवगव जोरी गी

जयन्त १८६८ जाल पुश शुद्धी गेज भगन में पोथी तेग भएल नु
नैवार हुआ। '। गीं गमगहाण, जीव काण्य ग
मो जम्हे प्रगने हाजीपुर ' ।"

विषय— राम-जीवन-वैद्यों काव्य ।

टि०— रंग पोथी की लिपि प्रचलित, प्राचीन वैद्यों लिपि में मिलती-जुलती है।
पोथी में कई स्थानों पर प्रचलित प्रतियों में पाठ-भेद है। पोथी के लिपि-
कार ने, प्रतीत होता है, उनके अनिश्चित अन्य पोथियों की भी प्रति-
लिपियों की है। यह पोथी 'विहार राष्ट्र भाषा-परिषद्' के दफ्तरी
जन्म दिन प्रकाश दिहने प्राप्त हुई।

[१६] वैद्यरत्नार्णव—अवकाश—रामाप्रसाद शुक्ल। लिपिहार—X। श्रवस्था—नावारंग
हाथ का बना कागज। पृष्ठ-१०—८७। प्र० पृ० प० जगभग—३६।
आकार—६' X २'। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—
चैत्र शुक्ल १३, १२७७ साल, ब्रह्मपतिवार। लिपिकाल—X।

प्रारम्भ०—“अथ अमर्त्यापत गेग प्रनारिकेल लवनलिपिद्वय ॥२६॥

नारिकेलजलतोला ८ मिथानानतोला ८ पोरानानिवचतोला ८ तिनो
दवा को नारिकेल जलमाहिपलरिनारिकेल के मित्र भरिक पति
नाड को निल पादपठ सृत्तिकादेक गज पुठमाहि बुक देना सित नहोपत
काठमाणा ८ यम्य जललेपायतो दिन १८ माहि अम मंचित जाय
अगर भूमि के नाय पायतो भूप अविज लावय ॥२॥१०॥३०॥ अथ
दवावायु ॥१०॥१॥स्योराम वायु का लिपिद्वय ॥३०॥ आठ किसिम के
वायु कि गोलि ॥३०॥ मूलक। जावत्रि। लवंग ।”

अन्त०—“मोडर शताप्रका ववावरदम्नापासिरोग ॥ कुमजम १ कयाच
विजरदरार्चनि ३ चानाड का विज ८ गात्र विज ५ जायफल ६ जावतृ
७ पिप्रमो ८ चतरा ६ केशर १० र्जमस्तक ११ अशगनागोरि १२
चिरिचिरि का विज १३ पत्रज १४ अक्रफुरा १५ चरकमि १६ धनिया
१७ रेलका १८ काकोति १९ तालमपाना २० पोस्ते का दाना २१
अजवाइन २२ अरुमि २३ कमलगठा २४ कृकाटिविज २५ इन्द्रजव
२६ मृग २७ नाहिलानिज २८ लौंग २९ सबद मस्मभारोचूर्न के
अमनहित मिलाय माशा ६ प्रमानमोटक बनाय जाय पायतो दिन २१
माहि निश्चय रोग का नाय ॥ इति श्री रामप्रसादशुक्लपोशक
वैद्यरत्नार्णवस्त्रीचिकित्सावानक रोगचिकित्सानानारोग चिकित्सा अस्त्यो-
नाम अन्त्याए उभास्तातेयि १३ मूलपद्यचैत्रमास वार ब्रह्मपति
मन् १२७७ साल ।”

विषय— आयुर्वेदीय चिकित्सा ।

त्रिपत्र—यह पाथा प्राचान है और आयुर्वेद की जिन आवधियों का बखान किया है उन हा ३ महत्त्व की है। इसमें अनेक रागों, उपरोक्तों तथा उनके निराकरण की प्रायुर्वीय दवाइयों तथा उनका उपयोग-पद्धति आदि का विस्तार से साथ साथ अध्यायों में समझाया गया है। पोथी के साथ ही उर्दू लिपि में छापी पुस्तिका है जिसमें यूनानी पद्धति के साथ समवत समन्वय किया गया है। ग्रंथ में चिकित्सा-सम्बन्ध प्रत्येक मन्तव्या का उपद्रव है। आयुर्वेद और यूनानी पद्धति का सम्बन्धानुसंध विस्तरेपण हिन्दी में किया गया है। ग्रंथ नेत्र है। प्रारम्भ के ८ पृष्ठ नहीं हैं। प्रारम्भ में जा पृष्ठ हैं भा वे बीच बीच में फटे हैं। यह पाथा बिहार आयुर्वेद भवन गायन भागलपुर के कावगन नरन्दाधर्मी के साजस्य से प्राप्त हुई।

[२०] चित्तौरीद्वार—ग्रंथकार—अवधकेशव मन्थ वमा । लिपिकार—बशी प्रसाद सुधाकर ।
 प्रवस्था—अष्टी । पृष्ठ-सं०—८८ । प्र पृ पं लगभग—३६ ।
 आकार—१०' X १६' । भाषा—हिन्दी । लिपिनागरी । रचनाकाल—
 भा १४ न १९६८ वि ।

प्रारंभ—'वना (दम) मजल नल तन अगम निगन मन
 त्व सुव विदरत, भगन-सकल कर ।
 त्ररन भग्मत जन मन विचरत
 प्राण-सुव वरमत कमल-नयन वर ॥
 वन वन विरमत, तन-मन विदरत
 ललत चरण न वनत जगत नर ।
 कहत अधम न चरण शरण धर
 सुगपान जगन विपिन अमिल हर ॥१॥

प्रथम सुग (मन्थकान्ता)

शाभाशरी प्रमित शबेरा काम की है कली-मी ।
 चिन्तीभूता भरत-भुवि के माल म है भली-मी ॥
 आशावेला नयन-नितिस माल नावण्य शीला ।
 नाना भावा शान्त निश्चिती अम्परा प्रेम-स्तीला ॥२॥
 ग है ग्या भगत मर ता पद्मिनी-मी विनी है ।
 वर प्यार नभ जगत में चान्नी आ मिनी है ॥
 भारों ग्या पगन-सुवग स्वय की भूमि न्यारी ।
 त्तो पूरी वपान अलका अम्परा भूमि प्यारी ॥३॥'

अन्त— भनों त्वाग कल मन सु वैर मार मिग
 रां शनों नित्र नित्र घरा गाय्य नेके दग

वार्ता ऐसी सुखद करते देश के प्रेम वीरों
प्यारी श्रद्धा मधुर-सरिता बीच में खायें गोते

(६१)

ऐ कान्हा जी भरत-भूवि में फेर हम्मीर होवें
ऊँचा हो जाँ रत सकल हो लाडले देश जोवें
एका प्यारी यह विमल-मी युग के बीच होवें
दोनो हिन्दू यवन एक हों फुट की बीच होवें
इत्यलम् हरि ऊँ तत्सत् ॥

विषय— चित्तोर की लडाई और राजपूती इतिहास में सम्बन्धित वीरकाव्य ।
टिप्पणी— बिहार प्रान्त के पलामू जिले के डालटेनगंज के आस-पास कचनपुर
ग्राम-वासी प्रसिद्ध कावे और साहित्यवाचस्पति अवध किशोर
सहाय वर्मा की यह मत्रह मर्गों की रचना है। यह रचना
हरिऔधजी की शैली तथा 'संस्कृतछन्द-चुनाव' में प्रभावित
है। इसमें अनेक स्थलों पर साहित्य सम्बन्धी तथा कविता,
छन्द और अलंकार के नियमों की त्रुटि रह गई है, जिसे स्वयं कवि
ने ग्रंथ के प्रारंभ की भूमिका में स्वीकार किया है। कई स्थानों पर
शब्दों के चुनाव में भी अस्वाभाविकता है। वर्णन में कहीं-कहीं
प्रमग-दोष भी स्पष्ट है। ग्रंथ की समाप्ति तथा मध्य में भी यत्र-तत्र
हिन्दू-मुस्लिम एकता का नारा बुलन्द किया गया है। रचना में देशभक्ति
कूट-कूट कर भरी है। इसका यह भी कारण हो सकता है कि इसकी
रचना का समय भी वही या जब देशभक्ति और अनहयोग से भारत
गुजर रहा था। ग्रंथ का प्रकाशन होना चाहिए। इसमें (हरिऔध-
जी की शैली के कारण) बिहार का गौरव बढ़ेगा।

[२१] शिव-पुराण-रदन—त्रयकार—कु जन दाम । लिपिकार—X । अवस्था—अच्छी ।
पृष्ठ-१०—६७२ । प्र० ५० प० लगभग—३० । आकार—
६"X ११" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ— दोहा । ब्रह्म शकर उर दम अति, जाति ऊँच निज जान ।
निज-पतिवचक नारि जग, पर पति के मन-मान ॥
चौपाई ॥

बालक मातु पिता नहि मानी । गुरु मत खड विवाद गुमानी ॥८६॥
विद्या हीन लोग संसारी । अपग देश जा विरति बिचारी ॥६०॥
जो कर्दापि क्रोड मिलाहि सहाई । मातु पिता कह निन्द सुनाई ॥६१॥
अपकरनी ते दुख जग माही । जप पूजा माला तेहि नाही ॥६२॥
इच्छा नारि प्रमग मँदाई । चिन्ह जनेऊ ते विप्र बडाई ॥६३॥
छलि तपणी कलि करि अशानाना । पुत्र विचार करिहे वरि ध्याना ॥६४॥

कम स्वर्गन मन्त्रनाड । तान सुकीर्ण नाम ब्रह्म ॥६५॥
 वारज नम न्द्र न भग्ना । तान सभा कुन पानन कग्ना ॥६९॥
 दाग ।—छी छु क प्राता कग्ना सुचतु नवान ।

तान प्रग्न कला मैह सनन श्रविक प्रमान ॥ ८॥

अ त०—

माग नव तानि व्याल इह मीन नीर रहे टक ।
 निमि ट न्न मन गागि शिव न्पत्र प्रेम विवेक ॥१२॥
 वापन नम न चूक मेग राम राम नर पाप
 श्र कु जन पर कग्ना कृपा हरटु सकल मन ताप ॥१७॥
 जन अगरेगु नग में रहे, त्रि शरणा नुम नाथ
 श्र कु जन एक ताहि तनी कानि नमारे माय ॥१८॥
 तुम नकु निहु लाक क हेरटु शिव निच श्रा
 कु न्न हा अपनावा प्रभु म्मुमि गिरद वर जाग ॥१९॥
 कग ली कहीं तहि नाथ चा जानटु ननु तुम आप
 कु जन निच है करहु कृपा न्द्र जाय सताप ॥ २॥

विषय—शिव का आराध्य मान कर शिव-पुराण क आधार पर रचित
 मंगल भक्ति का काव्य ।

टि०-१-प्रथकार म्मन कु जन तस आरा जिने क पैवार नामक म्यान
 क निवासी थे । ऐसा निरेश प्रथकार न प्रथ में किया है । विहार
 प्रदेश के निवासी इस सत ने इस महाकाव्य की रचना करत हुए जीवन
 की कइ उपयाग समस्याओं का समाधान किया है । पूषार्द और
 उत्तगार्द न भागों में विभाजित तथा अनक म्मरणों में वर्णित यह पायी
 पठनीय और विवेक्य है । प्रथक अन्याय क अत म् काव न अपने
 नाम और शिव क प्रति श्रामार्पण का भाव प्रकट किया है ।

२-पायी यनन्त्र पगी हुइ है । प्रारभ में चार पृष्ठ नहीं ह । प्रथ के
 अन में भा पृ २० ६७० क बाद क पृष्ठ नहीं ह । प्रथ के प्रारभ या
 अत में लिपिकार क नाम का निरेश नहीं है ।

।—ऐसा प्रनीत हाता है । क कवि किसी 'दीनबधु दयाल नामक राजा के
 आश्रित थे और उनक एक 'कुजबिहारी नामक क मित्र थे जिनसे श्रभि
 कतर शिवभक्ति सम्बन्धी विचारों का परम्पर आदान प्रदान हाता था ।
 इनका मत या पथ मुंगेर जिले तक प्रचलित था । यथा-प्रघात म—
 "अति सुगम पथ कनेश विनु वर दुलम फल कर पावहु ॥२॥
 कर जारि यिनवा भवानि शकर चरित रत माहि दीजिय ।
 प्रभु दीनबधु दयाल तानी दास आपन कीजिय—॥३॥
 यह कहत सुनत कनेश दूटे भक्ति प्रेम दिगावही ।
 विरवाच कु जनदास उर बडे

क्या समस्त अग्रग क्रि, पाठि इत्य विग्रह ।
 गात्रत शिव गुण ह्य प्रति, गवत सीन्ग मुनिवाम ॥१०॥
 जिले सुंगे मं मा-११, अर्धे रजीग प्राप्त ।
 मोर नाम के मित्र एक, कुच । ११११ नाम ॥११॥
 लेखक कविता प्रथम शिव, उपक मुमति नवीन
 गाठ लिनी शिव यश विमल, पाचड परम प्रवीन ॥१२॥”

ज्ञात होता है कि कविता कुजनदाम गाते या रचना लिगाने
 वे ओर उनम मित्र कुजविहारी उम लिगाने वे । राजा
 'दीनबन्धुदयाल' का नाम भी पोथी के अनेक स्थानों में आया है ।
 पोथी में शिव-पुराण की क्या का आश्रय लिया गया है ।
 प्रारभ के पृष्ठ फटे होने तथा पोंचवे पृष्ठ के बीच के अंतरों के फट
 जाने के कारण इस विवरण में प्रारभ की पंक्तियों छटे पृष्ठ की है ।
 यह पोथी मुद्रित है, किन्तु दुर्लभ है । इस पोथी के आसार पर यदि
 कुजनदाम की अन्य रचनाओं की गोज की जाय ता हिन्दी-साहित्य
 के इतिहास के लिए बहुत बड़े नामची नित मवती है ।

[२७] हितोपदेश—प्रथकार—पदुमनदान । लिपिकार—मिश्रीलाल । अक्षर्या—अच्छी ।
 प्राचीन देशी-कागज । पृष्ठ-५०-८७ । प्र० पृ० ५० लगभग-४० ।
 आकार-८" X ४ १/२" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—
 फान्गुन शुक्ल पचमी, बुधवार, स० १७३८ वि० । लिपिकाल—कालगुन
 शुक्ल एकादशी, स० १६१६ वि० ।

मोरठा ॥

प्रारभ—मिद्धि दे उंस देव ॥ सदा मावु क नाम में ॥
 गंग फेनले—सेव ॥ जासु मीन ममि के कला ॥१८॥

दोहा ॥

जे हित उपदेशहि सुनै, नमकार पट्ट होय ॥
 जामे बचन विचित्र सम, नीति सुप्रद है मोप ॥१६॥

मोरठा ॥

अमर जानि है काय, विद्या वन चितत चतुर ॥
 केम गहे जमराय, वर्म करत अनुमानि है ॥२०॥

दोहा ॥

मर्व दर्वते दर्व अति, विद्या दर्व अनूप ॥
 वन देती परचत अछै ॥ अरचत जाने भूप ॥२१॥
 विद्या मिलवै भूपतिहि ॥ मलिता सिधु गमान ॥
 तापर अपनी भागफल ॥ भोग करै मतिमान ॥२२॥
 विद्या विनय हि देति है ॥ विनय प्याति अनुकूल ॥
 म्यातिभए धन धर्म सुष ॥ ताते विद्या मूल ॥२३॥

१३३ शक्य विद्या न क ॥ अना अन्तर तात ॥
 १३४ न मूरे इमे ॥ नगै लीनि पन मारि ॥ २१॥
 १३५ कौश काश म ॥ कु मकार कृतरप ॥
 १३६ न नी अम्याउ शिपु ॥ नीन कपनि विरेप ॥ २२॥
 १३७ नाना इहा न पुनि ॥ विपत गधि पदन ॥
 १३८ अमुप्र अनुपय मत ॥ विद्या कया अम ज्ञान ॥२९॥
 १३९ ॥

अमु—अथ वन नग्न ह ॥ अत एविकमुन मुस्ताचन ॥
 १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥
 १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥
 १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥
 १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥

१६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥
 १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥
 १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥
 १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥

विषय— १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥

१९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥
 १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥
 २०१ ॥ २०२ ॥ २०३ ॥ २०४ ॥ २०५ ॥
 २०६ ॥ २०७ ॥ २०८ ॥ २०९ ॥ २१० ॥
 २११ ॥ २१२ ॥ २१३ ॥ २१४ ॥ २१५ ॥
 २१६ ॥ २१७ ॥ २१८ ॥ २१९ ॥ २२० ॥
 २२१ ॥ २२२ ॥ २२३ ॥ २२४ ॥ २२५ ॥
 २२६ ॥ २२७ ॥ २२८ ॥ २२९ ॥ २३० ॥

मेवत्र गण्ड इत् नरा ॥ प्रभु अनुगमन पाव ॥
 कवि जन सिप आशिप मुश्रन ॥ इन्हहा पाय भूपाय ॥ १ ॥
 प्रथम भूप कुत नाम कर्हि ॥ तर्ही कया टानहाय ॥
 सुवरन बलिन मुहावनी ॥ भापन पदुमन दाम ॥ ८ ॥
 पैरा पूर्व नित्राप ते पैरवार नई ग्यानि ॥
 वेनु दग त्रियात जग ॥ जानै उत्री जाति ॥
 उपाय ॥

वाघटव भूपाल भूमि भुजवन जिन्ह लीन्हें ॥
 कीनिनिहतमुत्तनय मिह विक्रम जिन्ह कीन्हो ॥
 राममिह तपनिठ कुठ उत्रीठ गयो डिज ॥
 मावो मिह मतीप भयो तमुन्द महाभुज ॥
 तमुन्दन जगत जहाज नृप हेमत मिह तमुवर्मधुर ॥
 श्री राम मिह सुत तासु पुनि नीति निपुन जसु वचन फुर ॥ १० ॥
 दोहा ॥

वृ श्रर करेरो वसु पितु ॥ दृष्ण मिह मात मान ॥
 प्रेम मिह दलेल को ॥ जिन्ह के सरिस न श्रान ॥ ११ ॥
 मरम पितामहूँ ते पिता ॥ राम मिह रणधीर ॥
 तिन्ह के पुत्र पवित्र भुवि ॥ मिह दलेल गभीर ॥ १२ ॥
 करनी मिह दलेल के ॥ वरनी जात न काहु ॥
 वरनी तल से वन्य तम ॥ गुन गन सिधु अगाह ॥ १३ ॥
 तिन्ह श्री पदुमन दाम को ॥ दीन्हो बहु विवि दान ॥
 मार्धान श्रवर मिहात है । निगपि जासु ननुमान ॥ १४ ॥

२—कवि ने ग्रंथ के अन्त में महाराज दत्तेल मिह के पुत्र, जिनके लिए राजा ने ग्रंथ का अनुवाद कराया था, की श्लोक भी संकेत किया है—

“भूपति मिह दलेल के ॥ रुद्र मिह जुवराज ॥

जित्री जलगुजल गग श्रफ ॥ शशु शीश शीश द्याज ॥ २५० ॥”

३—निम्नलिखित पदों में कवि और उनके वंश तथा रचनाकाल का पता चलता है—

“दामोदर कायथ करन ॥ जिन्ह के वर्म प्रगाम ॥

चारि पुत्र तिन्ह के भयो ॥ जेठे मकर दाम ॥ १५ ॥

मध्यम पदुमन गुन गहथ ॥ तथा लाज मनि जान ॥

अनुज कृष्ण मनि गुन-निते ॥ अग्रज डव अभिमान ॥ १६ ॥

मत्रह सै अइतीम जव मवत विक्रम राय ॥

मित पांचे मधु बुध दिवस ॥ रच्यो गनेस बनाइ ॥ १७ ॥

(ग्रन्थममाप्ति-काल) मत्रह मै छयासठि कै ॥

पप पचमी सेत ॥ पदुमन लिखि पूरन कियो रुद्र सिंह के हेत ॥ २५६ ॥

४—अथ श्री समाप्ति पर लिपिकार ने अपना परिचय देते हुए लिखा है—

“अक वरानिधि सिधु महित ॥ मवत विक्रम भूप ॥

पागुन सुकन अफादमा ॥ रविवामर सु अनूप ॥१॥
 मिसरी लाल विचार करि ॥ हित उपदेश विविध ॥
 लिम्बा चाव सा भाव करि ॥ है यत् उगिन पवित्र ॥२॥ १६१२॥
 श्री शीतागमाय नम ॥

- ५-३म वा म न नहा कि पटुमनदान एक महान् कवि थ । इतन
 बर पशु-मय मन प्रथ का हिन्दी पद्यानुवाच करना साधारण बात नहीं
 है । उन्होंने पद्यानुवाच करते हुए पाथी की मौलिकता का समाप्त नहीं
 किया है अपितु लय और भा प्रणाली जाल दिये हैं । रचना अच्छी और
 सुपाठ्य है । लय मद् नवीन एवं अप्रचलित छन्द का भी प्रयोग
 किया गया है । प्रथम प्रकाशन से मिहार का गौरव चोगा ।
 —प्रथम की लय अच्छी और स्पष्ट है । यह पाथी मन्लाल पुस्तकालय
 में भी है । वहाँ की प्रति से यह मिलता-जुलती है । मन्लाल
 पुस्तकालय (गया) के संस्थापक और महाकवि श्री मूरज प्रसाद
 महाजन की कृपा से प्राप्त ।

[२३] (क) हनुमानचोध—प्रथकार—करीबाम । लिपिकार—ग्यानगम । अवस्था—
 प्राचीन । हाथ का बना देशी मागन । पृष्ठ-सं०—२ । प्र पृ
 ५० लगभग ४ । आकार— ५८ । भाषा—हिन्दी । लिपि—
 नागरी । रचनाकाल—५ । लिपिकाल—पान्थुन कृष्ण पञ्चमी
 रविवार सं० १७७८ साल ।

प्रारम्भ—सतमुकान आप अन्नी अन्तर अमात पुनपमुनिदर करना मैं कबार सुरत
 जाय सतारन धनी प्रेमदास ॥

सुकतामनी नाम सुरामनी नाम ॥ सुदरमन नाम कुल पतनाप्रबोध
 गुरवान्ना पीर (अस्पष्ट है प्रन् के मद् अश फटे ह)

(३ पृष्ठों क बात्) माया। सुनासुनांद्र मार गात । राम नाम है आहा ॥
 सो दसरथ घर अन्तर ॥ जानका मता अगाध

॥सुनादवाच॥

कहै सुनींद्र वचन हमारी ॥ मातु भाव तुम सुनही जानी ॥
 राम राम सम जगत कहाइ ॥ कहै साधु जन नाहा भाइ ॥
 राम नाम हम नीक कै जाना ॥ तुम का हमस करहु वपाना ॥
 रमाता राम बन सय मानी ॥ ताहा राम तुम जानत नाही ॥
 ऐह तो राम है अवताग ॥ जीन लकापनी रावन मारा ॥

अन्त—जाती सम्प वस्तु है भूषा ॥ नीरचन है का आ माही ॥

माभा करी क है छाही ॥ रराकार गरज ब्रह्मदा ॥ सपतईप प्रगटे
 नवपना ॥ प्रथम ॥ अमयीर वसत बन धरवाता ॥ ताही का
 काइ चीहत नाहा ॥ ताते मभ जग गहै भ्रमाइ ॥ ।

विषय—कधीर-साहित्य ।

टि०— यह ग्रंथ अमूर्त है। इसमें राम और सुमान के जीवन-चरित्र के आधार पर कबीर के सर्वांगिक विचारों का प्रतिपादन किया गया है। यद्यपि ग्रन्थकार का नाम स्पष्ट नहीं है, तथापि कई स्थानों पर पद्यों में 'कबीर' का नाम आने से उनकी ही रचना प्रतीत होती है। कहीं-कहीं 'सुनाइ' नाम भी आया है। तो यकना है, इसी नाम के कोई ग्रन्थकार या कवीरपरी हो जिनके साथ कबीर ने सर्वांगिक रूप में द्वारा विचार व्यक्त किये हों। इस पोथी में 'जाया' शरीर को 'माया' तथा गरीब-व्यथित आत्मा या परमात्मा को 'निर्जन' कह कर निर्गुण ब्रह्म की विवेचना स्वयंमान पर की गई है, जिससे कबीर के सिद्धान्तों की पुष्टि होती है। यह भी समझ है कि 'सुनाइ' से अनकालि सुनियों की ओर संकेत हो, क्योंकि प्रथम में अनकालि सुनियों की अवतारणा की गई है। प्रथम कर्त्तव्य पृष्ठ फटे होने के कारण कुछ अक्षर छूटने नहीं पड़े जाते हैं। यह पोथी अमूर्त गुरुद्वारा प्रकाश तथा अमूर्त गुरुद्वारा प्रकाश (२३० अमूर्त मातृ प्रकाश द्वारा नष्ट) अमूर्तवाद, गुरुद्वारा (पटना) के साक्षर से प्राप्त।

[२३] (ख) गोरख-गोष्ठी—ग्रन्थकार—वसंतदास । लिपिकार—जानदास । अक्षर—अच्छी । हाथ का बना, देगी कागज । प्र० पृ० ५० उगभग—८० । आकार— ६" x ८" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—x । लिपिकाल—काल्पित कृष्ण पंचमी, रविवार, मत् १२७८ साल ।

प्रारम्भ—मननाम मत सुक्रीत आठ अठनी ॥ अजर अमीत पुरस सुनीदर कहनामय कबीर ॥ सुरत जोग नतारेन ॥ वनी वसंतदास पारगुरु वस आनीस की क्या सो लीपते गरव गोरप सुष्टी ॥

कबीरगोष्ठी ॥ माथी ॥ मनमत मत सब कोई कहै ॥ मन ना चीन्हे कोऐ ॥

मत मत्प चीन्हे बीना ॥ जीव सर जाही बीगारे ॥

चोपाई ॥ तत बचन सुप अम्रान वानी ॥ मतही चीन्हावै सो गुरु भ्यानी ॥

अन्त०—माथी ॥ सुनीगोरप मत मानी आ ॥ छुटी गये श्रमकंड ॥

गुरु कबीर मनुकाई आ ॥ मेढको उरुन टुप दंड ॥

नवो नाव चोरानी धिया ॥ ईन्दको अनहट जान ॥

अपकीर कर है कबीर को ॥ ऐह गती वीरले जान ॥

अछरमे नीह अछर ॥ नीह अछर मे नीजनान ॥

नीनी अछर जो परपै ॥ पावै पट नीरवान ॥

मत कबीर की माथी ॥ आवी पुरप को ध्यान ॥

नीसा मई गोरप की ॥ पा आवै नीरवान ॥

एतो दा गारमनाथ का ॥ गुग्गु नपुरन ॥

या द्वासा मा लिखा मम नाप ना ॥

सकल मंत्र मन्त्र का बंदगा माण दुग्गु अक्षर पठन मंत्र जाग ॥

मन्त्र ध्यान नाम मन्त्र क दाम ॥

शामक मन्त्रामा नैगार हुआ ॥ अक्षरहा का हरापुर ना ॥

मन् ॥ ११ ॥ ३८ ॥ मन् ॥ कामुन बरी ॥ पचमी ॥ राज ॥ रवावार ॥

वि०— कबार-साहित्य । धमनाथ आर गारमनाथ के बीच हानवाने प्ररनाथ क रूप में ।

टि०— यह पाया धम म क साथ गारमनाथ या मिना अथ गारमपथा मन् क साथ दुग्गु गारमनाथ क रूप में लिखित है । प्रथम क नाम स ही स्पष्ट है जाना है कि हमें कबीरपथ आर गारमपथ की तुलना की गई है । हम चारोही सिद्धियों तथा अनहन्ना क ऊपर भी प्रकाश डाला गया है । प्रथम विवन्त्र एव पठनीय है । प्रथम की लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है । प्रथम चर तत्र पठ है । यह पायी अचोरी गुग्गुशरण प्रकाश, अनासावा गन्नाबाग, (पन्ना) के सौजन्य से प्राप्त हुई ।

[७-] (ग)—गुरुद्वीप—प्रथकार—X । लिपिकार—वैरागीलाल नाम । अवस्था—प्राचीन । रंगा कागत । प्रथम ३ । प्र० १ ५० लगभग—४ । आकार—६ X ५ । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—माघ कृष्ण तृतीया बुधवार स० १६३ वि ॥

प्र०—बापद ॥ तबही गुरु जा बालही बानी ॥ कवन देश बसता है जाना ॥ हम बान्त है मन्त्र क मन् । तीन की गति कीन मनहा पा ॥ नाम नाक क ठाडु आही ॥

अन्त—मार्गी ॥ कहुहा कबीर धरमनाथ मा ॥ ऐही बीधी भव वासना ॥ गुरुद्वीप ग्यान जब कीना ॥ हरन बहुत भुआन ॥ धजा करके मुन भ ॥ बापै अनहद नुर ॥

अचन ग्यान करीर का ॥ गहा रगग नामान ॥

हीगए हीने नही ॥ लागै सकल जहान ॥

तेना गी गरप गररबाप ॥ मपुरन ॥ आ म्मा सा लीखा मम दाप न गीमन ॥ सकल मन्त्र की बंदगी माण ॥ दुग्गु बहन अक्षरपत्रीही मंत्र जाग ॥ मन्त्र १६३० क गान ॥ महीना माप ॥ राज बुध ॥ मार्गी तीत्र ॥

वि — कबार-साहित्य ।

टि०—१—प्रथम प्रथम है । इसका लिपि अस्पष्ट है । पाया में कबार क मन्त्रों का विगान प्रकृता हुई है, एसा मन्त्रों का नाम है ।

२—प्रथम के प्रारंभ या प्रथम में प्रथमकार के नाम का उल्लेख नहीं है।
प्रतीति ज्ञाता है कि प्रथम के मूल वर्णमाला का अक्षर 'प्र' है। प्रथम में चतु-
स्र इनका नाम आया है।

३—प्रथम लिपिकार ने प्रथम लिपि में प्रथम लिपिकार-वैरागी लालदास के लिपि में
निम्नलिखित शब्द लिखे हैं—“जीवा नमुद्राण्ड ॥ प्रथमी वरमपुर ॥
प्रथम नमुद्रा-प्राग प्रथमा ॥ महत नमुद्राण्ड के वैरागी लालदास
के प्रथम नमुद्रा-प्राग प्रथमा नमुद्राण्ड का शीला नमुद्रा ॥”
लिपिकार नमुद्राण्ड जिने के प्रथम लिपिकार-वैरागी के लिपि प्रथम में
(नमुद्रा के स्थान) मूल के प्रथम लिपिकार प्रथम लिपि 'मुद्रा-
ण्ड' की जो दिया। यह प्रथम लिपिकार-वैरागी नमुद्राण्ड प्रथम, प्रथमीलालदास,
मूलदीवान (पटना) के पास हुआ।

[२३] (घ)—सुमीरन-दानलीला—प्रथमकार—X । लिपिकार—वैरागी लालदास । अवस्था—
प्राचीन । देशी कागज । पृष्ठ-१० ८ । प्र० पृ० ५० लगभग-८१ ।
आकार—६” X ८” । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी ।
रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—
क—लीनते सुमीरन ॥ दया नागर न्यान आगर ॥ वदुधुधीस्त-
गुरुं ॥ तानुवचनसरोजवधो ॥ सुवदाण्ड सुमगागरं ॥ जौन-
जीतअजीतऊभर ॥ भाखतंसतसुकरित ॥
ख—लीगनेनाऐनमह ॥ वीरगेमतीजी महाऐनमह ॥ वीसुजदेवताजी
महाऐनमह ॥ वीजगवरतीजीमहाऐनमह ॥ वीसीगनाऐनमह ॥

चौपाई ॥—प्रसुरनब्रह्म अक्षय ॥ जंगेगमकीटीत्रहाटा ॥ जगतगुरब्रह्मकराए ॥
मधुराते वीरदावन आते ॥ तहादेवलोगतमजेते ॥

अन्त—
क—वरमदान तत जोली देखो । तनु मैनीहततु है ॥ कहै कवीर नीह-
तनु दरम ॥ आवागवन नैवारिऐ ॥

ख—कीसन घट बजाए आगती ॥ जोली वदन सुवकरं ॥ गीरजा प्रनाड
पावै ॥ जनम जनम को दुख हरै ॥

जो नर गावही दानलीला ॥ सुनैमनचीतलाए है ॥ कोटीजगफत तवही
पावै ॥ वीसनलोक भीवावही ॥ चौपाई ॥ ऐली वीपोथी दानलीला ॥
सपुरन ॥

[२३] (ङ) ज्ञानप्रकाश—प्रथमकार—वमदास । लिपिकार—वैरागी लालदास । अवस्था—प्राचीन ।
हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ-१० ४८ । प्र० पृ० ५० लगभग-८१ ।
आकार—६” X ८” । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
लिपिकाल—फाल्गुण चतुर्थी, रविवार, मन्व १९३० वि० ।

प्रारम्भ—मननाममतमुक्रीत ॥ आद अदनी । अर अमीत । पुस्य मुनीर ॥
 कन्मैकरीर मुरतजोग ताण ॥
 घनीमदाय ॥ नुरामनी नाम ॥ मुदरमन नाम ॥ वृत्तपति नाम ॥
 पम्पोपगुम्बानापीर ॥ कवलनाम ॥ अनीलना ॥ मुरतमनेही नाम ॥
 हकनाम । पाकनाम । प्रगनाम ॥ माहिव तारागुम्बमन्वामीसकीदामा
 निलन ॥ श्रीमरथ ग्यान प्रगाम ॥

॥चोपाडा॥

गुम्बमनपुम्बमतानाम । मत्पुम्बम तनमुम्बम । मत्मुक्रीत लोकनेरामी ।
 ग्यनामी ।

अत— गापी । गापु श्रीमा गद्दीणे । अककाटु है । श्रीगुन पर ओ गुन करे ।
 साउत चाटु मुने ॥
 गुम्ता श्रीमा चहिणे । चामीकमा गर हाणे ॥ जम जम की मुरवा ।
 गुरारन भागरेधाणे ॥

चोपा । ऐती गी गरथ ग्यान प्रगाम ॥ धमनाम संबोधकथा । सपुरन ।
 समापत । च देया सा लेया ॥ ममनाम न गीअन । दुम्बलकलमद्धर
 पतीहा मचनारा । मत्तमतमहत-माबदगी मोरी ॥समत ॥ १६३० ॥
 क गान महीना फागुन । क्रीस्न पछ तीथी चौथी । राज आदतवार ॥

दि०— कीर-साहित्य ।

दि०—१—इन पापी म मारण, तापाइ दाहा और छदों में कबीरपथ
 क सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है । इसमें कबीर, गद्गुफ
 और धर्मनाम क साथ कवी 'उवाच और कही वचनम् कह कर लिखा
 गया है । प्रतीत होता है कि कबीर परवरा के सन मापु धर्मनाम
 श्रुत यह पाथी है ।

२—सका निपे अम्पम् तथा शर्चीन है । निपिकार न अपना पूरा
 पतनिम्ननिगिन शब्दों में दिया है—

नीला ममुनाबाद । अमुधान पुम्कीना महत मगलदास क अलाकमा ॥
 पैरागी लालदास । गरपनीनीतिआरकीया । सेवक मुदरदासकादीआ
 मगदी ॥ (इसमें स्पष्ट होता है कि निपिकार त्रिना मुर्शिदाबाद काका
 क निष्ठा) किनी अगाइ क गापु थे । लालदास निपिकार ने इत
 पापी का निम्कर मुदरनाम को गीया । यह पाथी विवेच्य और
 अनुपधान क माग्य है । विस्तृत विवचना क परचार संभव है कबीर
 शरिय की श्रीगुम्ब हा । यह पापी अगौठी गुम्बाराय प्रकारा अनीतकान्
 म दीबाग, (पम्बा) क गात्रय म प्रप हुट ।

[२४] दुर्गा प्रेमतरंगिणी—पद्यसार—नगनागयण सिंह । विपिनसार— X ।
 अथवा—अन्तरी । पृष्ठ-सं०—१०८ । प्र० पृ० सं० १०८—३० ।
 आकार—१० १/४" X ४ १/४" । भाषा—हिन्दी । विपिन-नामगी (कवी-मयी
 उद्गीर्ण) । स्वनामस्त-संख्या १६८७ वि० । विपिनसार—X
 प्रारंभ०—१-नरक । श्री श्री पोथी "दुर्गा प्रेमतरंगिणी विवरत १ । श्री
 गणेशायनम ॥ आरम्भी । श्री दुर्गा जी की ॥"
 रत्न आरम्भी दुर्गा जी की ॥ १५६ विमिश्र हरन मन्दी की ॥
 प्रथम आरम्भी उपासुवारी ॥ रामउल्ल गोलीय उवागी ॥
 १२ संशयन विनि आरम्भी रीन्दा । जग प्रतिपाल रत्न पर लीन्दा ॥१॥
 द्वितीय आरम्भी उल्ल संवार । मधुरैठम न उर लक्षन प्रचार ।
 तत्रि निद्रा श्रीपति तेषि मागेव । मधुरैठम मे शान उवागेव ॥२॥
 त्रितीय आरम्भी अंकर गजेव । त्रिपुरापुर उबरन से गाजेव ।
 चौथी आरम्भी सरपति रीन्दा । उद्यमुर बध को उर लीन्दा ॥३॥

अन्त०— गीत-देवी पद ।

देवु सनि तिमवन दिजनादजन रत गने गिरिनन्दिनी मनीन पम रत मे ॥
 चन्दयी उदन मारी रवि टुनि उरि वागी भूपन उमन मच रत्ननिरे उगमे ॥१॥
 वनमाहि टोवनि मो वोलनि मपुर मानी गावती बनावती नृदंगनंग छन मे ।
 चुनतीउमुमनेनी चपानीन वो चमेनी । गुथी हागडारे गिरिनन्दिनीके तनमे ॥२॥
 न्याउके पैठाई रवि मुमन डिटोले मुनि गोहेवर उमन तडित जिमि धनमे ।
 हूडोका हूलावनी मुगावती मधुर राग लपि अनुगग ने मगन नग मनमे ॥३॥
 इति ३ तरंग ॥

वि०— दुर्गा-सम्बन्धी भक्तिकाव्य ।

टि०-१- संपूर्ण पोथी १६६ पृष्ठों में है । किन्तु 'दुर्गा प्रेमतरंगिणी' की पृ० सं०
 १०८ है । इस ग्रन्थ के अतिरिक्त नगनागयण सिंह एवं अन्न कवियों
 की रचित रचनाएँ भी हैं ।

२—नगनागयण सिंह की निम्नलिखित अन्य कृतियों भी इनमें हैं—

क—दुर्गाष्टोत्तर जननाम स्तोत्र—पृ० १ से ७ तक ।

ख—शतनाम स्तोत्र—पृ० ७ से १२ तक ।

ग—दुर्गा नाम माहात्म्य—पृ० १३ से १६ तक ।

घ—दुर्गा गणादिस्तोत्र—पृ० १६ से २० तक ।

ङ—दुर्गा निवार स्तोत्र—पृ० २० से २२ तक ।

च—दुर्गास्तोत्र—पृ० २२ से २४ तक ।

छ—दुर्गानाम मालाष्टक—पृ० २४ से २६ तक ।

ज—दुर्गास्त्रिंशत्—पृ० २७ से ३८ तक । इनमें 'कमल-बन्ध' है ।

झ—शिष्यपंचाक्षर स्तोत्र पृ० २८ से २६ तक ।

म—रामपञ्चर स्तौत्र—पृ० ६ स ६ तक ।

ट—द्वादशाक्षर स्तौत्र—पृ० ० स ३१ तक ।

७—ऋगा स्तोत्र (ऋग्हरण नाम)—पृ० ३१ से ३३ तक ।

(उपयुक्त सभी रचनाएँ संस्कृत में हैं ।)

ड—दुगानामाथ ऋगावली—पृ ३४ स ३५ तक—इसक अंत में लिखा है “दुगा का नामा न नग किंचित् त्रिया प्रकाश । भैरव वेदहि प्रह समी सम्भव माघि मास ॥२८॥” अथान् सभी रचनाएँ (पाथियों) स० १६४८पि० में या एक पूव लिखी गई हैं । एक अतिरिक्त उनकी निम्नलिखित अन्य रचनाएँ भी इस जि० में हैं—

ड—द्वैपे मध्याक्षरी यह रचना अच्छी है । उदाहरण—तरुन प्रसुप कदि कहत रग कैसा पना वा । वैदेही पितु कवन भूमि-मृत कहिअत बाका ॥ ऋषि का का कहत कवन वाहन विधि साहै ॥ का गिरजा का मधु शतु पाते कहिअत वा है ॥ आदि अत दुः परिहरा मध्यवरत म नाम है । कायस्थ वरा में है निपुन कवन पजेही गाम है—॥११॥ उपयुक्त पों में स्तौत्रिकाओं का क्रमशः अथ भाव है— तवान सुवत ‘वनक मंगल अनार, मंगल गयना और वनक । इन शब्दों का मध्य वग का मिलान से बावू नगनारायण हाता है आग्रधकार का नाम है । यह अग पागी क गच्छन् ० ४४ में है ।

ण—दाहावली—(१) इस महा कवित्त पित्र-काव्य क उदाहरण है । शीत में एक अयाय ऐसी रचनाओं का है जिसका शापक है— (स्वयं श पत्र) नेफर । उसमें कायस्थ वग का स्तिताम भा है । इन प्रथ क प्रथम में ही पत्रिका ऋगावली नाम का भी एक रचना है । इसमें लिखत है—

स्वाभंत श्रीगवमुननिपुनगिःशुभानमजाद ।

मरुत कस्य कविः तनुः बावू मद्रुद्रप्रसाद ॥१॥

नारायण दुर्गाशुभानरिपुगत्रनूप ।

रजन तवगाभा तगतमत्रनःशुभमस्वरूप ॥२॥

यगावन्तःनगीःनवत मुनतः परिगमान ।

अश्विन ऋक अनल समतत्र दिनग प्रभाव ॥३॥

नगनागयग स्तिदत अत्र रपुषीःःःः ।

अति गगाम बहुदिनयपुनकदिर्गा मुनवाद् ॥४॥

इहा दुर्गावन्तःनगा मरुकार मुन अने ।

पारत तव मंगल दुर्गावन्तःनवतःनरैत ॥५॥

आर्यो तत्र शुभपत्रिका कागुनयुत शनिवार ।
 पदत मुग्ध तन को भयो आनन्द तदेव अपार ॥६॥
 मरजु पावन ते विमत आर्यो मीन “मशाह” ।
 क्रिचित वरनन क्रिन्द कवी याग्लोक मन्दार ॥७॥
 ‘मीन’ इति तत्र धोटो धाति आरिक्त पित्रान ।
 तुलसी प्रीति मगदिण सुए मीत की आम ॥८॥
 तेहि रापेव अति प्रेमतेमादर हर्षवदाए ।
 लपि मूरत तत्र प्रीत की प्रेम हिये न ममाए ॥९॥
 जन्मपत्रिका तत्र सुभग निर्गप परपिसचरीत ।
 लै सम्मन नम गणत्रयो निपिभेजिहो तुमप्रीत ॥१०॥
 मौपे निमदिन रापिये कृपापट्टि अचुकूल ।
 भेजत रहिये पत्रिका कुशल सुमगत मूल ॥११॥”

इस ‘पत्रिका’ में जहाँ कवि की रचना-शैली का पता चलता है, वहाँ इनकी प्रतिभा तो परिपक्व होती ही है, चाय ही यह भी प्रकट होता है कि इन्होंने जीवन के सभी क्षेत्र और व्यवहार में कविता को अधिक स्थान दिया था ।

(२) यह पोथी तीस पृष्ठों में समाप्त है । दोहावली आरंभ होने के पूर्व विषय-सूची और कविताओं की सूची भी दे दी गई है । प्रारंभ में लिखा है—

“सारन में छपरा जिला वरड परगन जान ।
 ग्राम पट्टे ही वस्तु हों गंगममीप प्रधान ॥४॥
 चित्रगुप्त के वंश में श्रीवास्तव्य सुकाम ।
 है कायस्थ सुवश में ‘नग नारायण’ नाम ॥५॥
 छन्द भग अनमिल वरन व्यर्थ उपमा होय ।
 कवि-कोविद तेहि क्रिपा करि शुद्ध बनावहु मोय ॥६॥
 सम्बत मखि ग्रह ग्रह वेद दिन दिनकर मिथुना जान ।
 कृपा देवगण ने भयो . . . ॥”

(३) कवि की यह कृति स० १६४७ वि० की है । इस ग्रंथ में मुग्ध, केश, मृकटी, नयन, नामाबुलाक, अर्धर, दशन, हास्य, दाणी, भुजा, कटि, जंघ, चरन, पद-नख-शोभा, गति, तन, तन-सुगन्ध, भूषण, घोडश शृ गार, नख-मिख आदि के आधार पर भिन्न-भिन्न छन्दों में वर्णनात्मक रचना की गई है ।

(४) पुस्तिका की पृष्ठ-सं० २३, २४ और २५ में चौपदबन्ध, डमरुबन्ध, और वृजबन्ध की कविताएँ हैं । ग्रंथ में दिये गये निर्देश से प्रतीत होता है कि इस प्रकार के चित्रात्मक बन्धपरक रचनाओं की कुल संख्या ५८ है ।

(५) पृष्ठ-सं० २६ स -यवस्था पत्र (लेखर) प्रारंभ होता है । इसमें कायस्थ जाति थार उषक विवाह तिलक तथा अन्य सामाजिक कृत्यों क सम्बन्ध में व्यवस्था की गई है । जैसे—

रत्नाक — 'अशुद्ध शुद्धता यानि शुद्धो भवति कित्तिवपी ।

न च गगा गया काजी जातिगगा गरीबनी ॥'

रत्नाक दाहा (उपर्युक्त रत्नाक का अनुवाद)—

हात अपावन पावनी पावन पापी जान ।

नहि गगा काशी गया गगा-जाति प्रधान ॥'

दाहावली—यथा—व्यवस्था—

' प्रथम मुमिरि गणपति चरन गिरिजा पद धरि स्थान ।

ममाचार मंगल रुहो कायथ जात प्रमान ॥

मये १पतामह काय ते १चन्द्रगुप्त गुणपान ।

द्वादश मुत ति-क मये नग मर विदित प्रधान ॥

श्रीवास्तव्य बनिष्ट पुनि माधुर अर सक्तसन ।

वर्ण मयध्वन गांठ कहि अरर निगम सुग देन ॥

अरिध्यान अम्बष्ठ अर भन्नागर कुलत्रेष्ट ।

ऐ द्वादस कायस्थ ह र्गाप तति इष्ट ॥

चतुर विचक्षण शास्त्रविध धमशाल जयशील ।

प्रगट व श्रीवास्तव्यकुल सुशी प्यारलाल ।

येपि दशा स्थान की मन में किया विचार ।

व्याह हौसला न जलधि बुद्ध सर ससार ॥

शान्दान स्थान क कत बहुत कुलान ।

व्याह समय अति शुच त भये मकल धनहीन ॥

इसी प्रकार इस व्यवस्था पत्र में विवाह-समस्या सम्बन्धी उपयोगी व्यवस्था की गई है जो पठनीय है । इसके अन्त में मन्व कालिक कृष्ण एकादशी गुरुवार १६३० लिखा है ।

(६) र्गा प्रेम तरागिनि क प्रारंभ हान क पूर्व प्रेम तरागिनी का व्याख्या क रूप में कुछ गीहे लिख गये ह जो पृष्ठ सं १०१ म ह । उक्त व्याख्या-भाग के अन्त में निम्नलिखित दाहा है जिसके विषय में कहा जाता है कि र्गस बानू साहब न मृत्यु क १० दिन पूर्व बनाया था—
सम्बन् शरी मह वेद निधि तिन कर मिथुना जान ॥

रूपा देव गुप्ते भयो शुभ समग्र अनुमान ॥ ५॥

इसमें सिद्ध होता है कि इनका दहान्त १६४७ म १ मधुन राशि क उपस्थित हान पर हुआ था । यह इनकी मृत अन्तिम कृति प्रतीत हाना है ।

(३) इसमें कोई मन्देह नहीं कि बिहार के इस गोरवशाली कवि की प्रतिभा विचित्र थी। इन्होंने न केवल संस्कृत और हिन्दी में ही पद्य-रचना की है, अपितु इनकी फारसी की भी रचनाएँ हम पौथी में हैं। कई स्थानों पर तो एक विषय को ही तीनों भाषाओं में, बड़े सुन्दर शब्दों में व्यक्त किया गया है। यह ग्रंथ पठनीय और प्रकाशनीय है। प्रथाकार के बन्वों' के आवाग पर की गई रचनाएँ अत्यन्त द्रष्टव्य हैं।

(४) पृष्ठ-सं० ३२ में, इनके मथुरा जान पर पटा की बही में लिखी गई रचना है। पृ० ३३ में नन्दाकू के ऊपर लिखी गई एक कविता है। मथुरा के पडे की बही वाली कविता सं० १६२८ में लिखी गई थी, जिसमें कवि के साथ ही परिवार के अन्य व्यक्तियों की भी चर्चा की गई है।

(५) ग्रंथ में कविवर नगनारायण सिंह के अनिरीक्त प्रान्त तथा विशेषत छपरा जिले के कई अन्य कवियों की भी कविताएँ हैं—जिमें ग्रथकर्ता की ही प्रशंसा की गई है। इससे प्रान्त के कतिपय कवियों, साहित्य-मेवियों के नाम, स्थान आदि का पना मालूम हो जाता है—(१) वंशावली तथा प्रशस्ति में, पृष्ठ सं० ३६—५० प्रयागदत्त, (२)—पृ० ५०—३७ नावापार वमवली के परिउत के आशीर्वाद, (३) रीठ ग्राम के छुट्ट परिउत की रचना। पृ० ५० ३८, (४)—५० हृदयगुप्त—इनकी रचना पृ० ३८ में है—

“सद्देशे सरकार सारणवरं जिल्लासुछपराह्वये ।
परगच्छा वरई शुभा सुरसरिस्तौम्ये हरित्कोशके ।
तत्रास्ते नगरी वरा शिवकरी विद्वड्विराकर्णिता ।
कूजत्कोक्लिनीरमारमधुपव्यू है पटेही वृता ॥१॥
आस्ते तत्र सुवामयूपविलभत्कीर्तिप्रिया मरिउता ।
विद्याया कुशलौ विवेकदिनकृतमौजन्यरत्नाकर ॥
कायस्थानन्वपुंजगु जितमधु प्रातरलंवाग्रो ।
नीहाराद्रिसुतामरोजपदमथाता नगाडिर्नृप ॥२॥

(५) मकौल के ५० राजमणि—पृ० ४० में। (६) ५० तिलक त्रिपाठी—ग्राम नरौली, आना दरौली। (७) ५० यशोदानन्द जी, ग्राम-शीतलपुर, (सारन)। (८) ५० जनारदन जी, पटेही पुरवासी। (९) ५० गणेशदत्त पाण्डेय, परिउतपुरवासी। (१०) ५० रामचरित्र त्रिपाठी तकीपुर। (११) श्री बाबू अद्याशरण जी। (१२) श्री बाबू अम्बिका शरण जी। (इन दोनों ने बाबू साहव के देहान्त के बाद उनकी प्रशस्ति में रचना की है— ५० न० ८३। (१३) बाबू रघुवीर दत्त जी, (१४) बाबू वनुपवारी प्रमाद सिंह। (१५) श्री फुल्लेश्वर बाबू, मोतीहारी (इन्होंने २१—७—१९०० को एक कुण्डलिया लिखी थी जो—पृ० ५० ५८ पर है)। (१६) श्री सुरेश्वरी शरण सिंह, गोपालपुर, भागलपुर (इन्होंने अत्यन्त ज्येष्ठशुक्ल पंचमी रविवार न० १९८० वि० को बाबू साहव की प्रशंसा में लिखा)। (१७) बाबू राजेन्द्र प्रमाद सिंह (य सम्भवत कविवर नगनारायण सिंह जी के पुत्र थे। इनकी रचना 'चित्र काव्य' और 'देहावली' के रूप में पृ० ५५ से ६० तक में है जो ११-११-१९१६ वि० की है। इन्होंने एक स्थान पर बर्णन करते हुए लिखा है—“गोरी नाइन पातरी लचकि

लक्ष गान मान । नैनन चिनका चारती उरन उचकि भनि भौन ॥३॥
 श्रधर लाल कुचित अलक गीरघ चम बरवाम । दगन दादि हंसि सैन
 कर चला जात निनधान ॥४॥ यहान 'परिमल्या अलकार में छपै की
 रचना की है पृ १ : ५७ पर है । (१८) बाबू जानकी दास (१६)
 बाबू बृदावन विरार (२०) बाबू मुनरवर दत्त (२१) बाबू खुबीर
 नारायणसिंह (२२) बाबू मगलप्रसादसिंह । इस प्रकार स्पष्ट ज्ञात हाता
 है कि बाबू नगनारानखनिह क साथ राबयों का एक विशाल परिवार
 रहता था, ना नवैव साहित्यिक चचा क्रिया करता था ।

श्री बाबू राधेन्द्रनाद सिंह भा जिन्दी सस्कृत और उर्दू फारसी में
 रचना करत थे—

- (क) वनिता क टुटी लस छागी तिल अभिराम ।
 मानो भँदरा कान मन स्वप्न किया चित्राम ॥१॥ (हिन्दी में)
- (ख) श्रद्धर ने नन्दरौ खाल तिलवर वा स्याग जे बदार ।
 हन चा श्रद्धर नीलाकर जम्नूर जे वद आवदार ॥२॥ (फारसी में)
- (ग) रनम क टुटि के भीतर मियाहा तिल क यों मलक ॥
 कमल क वर्ग भीतर में भवर रस नैन का ललक ॥३॥

पृ०-स ७२ । (उ० में) ।

- (६) पृ म० ४७ से ४६ तक कवि की 'विरहिनी प्ररनातरी नामक रचना दी
 हुई है जिसमें बुलबुल कबूतर आदि क माध्यम से काव ने विरह वर्णन
 किया है जो मनारम हय तथा प्रभावशाली है ।
- (७) इस ग्रंथ का लिपि स्पष्ट है, किन्तु प्रतात हाता है कि लिपिकार ने भिन्न
 भिन्न समय पर लिखा है अत लिपि तथा स्याही में भिन्नता है । ग्रंथ
 में कवि की रचनाएँ—जीवनी प्रशस्ति-कान्य तथा विभिन्न बंध-रम-हीन
 और अस्त-वस्त रूप में ह, अत पुस्तकाकार मुद्रण के पूर्व क्रम आदि
 ठीक करना उपयुक्त होगा ।

यदि इस पाथी क आगर पर (ग्रंथ में आय विभिन्न व्यक्तियों तथा
 कवियों की रचनाओं की) खान की आय, ता साहित्य की ता बहुत बड़ी
 सामग्री मिलेगी ही । यहार क साहित्यिक इतिहास क निर्माण में भी
 बहुत बड़ा सहाय्य प्राप्त होगा और बिहार के छपरा जिले से सम्बद्ध इन
 कवियों की एक विशाल परम्परा का पता लग सकगा ।

यह पाथी बिहार-गण्डूभाषा परिषद् क मंत्री श्रीशिवपूजन सहाय क
 द्वारा प्राप्त हुई है ।

[२५]—शिव-सागर—ग्रंथकार—गिबनाथ दास । लिपिकार—X । अक्षर-अक्षी । प्राचीन
 हाथ का बना देरी कागज । पृ०-२३० । प्र पृ० प० लगभग ४ ।
 आकार—० X ६ । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
 लिपिकाल—१११ शुक्ल पंचमी म १८५० ।

प्रारंभ— “शतनाम ॥ अथ शीवनागर । भागल जीवनाय दाश फकीरह ।
 प्रथमं ही वंदो शत पुरुष पुराना जाकर जाप करही भगवाना ।
 तव पशु वंदो अलग्न जगदीशा । बीमल नाम मनी पावो पदमूला ।
 ब्रमा विश्व वंदो गौरी महेशा वंदो गनपति अत्रही गनेशा ।
 वंदो राम क्रीशुन जप्रनाया । भक्तवद्वृत भग्न ही गनाया ।
 ब्रनो श्रोशती जमुन मेंबु गगा । ब्रनो अहीपती अरु पतगा ॥
 वंदो माता आदि जोती के प्रना । जाके शुरनर सुनी ध्यान वरंगा ।

अन्त— पुत्र पुत्री रहे मातु पीतु भरोगे ॥ गात्रील रहे अर्थ नैते ही पोजे ॥
 वीरो हंमरन्ही रहीले आपुके आशे रही दुरंतरम् श्रान्ति कष्ट रही पाजे ।
 रहीहो चेत नीगती जुगती जो गही दुमती कुमती रही जीन्डो छेमगना ।
 तेलपा शेवना ऐक शनही ताके नाउ, रांन वो प्रेम वोर छोर प्रणेवो पाउ ।
 अथ शपुरनं प्रेमगती भाखल जन जीवनाय गहता शुनत कहता पठे प्रेम गौ
 करहि शाहव तेही शतगुरु के हाया”” ।

छं० * * * ४८—भाखा पान ब्रम प्रमेशर जें रीखि कु भजे पूछा
 कुंभ जोरिके शुजजंजनके भवती महीमा गान वीराग वीविके शी
 गुंन शदैव देत त्रिप नरके * जोग जुगती जंमावी जगमें वीद्वा
 वेदकितेव शास्त्र मत्र ताहा शहारे । में जाके जाहा शीवत्रीथ व्रत मख
 दान क्रीती शेवाशत * जोगी सुनी ताहा देही * * * ।

सोरठा ।

फलचारी देही क्रतार. अरथवरमकाममोक्षशो
 हंश उत्तरि भवपार कर गही दश के लोक ने आवही

विषय— दर्शन—निर्गुणधारा ।

टिप्पणी—(१)—इस अथ के निर्माता शिवनाथदास एक दरियापथी सन्त प्रतीत होते हैं ।
 इन्होंने स्थान-स्थान पर सन्त दरियादान के नाम का स्मरण किया है
 तथा उनके प्रति श्रद्धापूर्ण विचार व्यक्त किये हैं—

‘दरिया शाहवकर दाश मैं दरीया मोर शतगुरु’

यह पद प्रारंभ की पहली साखी का है । पोथी के अन्त में भी कवि ने
 गुरु के सम्बन्ध में निम्न-लिखित विचार प्रकट किये हैं—

गरथ शपुरनं पत्रचारीगै भाखा

ताहीके छोट छोट हुरुफ .. ॥

जो देखा लीखा जो भाखा कही दीन्हा ॥

शुनगंमी नाम दीपक हीरें कीन्हा ॥

अभीलाख शास्त्र के शो शाहवे पुरावा ॥

(२)—प्रन्थकार ने अपनी रचना में संत दरियासाहब के समान ही सत-पुरुष, निरजन
 आदि के द्वारा निर्गुण साधना की स्थान-स्थान पर विवेचना की है । प्राय, इस

प्रकार का विवेचन पुनः आरंभ काह्य के आरम्भिक भागों का दृष्टि से दिया गया है। इन चार स्थानों पर उक्त छिपी गैदायिक पत्र की पुष्टि की गई है तब यहाँ उक्त भाग वचन परचाह्य काह्य वचन' ऐसा लिखा है—
गाहन के पारै का आग बनाने ॥

आग जुगुनीनीतु गार है जागरीनानाहीरीछ
नाग बीतु बीमी सुतुनी है जाग बीतु रंभमानाच
अरुणगभत जुगुनी जागराथ वातामदनिरंजन
वारचीनीरनुशीनारण शारशेरगनगवकुनी उन
रंभनामश गारतनाथ नव शीनवीरानीपुरनरन
जागरीपरीपनाउकुत तागुनगनदाजनपन

कारण—

मननाम गहनहाशाथ अनरनाक शा जनगए
शुना वृ भन शीश है भाव भगतीजागें जगत र'
इन प्रकार काग व गाथ तन स्मरण की आरंभ करते हुए कवि न
लगभग आग पाह्यों में आग की महिमा गाई है। यह उद्धरण पृ०
२३, २४ आर २५ का है।
प्रथम में गाथु-अना निवान्न प्रेम, धर्म अथ, काम और मातृ का
विवेचन किया गया है। एक स्थान पर—
"शतपुत्रीत तिनुतुत तानाहाइ जम हाँकुनीपडीतजगगहइ
नीगुननीरज्जुन शगुनभामनी तागुनध्यान सीना दव
दराइ प्रत प्रीथ दान ।

- (३) प्रथम की निधि पुगनी और अम्भ है। प्रनीत हाता है निधिहार और
प्रथमर रूपों एक ही है। निधिहार न अन्त में लिखा है—"शमत
११२० में प्रथम गाथनाथ शगर भावन नीगन भाल तलरा के मठ
में मातृ पुग ५२मी।
(४) प्रथम में, भाग्युग आर ग्युक्की भावा का प्रयोग किया गया है।
प्रथमर का अर्थ नन्म मरु या जा संभवतः गारन जिने में है।
पानी अनुसंधान दे। विचार रूप है और ६१ रेखी की महारनरा
रचना प्रनीत है।

मरु प ॥ हा० धर्म-प्रकाश की शकरी, उरविरेरक, शिवा-विभाग
(१६४) का अन्त प्रत्यक्ष है।

[२६]—हागुगुमनी—०५५५—१ धन-५। निधिहार—अरुणगभत। अरुणगभत—अरुणी।
हाथ का रना मरु दगा कागज। पृ २३। प्र पृ २० लगभग—
१०। अरुण—२६ X ६"। भाग—१। निधि—गाथी। रचना
काग—X। निधिहार—अरुण हाथ कागजी उरविरेर। सं० १०६४५३०।

प्रारम्भ—साहब जी क्या तो विपत्तेश्री प्रः सुसुक्तावली ॥ गीतना छंद ॥
 धर्मदानो वचन धर्मगत विनय कर ॥ विद्वानि गुरुर्षंज गद्दे ॥
 हो प्रभु होहु क्यातं । दाचित्त अति देह ॥
 आदनाम नत्प गोभा । प्रगट भाप सुनाईए ।
 जलदाहन अति भयवर । कृति प्र ग दनाई ते ॥
 शतशुरौवचनं ॥ आदनाम निह छर अतिनपतिरानू ॥
 नो प्रगटे गुन्प तो रं उदारनू ॥

नन गुरु चरन गेज जेजनन श्यावही । जुगमरन दुपनास्त अचलपरपावही ।
 महाशाल अहि दासनान ह पगपती । मयामोहतमपूज दून रवि तै अती ॥
 गरलसुभावसोमनजर ॥ नाम पाउपनपुराप्रप नाम अमित विष ॥

अन्त—धर्मदासौवचन ॥ हे प्रभु गेजगन अम आम्हिलीजीऐ ॥
 निज जिम्बर यह जान क्यामोहेजीजीऐ ॥
 सतशुरौवचनं ॥ दीन्हेउतोहे अर्भै पद गत गमजानेउ
 ईच्छ्या मग्न अतिरिनिअस अशुमानेउ ॥
 छंद ॥३५॥ अनुमानहित टिटआम्हिका ॥ विविअप्रचालिसंभवा ॥
 अपवर्गनेहे अविचलमई ॥

भव भेट गयदुहुजरभवा ॥ नादनापाअनंपजुथ ॥ जेहि विपनसोभापावही ॥
 गज गिरजोकु मञ्जलजउपजै ॥ अनतछविमहपावही ॥
 नदी विन जल पौन विन बल ॥ चढ विन जिमि जामनी ॥
 तिमि नाड विननहिवार सोमित ॥ सुसुकरमनि आम्हिति ॥
 ईच्छ्यामभवअभिमनसुतजनरुपु गेवजावयउ ॥
 ईमभनलीनअधीनता विन ॥ परम पद नहीं पायउ ॥

छंद ॥

तोहे देय दीन अधीन धर्मनीता हेतै मनराचेउ ॥ नाडवीड अधीनता जिन ॥
 हंम नो फल चापेउ ॥ मानमरोवर हंस विहरत कमल जुयनिरनाल का ॥
 जुगतसुक्तापरमसुक्ता ॥ दरसतेहि अयनालका ॥
 निमीहन प्रति सुक्तावली ॥ सुनकै जो नाडर गावही ॥
 सतगुर ऋपा परसाड अविचल ॥ अहै सुपरपावही ॥
 परसन्न उत्तरतरनि दुहुतर ॥ लौलीनसुन जोराप हें ॥
 कामटिपलटलजीतकै अपवर्ग अमित सोचाप हें ॥
 धर्मदान मनोवनारम ॥ धर्म विक्त सुनायक ॥
 वैरगलुविधीरंक्रजिमी ॥ भागन परममनपायक ॥ जनमजन्म पातिकमिदै
 गुरनाम विरड जोगाय है ॥ कहै कवीरपरचारतेहे ॥ आराम आलै पायहै ॥
 ऐते श्री ग्रथ हमसुक्तावली ॥ नंपूर्ण ॥ सुभमस्तु ॥ समाप्तं ॥

विषय—दर्शन—निर्गुण-साहित्य ।

टि०—(१)—यह पुस्तिका कबीर साहब और धर्मदाम के प्रश्नोत्तर के रूप में रचा गई प्रतीत होती है। इसमें 'धर्मदासो वचनम् से जीवन सुकित्नाद, बिट्ट, ध्यान भक्ति विधि आदि विषयों पर प्रश्न किये गये हैं और सन्तुष्टो वचनम् से प्रश्न का समाधान किया गया है। ग्रंथ सुपाठ्य और अव्यय है।

(२)—ग्रंथ की लिपि-शैली प्राचीन है। लिपिकार एक कबीरपंथी साधु हैं जिन्होंने सिधौरी मठ में श्री श्रुतमन्ही दास जी की आज्ञा से ग्रंथ की लिपि की है। जैसा कि—अतंमें— ग्रंथ हसमुक्तावलीमपूरा ॥ सुभमस्तु ॥ समाप्त ॥ समत १८५४ ॥ के साल ॥ महीना ॥ कुनार ॥ कस्तनपद्ध ॥ तिथि द्वादसी ॥ वार सनीचर ॥ अस्थान सिधौरी ॥ गोनाइ सुत सनही साहेन क हपूर में लिखा ॥ वैराग्य परमे दाम ॥ —लिखा है।

(३)—ग्रंथ की समाप्ति के बाद पाताल पाजा और 'वशावली नाम की पुस्तिका ६ पृष्ठों में है। इसमें कबीर के कुछ स्फुट पदों का संग्रह प्रतीत होता है। पुस्तिका अनीसाबाद (गन्नीबाग, पटना) निवासी अखौरी गुदशरणप्रकाश से प्राप्त हुई है।

[२७]—शब्द— ग्रंथकार—कबीरदास। लिपिकार—X। अरस्था—अच्छी। प्राचीन हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-संख्या १२०। प्र० पृ० प लगभग २२। आकार—६" X ५ 1/2"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—X।

प्रारम्भ— प्रथम वचन रमैनी—अतरजोती सच एक नारी ॥

हरि ब्रह्मा ताक त्रीपुरारी ॥

तेनी अनता ॥ काटुन जानल आदि आ अता एक बीधाता कीहा ॥

अन्त— हम कुसेवक तुम प्रभु आना ॥ दुइ मह दास काही भगवाना ॥

हम चली अइली ताहर मरना। कतहु ना देखा हरी क चरना ॥

हम चली अइला तोहरे पाया। दान कबीर भल कइल नीरासा ॥११३

सब्द सपुगन हुआ—

विषय— कबीर-साहित्य।

टि०—(१)—इस पोथी में कबीरदास ने अपने सिद्धांतों का विशाल विवेचन किया है। ग्रंथ पानीय है।

(२)—ग्रंथ की लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है।

यह ग्रंथ अनीसाबाद (गदनीबाग पटना) निवासी अखौरी गुदशरण प्रकाश से प्राप्त हुआ है।

[२८]—श्रीरामार्णव—ग्रंथकार—मोक्षदाम। लिपिकार—शिवबोध तिवारा। अरस्था—प्राचीन जीण-शीर्ष। पुराना देशी कागज। पृष्ठ-संख्या ३१०।

प्र० पृ० पं० लगभग-३६ । आकार १०" X ६" । भाषा—हिन्दी ।
लिपि—नागरी । रचनाशाल—X । लिपिकार—वैशान्त, शुक्ल तृतीया, सं०
१६५३ वि०, महस्वपतिवार ।

दोहा ॥१॥

प्रारंभ— तन ए विहिन मलिन नृप जिमी सुमंत नमुगताई ॥
ऐहि तरंग मोई बरिंहो रिपी आगमगा उपाई ॥
चौपाई ॥

वसै अवध टमरय महिपाला । वरनि नकै को विभव विनाला ।
सरजु तिर अवधपुर सोहू द्वादस जोजन आपतजोहु
विस्तर जो जगतिनि निहारी ।
बसहि तहा निर्मल नरनारि । जहा अपुनि तन कोऊ निहारे ।
नहि अयद दिनविधि विचार ।
नहि अयुर बाहुज तहा मोई । व्या विना वैश्वन जोड ।
सेवा विना नूद तहा नाही । कोस्य धर्म तनि पगुण धराही ।
अंसपन नहि कोऊ तेही माही । धनपति लघुलपितेन्दु सब काही ।
कोट न अमुन्दर तेहि पुर जोहे । नबही तिलोकि मारमण मोहे ।

छंद ॥

यण मोही मार निहारी सब कह न्यप रामि प्रकाशि है ।
असतीन तहातिय देपि तिनहके न्यप पररति हामि है ।
गजबाजिवृं ददिलोकिमि वरहरिहयलाजही ।
नहि गाई जातविभूतिअवध अछतिसुपमा साजही ।

दोहा ॥

मत्र आठ महिप के उगितज सनकोई ।
राजकाज समुझहि मदा नपनेहु अवरन जोई ।

अन्त— निकसिनगरवाहरप्रभु आए । जनुधनतेविजुउदयदेपाए ।
कोटिकलानिधिकीछविद्याजहि । वामभागपुनिरमाविराजही ।
स्वेत सरोरुह मोहत हाथा । गमनकरत सोउरधुपति नाथा ।
शोण लुंजकरदक्षिणभागी । चलिभूमिदेप्रियनुरागि ।
शस्त्र सहित विधानधनुतीरा । चले संगधरि पुरुष शरीरा ।
वेद विद्युधकरि द्विजवरदेहा । चले राम नगमहितमनेहा ।
वेद मातुजुत प्रण वसि धाई । गवने सनकाटिक रिपीराई ।
महा भूमिधरधरेशरीरा । गवनहि राम सग धरिधीरा ॥

दोहा ॥

अंतहपुर नरनारी जो बालवृद्ध नमुदाई ।
भरत शत्रुहन सहित नव रघुपति संग निघाई ।

चौपाद ॥११॥

सपुंशालपुर क नगारा । सुवकां रघुपति-गतिवारी ।
 पुत्रे रामरुपवर्षावारा । ज चेतनमनसुदित विधारा ।
 सुप्रिवह दे, वानर मानू । चले उग मर सुधी विरालू ।
 अतरईतपुर महजाकोर । रघुपति उग चले सबनाद ।
 लनावर निकर विगावहि मगा । किहे राम पर प्रेम अभगा ।
 जाव चराचर अस नहि छोड़ । रहे अवध तबि रामहि जाइ ।
 मत बउन परिधान अन्धान । नहीं कां दीन दुषीदेयरान ।
 नहि कांजतु अवधमदरहे । सुवहि राम सगचित्तबहेन ॥
 गहा ॥

गवनऊ जावन अद्ध दमितहा सापसरतुनीर ।
 जग असप निद्रहियनिरथा सुदित मएरघुवार ।

चौपाद १० ॥

तहि अवसर चतुरानन आये । अनित विमान गगन मह छुण ।
 अति प्रकाउमय भयत अकारा । बतु सुपनायक बहत बलासा
 हरपि बिनुय प्रमुन मारि लावहि । करहि गान सुलोपीनचावही ।
 सरतु जल पदपरशि नारा । तबहि पितामहविनय उवारा ।
 कहत जाणकर कृपानिधानहि । पुरुष पुराण प्रभुदे हम जानहि ।
 आनद रूप एक अविनाशी । जगतपालपति बेप्रकाशि ।
 करि कृपाल ममविनय । सदा मकलहितवेदवधाना ।
 करि कानुज निज दहप्रवेरा । प्रालहु अपिल सुवनअमररा ॥
 दाहा ॥

एभिनि बहु दिनय करि कीह विरवी प्रनाम ।
 निज मन मवित करिउ प्रमु सग सुजन सुपधाम ।
 इति धीमश्राम गिरि रामराजकुलपाप प्रशामन विमलविभ्यानालन्वमक्ति-
 प्रणामक नामादेहर सवादेगमाएवे रामप्रयाएवे २१ तरंग ।

विषय— रामचरित्र-कथन ।

टि०-(१)-यह प्रथम लगभग २०० वर्ष का प्राचीन है। प्रथमकार कालमान
 न यद्यपि अपन विषय में कुछ भी नहीं लिखा है, प्रथमक कालक क अत
 में कवल अना नाम द दिया है किन्तु ज्ञात होता है कि कालमान
 मित्रपुरात्रिने क अक्षरी नामक ग्राम क निवासी थे। यह प्रथम पूर्वय
 रल पथ क विभागत स्टेशन से एक स्टेशन आगे अन्तमुखा क करीब
 'बिराही स्टेशन क स्थिति है।

(२)-प्रथम और प्रथमकार क विषय में निम्नलिखित बातों का भी पता चला है—
 कालमान का एक विषय प्राप्त हुआ है। प्रथम में अनाप्याकार और

मुन्टरकाण्ड नहीं है। दोनों काण्ड क्रमशः—पं० रामयज्ञ तिवारी और उनी ग्राम के एक नातु के पाग है। प्रथ और प्रथकार के विषय में अन्य विशेष बातों का पता उनी ग्राम के एक जमीन्दार तथा पत्थर और रूपट के व्यापारी ठातुर राजधारी मिह ने चल सकता है।

(३)—पौथी में—वाल, अरख्य, मिफिन्वा, लका और उत्तर—ये पाँच काण्ड हैं। इन काण्डों की पृष्ठ-संख्या उनी पौथी में ही पृथक् ही हुई है, जो क्रमशः—१८, ३७, ४०, १२२ और ६५ है। लिपिकार ने इन काण्डों को भिन्न-भिन्न समय में लिखा है और सभी काण्डों के अन्त में लेखनकाल पृथक्-पृथक् दिया है, जो इस प्रकार है—

(क)—वालकाण्ड—(कथा-वस्तु की समाप्ति के पश्चात् कवि ने अपने विषय में लिखा है) —

छन्द ॥

निगमादि पाठनपार अति अधिकार जन जागृत महा ।
सतत सुहावण पतित पावन जानी जन कामहु कहा ।
एह सियराम विनाह अति उत्साह मंगल करन है ।
गावत सुनत नरनारी जो ताके अमगल हरन है ॥

दोहा ॥

गावत सुनत सप्रेम जो नर निती नेम निहारी ।
वसत सदा ताके निम्न अविचल अवधविहारी ११३।
कलिमल हरण सरिर अति नहि लीपि अपर उपजाइ ।
एह रघुपति गुन सिधुमरु मज्जत उज्जलताड ११४
वर्ण अलकृत छदरस कवित भेद बहु वाड ।
होनहि जानत एक उर सत्य राम गुन गाड ११५।
अधम उधारण राम के गुण गावत अति नाडु ।
कामदान तजि त्रासतेहि उर अतर अचराडु ११६।
दिनवडु रघुनिर के वातु सकल जग जानु ।
कामदास उर आस यह नहि उपाय कजु आतु ११७।

इति श्री मद्रामचरित्रे रामरावे शकल पाप प्रसमने धिमल विज्ञानानन्य-
भक्तिप्रदायके उमामहेश्वर नवाडे प्रथमार्णवे अजोष्याभिनिवेशो नाम
पचत्रिसस्तरण ३५ शोरठ १ दोहा १७ चौपाई १०४ छन्द ११ सव १३३
श्लोक ११ सोरठ ६६ दोहा ४२० चौपाई ३५६८ छन्द १०० सव
४२०० श्री समत १६५६ मीती माघ वदी ८ वार मगर लिपा सीववोध
तवारी गाव अक्रोधपुर ।

(ख)—अरख्यकाण्ड—(इसकी कथा 'शवरी' की वन्दना के साथ समाप्त होती है)।

दाहा ॥

करि एत्ति िधि विनति विपुल जाग आगान तनुजाय ।
 शेषरीरघुपातभवनयल रघुपतिसन्निघा ॥
 अघम जानेहरिमन्नयल पा सुक्ति जगजानु ।
 जा उत्तम कुल भवतहा ता करिकहावखानु ॥
 राम चररा सुरधेनुसम मवतमबकहसुपदानी ।
 कामदास निस्वामकरि सुमिरहुआनखानी ॥

इति श्रीमद्रामचरित्रे रामार्णवे सकल पाप प्रशमन विमल
 विज्ञानानन्यभक्ति प्रदायक उमामहेश्वर सवादे तृतीयार्णवे सेवरी
 माङ्ग पावननाम नवमहतरग ६ इति सपुण ॥ श्री समत १६६६ मीती
 पागुन वदी ५ । लखा क्षीबोध तेवारी वार बुध गाव अकोदी ॥ राम
 राम राम राम ॥

(३)—किष्किन्धा काए—सारठा । सकल सकभवयक बहु कलकनना दुषद महाबीर
 भ्रुति अक रसना रमत विलास तब ।

दाहा ॥

एहकनिपारावारमह परानपावतपार ।
 कामराम गुन गानत विनु प्रयाम ।वेस्तार ।

इति श्री मद्रामचरित्रे रामार्णवे सकल पाप प्रशमन विमल
 विज्ञानानन्य भक्ति प्रदायके उमामहेश्वर सवादे चतुर्थार्णवे समुद्रसतरणे
 निचपानामैकात्मस्तरग ॥११ दोहा ॥ २०६ चौपाइ १५७६ छन्द २५
 जोरठा २६ । इति श्री चतुर्थार्णवे वरनन समाप्तम शुभमस्तु समत १६५३
 मीती बैमाप सुती ३ वार वृष्णइ निपा शिवबाध तेवारी साकीन अकोदी ।

(४)—लकाकाए—पापपकतननसितअतिनिनुश्रमसकलनसाइ ।

काम रामचरिताणव न,सहप्रैम अहाइ ।
 कलि कानन अघ अघ अति विककुमृगहसमातु ।
 हारं अउ प्रनल लहै इतैग्यानविरागकृपातु ।
 कामराम सुमिरन विना देहन आवै काम ।
 इतै उनै सुप कतहु नहि जयाहापन कर दाम ।
 राम भजनन काम सुर उभय लाक आनद ।
 तात भनुमन सुइ अघ छोदी सकलजगसंद ।

इति श्रीमद्रामचरित्रे रामार्णवे सकलपापप्रशमन विमलविज्ञानानन्य
 भक्तिप्रदायक उमामहेश्वरसंवादे षष्ठाणव रामराज्योपालभनो नाम
 द्वाविंशत्तरग ॥३२॥ तरग ॥ सोरठा ४४ दाहा ५२१ ॥ चौपाइ
 ४०६५ ॥ छन्द ११४ ॥ इति श्री षष्ठाणवे षण्णं समाप्तम् रामार्णव
 शास्त्र आनंदरूपनम् । श्री समत १६६४ निखा शिवबाध तेवारी जिला

मिरजापुर, याना विन्-याचल, गोंव अक्राढी, समत १९६८ मिति कुथार
वदी १ वार इतवार ।

(५)-उत्तरकारण्ड-(इम कारण्ड की कुल्ल अन्तम पंक्तियाँ प्ररुतुत ग्रंथ के परिचय के प्रारभ
में 'अन्त' शीर्षक अवतरण में लिगी जा चुकी हे, उसके बाद की अन्य
अन्तम पंक्तियाँ इम प्रकार हे)-

रामदाम पदपाई कामदाम मृगपतिसूपनस्यारहिर्काई
कहाचद्रमा गगन में कहा चक्रोर दीतीमाही ।
काम जोहि मे नेहरी तोहि तेड निकट देपाही राम राम
सम्बन् १९५८ मिति माघ वदी ७ वार शुक्रवार लिपा शिववोव तेवारी,
गोंव अक्रोदी में ।

इस प्रकार लिपिकार द्वारा नभी कारणों के अन्त में दिये गये विवरण
से कई बातों का संकेत मिलता है-

(क) किष्किन्धाकारण्ड के अन्त की-"महावीर वृति अक्र रसना विलास
तव"-पंक्ति से ग्रंथ-रचनाकाल का स्पष्ट संकेत नहीं मिलता है ।
प्रतीत होता है १४१९ कोई संवत् है, जब इमकी रचना की गई है ।
इसके अतिरिक्त (ख) उत्तरकारण्ड के अन्त में 'रामदाम पदपाई
कामदास' पंक्ति से इनके गुरु का नाम 'रामदास' या, ऐमा वोव
होता है । नभी कारणों के अन्त में दी गई-दोहे, चौपाइयों,
सोरठों और छन्दों की-नुची भी विवेच्य है ।

(४)-ग्रंथ की लिपि पुरानी, किन्तु स्पष्ट और सुन्दर है । लिपिकार का
निवास-स्थान ग्रथकार के ही ग्राम में था । यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य
के लिए गौरव की वस्तु है । इममे श्री गोस्वामी तुलसीदास के राम-
चरितमानस की शैली का अनुकरण किया गया है । कथानक भी प्राय
वैसा ही है । किन्तु ग्रथकार ने इस कथानक के वर्णन को कहीं-कहीं
विस्तृत भी कर दिया है । कई स्थानों में ग्रथकार की स्वतन्त्र सुझ,
विशिष्ट कल्पना और बोधकल वर्णन-शैली के रहने से प्रस्तुत ग्रन्थ में
विशेषता आ गई है । संभव है, इम पोथी के अनुसंधान ने हिन्दी
साहित्य को एक नई दिशा मिले । यह ग्रन्थ श्री वागीश्वरी पुस्तकालय,
उनवास, डाकघर-अन्दौर, शाहाबाद से प्राप्त हुआ । (उक्त पुस्त-
कालय को यह ग्रन्थ २६ मई १९२९ रविवार को, श्री सर्वदानन्द सिंह
(फाशी) के सौजन्य से प्राप्त हुआ था । सिंह मोगलसराय से पूरव घीना
रेलवे-स्टेशन के स्टेशन-मास्टर थे) ।

[२६] श्री ब्रह्म-निरूपण-(सटीक) ग्रन्थकार-सत वर्मदास । टीकाकार-भजनदास ।
लिपिकार-भगलदास साधु । अवस्था-अच्छी, प्राचीन, देशी कागज ।
पृष्ठ-स०-२२५ । प्र० पृ० ५० लगभग-२५ । आकार-१२" X ८" ।

भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—५ ।
टीका-काल—ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया गुरुवार स० १९०३ । लिपिकाल—
पौष शुक्ल चतुर्दशी सोमवार स १९३० ।

प्रारम्भ—(मूल) सतनाम ॥

सतनाम मुक्ति आदली अत्र अचित् पुर्म मुनि ॥
द्वन्द्वनामै कबीर मुर्तबोग सतायन धनी धर्मदाम ॥
मुक्ता मणि नाम ॥ मुर्शन नाम कुलपति नाम ॥
प्रमोघ गुरु बाला पीर ॥ कवल नाम ॥ अमोल नाम मुर्त सण्डी नाम ॥
हक नाम पावरु नाम ॥ प्रगट नाम ॥ साहेब चार गुरुवस याम ॥
ब्रह्मनिष्पण नाम ॥

॥ ॐ नमाभ्यादि ब्रह्म सन्ध कारण कर्ण तथा ॥ तद्रूप ॥

सद्गुरु वदे कर्म रेखा प्रशातये ॥१॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
सद्गुरु पादपद्म ये निरा ध्यायति मानवा ॥ नास्ति ॥

दुःख भय तेषाम् नम मत्सुर्युच नो तथा ॥२॥

परम पुण्याय नम सन्सुहृताय नम ॥ दोहा ॥
आदि ब्रह्म मत्सुरूप गुरु उरधर करके ध्यान ।
बारवार बदन कर दुप हर कर कबाल ॥१॥
मगल रूप प्रकाश गुरु सत कबीर कृपाल ।
बदो प्रयमारभ मैं साहेब दीन दयाल ॥२॥
सत्सुकृत सुकृत करो भाषाकरण हमार ।
विघ्न विनाम विनास फल मगल नाम तुमार ॥३॥
प्रगट नाम गुरु प्रगट्टे सकट टारन हार ।
धीरज धरम प्रकाश जग धीरज नाम जुसार ॥४॥
अस बस सन सतगुरु भय हाय अह आहि ।
सनक मरी बदगी बारवार कर जा चाहि ॥५॥
ब्रह्म निरूपन अध के संस्कृत श्लोक विचारि ।
भाषा सुगम बनाइ करन चहु निरघारि ॥६॥
आदिब्रह्म ऊँनमामि० कि श्यमादिब्रह्म० सबकारण० तथा करण ॥
तद्रूप सद्गुरु कर्म रेखा प्रशातये० अत्र वदे० इत्यन्वय ॥१॥ टीका ॥
अनन्त रूप प्रकाशमान ऐस मत्सुरूप की प्रेरणा धर करिके अमरलोकते
आय कबीर साहेंय ॥ जगत मे बाधू गन नप्रकं विषे धर्मदास प्रति शस्य
निवारणार्थ ब्रह्मनिष्पण संस्कृत भाषा करिके कहते भय ॥ तिनकी प्राकृत
भाषा करिके सुगम विचारणार्थ ॥ टीका ॥ यथा बुद्धि चार गुरुवस
नियालिस की कृपा से कह देता हूँ ॥ आदि ब्रह्म ऊँनमामि नाम आदि
ब्रह्म मत्सुरूप जो है तिनोच मैं ऊँनार सन्धि नमस्कार करता हूँ ॥

आशंका वे आदिब्रह्मतो अनादिकाल के मृत मिद्ध है तिनोकूँ आदि
 ब्रह्म क्यों कहिये ॥ तदा कहते हे ॥ जा कालके विषे जगत की उत्पत्त
 भई ताके आदि प्रथम ब्रह्म है ताते आदिब्रह्म कहिये ॥ तिनोकूँ मे ऊँकार
 सहित नमस्कार करता हूँ ॥ यहा ऊँकार को क्या प्रयोजन है ॥ तदा
 कहते हे ॥ ऊँकार जो है सो अकार उकार मकार त्रिंदु अर्थमात्रा
 संयुक्त है ॥ वा मे मूल नूत्तमादि बहुत प्रकार के भेद हे तिनो में से
 परापर्यंति मविमा दैपरीनाचा चतुष्टय ग्रहण करिके नमस्कार करते हे ॥
 वा पालन पोपन अर्थ ग्रहण करिके प्रथ आरभ क लिए नमस्कार करते
 हे ॥ कि दृश्यमादिब्रह्म नाम वे आदिब्रह्म कैसे हे सर्वकारण नाम ममप्र
 जगत के कारण ऋषी हे ॥ आशंका ॥ कारण दो प्रकार के है ॥ निमित्त
 कारण—उपादान कारण ॥ जो कार्य महत्तमान रग्यो है सो उपादान
 कारण कहिये जैसे सुवर्ण के भूषण अरु मृत्तुका के घट यह उपादान
 कारण कहिये ॥ अरु जो कार्य ते भिन्न रग्यो हे सो निमित्त कारण
 कहिये ॥ जैसे चक्र टंट कार्य करिके भिन्न है इनकूँ निमित्त कारण
 कहिये ॥ ऐसे वे आदिब्रह्म जो है सो निमित्त कारण है वा उपादान कारण
 है तदा कहे हे वे आदिब्रह्म जो हे सो निमित्त कारण है तिनो की सत्ता
 ऋषी निमित्त से ॥ जगत ऋषी कार्य बन्यो है ॥ अरु आप जगत ने भिन्न
 है ताते निमित्त कारण कहिये ॥ अरु माया उपादान कारण है सा कार्य
 सहवर्तमानरहित है ताते उपादान कारण कहिये ॥ आशंका ॥ ब्रह्म
 तो सर्व व्यापक है तिनोकूँ भिन्न क्यों कहिये ॥ तदा कहते हे ॥ वे
 आदिब्रह्म सत्पुरुष जो है सो सर्वलोकन तऊर्द्ध अमरलोक के विषे विराज-
 मान है ताते भिन्न कहिये ॥ अरु तिनो की सत्ता जो हे सो सर्व व्यापक
 है ॥ जैसे मूर्य ऊपर आकाम टेम के विषे दृश्यमान है ॥ अरु प्रकाशरूप
 से सर्वव्यापक सत्ता है ऐसे वे पुरुष की सत्ता सर्वव्यापक है अरु आप भिन्न
 है ॥ ऐसे कारण रूप है ॥ तथा नामता प्रकार करिये करण नाम सर्व
 जगत के कारण रूप है ॥ जा करिके जो कार्य होवे ताकू करण कहिये ॥
 ऐसे आदि ब्रह्म सत्पुरुष है ॥ तद्रूपं मद्गुरु नाम वे आदिब्रह्म सत्पुरुष
 जो है वोही रूप सद्गुरु है ॥ कैसे जा कालके विषे पुरसने कबीर साहेब
 कूँ बुलाय के तिनकूँ मूलमत्र दियो है ता ते वेही सद्गुरु रूप है और
 कोई नहि है ॥ वे पुरस रूप सद्गुरु कूँ कर्म रेपा प्रशातये नाम करे
 तिनकूँ कर्म कहिये अरु कर्म की जो रेपा ताकूँ कर्म रेपा कहिये अरु
 कर्म रेपा की जो प्रशाति तिनकूँ कर्म रेपा प्रशाति कहिये सो कर्मरेपा
 की प्रशाति के अर्थ ॥ ये समासा अर्थ भयो ॥ अब इनकूँ स्पष्ट
 करिके कहते हैं ॥ देयो जगत में अनेक प्रकार के नित्य-नैमित्य यज्ञायादि
 बर्णाश्रम के कर्म अनेक हैं ॥ तथा गुरु विप्र बालस्त्री मित्रादि जीव-

हत्यादि पाप कम बहुत प्रकार के हैं तिनके फलभाग मानदी रूप रेपा समग्र प्राणि मात्र के बुद्ध न परी है ॥ सा कम रेपा की अभाव रूप शानि के अर्थे अहंवेदे नाम मै बदगी करता हूँ इत्यथ ॥

वे मानवा सद्गुरु पादपत्र अनिरय प्याति तेयपा दु स भय नाम्नि चपुन ॥ तथा जन्ममनु रचना इत्यत्रय ॥२॥ गीका ॥ ये मानवा ज निष्काम कम उपासना करिक प्राप्त भया तानाधिकार ऐसे जा मनुष्यों सा ॥ सद्गुरा पादपत्र नाम वे जा ब्रह्मस्वरूपाकार बोध रूप सद्गुरु है तिनके पादपत्र नाम चरणकमल जा है तिनके अनिश ध्यादति नाम निरंतर ध्यान करे ॥ तथा वे मनुष्यों के दु खमय नाम अनेक प्रकार के दु ख अनक प्रकार के भय तो हाय सा नास्ति हो जावे ॥ च पुन तथा त प्रकार के जन्म मृत्यु नाम अनक कृत्यफलसु पची उलजन्तु बहुत प्रकार की यानि के विषे जन्म जेना नहि प्राप्त हावे ॥ च पुन तथा मृत्यु नाम मरणा काल के विषे अनक प्रकार के व्याधिकृत दु ख रूप मृत्यु जा है सो नीक हेता नहि होवे निर जावे इत्यथ ॥

अत—(मूल) ज्ञानध्यानविनाशकहि सतत मायच पूर्ण गुण ।

ह्येव ब्रह्म निर्मल सुमुक्त प्राचानक स्तोत्रकम् ॥

नरवातमृत्पयामया भगवतीदासेन मशोबित ।

शीघ्र पाठविवादिनाच सुगमार्थस्यैवनामा भवेत् ॥३७५॥

टीका ॥—हि निरचय करिके ज्ञानध्यान विनाशक नाम ज्ञान करिके अथ ध्यान करिके विलास करने वाले ऐसे अथ पुनि सतत नाम निरंतर माया नाम मायानुजय ऐस अथ पूर्ण नाम समग्र शुभ गुण से सम्पूर्ण भर हुए ऐसे गुण नाम गुण जो ह तिनोके ॥ नरवानाम मनन करिके बदगी करिके ॥ तत्त्वपया नाम तिनोकी कृपा करिके भयानाममैन भगवती दासेन नाम—भगवती दासेन नाम—भगवती दासेन इदनाम यह सुमुक्त बदनाम वर्णन किया जा अछे प्रकार का मात्र सुप ताके देने वाले ऐस ॥ अथ प्राचीनक नाम बहुत कालका ऐसा ब्रह्म निरूपण स्तोत्र नाम ब्रह्म निर्मल स्तोत्र जो है याके मशोधित नाम अछे प्रकार से व्याकरण शास्त्र के प्रमान से अत्रर अधिभिन्नि सयुक्त करिके शापन किया है ॥ पाठविवादिना—नाम यह ग्रंथ का पाठ की है इच्छा विनाके तिनोके सुगमार्थस्य अनाम सुगमग्रथ का हि निरचय करिके ॥ शीघ्र नाम तत्काल नाम भवेत् नाम लाभ हावे ॥ इत्यथ ॥३७५॥

(मूल)—इति श्री मद्गुरु चित्त मुक्तनुपदेश कलिमल विषयशक ॥ धमनास उबोधन सांगमय ब्रह्म निर्मल स्तोत्र सपूर्ण भवेत् ॥

(गीका)—इस प्रकार करिके मद्गुरु कबीर साहेब न रचिन किया ऐसी अथ मुक्ति का उपदेश नाम ऐसा ॥ अथ कलिमल जो पापनिके विषय

नाम करने वाला ऐसो ॥ अरु वर्मदाम माहेन को अच्छे प्रकारको बोध है यामे ऐसो ॥ अरु सार विचारको संग्रह कियो ऐसो यह ग्रह निरूपण स्तोत्र है सो सपूर्ण भयो ॥

विषय—दार्शनिक, कबीर-साहित्य ।

टिप्पणी—(१)—यह ग्रंथ कबीरदाम क शिष्य वर्मदाम की दार्शनिकता का परिचायक है । इसमें ग्रंथकार ने सत्त्व में श्रीर संस्कृत भाषा में ब्रह्म अर्थात् ईश्वर के सम्बन्ध में कबीरदाम और उनके पयानुमोदित सिद्धान्त का विशद विवेचन किया है, साथ ही इस पोथी में स्वान-स्थान पर अपने पथ के लोगों को सामयिक तथा उचित उपदेश भी दिया है । ग्रंथकार ने इसे एक स्तोत्र-ग्रंथ का रूप दिया है और इसके पाठ की अनिवार्यता में कई श्लोक लिखते हुए व्यक्त किया है कि यह ज्ञान उन्हें मंत कबीर माह्व ने प्राप्त हुआ । सपूर्ण ग्रंथ गुरुशिष्य-मंवाट—कबीर माह्व और वर्मदामजी के परस्पर वार्तालाप तथा प्रश्नोत्तर के रूप में है । ग्रंथकार ग्रंथपाठ की विशेषता में लिखते हैं—

“प्रसन्नेन मया दत्त चैतद्गुह्यतर परम् ॥

तुभ्यं सुसाधवेजानं तन्जात्वात्वं सुखी भव ॥३४८॥

पठनादेद्ग्रन्थस्य श्रवणाद्वा तथैवच ॥

निष्कामा प्राप्नुयुर्मुक्तिं नकामास्तु फलानिवै ॥३४९॥

एक श्लोक तथा चार्द्धं पठति शुद्धमानसा ॥

जनास्तेपि सुरसंचैव यान्ति मुक्तिं संशय ॥३५०॥

एतस्य पठनादेव सर्वेविघ्नाः विनिश्चितम् ॥

नश्यतेच तथा रोगा लताविस्फोटकादय ॥३५१॥

दैविका वैहिकाश्चैव भौतिका वा तथैवहि ॥

विनश्यति त्रयस्तापाञ्चैतस्य पठनादपि ॥”३५२॥

इस प्रकार ग्रंथ और ग्रंथपाठ की विविध विशेषता और फल दिखाने के बाद ग्रंथकार ने अन्त में ब्रह्मस्तुति करते हुए—

“नमोस्तुते त्वादि ब्रह्मन्सदैव श्रद्धाय बुद्धाय निर्मायिकाय ॥

ज्ञानस्वरूपाय तथा ज्ञयाय * * * * * ह्यनंतकाय ॥३६८॥

नमोस्तु पुरुषाय निरजराय निष्कामरूपाय प्रशातमूर्तये ॥

तथाव्ययाय स्वजनोपकारिणे प्रभावाय च सत्यनाम्ने ॥३६९॥

नमोस्त्वदेहायह्यनादयेच सत्य चिदानंद विलाशकाय * * * ॥३७०॥

संकल्पभिन्नाय भद्रस्वरूपिणे सर्वोपसज्जयनिस्तत्वव्यक्तये ॥

स्वतः प्रकाशाय च ह्य बुजाग्रे त्वज्ञानध्वंसाय नमोस्तु नित्यम् ॥३७१॥

ज्ञानोदयकरं ह्येतत् तथा च भक्तिवर्द्धकम् ॥

ब्रह्म निरूपण स्तोत्र कथित सारसग्रहम् ॥३७२॥

गुरुमूर्त्तौ रातर्यस्य चेच्छिन नामकतम्य माधुमगमम् ॥
 तस्यैतद्दीयत प्रथमं नामकतम्यं कदाचन ॥३७३॥
 प्रातरुधाय यो नित्यं पठान भक्तिपूवम् ॥
 निश्चयं गच्छत प्राणी सयलाक मनातनम् ॥३७४॥

आदि में प्रथमाहात्म्य लिखा है कि इस प्रथम को प्राप्त करने का अधिकार सभी को नहीं है अपितु जो गुरु के प्रति श्रद्धावान् है वही इससे लाभ उठा सकता है। प्रथमकार न अपने परिचय काल आदि के विषय में कहीं सभवत बुद्ध भी नहीं लिखा है।

(२)—प्रथम कीकाकार श्री भजनदासजी गुजरात देश के सूरत जिला के निवासी हैं। इन्होंने प्रथम के अंत में अपने विषय में निम्नलिखित रूप में लिखा है—

“साक्षाद्ब्रह्म कबीर सत्पुरुषानामस्वरूप गुरु स्मत्वा हृद्यनिशानिर्जरमखडा नदलाकरिधतम् ॥ तस्यप्रेरणया मया भजनदासनस्फुटीतार्त्तिका श्रेष्ठा सत्यं भाषिणी सुफलदा टीकाकृता भाषया ॥१॥ साधोमत दयानिधे प्रगन्नामाचार्य सन्गुरा वेदातस्यदृढस्यपचीकरणं यास्यशास्यस्यै ॥ ज्ञानध्यान परच भक्तिविधिषा स्वामया वर्णिता अस्याशुद्धमशुद्धता भवतिचे वत्सात्वात्तमाहुह ॥२॥ प्राकृतदलोक ॥ आद ब्रह्म समान सद्गुरुभय शब्दार्थ दाता धनी तातया पद बाधिनी सुसरलाभाया सुगीका बनी ॥ बारबारहि मोर भावसहित साप्यगृहे घन यामेमेरिजु भूल चूक मन्हीमात्राकरादन ॥३॥ इति श्री सद्गुरु पादपङ्कजरज भजनदाम कृत पदबोधिनी ॥ प्राकृत भाषाया टीका समाप्ता ॥ मत्कवीरार्पणं मस्तु सद्गुरु अपणं मस्तु ॥

कवित्त ॥

गुजरात देशमाहि नम्र मूर्त वामं वश
 गुरु साहेब का प्राचीन बोधाम है ॥
 तामे गुरु अमरदासजी के सिप किसनदाम
 तिनकी चाहत किया गीताका काम है ॥
 गुरु लङ्गमनदासजी को सिप है दासादाम
 भजनदास गीताकृत बोलबे का नाम है ॥
 मोक्ष अभिमान नाही जानका विचार आही
 छतन की दाया चाही और तन काम है ॥

सोरठा ॥

एक नवहि दा तीन सान विधि तृतीया गुरु ॥
 प्रथम समापत कीन ज्येष्ठ मास शुभ पत्र में ॥

उपर्युक्त श्लोक ने प्रत्यकार का स्थान, गुरु और टीकाकार का विषय स्पष्ट होना है। टीकाकार ने कहीं-कहीं भूल ने टीका को दुम्ह कर दिया है। टीका की भाषा 'मधुक्कडी' है और यदन्तत्र संस्कृत के श्लोक को तथा उद्धरणों का भी प्रयोग किया गया है। टीका की शैली प्राचीन है। टीकाकार संस्कृत के अच्छे विद्वान् प्रतीत होते हैं, फिर भी, कहीं-कहीं व्याकरण की अशुद्धियाँ हैं।

- (३)-प्रथ के लिपिकार मङ्गलदान भी अत्रि एव कवीरपंथी नाथु हे। लिपिकार ने प्रथ के अंत में "इतिश्री प्रथ ब्रह्म निरूपण नटीक नाम्ना ॥ सम्पूर्ण शुभमस्तु जमप्रत देपितः लिपिन मम दोषो नदीयते ॥ संमत १६३२ के साल पून सुठ शुक्ल पक्ष चतुर्थी पुनी ॥१४॥ मेमार-वार क दिन सम्पूर्ण भवेत् ॥ दोहा ॥ दृष्टा जो दृष्ट होवगा मात्रा विदु विचार ॥ कर जोरी विनती करे लीजो संत सुधार ॥ बैठक कमर्गमध्ये प्रगट नाम माहेव का वाम अस्थान तहा पर बैठ के लिपे हस्त अक्षर मङ्गलदान नाथु ॥ श्लोक ॥ जाहज्य पुस्तक दृष्टा ताहस्य लिखितं मया ॥ यदि शुद्ध मशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥२॥ नापी ॥ वंदो पुरम कवीर वदो पोटण अंमकां ॥ वंदो परमातमधीर वंदो एकोत्तर वंस को ॥१॥ मेरी बुद्धि मर्लान है शुद्ध लिपो नहि जाय ॥ चारवार वंदगी कं लीजो अर्थ लगाय ॥१॥" इन दोहों में अपना परिचय दिया है। अंथ में मूल मोटे अक्षरों में और टीका पतले अक्षरों में लिखित है।

- (४)-यह पोथी अनुभव्य और विवेच्य है। इसमें कवीर-दर्शन की समीक्षा की गई है। कवीर-दर्शन के सम्बन्ध में प्रत्यकार का अभिमत देखिए—
पृष्ठ-सं० १३६।

मूल—मद्गुरुवाच ॥ ज्ञान योगेहठेचेदंनस्थित चंचलं मन ॥

शिवादीना शुकादीना भ्रामयत्यनिशंचतन् ॥२५॥

गोरक्षमद्वय कोपि नान्यज्ञाता जगत्यभूत् ॥

सोपिमनोवशीभूत्वा गापं ददौनरान्व हूत् ॥२५३॥

टीका—मद्गुरुवाच ॥ ज्ञान योगेचपुन हठे इदं चंचल मन नास्थितं भवेत् ॥ किंतु यत् शिवादीना च शुकादीना तन् अनिग भ्रामयति इत्यन्वय ॥२५२॥ टीका ॥ अत्र ता ब्रह्म को उत्तर जो है नो सद्गुरुकवीर साहेव वर्णन करिके कहते भये ॥ ज्ञान योगेनाम । स्थूल सूक्ष्मादि सहित अकार उकार मकार विदु-अर्द्ध मात्रा को वर्णन करिके निजर नामको भिन्नरूप-दरसायोताकू ज्ञान योग कहिये । ताके विषे ॥ अरुहठनाम । यम नियमादि साधन सहित समाधिजो है ताकू हठयोग कहिये ताके विषे ॥ उदंनाम । यह चंचल नाम श्रोत्रादिन्द्रिय द्वारा करिके शब्दादिविषे ये के निरतर वृत्तिचलायमान होवे । किंतु नाम क्यों यत् नाम जो शिवा-

दानां नमन—सिध आदि बड़े देव आ है तिनोके । अद शुक्लीना
 नाम—गुह्येय अदि उयक बह-बह मुनि आ है तिनके । तर नमन
 गी मन आ है ना अस्मिन्नाय मिलरं मानयति नमन—चकके पैठे
 दितारता है ॥ इत्य ॥२५२॥ तगति गारुडग्य प्रवणता क
 अवि न अमृत ॥ २ अवि मन बरीनूवा ददृत् नरत्न शाप दनी
 इत्य-बद ॥२३३॥

॥ गीका ॥ अस्मिन्नाय—यह अगत क विने गारुडग्य नाम
 गारुड गानी आ भये छारु गगनाय करावर ॥ अय-गगनाय
 और गनीक अस्मिन्नाय—रा, भी न अमृतनाम—नहि भया स
 अवि नमन—आ भा पण मन बरीनूवा नाम यह चचलमन जो
 है ताके बन्हायक ॥ ददृत् नरत्न नाम—बहुत नरनक शर्पनाम
 शाप जो है ग—दना ना—दिये है—नाम ह धनगादेया
 यह अगत क सिध गारुड क गमान और गानी काइ भी
 नक्षिमागण बसा गारुड गगनाहता । परंतु गाना पणमन क
 बउदान के बहुत नरनके अत तप शीव गेता ये मन चचत
 है अत मनाबलबन है ।

यहो प्रणय न मन छार उयक सिध क गगन ग विरचन
 छिया है । यह प्रय अगरी गुणगुण प्रकृत, (अनाया
 गनीय पना) क सावता की प्रय हुआ ।

[३०] तुलसीमानोपनिषद्—प्रवचन—X । सिधेय—X । पृष्ठ—४ । प्र ५० वीं तगमन
 २० । अयस्या—प्राचीन । हाय का बना देया बायव । भाव—
 गहृण । नि—नगय । राजक न—X । निरिहाल—X ।

प्रारम्भ—ॐ हमास्तुभ्यै ॥ अय तुव । मत्त गनिय ॥

मन्तुनरविपिनारत्न प्रवृत्तानारत्नय दी

प्रवृत्ति न तु—अस्मिन्नाय अयथाय टि-टन करवकत ॥१॥

का विध का दी ॥ गारुडमा प्रवृत्तानरत्नमुनय नागय ।

गर्भमी पुग एतवविपाना यथास्थितं कृत । मन्तु ॥२॥

दक्षिणपन्तुनीमहानादपुत्रवदी मन्तुवप्रीन् ।

मन्तुव पन्तु ॥ इत्य परात्पन्तुवदी प्रवृत्ति ॥३॥

धीमन्तु ॥ सिधिकाह तुलसीमन्तुनरत्नय दक्षिणपन्तुवदी

पन्तुवदी ॥ ३ न पन्तुव दी पुग ॥ इत्य अय व । मन्तु सिध

अय गी मन्तुव कय वा कय एव है व का वन ह ॥१॥

वा कया विरह वा कया गीनेह यदत्तं शुक्ल मन्तुनर

मा मुनि कय ॥ पन्तुवदी कय मन्तु ह ॥ पन्तुवदी मन्तु

मिग ह गी मन्तुव ॥ अय कया ॥ १२॥ सिधिका गुण ॥२॥

अन्त०— अथ हैतासुपनिषद्मन् परशिष्याय ब्रूयात् न नास्ति काथ नानृजवे
नानृयवे न शठाय ना शान्ताय ना वान्ताय ना नमाहिताय प्रब्रूयात्
ज्येष्ठपुत्राय परा तासुपनिषदम्यातरगीयानो रात्रिकृतं पापन्नाशयति
सायमवीशानो दिवसं कृत पापन्नाशयति न त्रिण्णुनोक्त गच्छति य
पूर्व वेद य पूर्ववेदेति ॥ इत्यथर्ववेदीया तुलसीमानोपनिषद् संपूर्ण ॥

वो यह उपनिषद् परशिष्य को नहीं कहे नारिक को नहीं कहे
निन्दक को नहीं कहे शठ को नहीं कहे अज्ञान्त को नहीं कहे
अज्ञान्त को नहीं कहे असमाधान को नहीं कहे ज्येष्ठपुत्र को कहे,
यह उपनिषद् को प्रातः ज्ञान अव्ययन करने वाले मनुष्य रात्रि का
क्रिया पाप को दूर करता है। वो मायकाल अव्ययन करनेवाले
दिन का क्रिया पाप को दूर करता है जो वो पुण्य विष्णुलोक
को प्रति करता है जो यह जानता है जो ॥ इत्यथर्ववेदीया
सभाषा तुलसीमालिनीपनिषद् सम्पूर्णा ॥ शुभमविष्णु ।

विषय— वासिक-नाटिन्य। तुलसी माला से मन्वित मन्त्र एव माला जप-विधि।

टिप्पणी(१)—यह ग्रंथ तुलसी-वृत्त की बनी माला के सम्बन्ध में है।
प्रथकार ने 'अथर्ववेदीय' लिखकर प्रथ का गौरव बढ़ाया है।
प्रथ में, प्रारंभ करते हुए नारद आदि के परस्पर वार्तालाप की
प्रसंग-चर्चा की गई है।

(२)—प्रथ में, मूल मोटे अक्षरों में और भाषा-टीका पतने अक्षरों में
लिखी गई है। टीका की शैली पुगनी और कया-शैली से मिलती-
जुलती है। प्रथ की लिपि स्पष्ट और प्राचीन है। लिपिकार ने
'ध' के लिए 'व' और 'घ' के लिए 'व' का प्रयोग किया है।
इंगी प्रकार अ के लिए 'य' और य के लिए 'य' लिखा है। लिपि
की यह शैली प्रथ की प्राचीनता सूचित करती है।

(३)—इस ग्रंथ के माथ ही एक और 'अथर्ववेदीय-वारणे वैदिक प्रमाणानि'
नामक तीन पृष्ठों का उपग्रथ है। ये दोनों पुस्तिकाएँ वैष्णव
आचार में सम्बन्ध रखती हैं। यह ग्रंथ केदारनाथ चौरसिया,
(गया) के मौजन्व से प्राप्त हुआ है।

[३१] विचार-सागर—प्रथकार—X। लिपिकार—X। अवस्था—प्राचीन, देशी कागज।
पृष्ठ—१६७। प्र० पृ० पं० लगभग—२८। भाषा—हिन्दी। लिपि-
नागरी। आकार—५ १/४" X ६ १/४"। रचनाकाल—X। लिपिकाल—X।

प्रारंभ—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वस्तुनिर्देश-परमंगल ॥

दोहा ॥

जो सुपनित्यप्रकामविभु ॥ नाम रूप आकार ॥
मति न लपै जिहि मति लप ॥ नो मै सुद्ध अपार ॥१॥

का प्रद्वार स्वप्न मम ॥ लहरी विष्णु महेश ॥
 विवि रीति एत वन वन ॥ मक्ति धनश गणेश ॥२॥
 ना ह्यनु तत्र का ॥ दिव धारा मुनि ध्यान ॥
 ता का हात नपरिने ॥ मा विष्वा मान ॥३॥
 द्वै रिक्ति नै नि नयन ॥ तनहृ त परी नाप ॥
 न्गे पुत्रग न्गदिदि नद्वै ॥ गत क्षय क्षय ॥४॥
 क्षय नादा नाश मुक्ति ॥ भक्त राम निष्काम ॥
 ग मरा है प्रमा ॥ कष्ट कष्ट प्रनाम ॥५॥
 तस्या बे, निदान जन ॥ जान भक्ति संभार ॥
 का विचार सगर का ॥ परि मुक्त है धीर ॥६॥
 मूत्राभ्य परिक प्रवृत्त ॥ प्रथ बहुत सुरवाति ॥
 तथा नि भाषा का ॥ ताप मति म न्गजानि ॥७॥

टीका ॥

यद्यपि मूत्र मध्य परिक प्रवृत्तकटीव क्षति नेक ॥ सुरवाति कथिय
 मूत्राभ्य प्रथ बहुत हो ॥ तथा नि मूत्राभ्य प्रथन से मद्बुद्धि प्रवृत्त को
 दोष हारे नही ॥ श्री भाषा प्रथन से मद्बुद्धि प्रवृत्त व विबोध हारे
 है ॥ याने भाषा प्रथ का क्षात्त निष्काम नहीं ॥ किंतु समुत्त प्रथन
 क विचारने विवेचनकि बुद्धि समर्थ नहीं है ॥ तिनक विनिम प्रथ
 का क्षात्त प्रथन है ॥८॥

दीक्षा ॥

क्विन्मूत्राभ्य भया बहुत ॥ प्रथ जग विष्वात्त ॥
 नि निर रगार नरी ॥ नदि म्दद नका ॥९॥

टीका ॥

११०—गच्छ द्वि क येन मुनि ॥ ग को को पुत्र मत्त ॥
 वा गी ह्ये सह कषा ॥ ६६ सुख विजात ॥११॥
 श्री क्वन न्गायतु ॥ सध्मी प्रथ क्षात्त ॥
 का ज्ञापी विन सर क्षात्त ॥ रैश क्वपन्न न्ग ॥१२॥
 मेष न्गा प्रारम्भ मू ॥ इत्या न्गापी सह ॥
 क्वि लक्षन दि न्ग ॥ यननि म्दद न्गा ॥१३॥

टीका ॥

गनी का म्दद म्ददर क्षात्त की न्द प्रारम्भ हारे है ॥ सह पूत
 कती है ॥ नाग इत्या न्ग है ॥ क्षीर कष्ट म्दद म्दद क्षात्त है
 म्दद न्गा इत्या न्गा ॥ ता का सह क्षात्त न्गा ॥ गनी का
 म्दद म्दद न्गा इत्या न्गा म्दद न्गा न्गा हारे नहीं कहे है
 क्षात्त न्गा है इत्या न्गा म्दद म्दद ॥ श्री क्वन म्दद न्गा भूत

के सत्वगुण का कार्य कत्या है ॥ तथापि रजोगुण तमोगुण सहित सत्वगुण का कार्य है ॥ केवल सत्वगुण का नहीं केवल सत्वगुण का कार्य होवै तो चलस्वभाव अंत करण का अंत करण का नहीं हुवा चाहिये ॥ तैसे राजसी वृत्ति काम क्रोधादिक ॥ औ मृदतादिक तामनी वृत्ति किसी अंत करण की नहीं हुई चाहिये । यातें केवल सत्वगुण का अंत करण कार्य नहीं । किन्तु अप्रधान रजोगुण तमोगुण सहित ॥ प्रधान सत्वगुण वाले भूतनतें अंत करण उपजे है । यातें अंत करण में तीन गुण रहै है ॥ सो तीन गुणकवीपुर्णन के जितने अंत करण है ॥ तिन में सभ नहीं किन्तु नून अधिक है ॥ यातें गुणों की नूनता अधिकता से सर्व के बिलक्षण स्वभाव है ॥ इस रीति सैं तीनू गुण का कार्य अंत करण है ॥ जितने अंत करण रहै उतने रजोगुण का परिणामरूप इच्छा का अभाव बनै नहीं ॥ यातें ज्ञानी कूं इच्छा होवै नहीं ताका यह अभिप्राय है ॥ अज्ञानी औज्ञानी दोनू कूं इच्छा तो समान होवे है ॥ परन्तु अज्ञानी तो इच्छादिक आत्मा के धर्म जानै है ॥ और ज्ञानी कूं जिस काल में इच्छादिक होवै है तिस कालमेंवीआत्मा के धर्म इच्छादिकन कूं जानै नहीं किन्तु काम, संकल्प सन्देह राग द्वेष भ्रदा भय लज्जा इच्छादिक ॥ अंत करण के परिणाम है ॥ यातें अंत करण के धर्म जानै है । इस रीति सैं इच्छादिक होवै बी है ॥ आत्मा के धर्म इच्छादिक ज्ञानीकूं प्रतीत होवै नहीं । यातें ज्ञानी में इच्छाका अभाव कत्या है ॥ तैं सैं मनवानी तन सैं जो व्यवहार ज्ञानी करै ॥ सो सारा ज्ञानी कूं आत्मा में प्रतीत होवै नहीं ॥ किन्तु सारी क्रियामनवानीतनमें है ॥ औ आत्मा असग है यह ज्ञानी का निश्चै है ॥ यातें सर्व व्यवहार कर्ता वीज्ञानी अकर्ता हैं ॥ इसी कारण तैं श्रुति में यह कत्या हैं ॥ जान तैं उत्तर किये जो वर्तमान सरीर में सुभ अशुभ कर्म ॥ तिन के फल पुण्य पाप का संबध होवै नहीं ॥ प्रारब्धबल तैं अज्ञानी की नाई सर्व व्यवहार और ताकी इच्छा संभवे है ॥ सुभ संतति नाम राजा कूं त्यागि कै तीनू पुत्र निकसे ॥ तहाँ पुत्र की कथा कही अवपिता का प्रसंग कहै है ।

दोहा ॥

पुत्र गयेलाप गेहतें पितुचित उपज्योपेद् ॥

सूनी राजनतिनतज्यो ॥ नहिजथार्थ निवेद ॥२६॥

टीका ॥

पुत्र ग्रहतें निकसे तब राजा कूं तीव्र वैराग्य कै अभाव तैं ॥ तिनके वियोग कादप हुवा तैं से मंदवैराग्यहु..... ।

विषय—दर्शन । निगुण-साहित्य ।

टिपायी-(१)—यद् प्रथम सन्निहित है। पुष्पिका (प्रथम) के पृष्ठ सन्निहित हान क कारण प्रथकार लिपिकार, ग्रीकाकार के सम्बन्ध में तथा उनके काल आदि किसी भी बातों का संकेत नहीं मिलता है। प्रथम के मध्य में भी यथासंभव वाद परिचय नामक मन्त्र नहीं दिया हुआ है। अन्त नहीं बना जा सकता कि उनके लेखक और लिपिकार कौन हैं और उनका समय क्या है ?

- (२) इस प्रथम में श्री गुरु के निगुर्यान्त की षष्ठी सुन्दर तथा सारगम विवेचना की गई है। प्रथकार न दाहि और चौपाइयों में जिस भाषा का प्रयोग किया है वह सधुक्की भाषा कही जा सकती है। इसकी भाषा में स्थान-स्थान पर 'मन्त्र का और यत्र तत्र प्रथमी का प्रभाव परिलक्षित होता है। जैसे—

जन्म मरन गमना गमन ॥ पुण्य पाप सुख वेद ॥ निरन्तरूप ई भान
है ॥ भ्रांति विपानी व ॥१००॥ (पृष्ठ-संख्या ६१) में 'मान है
और विपानी वे, मज भाषा का शब्द है। और इसी प्रकार शिष्य वचो
जो साहि ई ॥ सब वेद का सार ॥ लहे ताहि अन्तयासनी ॥ सत्यतिनसै
अपार' ॥११॥ (पृष्ठ-संख्या १५६) में क्या, 'मन्त्र का और तहि लहे
आदि 'अथमी का प्रतीत होता है। इससे ज्ञात होता है कि प्रथकार
अवरय अथम या मज के निवासी है। टीकाकार न भी प्राय ऐसी
भाषा का ही प्रयोग किया है। यार्त और 'तारू के प्रयोग का तो
बाहुल्य है ही अन्य सधुक्की शब्दों का भी प्राचुर्य है।

पूरा प्रथम सात तरंगों में विभक्त है। तरंगों के अनुसार निम्न
लिखित प्रतिपाद्य विषय हैं—(१) साधन और स्वरूप वर्णन (२) अतु
अथ विशेष निरूपणम् (३) गुरुशिष्यलक्षणम्, गुरुभक्तिप्रकारनिरूपणम्,
(४) उत्तमाधिमारी उपदेश निरूपणम्, (५) वेदादि व्यावहारिक प्रति
पादन मध्यमाधिकारी साधन वर्णनम्, (६) गुरु वेदादि साधन मिथ्या
वर्णनम्, (७) उत्तम महत्त्वमक निष्ठाधिमारी वर्णनम् ॥

प्रथकार दादू मतायनवी और दादू के परम शिष्यों में थे। इन्होंने
प्रथम में यत्र तत्र गुरु शिष्य के रूप में अपन को दादू के साथ संकत
किया है। जैसे— दादू दिनदमान जूतसुपपरमाकाम। जार्मि मति
की गति नहीं साइ निरचन दास। तन मन घन बानी अरथी जिही
मेवत चितनाय सखत रूप सा आप हैं दादू सदा सहाय और 'मोकार
का अर्थ लिपि भयाहतय अग्नि परैतुयदितरु तिदि दादू करहुगदधि
में दादू दास के नाम की बार-बार चर्चा की है। यद्यपि प्रथकार के नाम
की चर्चा न तो प्रथम के आदि में और न अन्त में हुई है किन्तु दो स्थानों
में नाम मिले हैं जो अनुसंधानकों के लिए विचार्य है। पृष्ठ ३३

में (जा में मर्ति की गति नहीं सोई निश्चलदास) और पृष्ठ १३० के मोरठे के अन्तिम चरण में—('उत्र को बनाइ जाल बन को विभाग कीन्ह करन प्रनामताहि निश्चल पुकारिकी') दो बार 'निश्चल' नाम आया है जो रघुपट्टन प्रयत्नर के नाम की ओर संकृत कर रहा है। ग्रन्थ में, दांहे, चौपाई, मोरठे के अनिश्चित इन्द्रवजा आदि छन्दो तथा वृष्टान्त, परिमर्या आदि अलंकारों में रचना की गई है। पृ० २० १३१ में अर्द्ध दोहा—'नतचित्त आनदण्णत्त्वं ब्रह्म अजन्म अमंग'—में रचना है।

- (३) ग्रंथ की लिपि प्राचीन किन्तु स्पष्ट है। लिपिकार के सम्बन्ध में प्रारम्भ, मध्य या अन्त में कोई भी संकेत नहीं है। लिपि पद्यों के अक्षरों की (लीयों) जैसी है। लिपिकार ने दीर्घ ऊकार की मात्रा को अक्षरों के नीचे न देकर वगल में (अक्षर के बाट) दिया है।
- (४) ग्रंथ की टीका अत्यधिक विस्तृत और उज्ज्वल है, किन्तु टीकाकार का श्रम श्लाघनीय है। मूल ग्रंथ को टीकाकार ने बहुत बढ़ा दिया है। ग्रंथ विवेच्य और पठनीय है। ग्रंथकर्ता का 'निश्चल दास' नाम भी नवीन-सा प्रतीत होता है। ग्रंथ की विवेचना के पश्चात् दादू पंथ के साहित्य पर नवीन प्रकाश पड़ सकता है। यह ग्रंथ अनीमावाद, (गर्वनीयाग, पटना) निवासी अक्षौरी गुरुशरण प्रकाश के मौज्ज्य ने प्राप्त हुआ है।

[३२] शब्दावली—ग्रंथकार—कबीर साहब। लिपिकार—साधुप्रकाश अक्षौरी। अक्षर—अच्छी। पृ० १८६। प्र० पृ० ५० लगभग २०। आकार—६ $\frac{1}{2}$ " X ८ $\frac{1}{4}$ "। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—X।

प्रारम्भ—नंतो गगन मंदिल लागि तारा ॥

खोलेंगे कोई संत जौहरी, कोटिन मद्ध विचारा ॥८॥

प्रथमहि मोहंग न्यान लगावे, ताविच सुरत करे पैठारा ॥

तब आगे की मंध दीजिए, ता भीतर निज रूप हमारा ॥१॥

मंठिर भीतर पुर्ष दिराजे, कुल्फ तीन तहा अगम अपारा ॥

ताकी कुंजी गुरु गम माहीं ज्ञान ग्रंथ नो न्यारा ॥२॥

जुग भर जोग समाध लगावे, कोटिन करे विचारा ॥

पुर्स रूप कवहुं नहीं दरमे, जो गुरु मिलैं न मारा ॥३॥

जब गुरु वहिया मिलैं कृपानिध, निज का भेद सुवारा ॥

तबे हस को मारग सुके, खोले कुल्फ केवारा ॥४॥

अन्त—रागदेवभंवार ॥

मनुआ राम के व्योपारी अब कै खेटाभरकती लाये बनीज कीयो ते भारी ॥

पाच चोर सदा मगरोके इनसे करतु छुटकारी ॥

नतगुरु नायक के संग मीली चलुलादस कै न हारी ॥

छात्र गमार मारग माही मानेगे एक वनक एक नारी ॥
सावधान होइ पचन खइयो रहा थाप मम्भारी ॥
हरी के नगर जाइ पहुचोगे पइहो लाल अगरी ॥
चरनदाम ताको अममाने राम न मीने रामवासी ॥

विषय— कबीर साहित्य ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ कबीरदास धर्मदान और चरणदाम प्रवृत्ति सतों क शब्दों और वाक्यों का संग्रह प्रतीत होता है । यह काद मौलिक ग्रंथ नहीं कहा जा सकता । अखौरी साधुप्रकाश ने अपने जीवन-काल में कबीर-मन्त्र-धी भिन्न भिन्न पदों का एकत्र कर दिया है । इसमें कद पद प्रकाशित प्रतीत होते हैं । कबीर साहब के बाद एक परंपरा ही रही है कि कबीरपदी साधुओं ने दार्शनिक पदों को रच कर अपनी आर स समयमें कबीर साहब का नाम जोड़ दिया है । यह ग्रंथ भी उसी प्रकार का प्रतीत होता है । ग्रंथ में लिपिकार ने लिपिपाल का संकेत नहीं किया है । लिपि रूप और सुन्दर है । यह ग्रंथ अनीसामाद (गदनावाग पन्ना) निवानी अखौरी गुरुशरण प्रकाश के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

[३^२] कबीर भानुप्रकाश—प्रयकार—परमानन्द दास । लिपिकार—X । अवस्था—
प्राचीन-जीण शीण । पृष्ठ—५४० । प्र पृ प लगभग—२३ ।
आकार—६ X ६ $\frac{1}{2}$ । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—
ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी स० १६३५ वि । लिपिकाल—स० १६३६
वि १८८३ इ ।

प्रारम्भ— जें सतनाम । अत्र लिख्यते ग्रंथ श्री कबीर भानु प्रकाश प्रथम पूर्वाध
भाग मन्त्रूप भरथ ख का सर्व रात्री धर्मानि कथा वनन कबीर भानु
अस्त सध्या वदन छ, मिस्वरणी ।

कबीरभानुभाकरनिकरज्ञानविधिमय
परम्यान थीरगत गुरपीर निधिनय
महानेजोरास वननदनास वृष रूपा
प्रताप तापता दनुनी दलनपतव कृपा १
तरत तारत लहतवननार वसुमती
महदव पारत अकधिन अननपसुवती
गुरापीस धीस द्वियतिमिपीमजगचये
भन भाव भगरतिरकरनामय पगपगे ०
नकवर र ममभनस्तहित
निहार हारहानिमिरहरपारगतज्ञिन
सनी नूतज्ञान भित्तग मिलगत दिनकर

जती भोगं भागंगत विगतभागं किनकरा ३
 प्रजा पीडा श्रीडावनतिमिर क्रीडामहिमहाहते
 मुद्रानिद्रा समदमन जुद्रागतिगहा
 सतो संगरग्वसतप्रसंगभसकरा
 उमगं अंगं ये कममस अनंगं तसकरा ४
 नमस्कारंकारं क्रमरक्रमकारंकरुते
 ववंदंवेवंदेभनत भवफंदेवववृते
 रमं रामंरम्यं ररतररकल्यान करनं
 प्रनम्यंतौपीष्टे परमपरमीष्टेत्रवरनं
 इति सिखरनीच्छद

अथ कबीर भान वियोग सबैया—

सत नाम व्रतीवरसंतमती दिन अंत भयेभगवंत पयाना
 जगनैन महा सुख दैनदुरे वरिवीर वरोपदपकजध्याना
 दृढ इंद्रिनदौन तेमोनगहो थिर आमन हो अनुसामन माना
 यहिस्र विसचेतनतो गुनते मतधारहि ये सत रूप समाना १”

अन्त— जिनकी नेह नाथ चरणन की और उपायन विसरणन की
 लाज करे अपने पररणन की दीन देखिटेनिजुपुरवासा ५
 आरति हंस अमरपुर गाये दृच्छा मूल अकर सुभाये
 महज सोहंग अचित पै आये अजरदृ दने जाको दासा ६
 सुरनर प्रभु आरति कीने बर्मदास गरतीन सहीते
 गावै संत महंतगप्रीते परमानन्दवितीजमत्रासा ७ इति आरती ॥

विषय— कबीर-साहित्य ।

टिप्पणी—यह ग्रन्थ कबीर साहब के विचारों का एक लघु संग्रह तो है ही, साथ ही
 ग्रन्थकार ने इसमें अपने मौलिक विचार भी दिये हैं। जहाँ कबीर के
 दार्शनिक पक्ष की उत्तम विवेचना की गई है, वहाँ ईसाई, मुहम्मदी,
 काठियानी, स्मार्त, जाकत, शैव, वैष्णव, वाममार्गा आदि विभिन्न वर्गों
 और विचारों की भी परिचयात्मक आलोचना की गई है। ग्रंथ विवेच्य
 और पठनीय है। ग्रन्थकार ने ग्रन्थ के अन्त में लिखा है—

सत गुरु की दायामय पूरी लिख्यौ बर्म जो भूतल भूरी
 रच्यौजोतिजुहि यहुवा हुलामा ग्रथ कबीर भानु प्रकाशा
 पंडित जनसे विनय हमारी भूलचूक जौकतहु निहारी
 दृष्टै अजर जह लखिपाई नो सुधारि कै पडै वनाई

उपरोक्त ग्रन्थकार ने, 'लिख्यौ बर्म जो भूतल भूरी' कहकर स्वयमेव
 समस्त वर्गों के परिचय के सम्बन्ध में ग्रन्थ का अभिप्राय व्यक्त किया
 है। ग्रंथ में स्थान-स्थान पर कबीर, बुल्लाशाह प्रभृति विद्वानों तथा

यागवाशिष्ठ, वेदान्त, दर्शन वाय दर्शन आदि की उक्तियों को साजी रूप में रखकर अपने मत-य की पुष्टि की गई है।

जैसे—पृष्ठ-सं० ३८४ देखिए—

‘मङ्गलकवीरवचन सात्री — कवीर कवीर तु क्या करो साजो आपन शरीर
पाचो श्री बरा करो गुमहीदासकवीर०

बु-नेशाह वचन०—काम श्राध लोभमोह हकार पत्रो कङ्कवा-नुदामार
दन्दा करनी है बदरा बुना आपै अल हा,

रामानन्द वचन (पृष्ठ सं - १७२)—पति पति रान गुनि गुनिमति हृदया सुदन होद०
जबूर में श्रेऊव के वृत्तात में—चतुरन की चतुरा, को प्रभु मिथ्या करहार
। ननुमनोरथ निजु करन त सके न कबहु सवार
विद्वन का चातुरी में चाखत सदा फसाय
टेटे तिरछे लोग मत मिर की बल चलगाय”

प्रथकार ने प्रथ के अ त में प्रथ और अपने विषय में लिखा है—

‘सम्बत उनिश सौ पैतीसा शुक्ला यकादगी तिथि दीसा
मगल श्रव ज्येष्ठ महीना तादिन प्रथ समापति कीना
महि पनाब देश के मानी शहर निरोपपुर यक आही
नप्रमुक्तसरतहयक अहई दादा ग्राम निकम्तदिकहई
ताहें ग्राम में जब श्राग्नीना भवनध्यात प्रभु के लालीना
प्रथ रचन गुर आना पा लिख रच धर्म रजा समुक्ताइ
नन अक्षर लिख बनाइ जा काद पति बड़े नाहि मिनाई
सागुर समुग लेखा भरिहे निय मत ना काइ करिहै इनि

प्रथ की लिपि पत्रों के अक्षरों (प्राचीन लीखा) का प्रतीत हाती है।
लिपि स्पष्ट है। यह प्रथ अनीसाबा (गन्नीसाग, पन्ना) निवासी
अखौरी गुणकरण प्रकाशना के सात-य स प्राप्त हुआ।

[३४] राममाला—प्रथकार—रुशवान गिरि। लिपिशार—लक्ष्मण तिवारी। अत्र
स्थ—३३, प्राचीन-देशी कायन। पृष्ठ-१४। प्र० पृ० प०
लगभग-२८। आकार-४ x ६ १/२। भाषा—हि०। लिपि—नागरी।
रचनाकाल—x। लिपिकाल—सं० १६४६ वि

प्रार्भ—धूचगला लिलालसोत्र १ मपम्वाधीमाम ॥ इ उ ए आ वा वि वु
व वा ॥ उप रास क रि कु ष ल ६ क की ह मि तु न ही हु हे हा टाणी
डु ड डा ङ म मि मु म मा ग गी डु ठ विह डौपपीपुपणठपपो
क्या शरिश्चरानातीनून तुना ७ ता न निजु न ना ज्ञानिजु गरवक
८ नचामभिभुवपुठभ धन ८ भाचर्ची धीपु पया गाग मकर १०
गुग गारा ११शुगेशा १२ म ११ दिव्यक ता १२ चची मीन १२
अथ प्रथमें मपगाम वर्णन।

॥ दोहा ॥

मेपरानिहै जाहि किताकर भीठ सुभाप

अन्तर अठ फरेव बहु वाहर कपट बनाव ८

अन्त— सुनो नवे वृश्चिक का हाल । सफर करै बहुमाल न पावै ।
 खर्च खाय खालि घर आवै । दसमे धन जुनो करी करै ॥
 तहनुकसान उठाना परै ॥ एकादशे मकर का भेद ।
 मंनकि पुजै सकल उमेद । द्वादस कुभ जो बैठे पाम
 सो दुश्मनी करैगा खाम । मुख पर करै गुणामद तेरो समान ठीक मे ॥पतीतखरो॥
 बुडत ही मगधार सिधु भव जल ते बेड़ा पार करो ॥
 कर्म प्रवान विष्व मे जो ता कृपा करो यह अर्ज कहौ ॥
 तु मे कर्म नाशवै है ॥ अपकर्म कर्म मर्व तुमी गहौ ।
 जो करनी जोकी सोई भेगै तौ एक नाम निहोर गुनी ।
 मे तो हही अप्रतुत नन्यासी सुभ औ सुभ न एक गुनो ॥
 इति श्री योतिपमार निर्याय भाषा छन्द में रानि माला बनाइ ।
 कशवानन्द गीरी नन्यामी अप्रवृत मे ठिकाना वकी गवी ॥ शुभमस्तु

विषय—ज्योतिष-शास्त्र ।

टिप्पणी—(१)—ज्योतिष-शास्त्र से सम्बन्धित दोहा, चोपाई और सोरठा में लिखित यह ग्रंथ वड़ा ही अच्छा है । इस ग्रंथ में सभी राशियों के संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त उनके फलाफल, राशियों का एक-दूसरे से अन्योन्य-सम्बन्ध, राशिस्वामी का प्रभाव तथा राशि के द्वारा होनेवाली विपत्तियों के निराकरण का सुचित समाधान अत्यन्त संक्षेप में दिया है । रचना मरल और पठनीय है ।

(२) ग्रंथ की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है । लिपिकार देवली क निवामी हैं । जैसा कि 'शम्भत १६४६ में पुस्तक लीपीतं लक्ष्मन तिवारी देवली ।' लिखा है । लिपिकार ने मर्तत्र 'ख' के लिए 'प' और 'ज' के लिए 'य' का प्रयोग किया है । 'ट' की आकृति 'ठ' जैसी है । 'स' के लिए 'श' का व्यत्यय तो प्रायः संपूर्ण ग्रंथ में है । यह ग्रंथ अकरवार डोला, मोकामा-निवामी केशवप्रसाद अर्मा के मौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

[३५] ज्ञानरत्न—ग्रंथकार—दरियासाहब । लिपिकार—बालकृष्ण । अवस्था—अच्छी, पुराना, मोटा देगी कागज । पृष्ठ—१०८ । प्र० पृ० पं० लगभग—४० । आकार—६" X ६½" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचना-काल—X । लिपिकाल—अगहन शुक्ल, पचमी मन् १२१६ साल । प्रारम्भ—सतनाम । ग्रंथ ग्यान रतन भाखल दरियासाहब सतगुर सुकीतत्रक उवारन साहब वदीछोर मुखपुरान साहब जीदा साहब मुखपुरान साहब ग्यानरतनमनीमगल बीमलसुधानीजुनाम करोत्रीवेकनीचारी के जाये अमरपुरवाम

वीमलनाममनामरतस्त्रीना धीमावीनेन भस्मसमप्राका
नारस्त्रीनामनीतुप्रे मम्मता कार्ग्यमस्त्रीभगलहता

अत— छद् नागच । हापुत्रघागरशभगुनत्रागर नीगतीशभावरती
शतपनालही जवादीनमनीनहा मरनी जलमेत्रलमे
कालवीभचनमैली शतत्रन को पीरी करनी
दासीआमनेवीवीचारा क्क जीमीशालीशुग्रजलहाभग्नी ॥
शोरग । तत्राथ नीच लभा नामवीमलगुनवीमल है
समुभीपक्कीऐवाही भवनालीपुरजहाचअह

विषय—निर्गुण दर्शन ।

टिप्पणी—यह प्रथ प्रसिद्ध सत दरियासाहब का है । इसमें श्री दरियासाहब
के दार्शनिक विचारों का सप्रह है । प्रथ के लिपिकार बालरुद्रामत्री
ने प्रथ के अंत में दरियापथ के अर्थ अनेक साधुओं के नाम तथा
परिचय देत हुए लिखा है—‘गरथ गपुरन लीगनमस्त ग्यानरतन
सतगुरुदरीआसात्र जो भावलही भारतलवालरीसनदाप्र श्रीआसाहब के
पकीर अपना दस्तका साहबदभइल साहब का सलाम पम्मेदस्ततारीपरा
मीती अगहनसुदीपचमी सुमनीन बुध के पुरनगरधमदल ।
गगात्स की हार ।’ इससे दरियासाहब के बाद उनके
दो शिष्य बालकृष्णदास और गगादासजी का पता चलता है ।
यह प्रथ तैवान मुदला (दुल्नीवात्र पन्नामिणी)—निवासी मोतीलालजी
आर्य के द्वारा गाए हुआ ।

[३६] आत्म प्रबोध—प्रथकार—X । लिपिकार—X । अवस्था—तीण शीर्ण प्राचीन,
हाथ का बना शैली कामज । पृष्ठ-म —६६ । प्र पृ प लगभग २४ ।
आकार—, X १२ । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—
X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—चतुरसेन की सखा द्वारा सोसागर में राम आत्मा को चाहता है । सो इस
आत्मा आपणो आप प्रसिद्ध की बेदने भी उपमा भारी कही है ॥ सो
अब आत्मा हमका भूत गया है ॥ सो तीसकी ग्यानवासतेमत न कीया
चहता है । शिष्योवाच । हे गुरा आने प्रायने यह कहा था ॥ जो राम
आत्मामुख तुरीया है सोण तेरा स्वरूप है ॥ सो अब जिस प्रकार इस
अपणे आप मुखस्वरूप का प्राणे । सोद्री प्रकार आप निषा जणदीये ।
श्री गुरोवाच । हे शिष्य जो तुम्हारा आप मुखस्वरूप है सो तिसका
तुम औसा भूला है । तीन इस्थानो विषे आयके । सो जिस प्रकार इनिने
तुमको जीवभावविषे कीया है सोमण ॥ सो तीन स्थान यह आमत सुप
सुपीप्त ॥ सो सात को ।

अत—स्वान की याथी मरुता रहता है । सानिसपुर्यको
की याथी कदु खबर नवा पकती हम जगता भी ।

सो इस संसार त्रिपेसुभक्या है असुभक्या है ।
 सोय सुकी न्याडी आचके किर चला जाता है ॥
 सो इसनेय त्रताढ ध्यान के आदरे है ॥
 सो जिन पुर्ष को इसका जान नहीं ॥ नो उम्मेलेग क्यू है नही ॥
 हे नारद सो टम ध्यान का आत्मा भीनूआर है ॥
 हे प्रभो नो अत्र टस यान का आत्मा आर कौन होवेगा
 मोचित की इकागत्ता विना क्यू धिध नहीं होता ॥

विषय—दर्शन ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ लंडित है । प्रारंभ में एक पृष्ठ नहीं होने के कारण ग्रंथकार और लिपिकार के नाम तथा काल आदि का पता नहीं चलता है । ग्रंथ के मय में भी यथासंभव कहीं भी इनका उल्लेख नहीं मिलता है । ग्रंथ भागवत महापुराण के आधार पर लिखित प्रतीत होता है । ग्रंथ में गुरु-शिष्य संवाद के रूप में, ईश्वर, जीव, आत्मा, नृत्य, मोक्ष, जीवन, वन्यन, पाप, पुण्य और कर्म-अकर्म की सुन्दर विवेचना की गई है । बीच-बीच में दृष्टान्त देकर प्रतिपाद्य विषय को समझाया गया है । यत्र-तत्र, नारद, उद्दालक, श्वेतकेतु, जावालि आदि ऋषियों के नाम तथा परस्पर के वार्तालाप की चर्चा है । ग्रंथ मननीय तथा अनुसंधेय है । ग्रंथ की भाषा मधुक्कड़ी तथा पंजाबी से मिलती-जुलती है । ग्रंथ में 'न' के लिए 'ण' का तो प्रयोग है ही 'ड' और 'डू' के लिए ह्रस्व और दीर्घ मात्रा लगाकर 'दि,' 'डी' का प्रयोग है । विषय का प्रतिपादन गद्य में किया गया है । ग्रंथ की लिपि, अस्पष्ट और प्राचीन है । यह ग्रंथ दहियावाँ (छपरा)-निवासी श्रवधेन्द्र-देव के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

[३७] अमुसागर—ग्रंथकार—धर्मदास । लिपिकार—रामभरोसदास । श्रवस्था—अच्छी । प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ-१०—८२ । प्र० पृ० ५० लगभग—३२ । आकार—९ १/४" × ८ १/४" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—भाद्र शुक्ल द्वादशी । १० १३०८ साल ।

प्रारंभ—“सतसुक्रीत आद्वटली अजर अर्चीत प्रुसमुनीद्रकटनायेक वीर के दासा धनीत्रमदान के दात्रामकलसंतकेदात्रासेलीखते ग्रंथ अमु-सागर—

॥ दोहा ॥

धर्मदान सीरनापिके वीने कीन्ह करजोरी ।
 तुम्हवहीआसंभजीव कहकीएअनुग्रहमोरी ॥
 तुअचरननवलीहारी जुगलेजालु अमालह ।
 जेहीवीधी हंस सवार मरदनकीन्होकालकह ॥

॥ छन्द ॥

आनीन्द्रा अनन्तसमवापीअजनीर्ण हो ।
 आनन्दरामीडागर तुम्हप्रयाहाअमय ।
 अघडावअपारअनके वचसममीअन्तर ।
 तुम्ह अघनकेगती दनके दामान ।

॥ सुरग ॥

हसरावकहकषा जीव मार हवर पधयहे ।
 असुसागर प्रथ सावरन प्रभुकीर्णणे ॥

॥ चौपाई ॥

घनदासपुसगुन गात्र जुगजुगने नाम सुगाठ ।

अ त—' पुर्नरूपवरनाअनीपावन । एके अरमीअनीनजावन ॥
 हम्पसोमानुभाती । खोसभानुदसकेकाति ।
 मुक्तीअमरपदजहनासाद दरसनपाए गेअपनासा ॥
 आसेपरसा नीवर कीहा । पटु अलाकवसजीहचीहा ॥
 आदीअतसागरमेंमाना । अमीतचारीमुरतीजीहराजा ॥
 मौनी जीवसाद । जम्हसीवमरगौलीकपहुँचाइ ॥
 इतिकपापावनअतीसोहावनअमुसागरवरननकीवो
 जहीकरहीभजनसतसजन अकयसीचीप्रचीनधरो ॥
 सत्मनाहरपासाजीअणिलगाइ चहेहसतहीवाअ सुनसागर
 पहुँच सही इती प्रथ गमात ।'

विषय—दर्शन । निर्गुण-आह्वय ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ चादह खनों में है । इसमें जीवन, मोक्ष आदि दार्शनिक विषयों की निर्गुणात्मक विवेचना की गई है । कथोपकथन के माध्यम से विषय का प्रतिपादन किया गया है । पूरे विषय का एक हम के द्वारा कहलवाया गया है । ग्रंथ विवेध्य आर पठनीय है । यह ग्रंथ प्रकाशित-सा प्रतीत होता है । ग्रंथकार घनदासजी ने इसे बड़े ही राचक ढंग से लिखा है । प्रारम्भ में आदिपुरुष के दर्शन होते हैं । परचान् आदिपुरुष ने यहाँ से सत्गुरु अपने सदेशवाचक हस को भेजते हैं । वह हम इनके सभी प्रश्नों के उत्तर के अतिरिक्त साधुओं के आचार विचार निर्गुण ब्रह्म कलियुग में जीवन बिताने की रीति आदि विभिन्न विषयों पर अपना विचार व्यक्त करता है । पृष्ठ स० ५ ६ ७, ८ और ९ में हस ने अपना परिचय दिया है और अपने आपको कबीर के रूप में प्रकट किया है—अमरदेह हसा तेही पावइ । सतगुरु अमर पुरुष के पास अनेक हस (जीव) रहते हैं—

“सुन उमपत पुर्म जव कीन्हा । स्वागा नव्ठने सवकुउ कीन्हा ॥
अछयदीप ऐक गुप्त रहई । ॥
तीन्हेंकेंदृष्टजीवहैमाया जीवनमाथीआवाहाथा ॥”

आगे लिखते हैं—“क्रोडीहंमाताहामाथनवाई । नामकवीरहंनग्जवारा ।
जीव भवानदीन्ह जग आई । जव तुम्हार कीन्ह बहुताई ।
तव तुम्ह नींदा जाग स्वामी । हमहीकोजेगए सुरवामी ॥”

हंस अपने निवास-स्थान के विषय में कहता है—

“दीप ऐक मानीकपुर गाउ । आदीपुर्मजाहायापुरहाउ ॥
रूपरग तीन्ह कलुनाही । वरनत वचनवने कनु नाही ॥
हीराद्यत्रमाथेपरछाजे । अनहदुबुनी ताहाअतिप्रीअलाने ॥
क्रोडीन्हरविऐकरोमलन्गाही अमीमरूपहसमहवीराजही ॥”

आने और भी स्पष्ट करते हुए लिखा है—

“उत्तर दिशा लोक कहे भाई । अगमपुर्सजाहायापुरहाई ॥
ताकेनाम पावप्रेमाना । क्रोडीन्हम यहंसकोई जाना ॥
तमगुरुमीले जेही देही लखाई । सुरतिनीरंतरस्थानवताई ॥
मकरतारजाहालागे टोरी । पहुँचे हमनामनीसेई ॥
ताहीलोक के नाम अपारा । सोडम नाम ताहा अनुसारा ॥”

ये सारी बातें इस द्वारा कही जाने के बाद धर्मदास जी ने कहा है—

“सब्द तुम्हार सुनत प्रीअ लागा । तुअदरगनपाऐमठभागा ॥
अकयकवासुनीचीतमम मोहा । तुम्ह पारम हमहेजीमीलोहा ।
आगे और कहो मोही स्वामी । चरन गहो प्रभु अतरजामी ॥

इसके बाद कथा का विस्तार प्रारम्भ होता है और हंस अपने पूर्वजन्म की बातें करता हुआ ‘मत पुरुष’ को ‘हंस उवारण’ की संज्ञा देता है । इसमें एक ‘कण्ठम पछी’ की कथा के मायम से ‘पापी जीव’ के जीवन पर संकेत किया गया है । स्थान-स्थान पर ‘ब्रह्म’ पुरुष को निर्गुण सिद्ध किया है । प्रथम वटा ही महत्त्वपूर्ण है ।

ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन है । यह ग्रंथ कवीर मत के वचनवंशीय मठ के महंत आचार्य बलदेवदामजी, रोमडा (दरभंगा) से प्राप्त हुआ ।

[३८] विचार-गुणावली—ग्रंथकार—कृष्णकारस्य दाम । लिपिकार—श्यामदाम । अक्षर-
स्था—अच्छी, प्राचीन । देशी कागज । पृष्ठ-सं०—२४ । प्र०
पृ० ५० लगभग—२८ । आकार—७ $\frac{1}{2}$ " × ७" । भाषा—हिंदी ।
लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ—‘सतनाम मन मुक्तात आी अदली अजरअरी नुफ्तमुनीद्र करनामेक
बीरवनी प्रमदासव’ त्रोग्नस्तुदास वरुन सत क दक्षा से लीखने प्रंय
विचार गुण्य ।

माखी ॥

‘ वारधीचारणप्रथ है । सुनाम ततीतनाइते ॥
औरग्यानप्रहुवादह । सातोहीनहौजुम्हाणे ॥
सुदधीचारणजुम्हाई । ताकोहीरत्नैअगाव ।
और पाख नी नीश करे । साइ प्रगम्ह चाहते ॥

अत—‘ गुफ्राता जेद नमत्र में । तापीखरीमनेकाणे ॥ ’
पीरपरावीनभान स । पाखगावहीसाणे ॥
इतीप्रप्रथवीचारगुण्य समापन । ’

निषय—कीर—साहित्य ।

टिप्पणी—यह प्रथम धमदास जी के द्वारा पीरसाहब द्वारा रचित गये प्रश्नों
के उत्तर के रूप में लिखित है । प्रथम प्रारम्भ म ही—

‘ प्रमदासअरबीकरमुनिपुत्रपुगनकानविधिहमपाइहासाइवुम्हरे ग्यान
की छतररुभांगनक निस्त्रीपाठरीसाणेअकटुभनीमुनहैसोदीनहमसाणे ।
धमदास जी द्वारा लिखे गये इन प्रश्नों के उत्तर में ‘परम पुण्य ने
पढ़ने अपना स्थान बनाया है । उसके बाद आगे की कथा में ‘गुफ
का महत्त्व अनददना’ सुरति ध्यान आदि की चर्चा की गई है ।
प्रमथ्य है । इन प्रश्नों के प्रकाशन और अनुसंधान से समग्र है,
कबीर-परपरा के साहित्य में पुत्र वृद्धि है । प्रथम की निधि अस्पष्ट
और प्राचीन है । इसके साथ एक ही शिर्षक में दो और प्रियाबोध’ तथा
‘अदि उत्पत्ति नामक लघुकथ प्रंय सरद हैं । यद्यपि प्रथम का रचना
काल और निविद्योत का रूप कहेत नहीं है तथापि प्रथम के प्रारंभ में
१ फागुन सं० १३१४ साल आरम्भ कीका तथा ‘प्रियाबोध के
प्रारंभ में ‘ ६ फागुन सं १३१४ साल ’ लिखा है और आदि उत्पत्ति
के अंत में ‘ १४ फागुन सं० १३१४ साल ’ लिखा है । अतः यह
प्रतीत होता है कि निविद्योत का निधि का समय लिखा है । प्रथम की
भाषा पूर्वी अरबी है । कपुस्तकी भाषा का प्रचुर प्रयोग किया गया है ।

यह प्रथम रायदा (धमदास) के बहनवरीय मठ के महत्त्व
साक्षात् बनेदेवराज जी के साक्ष्य से प्राप्त हुआ ।

[३६] विनयप्रसिका—प्रथम—गुफ्राता—X । अरबी—अन,
अनगण हय का बना रगी बगल । पृ ३ —१४६ । प्र० पृ०
४ । नमनग—१ । आर—९ X १० । भाषा—हिंदी ।
नि १—अरबी । रचनकाल—X । लि ११११—X ।

प्रारंभ—“श्री गणेशाय नमः राग विलावल ।

गाइए गणपति जगवन्धरसुधनभवान्, नदन टेक
मिदिसदगजवन्धनविनायक कृपान्धुमुद्रसबलायक ॥
मोटकप्रियमुदमंगलदाना । त्रिशारिषिबुद्धिनिवाता ॥
मागततुलसीदासकरजोरे । तनदिरामधियमानममोरे १ ॥
दीनदयातट्टिनाकरदेता । करमुनिमनुजसुराभुरसेना टेक
दिमनमकरिकेहरिज्जमाली । ददनशेरादुनपुरितगजाली ॥
कोक कोकनश्लोकप्रकाशी । तेजप्रतापपरमरानी ।
नागधिपेगुडिअवगामी । हरिशकरविा मूरतिरामामी ॥
वेदपुराणप्रगटजनजागी । तुलशोरामभक्तिवरमार्ग २ ।”

अन्त—“सकनमभामुनिलौठठी जानिरोतिरही है ।

कृपागरीनेनाजनी देपतगरीवकीसइनावाहगही है ॥
विहीनि गम रणी नग है मुवि मैं हू लही है ।
मुदितभावनावतवनीतुनमी अनायकीपरीरघुनावमही है २७८ ॥
इतिथी गोसाईं तुलसीदासकृतत्रिनयपत्रिका समाप्त शुभमस्तु ॥”

विषय—तुलसी-साहित्य ।

टिप्पणी—यह गोस्वामी तुलसीदास जी का प्रसिद्ध ग्रंथ है । प्रकाशित ग्रंथों से इसमें यत्र-तत्र पाठभेद प्रतीत होता है । लिपि स्पष्ट और सुंदर है । यह पन्धर के अक्षरों (तीनों) में लिखा है । इस ग्रंथ का लिपिकाल स्पष्ट नहीं है, तथापि सन् १८०६, फागुन शुक्ल नवमी होना चाहिए । मन्ूनाल-मुम्तकालय, (गया) में स्थित प्रति का लिपिकाल स० १८६६ है और नागरी-प्रचारिणी समा में स्थित प्रति का स० १८७६ है । यदि यह लिपिकाल ठीक है तो यह ग्रंथ अतक प्राप्त नहीं ग्रंथों में प्राचीन है । ग्रंथ प्राचीन होने के कारण यत्र-तत्र कीड़ों से लिपि भिन्न हो गया है । यह ग्रंथ बजाजा लेन, बाकरगंज (पटना) निवासी लगनलाल शुभ द्वारा प्राप्त हुआ ।

[४०] रामचरित-मानस —ग्रंथकार—गो० तुलसीदास । लिपिकार—X । अवस्था—अन्त्री । देजी कागज । पृष्ठ स०—८१ । प्र० पृ० प० लगभग—३० । आकार—६ $\frac{1}{4}$ " X १०" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचना-काल—X । लिपिकाल—X ।

॥ दोहा ॥

प्रारंभ—“गिरा अर्थ जल बीचि नम । कह्यत भिन्न न भिन्न ।
बन्धे नीता राम पद । जिनहि परम प्रिय स्तन्न १७॥

॥ टीका ॥

कपि पति सुमीर अक्षराज जामवंत निशानरराज लकेश विभीषण
और अगदादिक जो समस्त वानरों का समाज १ मर के सुन्दर

चरण कमलों को न बदना करता हूँ जिन्होंने अधम शरीर ही में राम पाये २ अत्र नितन धारानचरण उपामक इस ममार में हुए ह स्वयं जगत्पुत्रनाद मृग रात्रेद्र सुर प्रक्षालि असुर प्रह्लादादि नर अम्बरीष इत्यादि आ निष्काम भगवद्दस्य ह तिन सन क चरणकमलों का न अभिमान करता हूँ २

॥ सोरठा ॥

अत— 'अत्र विचारि मनि धीर । तापे वृत्तक सशय सकल ।
मन्हु राम रघुवार । रङ्गाकर सुन्दर सुमद ॥
नितमनि सरिस नाथ मै गाइ ।
प्रभु प्रताप माहमा खगराइ ॥११॥

विषय— रामनाथ ।

टिप्पणी—यह प्रथम खण्डित है। प्रारम्भ के गोवीन प्रान्त नहीं हैं। अत में भी कुछ पृष्ठ नहीं ह। खण्डित हान के कारण प्रारम्भ की पंक्तियों पृष्ठ-संख्या २५ से लिखा गइ ह। प्रथम की गीता अद्बी है। टीकाकार तुकदेवजी हैं। बाल राग के अत में लिया है। इन धी शुभदेव भरिात मानसहस नाम भूषण बाल-का नपूण शुभम्' गीता की भाषा प्रथमाया से प्रभावित मन्थकालान हिनी है। प्रथम में यत्र तत्र पाठभेद भी है। प्रथम प्राचीन पाठ के अन्तों (पुराना लीखो) में लिखित है। यह प्रथम प्लागया त्रिने क कम्पा ग्रामन्वित गदाधर पुस्तकालय क सान्थ से प्राप्त हुआ।

[४१] रामायण—प्रथकार—गा० तुलसीदास । लिपिकार—X । अक्षर्या—प्राचीन । हाथ का बना मोग देशा रामन । पृष्ठसं — १६३ । प्र पृ० प० लग भग—२० । आकार—८ X ११ १/२ । भाषा—हिनी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिखिकान—रावण-वृष्ण पंचमी म० १८३६ ।

प्रारंभ— श्री गणेशाय नमः ॥ 'प्र' बालका निर्यत ॥

॥ वशाका ॥

वगानामथमज्ञानारमाना उन्मामपि ।
मद्गताना च कतारा वदे वग्निनिनामः ॥१॥
मगना शम्भुग नद धन्नापरामपिणो ॥
याया विना न पश्यति मिद्रा स्वातस्थमीररम् ॥२॥
वद वाचमद नित्र गुण पुत्रवर्गपिणम् ॥
यमाप्रिनाहिवकापि उन्द्र मध्न वधन ॥३॥
नीताराम गुणमाम पुत्रागुणव नहारीणो ॥
वद वि विज्ञाना कस्यररुणाश्वनी ॥४॥

उद्धरि तिनंदाकरिणी केशकरिणीम् ॥
 त्रैलोक्यं यद्वर्षी सीता नवीर रामवन्दनाम् ॥४॥
 यन्मायावशमतिप्रियवसिनिं द्रष्टुमिच्छेत्, युग
 यन्मायावशमतिप्रियवसिनिं द्रष्टुमिच्छेत् ॥
 यन्मायावशमतिप्रियवसिनिं द्रष्टुमिच्छेत् ॥
 यन्मायावशमतिप्रियवसिनिं द्रष्टुमिच्छेत् ॥
 यन्मायावशमतिप्रियवसिनिं द्रष्टुमिच्छेत् ॥६॥
 नानापुराणनिगमागम सम्भवत्—
 ज्ञानायागे निगदि । इतिचिन्त्यतापि ॥
 रवान्त युवाय तुलसी गुनाय मा ॥
 भाषानिदम् समिन्तुनात्तवोति ॥

तेरटा ॥

जे, सुमिन्तुनिं द्रष्टुम् ॥ यन्मायावशमतिप्रियवसिनिं
 द्रष्टुमिच्छेत् ॥ युगयानिभुवन्तुम् ॥ ११॥
 गृह्णतेऽत्रात्तु । पशु चर्तु निरुत्तरमहत् ।
 जायु उपायु म्मात् । इति चरिते निगम उक्त ॥२॥”

येहा ॥

द्यन्त—“मो नम वीनन वीन इति । तुम समान युगी ॥
 प्रय विचारि रघुञ्जमणि । इत्यु विवम नरनार ॥२२॥
 कामिदि नाग् पिदार्ति जिनि । नोभिर्त् प्रियविमिशम ॥
 तिति रघुनाथ निरन्तर । पिय तागु नोदि नम ॥२३॥

श्लोका ॥

यत् पूरं प्रभुणाटनं मुक्तिना श्री जन्मुना तुगेम
 श्रीमद्रामपञ्चमस्तुमिन्तुना प्रकृतं तु रामायणम्
 मत्वातद्रघुनाथनाम निरन्तरात्तुमत्तम ज्ञान्तय
 भाषानिदमिदं चकार तुलसी दारस्तथामानम् ॥३॥
 पुण्यं पापहर नदाशिवकर विज्ञानमक्तिप्रद
 मायामोहमलापह सुविमताप्रेमान्मुपू प्रभु ॥२॥
 श्रीमद्रामचरित्रमानममिदमक्त्यावगारन्तिये
 ते पसारपतज्ञ घोर किरणैर्गन्ति नो मानना

इति श्री रामचरित मानने नकतकलि वल्लुप विचरने विमन
 वैराग्य रूपादिनो न्तम नोपान समाप्त ॥ शुभमरतु ॥ मिदिररतु ॥
 नमामोय प्रय ॥”

विषय— रामकाव्य ।

टिप्पणी—यह प्रथम लीब्रो टाइप में लिखा गया है । प्रथम में यत्र-तत्र पाठभेद है ।
 त्रय के प्रारंभ के पृष्ठ जीर्ण-शीर्ण है । मुख्यपृष्ठ के ऊपर लिखा है—

‘सुन्दर राम नयनराम भगत ने छपवाया’। कागज प्राचीन है। यह प्रथम श्री राजनन्दन शर्मा, चिन्तामणि चक्र, मोकामा (पटना) कमीतय से प्राप्त हुआ।

[४०] रामचरित-मानस—प्रथकार—गा तुलनात्मक। लिपिकार—X। अरस्था—
 मन्त्रित प्राचीन देशी कागज। पृष्ठ-सं०—४६१। प्र० पृ
 ५ लगभग—३०। आकार—८ X १०। भाषा—हिंदी।
 लिपि—प्राचीन कैथी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—X।

प्रारंभ— गुणपरचम्परीटुमपुत्रग्रन्थ । नाग्रनग्रमीश्रीगोपवीभजन ॥
 तदाकरवीमनवाकेक वीनाचन । वरनी रामचरीत्र भवमाचन ॥
 ६० प्रथम महापुराण । मोहननीतशशैशवहरना ॥
 पुत्रनशमा शकल गुनगानी । वग प्रनाम पुत्रे म पुत्रानी ॥

प्रारंभ— राम अनाध्या छादन अरी । वात ननावन कहेवाशा करइ ॥
 लुमनपुरतगणनाचयामा । चलेआपमुग्गगगररामा ॥
 वीपुलवीडाइशनुहन की हा । भूमीवारी नीच पुत्रन दीहा ॥
 मधुरा दनुवाडुकी गीहा । दुशरपुत कवीधतम कीहा ॥

लिपि— रामराव्य ।

टिप्पणी—यह प्रथम प्राचीन कैथी लिपि में लिखा गया है। लिपि अरस्था है।
 मन्त्रमें प्रचलित (सुत्रित) रामचरित मानस से कई पाठभेद हैं। प्रथम
 के अंत में उत्तरकाण्ड के बाद कुछ भाग अधिष्ठ हैं जो समस्त
 प्रसिद्ध ‘लखनऊ साठ प्रतीत’ होना है। अंत में पोथी खंडित है।
 पुष्पिका न हान से लिपिकार के नाम तथा लिपिकाल स्पष्ट नहीं है।
 तथापि लकाकाण्ड के अंत में “इति धा रामचरीत्रे मानसे शकल
 कनारुनुपवाधशने धामलवागवानशाधारनो नाम राग्मा शोपान
 लना काण्ड रामपुरन वा देशालीधामम दामनग्रीश्वरे पत्नीतजनशो
 वीनतीमारी दुग्ग अक्षर पत्र जारी मीती आगाद वदी ६ १०६१ साल
 वै० आशरनाथशाव शा शोभानगर लिखा हुआ है। इसके बाद
 हाता है कि काइ इवरनाथ सिंह नामक व्यक्ति इस पोथी के लिपिकार
 है। यह प्रथम बाहर कावरी, कम्पा, पूर्णमा से प्राप्त हुआ। प्रथम
 के अधकारी द्वारा प्राप्त हुआ कि उनके पिता मुग्ग सावरी ने यह
 प्रद किया था। अतएव प्रथम में लिपिकाल का अंकन नहीं है किंतु
 जोहरी जायत्री ने इसका लिपिकाल लगभग ६० १०६५ साल बताया।

[४३] सूर-सागर—प्रथकार—सूरदासजी। लिपिकार—X। अरस्था—प्राचीन। भाषा का
 बना देशी कागज। पृष्ठ-सं०—३३६। प्र० पृ० ५ लगभग—१८

आकार—८" X १०" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । स्तंभांकन—X ।
लिपिकान—अमरन, कृष्ण १५, १० १८०५, कृष्णपतिवार ।

रागगौरी ॥

प्रारम्भ— हृन्गोफगरोमेता ॥ अतिरति त्रिउपोपपदता ।
जमुमति अपनो पुन्य विचार ॥ चारार मिमुपदनुनिवार ॥
अगपरपश्चत्तप सुमर नी ॥ आउविपर उपमाउो जनी ॥
रगगति गावति वृद्धि प्यार ॥ जान्नां क्रीतिर भारे ॥
मदगी निरपिसुपरद्विदुलगानी ॥ कूरदास पमु गारगपानी ॥३५॥

राग कानग ॥

पलना रगाम रलावति जननी ॥
अति अमुदान परस्पर गावति प्रकुन्निन्न नगन सुदित नउपरनी ॥
उमगि उमगि प्रमु भुजा पनारत हृगपजधोमदिअरुमभरनी ॥
मूरदास प्रमु सुदित जमोडा पून भई पुगतन हरनी ॥३६॥

राग निलावत ॥

गोपातमाई पाउने सुनाए ॥
सुरसुनि कोटि देवतैतीक्षो देपनक्रीतिकअमरनाए ॥
जाकी अतुन प्रता जानन निवगनकामिनपाए ॥
तो अचंडधौंनंदजमोडाहरपिहृगपिहृतराए ॥
हुलगत हंनतकरत क्लिवाारी मन अभिताप रडाए ॥
सुरजरयामभगतहितकारननानावेप वनाए ॥”

रागमाग ॥

अन्त— अति सुप क्रीनित्या उठिवाई ॥
सुदित वदन ह मुदिनमदनते आरति गाजि सुनित्रा लाई ॥टेक॥
ज्यो सुरभी वन वमत वउ विनु परतम पमुपति श्री विहराई ॥
चर्ला नाम नमुहाई श्रवतवन उमगि मितान जननी डोउ आइ ॥
वधि पल दूल बनक के कोपर गाजत सीर विचित्र वनाइ ॥
अभी वचन पुनि होत कुलाहरा देवव्यौम टुंठुभी वजाई ॥
अनेक रगपट परत पचारि वीभी सुमन सुगंधनिचाई ॥
हरापत रोम पुलकित गदगद हौं जुवनिनि मगल गाथा गाई ॥”

विषय— काव्य । मूर-साहित्य ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ अबतक प्राप्त नभी हस्तलिखित प्रतियों में प्राचीन है ।
नागरी-प्राचरिणी तथा, वनाएन में 'मूर-नागर' की ४ प्रतियों हे जो
नं० १८६२, १८७३, १८६२ और १८५३ में लिखी गई है । श्री
मन्मूलाल पुस्तकालय (गया) के संग्रहालय में प्राप्त दो प्रतियों का

लिपिकाल स० १८५७ और स० १९०४ है। प्रथम खंडित है। बीच के पृष्ठ १०७, १०८ और १११ से ११७ तक तथा २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७ एवं ४२७ से ४३० तक नहीं है। पृष्ठ स० ४२६, ४२७, ४४७, ४४८, ४४९ और ४५० भी नहीं है। इस प्रकार कुल पृष्ठ-सं० ७४० में ११५ पृष्ठ नहीं है।

समग्र विस्मृत है, अतएव भय है। प्रकाशित प्रथम से कई स्थानों में पाठभ्रम है तथा धीर्वाच्य का विषय भी। संभव है, इसके अध्ययन-अनुसंधान से मूल के कुछ नवीन पद भी प्रकाश में आयें। प्रथम का अंतिम पृष्ठ नहीं है। लिपिकाल प्रथम का अंतिम पृष्ठ में ही लिखा था किंतु प्रथम का मानिक से यह खा गया। प्रारंभ का १६ पृष्ठ भी नहीं है। प्रारंभ की पाठ्यो १० पृष्ठ से निची गई हैं। प्रथम की लिपि प्राचान और स्पष्ट है। निर्णय का शैली पुरानी है। यह प्रथम बिदेरवरी प्रकाशक वामा, ग्राम मैनपुरा, (ग्रीष्म, प ना) के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[४४] शब्द—प्रथकार—उत्तम कवि शरिया साहब। लिपिकार—निवप्रसाद दास जाधन दास तथा रामदास दास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना कागज खंडित। पृष्ठ-सं०—३५४। प्र० पृ० प० लगभग—१६। आकार—"५ १/२-१०"। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—वैशाख कृष्ण पक्ष, मंगलवार, स १९५५ वि (क० १३ ५ साल)।

सतनाम

प्रारंभ—सुन्दर क गरुड भास्य ल दरीमा साहब हस उबारन सुन्दर कभीत्य लीग्यत कोहे क आसन बासन बाधत कोहे के पवन पीवै दिन रानी ११।

मध्य—घरु उतेगुर सन सुन्दर बीचारा।

मानुष से दवना जिहि बीहो मग्न सकल विकारा ११।

अंत—वहै शरिया दरवेश कोइ इरिऊदा मरल मानुष, महयुव जानी।

X X X

माघ वैशाख कीर्त्तन पत्र, पानी मंगलवार
दुइ पहर क गिर प्रथम मया तइयार ॥

विषय—शरिया साहब का यह सबसे बड़ा प्रथम है। इसमें विभिन्न रागों एवं छंदों के द्वारा सद्गुरु एवं इश्वर का माहात्म्य वर्णित है।

लिपिकार—यह प्रथम विज्ञान-काय है। कबीरदास के बीजक के समान ही यह प्रथम भी शरिया पंथियों में सम्मानित है। विभिन्न छंदों में प्रथम रचना हुई है। शरिया-पंथ के प्राय सभी साधनिक और साम्प्रदायिक

निदानों एवं मान्यताओं की उगम विवेचना है। यह ग्रंथ परिपट्ट-
संग्रहालय में सुरक्षित है। इनकी संग्रहालय संख्या क्र०-संख्या ३० है।
ग्रंथ वरकथा (शाहाबाद) दरियाबाद के महत शाह चतुर्गिरा में डॉ०
वर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४५] (क) जानकीपत्र—ग्रंथकार—मत्त कवि दरिया नाहव। लिपिकार—नरहर दास।
अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना पतला कागज। पृष्ठ-सं०—
१६७। प्र०पृ०५० लगभग—१८। आकार—'१० $\frac{१}{२}$ —११ $\frac{१}{२}$ '।
भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—
आषाढ शुक्ल दशमी। क्र० १२६६ साल।

प्रारंभ—प्रेम जुक्ति निजु मूल है, गुण गमी करो सुमार
दगा दीकर जवही बरे, दरसन नाम अमार ॥

मध्य—विनय क्रीन्ह कर जोरि, रम भव भर्म नगाइया
विमल मती भव मोरि, मन नाहव दरसन दिवो।

अन्त—तहा देवी दरसन गुल, नम भेदि सेविवाहुल
- - तव गवन भव छपलोव, सब लुटी जमके जोक ॥

X X X

भवो नपूरन ग्यान, मनपुर पद पावन करो
उवरे सत सुजान, जिन्ह गमि कियो विवेकरी।

विषय—सद्गुरु और मत की चटना। निर्गुण तथा त्रिगुण जान-द्वारा सुक्ति।
तीर्थ और अन्य पापदोष का उपहान।

टिप्पणी—जानकीपत्र दरिया नाहव का अनुपम ग्रंथ है। आत्म निर्गुण, अहिंसा,
ईश्वर, माया आदि विषयों पर उभय और भागद्वारा के बीच
वार्तालाप का प्रसन्न दर्शन-जैसे शुद्ध विषय को नरमता प्रदान करता
है। सुक्ति (दरिया) के विभिन्न जन्मों की कथा बड़े सुंदर ढंग
से लिखी गई है। अष्टि के संवत् में शिव-पार्वती-संवाद तथा नत्सुदप
के पुत्रों के विषय में कुंभज और नागद-वार्तालाप बड़े रोचक हैं।
यह ग्रंथ परिपट्ट-संग्रहालय में सुरक्षित है। इसकी संग्रहालय की संख्या
क्र०-संख्या ३४-क है। यह ग्रंथ वरकथा (शाहाबाद) दरिया बाद के
महत चतुर्गिरा में डॉ० वर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ है।

[४५] (ख) दरियासागर—ग्रंथकार—मत्त कवि दरिया नाहव। लिपिकार—नरहर दास।
अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना पतला कागज। पृष्ठ-सं०—
७२। प्र०पृ०५० लगभग—१६। आकार—'१० $\frac{१}{२}$ —११ $\frac{१}{२}$ '।

भाषा—हिंदी। निधि—नागध। रचनाकाल—X। लिपिकाल—शासन
की नवमी, शनिवार ५ अक्टूबर १९६९ साल।

प्रारंभ—प्रथम शिवाग्रार मुक्त भूतानुसार
नया नया विवेचना का नया उत्तरणी पार ॥

मध्य—निम्नै प्रथम सत है माग निम्नै नवारी भयनन पारा
निम्नै तदि मिलनी करपारा, निम्नै भक्ति प्रेम निजुगारा ॥

अन्त—काग महल अगारिया, प्रथम सुनै बहुराग
मनगु शब्द रिद्धि तिनो उभो पदित महै काग ॥

विषय—श ६ और नाम की महिमा। छत्राका का प्रकाश। नियुक्त सत्पुरुष और
सत्पुरुष अन्तार का वचन। सत्पुरुष द्वारा मुक्ति का उपदेश। सत्पुरुष
कृति से लाभ। मूर्ति-पूज-सत्पुरुष तथा चित्त-प्रयास के विरुद्ध आलोचना।

टिप्पणी—शिवाग्रार में 'श' और नाम का साहाय्य वर्णित है। इसमें नियुक्त
और सत्पुरुष का अर्थ सुंदर विवेचन हुआ है। प्रथमतः में सत्पुरुष की
अनित्यता तथा माया की प्रबलता का वचन है। यह प्रथम परिपक्व
सप्रहालय न मुद्रित है। सप्रहालय में इसकी एक-कम सत्पुरुष
३४—क है। यह प्रथम धरकंधा (शाहाबाद) शिवा मठ के महत
पुरुषों का सुटा-धर्म के प्रकाशी शास्त्री द्वारा सगृहीत हुआ है।

[४x] (ग) भक्ति हेतु—प्रयत्न—गत करि शिवा गाइव। निधिकार—X। अवस्था—
प्राचीन। हाथ का पना पतना कागत्र। पृष्ठ-स ३। प्र पृ-पं
लगभग—१८। आकार—१ ३"-११ ३"। भाषा—हिंदी। लिपि—
नागध। रचनाकाल—X। लिपिकाल—शासन सुनी नवमी, पुष्य
५ अक्टूबर १९६९ साल।

प्रारंभ—जन भक्ति निजुगार है, सुना सवन चित्तला
भक्ति-भक्ति शिवागत यह, प्रथम अन्त दगा ॥

मध्य—एक पदथा पै बीदा, भाग नवन निरवान
सत्पुरुष चित्त आगत, लीला कर्म निम्न ॥

अन्त—एक पदना के शक्ति, सत्पुरुष गच्छि गार
सत्पुरुष के गम कर, सत्पुरुष पना पगा ॥

विषय—अन्त शक्ति के नए रसों द्वारा नए नए ज्ञान का प्रकाश सुंदर वचन।
सत्पुरुष और अज्ञानों के अन्तर्गत का ज्ञान तथा सत्पुरुष से लाभ।
सत्पुरुष का शक्ति, सत्पुरुष का सत्पुरुष शक्ति का वचन।

टिप्पणी—सत्पुरुष के वचन ३० शक्तों का है। सत्पुरुष शक्ति विषय के वचन है।
सत्पुरुष, सत्पुरुष शक्ति के वचनों के द्वारा ज्ञान तथा भाव की

विशद-व्याख्या इसमें की गई है। नाबु-असाधु-वर्णन उपदेश-प्रद है। इस पुस्तक में दरिया साहब ने जाति-पॉलि का खडन करते हुए विश्व-बंधुत्व पर बल दिया है। ग्रंथ परिपद्-संप्रहालय में सुरक्षित है। संप्रहालय में इसकी स्क० क्र०-संख्या ३४ (क) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) मठ के महंत चतुरीदाम में डा० वरमोन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४५] (घ) ज्ञान-सरोदे-ग्रंथकार—मंत कवि दरिया साहब। लिपिकार—X। अवस्था—प्राचीन। हाथ का वना पतला कागज। पृ०-सं०—२३। प्र० पृ० पं० लगभग—२०। आकार १० $\frac{1}{2}$ "—११ $\frac{1}{2}$ "। भाषा—हिंदी। लिपि-नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—श्रावण शुक्ल-एकादशी, भौमवार, फ० मन् १२६६।

प्रारंभ— दरिया अगम गंभीर है, लाल रतन की खानि
जो जन मिलै जौहरी, लेहि सव्द पहिचानि ॥

मध्य— पौंच तत्तु की कोठरी, तामे जाल जंजाल
जीव तहावासा करै, निपट नगीचै काल ॥

अन्त— दरियानामा फारसी, पहिले कटा कितानव।
सो गुन कहा सरोद में, गहिरि ग्यान गरकाव ॥

विषय— ईश्वर, आत्मा और शरीर आदि विषयों के अतिरिक्त इसमें स्वरोदय (जन्म की क्रिया-प्रक्रिया) के विज्ञान का वर्णन है।

टिप्पणी—ज्ञान सरोदे (जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है) प्राणायाम के माध्यम से ज्ञान-प्राप्ति का पथ-प्रदर्शन करता है। 'ज्ञान स्वरोदय' और 'दरियानामा' मूल फारसी ग्रन्थ का रूपान्तर है। ग्रंथ परिपद्-संप्रहालय में सुरक्षित है। संप्रहालय में इसकी स्क० क्र०-संख्या ३४ (क) है। यह ग्रंथ धरकंधा (शाहाबाद) दरिया मठ के महंत चतुरी-दाम में डा० वरमोन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४५] (ङ) प्रेममूला-ग्रंथकार—मंत कवि दरिया साहब। लिपिकार—X। अवस्था—प्राचीन। हाथ का वना पतला कागज। पृष्ठ-संख्या—१५। प्र० पृ० पं० लगभग—२०। आकार—१० $\frac{1}{2}$ "—११ $\frac{1}{2}$ "। भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—श्रावण शुक्ल पूर्णिमा, शुक्रवार, फ० मन् १२६६ माल।

प्रारंभ— प्रेम कवल जल भीतरै, प्रेम भँवर लै वाय
होत प्रात नूपट तुलै, मान तेज परगान ॥

मध्य— बहे दरिया मनगुर खोजो मत सब्दही करो विचार
वौ गुर रामता जगत में निर्मल मिला न सार ॥

अन्त— प्रिया भवन विच भगति है, रहै प्रिया के पास
मन उदास नहि चाहिए, चरन कँवल की आस ॥

विषय— इतर और सद्गुरु के प्रति प्रेम का हृत्ता का प्रतिपादन ।

टिप्पणी—इस छांटी सी पुस्तक में भी पञ्चवी और की पनवों के उदाहरण द्वारा इतर के प्रति प्रेम का अनुशा प्रदर्शन किया गया है । यह प्रथम परिषद्-प्रहालय में सुरक्षित है । सप्रहालय में इसकी एक क-संख्या ३४ (क) है । यह प्रथम धरकथा (शाहाबाद) दरियामठ के महंत चतुरीदास के सौजन्य से डा० घमेंद्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[४५] (च) ब्रह्म विवेक-प्रथम—सत कवि दरिया साहब । निपिकार—X । अवस्था— प्राचीन । हाथ का बना कागज । पृष्ठ-सं०—३० । प्र पृ० प० लग भग—२० । आकार—१० $\frac{१}{२}$ -११ $\frac{१}{२}$ । भाषा—हिंदी । लिपि—मागरी । रचनाकाल—X । निपिकाल—माद गुप्त पक्ष एकादशी, बुधवार के सं० १२६६ गाल ।

प्रारंभ— ब्रह्म विवेक मन एह, छाता मुमति मुधार
श्यानी समुक्ति विचारही, उतरहि भौचल पार ॥

मध्य— देख ही कौतुक नर औ नारी, कामल बालकुमारी
भीता उठि भरसै देख ही, मुगरी प्रेम पिझारी ॥

अन्त— ब्रह्म विवेक ग्यान यह, पने मुन बित लाए
मुक्ति पदाग्य पावई, सदा रहै सुख पार ॥

विषय— सत्पुरुष के गन्धर्वरूप का वर्णन । विवेक-सुद्धि की आवश्यकता । पापगण का भंगरोह । हठयोग के विरुद्ध महत्तयाग का प्रतिपादन ।

टिप्पणी—यह पुस्तक मुदर अवस्था में है । इसमें सत्पुरुष तथा छपलाक का बड़ा अक्षा वर्णन है । आदि भवानी (माता) और ब्रह्म (पुत्र) के बीच बालानाथ कथन बीच-बीच में बड़ा रारक है । दुवाणा-उबरी प्रेम तथा पराशर के बेश्या प्रेम की कथा और अन्त में दरिया के अवतार की भी कथा है । यह प्रथम परिषद्-प्रहालय में सुरक्षित है । सप्रहालय में इसकी एक क-संख्या ३४ (क) है । यह प्रथम धरकथा (शाहाबाद) ग्राम कतरिया मठ के महंत चतुरीदास के सौजन्य से डा० घमेंद्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[४६] (छ) अमरमार—प्रथम—सत कवि दरिया साहब । निपिकार—X । अवस्था— प्राचीन । हाथ का बना पतला कागज । पृ-संख्या—३४ । आकार—

१० $\frac{१}{२}$ "-११ $\frac{१}{२}$ " । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
लिपिकाल—कार्तिक वडी नवमी, गुरुवार, फ० सन् १२६७ साल ।

प्रारंभ— अरज कीन्ह मिरनाय, दयानिवि सुनु लीजिये
मदा सवऽ समुभाय, बहुरि ना भव जल श्रावही ॥

मध्य— सत गुर चरन सनेह करो, भगित दया धरो
प्रेम प्रीति नीति नेह, भवमागर तरिजाडहौ ॥

अन्त— वेवहा पुर्ष अमान हहि, दरसन दीन्हों श्राए
सहि जादा सुकित हहि, सभ त्रिवि कहा बुभाए ॥

विषय— सत्पुरुष और सद्गुरु की स्तुति । दरिया माहव का सत्पुरुष में
साक्षात्कार । पापण्ड की निंदा आदि ।

टिप्पणी—इस ग्रंथ में माया का प्रपंच और हिंदू देवताओं तथा ऋषियों पर प्रभाव
दिखला कर भक्ति का पथ-प्रदर्शन बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है ।
यह ग्रंथ परिपद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी
स्कन्व क्र०-संख्या ३४ (क) है । यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद)
दरियामठ के महंत चतुरीदाम के मौज्ज्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी
शास्त्री द्वारा सगृहीत हुआ ।

[४५] (ज) निर्भय ज्ञान-ग्रन्थकार—सत कवि दरिया साहव । लिपिकार—रघुनाथ दास ।
अवस्था—प्राचीन । हाथ का बना पतला कागज । पृ०-संख्या—१२ ।
आकार—"१० $\frac{१}{२}$ "-११ $\frac{१}{२}$ " । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचना-
काल—X । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष नवमी, मंगलवार, सं०
१६५२ वि० (फ० सन् १३०२ साल) ।

प्रारंभ— आदि पुर्ष कर्ता हहिं, जिन्हें कीन्हो मकल संसार
प्रियमी नीर अराम जत, चंद सुरज विस्तार ॥

मध्य— घर घर मत गुरता कही, रगान कयही विस्तार
सुकित कहा मतगुरु कही, हंस उवारही पार ॥

अन्त— सतगुरु सन्द प्रतीति करि, गहो सन्त चितलाय,
छप लोक के जाइहो, बहुरि ना भव जल श्राय ॥

विषय— सद्गुरु और शब्द में विश्वास की आवश्यकता, सत्पुरुष का गुणानु-
वाद, आत्मा पर सद्गुरु का शांति-प्रद और सुधार-पूर्ण प्रभाव ।

टिप्पणी—ग्रंथ अच्छी अवस्था में है । नागरी और कैथी—दोनों लिपियों में
में लिखा गया है । यह ग्रंथ परिपद्-संग्रहालय में सुरक्षित है ।

सभ हानय में इस्की स्वधर्म्या १४ (क) है। यह प्रथ परर्द्धा (शाहाबाद) के तरिया मठ के महंत चतुरीगम के शौजन्य से दा-धमेंद्र प्रह्लाचारी शास्त्री द्वारा संगत हुआ।

[४२] ज्ञानदीपक—संघकार—सत कवि दरिया साहब। लिपिकार—रामफलदास। अवस्था—आधुनिक। यत्र का बना पतला कागज। पृष्ठ-सं—१०३। प्र० पृ० प० लगभग—२७। आकार—९ $\frac{1}{2}$ —१० $\frac{1}{2}$ । भाषा—हिंदी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—पूरा बंदी सप्तमी, मंगलवार सन् १३३० फ।

प्रारंभ—सत्तनाम ॥

संतबानी प्रथ भाग्यल

संतबानी सतगुर तरिया साहब कृत

प्रथ ज्ञानदीपक भाग्यल मुहि के दाता

हस उधारन बंगी छाड़-छाड़ साखी।

प्रेम तुहि नीतु मुल है, गुगामी करा सुधार

दया दीपक जवही बरै, दरसन नाम अघार ॥

मध्य—छपलाक में भम रहे सग पुर्न के पास
तीनिलाक - ह लुगिया, काइ निमरीय वैनाही दास ॥

अंत—मैव सूरन गान, सतगुर पद पावन करा
उबरे सत मुजान, जिहि गमी किया बिबेक यह ॥

विषय—सगुरु-भज कथा, भगवानी-कथा आदि।

टिप्पणी—प्रथ की लेखन शैली प्राचीन है। कागज आधुनिक स्थानों का बना है। किसी किसी पृष्ठ पर अंगरेजी के अक्षर एन अक छोटे हैं। प्रथ सुपाठ्य है। प्रथ के अंत में छंदों की निम्नलिखित प्रकार से गणना की गई है—

गानी	चोपाइ	छन्दोमर	छन्दाराधन	सारठा
२२०,	२२६,	५१,	५१	५१
२१२,	२०१,	जाना	२६३२ ॥	

यह प्रथ परिपक्व सप्रहानय में मुद्रित है। सप्रहानय में इस्की स्वधर्म्या—१५ (ग) है। यह परर्द्धा (शाहाबाद) के दरिया मठ के महंत गुरु चतुरीगम के शौजन्य से दा-धमेंद्र प्रह्लाचारी शास्त्री द्वारा संगत हुआ है।

[४३] (क) शाहरतन—संघकार—सत तरिया साहब। लिपिकार—रामफलदास। अवस्था—प्राचीन। यत्र का बना—मांग कागज। पृष्ठ-सं—१०६। प्र

पृ० १० लगभग—१४। आकार—“६ $\frac{१}{२}$ × ८ $\frac{१}{२}$ ”। भाषा—हिंदी।
लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—पौष, शुक्ल पक्ष
पष्ठी, फ० सन् १२७८ साल।

प्रारंभ—ग्यान रतन मनि मंगल, विमल सुधा निजुनाम
करो विवेक विचारि के, जाए अमरपुर धाम ॥

मध्य—मारा रघुवर वान ते, लरुा परि गव दक
लंक बंक गढ दूटि है, कोइ ना रहा निहसंक ॥

अन्त—भादो वदी चउथी दिन, गवन किबो छपलोक
जो जन मवद विवेकिआ, मेटे जाए सभसोक ॥

विषय—रामकथा तथा सगुण, निर्गुण आदि विषयों पर शुजाशाह और संत
दरिया साहब का वार्तालाप।

टिप्पणी—इम पुस्तक में संतकवि दरिया और शुजाशाह (नोखा गढ, आरा के
जमीन्दार) का वार्तालाप बडा मरल है। सत्तेप में राम कथा वर्णित
है। सतनाम तथा सद्गुरु विषयक वर्णन बडा मनोहर है। ग्रंथ की
लिपि-शैली प्राचीन है। किंतु लिखावट स्पष्ट और सुवाच्य है। यह
ग्रंथ परिपद्-संप्रहालय में सुरक्षित है। संप्रहालय में इसकी स्कंध-
सख्या—३६ (क) है। यह ग्रंथ वरकंधा (शाहावाद) के दरिया
मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी
शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[४७] (ख) ज्ञानदीपक—ग्रन्थकार—संतकवि दरिया साहब। लिपिकार—कमलदास फकीर।
श्रवस्था—प्राचीन। हाथका बना मोटा कागज। पृ० संख्या—२१४।
प्र० पृ० ५० लगभग—१४। आकार—“६ $\frac{१}{२}$ × ८ $\frac{१}{२}$ ”। भाषा—
हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—
अगहन, पूर्णिमा, शनिश्चर, फ० सन् १२७६ साल।

प्रारंभ—सतनाम

सतपुर्प साहब जीदा जाग्रित हंस उवारन सूक्ति दरिया साहब सतगुर
ग्रंथभापल ग्यान दीपक” साखी सतनाम।

प्रेम जुक्ति निजु मुल है, गर गमि करो सुधार।

दिया दीपक जवहि बरे, दरसन नाम अवार ॥

मध्य—करो भक्ति ग्रीह जाएके, रानी लेहुली आए
सो जीव जम शे वाचि है, सतनाम गुन गाए ॥

अन्त—जो सतगुर कह चीन्हि के, ग्यानहि करै विचार
सोइ दफा मोड बंस है, गुन गहि होखै पार ॥

विषय— रुद्रगुण और सत्पुरुष-साहाय्य-वर्णन ।

टि०— यह प्रथम मुन्दर अक्षर्या में है । लिपि स्पष्ट और कागज मजबूत है । प्रथम में रुमवत रचना-काल का निर्देश नहीं है । लिपि काल और दरिया साक्ष्य का निष्ठावान् निमित्त है । उनके निर्माण काल के सम्बन्ध में अधानिष्ठित पद पठनीय हैं—
‘ गमन अगारह सै सैनिस, भागे चौथी अक्षर
सावा आम जब रहनि गावा, दरिया गौन विचार ॥
भागे बरी बार मुक गवन किवा छप लाक
जो नन सपद विवेकिया, मटे सक्त सम सोक ॥

यह प्रथम परिपद-समहालय में सुरक्षित है । समहालय में इसकी रकन-सम्प्रा—३० (ग) है । यह प्रथम धरकथा (शाहाबाद) के दरिया-मठ के महद्व साधु चतुर्दश के सौत्राय से डा० धर्मेश्वर ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सृष्टीत हुआ ।

[४८] विवेक सागर—प्रथकार—मठ फवि दरिया साक्ष्य । लिपिकार—X । अक्षर्या प्राचीन । हाथ का बना हरे रंग का मोग कागज । पृ० सं०—४६ । प्र०पृ०प० लगभग—१४ । आकार—६ $\frac{1}{2}$ X ८ $\frac{1}{2}$ । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—म.प, इण्डियन, एकादशी, मंगलवार ४ सं० १२७८ साल ।

प्रारंभ—मठगुरु मठ हीरे मम, पद पक्षे कल्पान
लावन वज मजन कग, सुपर मठ मुजान ।

मध्य—अप मानन गर्ब मजन श मम ताहरे शाय
करा पतन त्रिरजोपन ही मुम्हके करो रनाच ॥

अन्त—नीच भया नाचत दिरे वात्रिगर के साय
पाव पु-हारी मारिया, गदिल अप । हाथ ॥

विषय—ज्ञान, भक्ति और सद्गुरु में विश्वास आदि ।

टि०— यह प्रथम मुन्दर कागज पर लिखित है । लिपि सुस्पष्ट है । प्रथम के अन्त में लिपिकार के नाम का निर्देश नहीं है । प्रतीत होता है, पूर्व प्रथम के लिपिकार न ही इसकी भी लिपि की है । शायं प्रथम एक ही त्रिभु में है । रुद्रगुण साहाय्य कागज विस्तार से है । यह प्रथम परिपद-समहालय में सुरक्षित है । समहालय में इसकी रकन-सम्प्रा—३० (क) है । यह धरकथा (शाहाबाद) के दरिया मठ के महद्व साधु चतुर्दश के सौत्राय से डा० धर्मेश्वर ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सृष्टीत हुआ ।

[४६] शब्द-अरजी—ग्रंथकार—संतकवि दरिया साहब । लिपिकार—ठाकुरदास । अवस्था—
प्राचीन । हाथ का बना जीर्ण-शीर्ण कागज । पृ० सं०—४४ । प्र०
पृ० पं० लगभग—१३ । आकार—'४ १/२" × ५ १/२"' । भाषा—हिन्दी
लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—शब्द-अरजी । ।

तुम विनु सरन राखें कवन
भगत जन सभ तुम्है जानत
दनुज दानव दवन ॥१॥

मध्य— हरिनाकस जो गर्व किवो है
गर्व गर्द मिलि जाइ ॥
नखते फारा उदर वोटे विदारा
हाथ के हाथे पाइ । २॥

अन्त—जोगी जंगम सेव ढाइन्ह तें पंथ निनारा
हरे हारे श्रवतु कहें दरिया
दरसेठ सोइ है संत पिआरा ।

विषय—ज्ञान और भक्ति का गीति-काव्य ।

टि०— इस छोटी-सी पुस्तक में विभिन्न प्रकार के पदों में सत्पुरुष की स्तुति
की गई है । पद गेय हैं । यह ग्रंथ परिपद्-संग्रहालय में सुरक्षित
है । संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—३७ (क) है । यह
ग्रंथ घरकन्वा (शाहानाद) के दरिया-मठ के महंथ साधु चतुरीदास के
सौजन्य से डा० यमेश्वरदास शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ है ।

[५०] (क) शब्द-अरजी—ग्रंथकार—संतकवि दरिया साहब । लिपिकार—फकीर रामधन दास ।
अवस्था—प्राचीन । हाथ का बना जीर्ण-शीर्ण कागज । पृ० सं०—
५२१ । प्र० पृ० पं० लगभग—१६ । आकार—"५ १/२" × ८ १/२" ।
भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—शब्द-अरजी सत

तुम विनु सरन राखें कवन
भगत जन सभ तुम्है जानत
दनुज दानव दवन ॥

मध्य— जोग जागे काल-भागे करम कलि कवलेस छूटे
जुगुति जोगी जानी ।

मंठ टहके साथी धार
 अरुप नेक उरुप बाधि ।
 जाय अरुपा अनी ॥

मन्त— अति गोहाग भाग गनिछा का राग
 बिरह रस पाना जा की-हे वा
 प्रेम प्रीति करि एहि प्रत
 नीति ग्यान विना दुख दामन बाँधे
 कहे दरिया दर छुकेव कान न
 लान बिगारि हारि प्रभु दीहवो ॥

विषय—मान और भक्ति ।

टि०— प्रथम अक्षर प्रागण है। कुछ अक्षर अक्षर हैं। प्रथम के अधिक भाग अक्षरणीय है। यह प्रथम परिवर्द्ध-प्रवहानय में सुरचित है। प्रवहानय में इसकी रचना-संख्या—२८ (ख) है। यह प्रथम धरुपा (साहाबाद) के दरिया मठ के महथ साधु चतुर्दश के शिष्य ग हा धर्म-प्रवहानी साग्री द्वारा सुरणीत हुआ।

[५०] (ग) गनेरागोष्ठो-प्रवहार—उन कवि दरिया साहब । निविहार—उत्रागिर दाम । अक्षर—रावान । हाथ का बना शीर्ष शीरु कागज । पृ संख्या—१० । प्र पृ प० लगभग—१४ । आकार— $2\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$ । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रानाकाल—X । निविहार—X ।

प्रारंभ— गतनाम
 प्रथम सुरग्री हुआ है मनव पंडित
 को दरियासाहब ग धरुपा में
 दरिया बनन—
 पंडित राज गुना गुनबानी
 पड़ी प्रथम कतु लाज न अनी
 बे, पदा पर भद न जाना
 ता जमह हाथ बिकाना ।

मन्त— अक्षरों बिहना लज, शिवा ना उत्र प्रेम ।
 जी लगी हाथ ना अक्षरी, धम कि प्रथ नेम ॥

अक्षर— अक्षरों लज उत्र, उत्र दाम पंडित
 का जम गुनान टानरी, पत्र हाथ ला ॥ १० ॥

विषय— सुनि-सुना कर्मकाण्ड, साधु-सिद्धि भद भाव वर हरवर कदि ।

टि०— यह प गनेराग का प्रवहानीय है। यह प्रथम परिवर्द्ध-प्रवहानय में

टिप्पणी—ग्रंथ की सुन्दर अवस्था है। लिपि स्पष्ट है। भाषा की व्यापकता एवं सत्पुरुष के मोलह पुत्रों की कथा वर्णित हुई है। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—३६ (क) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरियामठ के महन्थ साधु चतुरीदाम के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५१] (ग) विवेकसागर—प्रथकार—संत कवि दरिया माह्व। लिपिकार—चतुरीदाम। अवस्था—सुन्दर, प्राचीन। हाथ का बना मागज। पृ०-सं०—४६। प्र० पृ० पं० लगभग—१८। आकार— $५\frac{३}{४} \times ८\frac{३}{४}$ । भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—भाद्रो सुदी द्वादशी, वृहस्पतिवार, संवत् १८६३ वि०।

प्रारम्भ—उत्तनाम

सत सुकीत साहव

जोग जीत हम उवारन

सुकृति के दाता दरिया सा

हव ग्रथ बीबेक साग्र भाखल

दरियासाहव : साखी :

सतगुर मतहिंठया मम : पठ पकज कर ध्यान ।

लोचन कज मंजन करो : सुपर संत सुजान ::

मध्य—श्रातंम दरस बीबेक करि : कहि दीन्हो प्रभूवान ।

दरपन डुकरु रई नाही दुजा कोड आन ।

अन्त—सबसे बडा हे साधु है साधु से बडा ना कोऐ :

ईमन प्रसन प्रेम रस आनंद मगल होऐ :

विषय—ज्ञान, भक्ति और नदगुरु-माहात्म्य-वर्णन आदि।

टि०—ग्रंथ सुवाच्य है। ग्रंथ के प्रतिपाद्य विषय जहाँ-तहाँ फटे हैं। यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—३६ (ख) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) के महन्थ साधु चतुरीदाम के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्रब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५२] (क) प्रेममूल—प्रथकार—संत कवि दरिया माह्व। लिपिकार—शिरादास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना चिकना मागज। पृ०-सं०—१२। प्र० पृ० पं० लगभग—२०। आकार— $५\frac{३}{४} \times ६$ । भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—क० सं० १२८६ साल।

प्रारम्भ—सतनाम

प्रथम प्रेम मुला भाखल ।
साखि ।
प्रेम कमल जल भीतरे ।
होत प्रात सुपन गुने भा ।

मध्य— तीली का तेल फुने लाय, मेगे तील को नाम
सतगुर मुन्द समानव, बसेव अर्म पुर गाव ॥

अन्त—इया भवन विच भक्ति मे, रहे पिया के पास
मन लगस न चाहियै चरन कमल की आस ॥

विषय—सद्गुरु भक्ति प्रातपादन ।

टि०— इस ग्रंथ में सद्गुरु और इस्वरभक्ति का सुन्दर प्रतिपादन है।
लिपि नागरी है। जहाँ-तहाँ कैंथी अक्षरों का प्रयोग भी हुआ है।
यह ग्रंथ परिपद्-सम्राज्य म सृष्टीत है। सम्राज्य में इसकी
स्कंध-सप्त्या ४० (ख) है। यह ग्रंथ घरक-घा (शाहाबाद) के
दरिया-मठ के महेश सातु चतुरीदास के सौजन्य से डा धर्मेन्द्र
ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सृष्टीत हुआ।

[५२] (ख) ज्ञानमूल-प्रथकार—मतकवि दरिया साहब । लिपिकार—हीरादाम । अक्षरथा—
प्राचीन । हाथ का बना चिकना कागज । पृ स —२० । प्र पृ०
५० लगभग—२० । आकार—'५.५ × ६" । भाषा—हिन्दी । लिपि—
नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—१० सन् १२८६ साल ।

प्रारम्भ—सतनाम

प्रथम ग्यान मुल
भखल दरीण साहब मुक्ति साहन, सतनाम मारी
सतवर्ग सब उपरै, सखा पत्र सम जीव
जल थल सम मे यापिया, सरव सुधारस पीव ॥

मध्य— कपट कागी कग करो, काट्ट कुबुधि बन ठा
सतगुर दाम न नानियै, जम रोकेगा वा ॥

अन्त— रबी का छवी एह छीत पर, यह निर्गुन का भाव
छनी ते रबी नहि हात है । निर्गुन सर्गुन को राव ॥
यह घन पट जब खुमन है छरकत कवि तब जाए
आ छभि उल्की न आवदी केरि ना हि घग्नि ममाए ॥

विषय— त्रिगुण देवों में नत्पुरुष की विभिन्नता, नत्पुरुष का स्वर्ग में जंघुडीप आकर मुक्ति के प्रचारों के हेतु उन्हें रत्ना-प्रदान करना, मन की व्यापक-प्रवृत्तता का वर्णन आदि ।

टिप्पणी— यह ग्रंथ सुंदर अवस्था में है । लिपि अरपष्ट है । लिपि-काल स्पष्ट नहीं है । विषय का प्रानिपादन दो सुंदर टंग से हुआ है । यह ग्रंथ परिपद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में डमकी स्कन्ध-संख्या—४० (क) है । यह ग्रंथ धरन्वा (शाहावाद) के दरिया मठ के महंथ नाथु चतुरीदान के नौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[५२] (ग) ब्रह्मविवेक-ग्रंथकार—नंत कवि दरिया साहब । लिपिकार—हीरादास । अवस्था— प्राचीन । हाथ का बना चिकना कागज । पृ०-सं०—२७ । प्र० पृ० पं० लगभग—२० । आकार—'५ १/२ × ६" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—क० गन १०८६ गन ।

प्रारंभ—नतनाम

ग्रंथ ब्रह्मविवेक भाष ल दरिया साहब : नाथी
ब्रह्म विवेक ग्यान एह, घोता सुमति सुवार ।
ग्यानी ससुगि विचारही, उत्तरहि भौ जल-पार ॥

मध्य— तीनि लोक के ठाडर, भुली परा भव ग्यान
जो मोहाने सुरनर सुनी उडेव सो न परा पहचान ॥

अन्त— ब्रह्म विवेक ग्यान एह पटे गुने चितलाए
सुसुति पदारथ पाइ है, मदा रहै सुख पाए ॥

विषय— सत्पुरुष-स्वरूप-वर्णन, पापदंड-भण्डाफोड आदि ।

टिप्पणी—ग्रंथ कथा-कहानी के माध्यम से लिखा गया है । दर्शन—जैसे नीरम विषय को दरिया साहब ने कथा-कहानी के सौंचे में टाल कर सर्व-जन-सुलभ बना दिया है । अन्त में दरिया के अवतार की कहानी है । अन्य परिपद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में डमकी स्कन्ध-संख्या—४० (ख) है । यह ग्रंथ धरन्वा (शाहावाद) के दरिया-मठ के महंथ नाथु चतुरीदान के नौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[५२] (घ) भक्ति-हेतु-ग्रंथकार—नंतकवि दरिया साहब । लिपिकार—हीरादास । अवस्था— प्राचीन । हाथ बना खंडित किन्तु चिकना कागज । पृष्ठ-संख्या—२५ । प्र० पृ० पं० लगभग—२० । आकार—'५ १/२ × ६" । भाषा—हिंदी ।

निधि—नागरी । रचना—X । निधि—पृ० सन् १२८६
 शान का त्रु, कृष्ण पत्र, दुधमार ॥

प्रारंभ—सत्नाम

गरुड भक्ति हेतु भाजन १—

या महाव सतगुरु हस उदारन

सत्नाम उगी

म्यान भक्ति निज गार है सुन सर्वन वितना

विंति विंति विमान एह प्रह्न अनुप देखा ॥

मध्य— कवि करिवा बाए अचर हरी छपनाक म पास

तदपा कान न आनी बहु विधि कर्दियेनम ॥

अंत— हारामनि निजु दास है, सत दाउहि का नाम

सतगुरु स परच भू श्रीगता प्रेम परगास ॥

विषय—सतु अंगु चना, श्री गणेश लाम त्वाग आमा की अमरपुरगाना
 का बचन आदि ।

टिप्पणी—की पद्यों के उल्लेख द्वारा भक्ति और ज्ञान का उपदेश पूर्ण
 बचन । निर्गुण गार त्रिगुण विवेचन । अन्त के कुछ पंक्तियाँ छूटे हैं ।

यह प्रथम परिपक्व सप्रहालय में सृष्टान्त है । सप्रहालय में इसकी
 रचना—पृ० (ग) है । यह प्रथम परकथा (शाहावाद) के
 दरिया मठ के महसु सतु चतुर्गुण क मान्य से का धर्मोद्व प्रहाली
 शायी द्वारा सृष्टीत हुआ ।

[५० (क) अमरमार—प्रथम—सत कवि दरिया महाव । निधि—हीरादाउ ।
 अक्षर—गर्जन । हाव का बना चिकना कागज । पृ०—१६ ।
 प्र० पृ० ५ लगान—०० । आकार—“१६ × ६” । भाषा—हिंदी ।
 निधि—नागरी । रचना—X । निधि—कार्तिक सती रविवार
 पृ० सन् १२८६ सन् ।

प्रारंभ—सत्नाम

सथ अमर गार मा

सत करिवा महाव मुक्ति नाम गी वर्ग की छह स

सतगुरु महाव हस उदारन गरी

सतगुरु चरन गुफा मन धीनत मुक्ति क सुन

पं पकर त गन शाना, अत अनुप रहुत ॥

मध्य— सते दरिया उग उ है शा वि न काम अर्थन

निरता बाव महाव रर नम लकीन ॥

अन्त— गुह सुरती गति चंठर्मा मेवक नैन चकोर
पलक-पलक निरखत रहो, गुर सुरती के वोर ॥

विषय—नत्पुरुष और नद्गुरु की स्तुति, दरिया साहब का सत्पुरुष ने
माजात्कार, पापगंड की निदा आदि ।

टिप्पणी—ग्रंथ सुपाठ्य है । छंठ, सोरठा, चौपाई और साखी आदि छंटों का
प्रयोग हुआ है । यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय
में इसकी स्कन्ध-संख्या—४० (ख) है । ग्रंथ धरकन्वा (शाहावाद) के
दरिया-मठ के महंथ साधु चतुरीदाम के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र
ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सङ्गीत हुआ ।

[५२] (च) विवेकसागर—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब । लिपिकार—हीरादाम ।
श्रवस्था—प्राचीन । हाथ का बना कागज । पृ०-सं०—३२ । प्र०
पृ० प० लगभग—२० । आकार—"५ १/२ × ६" । भाषा—हिन्दी ।
लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—संवत् १६३८ वि०,
कार्तिक वदी, शनिवार ।

प्रारंभ—सत्तनाम

गरव वीवैक सागर भावल दरिया साहब
साखी

मतगुर मत हीर्षए म्मः पठ पकज करु ध्यान
लोचन कंज मनन करो सुवर सत सुजान ॥

मध्य— राज काज सब देखिया : गज गर्जहि तेहि द्वार
वाज पखेरु हाथ लेइ यह सोभा दरवार ॥

साखी

अन्त— सब से बढा साधु है साधु से बढा ना कोए ।
दरसन परसन प्रेम गति आनन्द मंगल होए ॥

विषय—ज्ञान-भक्ति, सद्गुरु में विश्वास-वर्णन आदि ।

टिप्पणी—ग्रंथ में अन्य ग्रंथों के समान 'पुष्पिका' वाक्य नहीं दिये गये हैं ।
यह ग्रंथ परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी
स्कन्ध संख्या—४० (ख) है । यह ग्रंथ धरकन्वा (शाहावाद)
के दरियामठ के महंथ साधु चतुरीदाम के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र
ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सङ्गीत हुआ ।

[५२] (छ) अग्रग्यान—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब । लिपिकार—हीरादास । श्रवस्था—
प्राचीन । हाथ का बना चिकना कागज । पृ०-सं०—२३ । प्र० पृ० पं०
लगभग २० । आकार—"५ १/२ × ६" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी ।

रचनाकाल—X । लिपिकाल—अग्रहन मुदी पष्ठी, रविवार, मकर
१६३७ वि ।

प्रारम्भ—सतनाम

गरथ अम ग्वान, भागल दरिया साहब
मुकित हंस उबारन सत मुर बदी छोर

साखी

अरज कीह सीरनाण दमा नीधि सुनी लीजिए
सार स-द समुम्माए बहुरी न भव जल आवही ॥

मध्य— तन मन धन अथ तुम पर यह सभ अरपन कीह
करो दमा बहु भाति यह रहा कबही जगही जनि मीह ॥

अन्त— बेबाहा पुर्ख अमान है दरसन दीहो आए
सरहीनदा मुकित है सबबीधि कहा सुम्माए ॥

विषय—माया की व्यापकता, निर्गुण ब्रह्मण तथा जोगजीत (मुक्ति) की चर्चा ।

टिप्पणी—इस ग्रंथ में छवि-रचना तथा माया की व्यापकता का सविस्तार वर्णन
है । सत्युक्त के सोलह पुत्रों की कथा में पाप और पापण्ड की बड़ी
तीन मर्तना है । यह ग्रंथ परिपद्म-समहालय में सुरक्षित है । समहालय
में इसकी रक्ष-न-रक्षा—४० (ख) है । यह ग्रंथ धरक-चा
(शाहाबाद) के दरिया-मठ के महय साधु चतुरीदाम के सौजन्य से
डा. धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा मण्डित हुआ ।

[५३] (क) गणेश-गोष्ठी—प्रथकार—सत कवि दरिया साहब । लिपिकार—शुक्ल दास ।
अवस्था—प्राचीन । हस्त निर्मित मांग कागज । पृ०-न -२१ । प्र०
पृ० प लगनग—१३ । आकार—६×६ । भाषा—हिंदी ।
लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—क तिक बदी अष्टमी,
शनिवार सकन १८६४ वि ।

शतनाम

प्रारम्भ—आ जग मे पड़ी पगी वेद पुराना
जाति शक्ति जाके कहाये करे, नीयन के धाता ।

मध्य— उडा होत मारु मैदान टगर न जाल धमका
शुनहि गूर जो हो दिन गर मे
बाल ले जर हाथ तग दहिने भला ॥

अन्त— गथ गुणध शमै नुठि आवै
रत ना नू खाई शरारा ॥
ठाह पर करै नेम शरारा

फहें दरिया सेह जरा को रगरा
शतनाम गहर मे दी रगरा ॥

विषय—मूर्ति-पूजा, कर्मकाण्ड आदि का खडन ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ खण्डित है । प्रारंभ के सात पृष्ठ नहीं हैं । कागज प्राचीन है । पृष्ठ-क्रम ठीक करने के लिए पुन पेंसिल से पृष्ठ-संख्या लिखी गई है । वन्त्य 'स' के लिए 'श' का ही प्रयोग है । यह ग्रंथ परिपद्-मंत्रहालय में सुरक्षित है । मंत्रहालय में डगरी स्कन्ध-संख्या—४१ (ख) है । यह ग्रंथ वरकन्धा (शाहावाद) के दरिया-मठ के महंत साधु चतुरी दास के सौजन्य से डा० बर्मन्ध ब्रह्मचारी शान्ती द्वारा संगृहीत हुआ ।

[५३] (ख) ज्ञानमूल (मूलज्ञान)—प्रथकार—मत्त कवि दरिया साहब । लिपिकार—शुकुलदाम फकीर । अवस्था—प्राचीन । हाथ का बना कागज । पृ०-संख्या—१८—(२२-४०) प्र० पृ० पं० लगभग—१४ । आकार—"५ १/२ × ५ १/२" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—४ । लिपिकाल—कार्तिक वदी, एकादशी, मंगलवार ।

प्रारंभ—शतनाम

वेवाहा साहेब वे कीमती गरव सुल ज्ञान भाखल
दरिया साहेब गरीब नेनाज बदि छोड
शत वर्ग शर्व उपरे शाखा पत्र शभीत्रः ॥
जल थल शभ मे व्यापिआ शानगुनार शपीव
आदि अत के उपसुला ॥

मध्य— शोड्द दश गुन शार है जीन्दि मानदि कहा हमार ।
शब्द तेग यह गदि क उतरै भव जल पार ॥

अन्त— जाके नीगुन वेद यह कहड शगुन शरुप देह धरी लहड ॥
रखी को न छरी यह न छीत पर, यह नीगून को भाव
न छरी ते रखी नाहि होत है, नीगून सगून को राव ॥॥

विषय—त्रिगुण देवों से सत्पुरुष की विभिन्नता, नत्पुरुष का जंबूद्वीप में प्रचार-कार्य ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ सुंदर अवस्था में है । कागज प्राचीन है । ग्रंथ की लिपि पुरानी है । लिपिकार ने चवगं 'छ' का प्रयोग 'ज' के समान किया है । वन्त्य 'स' के स्थान में तालव्य 'श' का प्रयोग अधिक है । यह ग्रंथ परिपद्-मंत्रहालय में संगृहीत है । मंत्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या—४१ (ख) है । यह ग्रंथ वरकन्धा—(शाहावाद) के दरिया मठ के महंत साधु चतुरी दास के सौजन्य से डा० बर्मन्ध ब्रह्मचारी शान्ती द्वारा संगृहीत हुआ ।

[५३] (ग) अग्रज्ञान—प्रथकार—मत्त कवि दरिया साहब । लिपिकार—शुकुल दास फकीर । अवस्था—प्राचीन । हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ-सं०—

२० (४१ ५६) । प्र पृ पं लगभग—१४ । आकार— $२\frac{1}{2} \times ५\frac{1}{2}$ । माया—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—
वार्तिक सुदी, नवमी, सन् १८६४ वि० ।

प्रारम्भ—शतनाम ॥

बेबाहा नाम नीरान

रात बरग जीदा आमान जा

प्रीत जीद दरीआ शाहेब दरीआ

गरी मेवाज ॥

अर्ज कीह शीरनाए, दया नीधि शुनिलीजीये

शार शम्द शमुक्ताए बहुरि न भी जल आवही ॥

मध्य— तन मन धन अब तुम्ह पर यह सम अरपन कीह ।

करो दया बहुमानि यह रहो कबही जनि भीह ॥

अन्त—बेबाहा पुम्ब अमान है दररा हो आए

शाही नदा शूरीत है शम बीधि काहा मुक्ताए ॥

विषय— माया की व्यापकता, निर्युक्त त्रिगुण विवेचन आदि ॥

टिप्पणी—यह प्रथम यद्यपि अति प्राचीन है, फिर भी इसके अक्षर साठ एव सुन्दर हैं । प्रथम में तालम्य 'श' का अधिक प्रयोग हुआ है । लिपि अस्पष्ट है । अन्त के कुछ पंक्तियों को द्वाारा नष्ट कर दिये गये हैं । यह प्रथम परिवर्द्ध-संप्रहालय में संगृहीत है । संप्रहालय में इसकी रकम सख्या—४१ (ग) है । यह प्रथम धरकथा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महय साधु चतुरीदास के सौत्रिय स डा० घमैन्द्र मल्लकारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[५४] गणेशगोष्ठी—प्रथकार—संत कवि दरिया साहब । लिपिकार—रामपीत दास ।
अन्वया—प्राचीन । हाथ का बना कागज । पृष्ठ-संख्या—१७ । प्र
पृ पं लगभग—२४ । आकार— $४ \times ६\frac{1}{2}$ । माया—हिंदी । लिपि—
नागरी । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ता० १३ ६४० ।

प्रारम्भ—शतनाम ॥

शुष्की भरत कशी में अक्षी बरना के तीर

गणेश पणित आ दरिया साहब स

माखी

पणितरात्र शुनी लीत्रिय बचन सत सुबास

परी प्रथ कानु सात्र 'रा' मर नरक पुत्राय ॥

मध्य— खाड़ी शु क भय सब, नना रग तरंग

कहे न धंग बात्रिया, महा सुगत मा भग ॥

अन्त— माधु माधु नव करत है, माधु मसुके वार
अलल पत्र कोई एक है, पछी कोटि हजार ॥

विषय—साम्प्रदायिक भेद-भाव, मूर्ति पूजा, कर्मकाण्ड, वेद आदि के खंडन तथा
ईश्वर का प्रतिपादन ।

टिप्पणी—ग्रंथ सुन्दर अथवा में है । लिपि आधुनिक एव सुस्पष्ट है । अक्षर
सुन्दर है । पठियों नीची है । लिपिकाल एव लिपिकार के लिए दो
तरह के परिचय प्राप्त हैं । ग्रंथ के अन्त में उपर्युक्त त्रिवि-निर्देश है,
किन्तु दूसरे पृष्ठ पर “सम्बन् १८८३ पूर्व साल, सन् १३४७”
लिखा है । इसी तरह लिपिकार के लिए—“लिखा था दसरत वीतराम
दान जी के था” लिखा है । यह ग्रंथ परिपद्-मंत्रहालय में सुरक्षित
है । सप्रहालय में टमनी स्कन्ध-संख्या-४२ (ग) है । यह
ग्रंथ वरकन्वा (गाढ़ावाद) दरिया-मठ के महन्ध साधु चतुरीदास
के सौजन्य ने डा० धर्मन्ध ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[५५] मूर्ति-उल्लाङ्ग—ग्रंथकार—सत कवि दरिया माहद । लिपिकार—X । अथवा—
प्राचीन । हाथ का बना मोटा कागज । पृष्ठ-सं०—३६ । प्र० पृ० पं०
लगभग-१७ । आकार—'८ X ६ ३/४" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी ।
रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—सतनाम ।

सत सुक्रीत जोग जीत अर्ज अचीत
पुर्न सुनीर्ध कर नामे कबीर दरीया
नाम अ मोल हम डमारन बटी छोर
गरंथ मुरति उखार भाग्यल दरिया
साहव धरकधा मो तस्त कीया० ।

॥ चौपाई ॥

जाहों वमे सतगुर मतपुर देदवा
भेमवा वरीय पगु टारही रेजी ।

मध्य— अलल अमान तो ही पासे उरेजी
हुनो दीन मे खलल परा है ।
मारी की हिंदी कुरुरा नेचर जी
हुनो दीन के ऐक मीलावै ॥

अन्त— पवन सबद ले गान करत है
बीरह सबद सीख पैठे

धका देखी सुख त्यागिया
त्यागवा धन और धाम ॥

विषय—सूरि पूजा-मन्त्र एव इति के विभिन्न अयतनों का स्व-मुक्त पान ।

टिप्पणी—प्रथम गन्ति है । त्रिपि सुन्दर है । म्यान-म्यान पर काण और चक्र बनाकर दाया पधी विचारों का व्यक्त किया गया है । प्रथ के गन्ति हान क कारण त्रिपि काल का अनेक नहीं है । विषय का प्रतिपादन सुन्दर रंग से किया गया है । यह प्रथ परिपद-समस्ततय में सुरचित है । समस्तानर में इसकी रक्षा-सूचना—४३ है । यह प्रथ धरकथा (शाहाबाद) रमिया-मठ क मरण सायु चतुर्गिराम के शीतल से दा० धर्मोद दलनकी शशी द्वारा समीत हुआ ।

[४६] म्यानमूल—प्रथकार—मन कवि दरिया काहव । निषिद्धार—प्रतापनाथ कबीर । अरुम्या—प्रधान । हाथ का बना माग कागज । पृ -सूचना—२९ । प्र० पृ ५ लगभग—१६ । आकार—"९ × ८ १/२" । भाषा—हिन्दी । विषि—नागरी । रचनाकाल—X । निषिद्धार—कारिक बनी पूर्विका (१) शानार, वि० सं० १८६६ मन् १०४० फसली ।

प्रारंभ—फलनाम

नाम ना मान सुखत
दही का गहव प्रथमाय
न म्यान सुख गतवरण नाम
नीकन हस उबारन शशी नाम
सुख करण गहव उपरै , सगा पत्र सुख जीव ॥॥
जल धल सन में व्यापीका मन्व सुपा रम पीव ॥

३४ — सुग मीन त्यागद सबो ताता तात
काए बचन में टालन दे औ पीपर का पन ॥

अन—रही का शरी यह धीन पर, यह नीगुन का भाव
ए । त रही माठी हत दे, नीगुन म्गुन का भाव ॥

विषय—सुरूप माहम्य पान ।

टि०— प्रथम पूर दे । कागज सुन्दर दे । भाषा सुन्दर एव त्रिपि मन् दे । प्रथ के अन्त में दरिया काहव क रचना का पूरा नाम उल्लिखित है— ' माहम्य पान दलनकी शशी मात्र धरकथा का है । यह प्रथ परिपद-समस्ततय में सुरचित है । समस्तानर में इसकी रक्षा-सूचना—४३ (१) है । यह प्रथ धरकथा (शाहाबाद) दरिया-मठ

के महंत साधु चतुर्गिरि के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५७] (क) दरियासागर-ग्रंथकार—मंत कवि दरिया साहब। लिपिकार—फकीर गिरि-धारीदास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना हरे रंग का कागज। पृ०-सं०-८२। प्र० पृ० पं० लगभग—१५। आकार—"६ X ८"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—वैशाख सुदी पंचमी, शुक्रवार, फतली नर १२६० साल।

प्रारंभ—सननाम ॥

सत सुकृत दरिया साहब
सत वरग नाम नीनान ग्रंथ
दरिया सागर नतन
सुनीत—साखी
ग्रंथ दरिया सागर सुक्ति भेद नीजुमार
जो जन सचद वीवेकीया सो जन उत्तरे पार ॥

मध्य—मरकठ नग नाही चीन्हेही, नगन फीरे बनमाफ
नाम वेमुख नर वीकल है, बलु जननी होए बाफ ॥

अन्त—कोठा महल अटारिया सुनो सखन बहुराग
सतगुर सचद चीन्हे धीना जेवो पंछीन्हे मे काग ॥

विषय—शब्द और नाम की महिमा, निर्गुण सत्पुरुष और सगुण अवतार का वर्णन, साधु-मंगत से लाभ आदि।

टि०—यह ग्रंथ सुन्दर अवस्था में है। ग्रंथ की भाषा और वर्णन-शैली अच्छी है। लिपि स्पष्ट है। ग्रंथ के अन्त में लिपिकार का पूरा पता लिखित है। चौपाई और साखी की लेखन-प्रणाली पुरानी है। यह ग्रंथ परिपक्व-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी रकन्ध-संख्या—४६ (ख) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महंत साधु चतुर्गिरि के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[५७] (ख) ग्यानदीपक-ग्रंथकार—सत कवि दरियासाहब। लिपिकार—गिरिधारीदास फकीर। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना हरे रंग का कागज। पृ०-संख्या—१५५। प्र० पृ० पं० लगभग—१५। आकार—"६ X ८"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—चतुर्विंशी, मंगलवार, सावन शुक्लपक्ष, संवत् १६४१ वि०; फतली नर १२६१ साल।

प्रारंभ—सतनाम

सन सुधीत हस उबारन बीनी (बरी) छोर
 सत बरग नाम नासान प्रथ ग्यात
 दीपक मन्त्रुत दरीया साहेब सत
 गुर सतनामा साखी
 प्रेम जुगुति नीजु मुल है गुर गमी करो सुधार
 दायाणीपक जबही बर दरसन नाम अघार ॥

मन्त्र— कागा बछाआ भस धरी, नाची का छीगुनगाए
 चार साहु पञ्चानी हा, प्रेम भगतीलव लाए ॥

अन्त— भवा रुपूरन ग्यान, सतगुर पद पावन करा
 उपरै सत मुजान, जीही गमी किवो बीबेक यह ॥

विषय— मन्त्रुपुत्र और मन्त्रुगुरु-माहात्म्य-वर्णन ।

टि०— प्रथ की अर्थशा अच्छी है । निपि मुस्पर्ह है । शिव-पार्वती और
 वृ भवनारद-बानाणाप तामनिक भित्ति पर आधारित है । दरियापथ
 क दार्शनिक तत्त्व का मुद्दर परिचय मिल जाता है । यह प्रथ
 परिपद-महालय में सुरक्षित है । मन्त्रुहालय में इसकी रक्थ
 मन्त्रु-४६ (५) है । यह प्रथ धरकथा (शाहाबाद) दरिया-मठ
 क महाय गातु चतुर्दश के साजय स दा धर्मद प्रसचारी शास्त्री
 द्वारा सगृहीत हुआ ।

[५७] (ग) नौमाला—म मन्त्रु—६तकवि दरिया साहब । निपिन्कार—सतुमनदास ।
 अवस्था—प्राचीन हाथ का बना हरे रंग का कागज । पृ०-०-० ।
 प्र० पृ० पं० लगभग—१८ । अकार—६×८ । मापा—
 हिरी । निपि—नागरी । रचनाकाल—५ । निपिन्कार—चदत (चैत्र)
 कामवार, पयली सन् ११०४ साल । सवन् १६५४ वि० ।

प्रारंभ— अथ नौ माला
 प्रथम नाम सतनाम सजीवन
 गामरथ दीन देमाना ।
 सत साहेब मुख सागरगामी
 मुख गुरल कला ॥

मन्त्रु— का हीर गनीफदिमाके छोर, छक अग्रजानी
 मौना परवर दीगार हक छत्रपती मुखपानी ॥

अन्त— सत पुर्ण सत नाम सतधर्म सत
 धाम सत बरत सतरयान सतसुंग गतुरे ॥

अजर अंग अजर गुन अजर रंग
अजर लोक अमित अगम पंथ रहु रे ॥

विषय—सतनाम-माहात्म्य-वर्णन ।

टि०— इस दो पन्ने के ग्रंथ के पद सुनलित हे । लिपि नागरी है । इमें ईश्वर-भक्ति के उपदेश हे । यह ग्रंथ परिपद्-संग्रहालय में सुरजित है । संग्रहालय में इसकी स्कन्व-संख्या—४६ है । यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महय साधु चतुरीदाम के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[५७] (घ) अग्रग्यान—प्रकार—सत कवि दरिया साहब । लिपिकार—गिरधारीदाम । अवस्था—प्राचीन । हाथ का बना हरे रंग का कागज । पृ०-संख्या—२६ । प्र० पृ० पं० लगभग—२० । आकार—'६ × ८" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—कुथार सुदी, वृहस्पतिवार, ता० २१ मघत् १६४१; नव १२६१ फसली माल ।

प्रारंभ—उननाम

ग्रंथ अग्रग्यान

भाखल वरीया माहेव

मूत्री के दाता हम उचारं घ

न बंदी छोर वरीया साखी ।

अरज कीन्ह सीरनाए, दा अ (दया) निवी सूनी लीजीए

मार मन्द समूक्षाए वहुरी ना भौ जल आवही ॥

मध्य— नीर्गुन नीयद्धर नाम है सरगुन सरीर तोहार
ऐन करोखा देखियै हम रहो दुनो सोन्वार ॥

अन्त— हीरा मनी नीजुदाम हए, सभ दामन्ह को दाम
सतगुर से परचे भइ, त्रीगसा प्रेम परगास ॥

विषय —माया की व्यापकता, निर्गुण-त्रिगुण-विवेचन ।

टि०— यह ग्रंथ सुन्दर अवस्था में है । कागज प्राचीन है । लिपि स्पष्ट है । चौपाई और साखी आदि का यथा स्थान ठीक उल्लेख हुआ है । यह ग्रंथ परिपद्-संग्रहालय में सुरजित है । संग्रहालय में इसकी स्कन्व-संख्या—४६ (घ) है । यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महय साधु चतुरीदाम के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[५८] अलिफनामा—ग्रंथकार—संतकवि दरिया साहब । लिपिकार—प्रताप फकीर । अवस्था—प्राचीन । हाथ का बना साधारण मोटा कागज । पृष्ठ-

सख्या—७ । प्र० पृ० प० लगभग—२३ । आकार—'६ × ८ १/२' ।
भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—
वि० १८६ सन् सन् १२५१ साल ।

प्रारंभ—सतनाम

गर्भ अलिफनामा भारतल दरीआ साहब हस उवारन दशा को सार्ग
अलिफ अलाह समका सीरताज अरअल आखिर वाहि काज ॥

मध्य— अलीक नीगान इलाही बुदरत अलीफ दीदार देखै सो हजरत ॥

अन्त— इशा बेवाहा है साहब मेरा हों आसिक दील बदा तेरा
दरीआ दिल जो करै सफाई ऐन दीद परगट सो पाइ ॥

विषय— सत्पुरुष-माहात्म्य वर्णन ।

टिप्पणी— प्रथम बहुत छोटा है । इस छाटे से प्रथम में सत्पुरुष का माहात्म्य
वर्णन हुआ है । यह प्रथम परिष्कृत-सप्रहालय में सुरक्षित है ।
सप्रहालय में इसकी रकब-संख्या ४७ है । यह प्रथम घरक-घा
(शाहाबाद) के दरिया-मठ के महद्व गाधु चतुरीदास के सौजन्य से
डा. धर्मेश्वर ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[५६] **सहस्रनामी—**प्रयकार—पुन कवि दरिया साहब । लिपिकार—प्रताप फकीर ।
अवस्था—प्राचीन । हाथ का बना मोगा कागज । पृष्ठसं—५३ ।
प्र० पृ० प० लगभग—१८ । आकार—६ × ६' । भाषा—
हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—पौष
कृष्ण पक्ष ११, शनिवार, सन् १८७० वि ।

प्रारंभ—सतनाम

गर्भ सहस्रनामी साखी भारतल दरीआ साहब सतगुर सतनाम ।

बेवाहा नीनु जानहु जाकषा, न हाए

आदी अत गुन सत है दुना आरी नाही काण ॥

मध्य— ज्ञान हुआ तब ध्यान है, भगती हुआ तब जाग
जहां दया तहां परम है बीगसा प्रेम सनाग ॥

अन्त— गत सुहत सुमिरन करो सम बीधि हात आनन्द
सकल समा मह सत सभै ज्यों उड़ीगन मह चद ॥

विषय— दरिया साहब के विभिन्न विषयों पर १०५३ पदों का संग्रह ।

टिप्पणी— यह प्रथम दरिया साहब के अन्वय प्रयोग से उत्पन्न प्रकृत पदों का संकलन है ।
जहाँ-तहाँ कुछ मौखिक रचनाएँ भी हैं । सामान्य धारणा के अनुसार
इसका प्रारम्भिक रूप 'सतगुरु' के रूप में था । अबत सात ही पद

इसके प्रारम्भ में लिखे गये थे। शूनै-शूनै' इसमें पद बढ़ते गये और उनकी संख्या बढ़कर १०५३ तक पहुँच गई। इसलिए इसका नाम 'सहस्रानि' पड़ा। यह ग्रंथ परिपद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या ४८ है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहावाद) के दरिया मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[६०] (क) प्रेममूला—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—बाबू जंगवहादुर राय। अवस्था—अच्छी। आधुनिक ग्रंथ का बना कागज। पृ०-सं०—१२। प्र० पृ० पं० लगभग—१६। आकार—"६ $\frac{१}{४}$ " × ६ $\frac{१}{४}$ "। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—प्रावण शुक्ल पक्ष १३, संवत् १६८६ वि० बुधवार।

प्रारम्भ— 'म कमल जल भीतर, प्रेम भवर ले वास
होत प्रात सुपट रुचे, भान तेज प्रकाश ॥

मध्य— तन कर मटुकि प्रेम कर पानी, निकले घृत सुवास बखानी
कर्म जीन मलिन जो कीन्हा, सत्य विना ब्रह्ममय छीन्हा ॥

अन्त— प्रेम भक्ति जाके वसे, निस दीन रहे अधीन
दरिया दिल कहं देखिये, रहे चरण लव-लीन ॥

विषय— सद्गुरु-भक्ति-प्रतिपादन।

टिप्पणी— ईश्वर-भक्ति और सद्गुरु-माहात्म्य-वर्णन पठनीय है। यह ग्रंथ आधुनिक कागज पर प्रचलित (नई) लिपि में लिखा गया है। ग्रंथ छापिडत है। प्रारम्भ की कुछ पंक्तियाँ नहीं हैं। जहाँ-तहाँ लिपि में अंगरेजी का भी व्यवहार हुआ है। ग्रंथ के अन्त में लिपिकार का नाम अंगरेजी और नागरी दोनों लिपियों में है। ग्रंथ का प्रारम्भ वारहमासा आदि गीतों से हुआ है। यह ग्रंथ परिपद्-संग्रहालय में सुरक्षित है। संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-संख्या ४६ (घ) है। यह ग्रंथ धरकन्धा (शाहावाद) के दरिया मठ के महंथ साधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ।

[६०] (ख) दरियासागर—ग्रंथकार—संत कवि दरिया साहब। लिपिकार—छेदीदास। अवस्था—प्राचीन। हाथ का बना खण्डित जीर्ण-शीर्ष कागज। पृ०-सं०—६४। प्र० पृ० पं० लगभग—१७। आकार—"६ $\frac{१}{४}$ " × ६"। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ल पक्ष, रविवार,

- प्रारंभ—** सोमा अगम अपार हम चम सुय पावही ।
काइ ग्याना कर बिचार, प्रेम तसु जाके बधे ॥
- मध्य—** हम नाम अमिन नाहि बाप, नाहि पावै पइसार ।
कहैं तरिया नग अरुमवा नाम बिना मसार ॥
- अंत—** कोग महल अगरीया मुनवा सर्वन बहुराग ।
मन गुर शब्द चिहे बिना, नवों पड़ीह मे काग ॥
- विषय—** निर्युग और सगुण अवतार वर्णन तथा शब्द-नाम
माहात्म्य प्रसंग ।
- टिप्पणी—** यह ग्रंथ अत्यंत प्राचीन है । कागज जीर्ण शीर्ण और प्रथ
का अत्यंत भाग चमिन्त है । अक्षर और लिपि मनोहर हैं ।
ग्रंथ के अन्त में तरिया साहब का निवास-काल निम्न
लिखित है— ६वत से अठारह शै सैतीस पञ्चानकी वो छपलाक
जो जन शब्द विवेकिया मन् सकल सम सोक ॥

भाटा बनि बाधि अघार के दिन रहेवा मुकवार ।
सवा जाम जरैनि गवा दरिया गवत विचार ॥

यह ग्रंथ परिपत्र सप्रहालय में सुरक्षित है । सप्रहालय
में इसकी रचना-संख्या—६६ (ग) है । यह ग्रंथ धरकधा
(शाहाबाद) दाग्या-मन् के महय साधु चतुरी दास के सौजन्य
से डा० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा मगहीत हुआ ।

[६०] (ग)अमर सार—(अक्षर सार)—ग्रंथकार—सत कवि तरिया साहब । लिपिकार—युनआद
दास । अक्षर—प्राचीन, हाथ का बना जीर्ण शीर्ण कागज ।
पृ-सं—३० । प्र पृ० ५० लगभग—१५ । आकार—
१६ १/२ × ६ । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—
× । लिपिकाल—× ।

प्रारंभ— सतनाम
सत बर्ग नाम
नाशान शुद्धीन तरी
आ साहब हस अवारन मु
हि दान्न प्रथ अम गर मान
न तरीआ साहब सतनाम साखी १
शन गुर चन गुया गम बीमन सुद्धि का मूल
पन् पकत्र नाच तरीआ अजर अनूपन फूल ॥

- मध्य— दरपन दाग न लागहि नैन रहै भरीपूर ।
ऐन ऐन मे दीशैं कहैं दरीया सोडमूर ॥
- अन्त— मूल नाम गति पार कयाव हुत बीरतार है ।
शतहि करो विचार शंगै शकल वीगारिकैं ॥
- विषय— मद्गुरु और मनु पुरुष की स्तुति, पाखरड-खंडन आदि ।
- टिप्पणी— ग्रंथ जीर्ण शीर्ण कागज पर लिखित है । लिपि अस्पष्ट है ।
लिपिकाल अज्ञात है । लिपिकार का भी पूर्ण पता नहीं
चलता । यह ग्रंथ परिपद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय
में इसकी स्कन्ध-सख्या—४६ (ग) है । यह ग्रंथ वरकन्वा
(शाहानाद) दरिया-मठ के महंथ मातु चतुरीदाम के सौजन्य
से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[६०] (घ) यद्वा-समाधि—(जग्य समाधी)—ग्रंथकार—सत कवि दरिया साहब । लिपिकार—
ठाडुर फकीर । अवस्था—प्राचीन हाथ का जीर्ण-शीर्ण कागज ।
पृष्ठ-सख्या—१६ । प्र० पृ० पं० लगभग—१८ । आकार—
६ $\frac{३}{४}$ " × ६" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
लिपिकाल—सम्वत् १६०६ वि० ।

- प्रारम्भ— सत्तनाम
गंध जग्य समाधी
खी क्रीसन दुदीस्टील
का बोव जानव ॥ छुड ॥
एही भाती कोप री पचके सोभा रय को महिमा कीवो ।
सुकृति कारन जुवी ठानेवो तीन्हकी गती कैमे दीवो ॥

- मध्य— चारी सुट के भेख नभ नाना रंग तरग ।
काहे ना घट वाजीया महा सुरति भौ भंग ॥
- अन्त— साधु साधु नभ एक है, जब पोषता कर खेत
कोड कूडरती लाल है अवर सेत का सेत ॥
- विषय— कृष्ण-युधिष्ठिर-संवाद के द्वारा ज्ञानोपदेश ।
पाखरड का वहिष्कार, सद्गुरु में विश्वास आदि ॥

- टिप्पणी— ग्रंथ सुन्दर अवस्था में है । कागज जीर्ण-शीर्ण है । लिपि
स्पष्ट है । लिपिकाल अपूर्ण है । श्री कृष्ण-युधिष्ठिर-संवाद
के द्वारा 'ज्ञानोपदेश' हुआ है । यह ग्रंथ परिपद्-संग्रहालय
में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी स्कन्ध-सख्या—
४६ (ख) है । यह ग्रंथ वरकन्वा (शाहानाद) दरिया-

मठ महत्थ साधु चतुरीदास क सौन्य से डा० धर्मेन्द्र
ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[६१] (क) दरिया सागर—प्रथकार—सत कवि दरिया साहब । लिपिकार—उमराव दाम
फकीर । अवस्था—अज्ञी । हाथ का बना मोगा कागज । पृ०
संख्या—८४ । प्र० पृ० ५० लगभग—१६ । आकार—
६ × ६' । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× ।
लिपिकाल—सम्बन् १८८५ वि०, वैशाख सुदी
त्रयोदशी, एतवार ।

पारभ— नत्तनाम
सुक्रात दरीआ साइ
ब हस उजारन मुडुति दात।
प्रथ दरीआ मार्ग भाखल दरी ॥ साखी ॥
प्रथ दरीया साप्र मुक्ति भेद नीजु सार ।
चो चन शब्द बीबेन्वीआ छोनन उतरही धार ॥

मध्य— हस नाम अग्रीत नाही चाखेवा नाहि पाए पदसार ।
कह दरीआ जग अरुभेचो एक नाम बीना ससार ॥

अत— कोठा महल अगरीआ मुन शर्वन बहुगम
सत गुर गच्छ चीहे बीना ज्यो पछीह में काग ।

निपय— नाम की महिमा तथा छप लोक का वर्णन आदि ।

टिप्पणी— प्रथ सुत्र अवस्था में है । लिपि स्पष्ट है । लेखन शैली पुरानी
है । रचनाकाल अज्ञात है । प्रथ के अत में लिपिकार का
पता लिखित नहीं है । यह प्रथ परिषद् सभहालय में सुरक्षित
है । सभहालय में इसकी संख्या—५० (घ) है ।
यह प्रथ धरकथा (गाहावाद) दरिया—मठ के महत्थ
साधु चतुरीदास के साजय से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री
द्वारा संगृहीत हुआ ।

[६१] (ग) भक्तिहेतु—(भगतिहेतु)—प्रथकार—सत कवि दरिया साहब । लिपिकार—
उमराव दाम फकीर । अवस्था—अज्ञी, प्राचीन । हाथ का बना
माग कागज । पृ० संख्या—३२ । प्र० पृ० ५० लगभग—
१६ । आकार—६' × ६' । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी ।
रचनाकाल—× । लिपिकाल—सम्बन् १८८५ वि० साल
ज्येष्ठ वदी नवमी ।

- प्रारंभ—** सत्तनाम
 ग्रंथ भगति हेतु भा
 खल दरिआ साहव सतनाम
 ग्यान भगति नीजु सार है सुनो सर्वन चीत लाइ ।
 विगति वीगति वीखान एह, व्रहा अरुप देखाए ॥
- मध्य—** ब्राह्मन सो जो ब्रह्म ही चीन्है करै भगति लीं लीन
 कहै दरीआ सो वाचीहो पंडीत परम अवीन ॥
- अन्त—** भायो वटि चउय दीन गवन कीवो छपलोक
 जो जन नवद वीवैकीया मेटै नकल सभ सोक ॥
- विषय—** अनेक उदाहरणों द्वारा ज्ञान-भक्ति-विवेचन, सद्-गुरु-स्तुति और
 माधु असाधु-वर्णन आदि ॥
- टिप्पणी—** ग्रंथ के अन्तिम कुछ पन्ने धीमके चाट गई हैं । लिपिकार
 ने ग्रंथ की लिपि करने में बड़ी सावधानी से काम लिया है ।
 यह ग्रंथ परिपद-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी
 स्कन्ध-संख्या—५० (ध) है । यह ग्रंथ वरकन्वा (शाहाबाद)
 दरिया-मठ के महन्थ साधु चतुरी दास के मौजन्य से डा० धर्मेन्द्र
 ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[६२] (क) दरियासागर—ग्रंथकार—सत कवि दरिया साहव । लिपिकार—लालधारी
 दास । अवस्था—सुन्दर, हाथ का बना प्राचीन मोटा चिकना
 कागज । पृ०-संख्या—८४ । प्र० पृ० पं० लगभग—१७ ।
 आकार—६" X ६ $\frac{1}{2}$ " । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचना-
 काल—X । लिपिकाल—X ।

- प्रारंभ—** वैवाहा साहव
 सुकरीत दरीआ साहव
 गरय दरीआ सागर भाखल ॥
 ॥ माखी ॥
 गरय दरीआ सागर सुकती भेद नीजुमार
 जो जन नवद वीवैकीया सो जन उत्तर ही पार ॥
- मध्य—** यह मन काजी यह मन वाजी
 यह मन करता यह मन दरवेश
 यह मन पाडे यह मन पंडीत
 यह मन दुखीआ नरैश ॥
- अन्त—** कोठा महल अटारीआ सुनै सर्वन बहुराग
 सतग सेवद चीन्है बीना जेव पंडीन्ह मे काग ॥

विषय— छपलोक, सद्गुरु-माहात्म्य एवं नाम की मन्त्रिमा का सविस्तार-वर्णन ।

टिप्पणी— यह ग्रंथ सुन्दर अवस्था में है । कागज मोग है । लिपिकाल का उल्लेख सम्भवत नहीं है, क्योंकि ग्रंथ के अन्त में केवल—

‘समपुरन—

‘दस्तखत लालवारी दास’ ही लिखा है । यह ग्रंथ परिष्कृत सप्रहालय में सुरक्षित है । सप्रहालय में इसका स्क्रिप्ट संख्या—५१ (७) है । यह ग्रंथ घरकवा (शाहाबाद) दरिया मठ के महोदय साधु चतुर दास के सौजन्य से—डा० धर्मोन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सङ्गीत हुआ ।

[६२] (ख) ग्यान रतन—ग्रंथकार—सत कवि दरिया साहब । लिपिकार—लालवारी दास का पुत्र । अवस्था—अच्छी, हाथ का बना प्राचीन मोग मण्डल कागज । पृष्ठ-सं०—१०६ । प्र पृ ५० लगभग—१७ । आकार—६ × ६½' । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचना काल—५ । लिपिकाल—मन्त्र सन भावन सुदी पुनवार ।

नारम— सतनाम—

सत पुख साह
व सुक्रीत नाम सत गूर जो
ग जात दरीया साहब गर्थ
भाखल ग्यान रतन सुकित क
नाता हम उकारन बदी छोर

॥ नमो ॥

ग्यान रतन मनि मगल बीमल सुवा नीजु नाम
करा बीबेक बीचारा न जाए अमर पुर धाम ।

मध्य— कहे सीव सुनु बचन भवानी माआ गर्व उत्तपात
नाम म भगत ना दास राम का भर्मा रसातल जाल ॥

अन्त— सौरठा सतनाम—

जवा तरनी जलमाह नाम बीमल जग बीदीत है ।
समुमि पकरीत्रै बाह भव नाही सुन जहास एह ॥

विषय— जान भक्ति, सगुण, निर्गुण आदि का सविस्तार वर्णन सच्चे प
में राम कथा आदि ॥

टिप्पणी— यह ग्रंथ आयापात सुवाच्य है । लिपि स्पष्ट है । लिपिकाल का उल्लेख अपूर्ण है । समत सन लिखन क बाद तत्पश्चात्

अक्षर या अक्षर कुत्र भी लिखित नहीं है । यह ग्रंथ परिपद्-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी स्कंध-संख्या ५१ (ख) है । यह ग्रंथ धरकवा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महंथ गधु चतुरीदास के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[६२] (ग) ब्रह्म विवेक—ग्रंथकार—नन कवि दरिया साहब । लिपिकार—लालधारी दास ।
 अवस्था—अच्छी, हाथ का बना प्राचीन मोटा मट्टण कागज ।
 पृष्ठ-सं०—३३ । प्र० पृ० पं० लगभग—१७ । आकार—
 ६"—६ $\frac{१}{४}$ " । मापा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
 लिपिकाल—X ।

प्रारंभ— सत्तनाम—
 वेवाहा साहब सुकरीत
 दरीआ साहब गरथ ब्रह्म
 बीवेक भाखल . साखी ॥
 ब्रह्म बीवेक ग्यान एह लोता सुमती सुवार
 ग्यानी समुझी बीर्वा ही उर्त ही भ्वो जन्पारपार ॥

मध्य— तीनी लोक कै ठाडुर . भुली प्ररा भ्वो ग्यान
 जे मोहनी सुर ब्र (नर) सुनी उड वौ लोन परी यह धान ।

अन्त— ब्रह्म बीवेक ग्यान यह . पटे सुने चीत लाए
 सुक्ती पदारथ पावए . नया रहे सुख पाए ॥

विषय— सत्पुरुष के नख-स्वरूप का वर्णन । विवेक-बुद्धि की आवश्यकता ।
 पाखंडादि-खंडन । सहज-योग-प्रतिपादन ॥

टिप्पणी— ग्रंथ सुन्दर अवस्था में है । लिपि स्पष्ट और अच्छी है । लिपिकाल
 का उल्लेख सम्भवतः नहीं है । यह ग्रंथ परिपद्-संग्रहालय में
 सुरक्षित है । संग्रहालय में इसकी स्कंध-संख्या—५१ (ग) है ।
 यह ग्रंथ धरकवा (शाहाबाद) दरिया-मठ के महंथ साधु चतुरीदास
 के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा संगृहीत हुआ ।

[६३] ज्ञानरत्न—ग्रंथकार—पंत कवि दरिया साहब । लिपिकार—प्रताप फकीर । अवस्था—
 नवीन यत्र-निर्मित (फुलस्केप) कागज । पृष्ठ-सं०—११७ । प्र० पृ०
 पं० लगभग—३४ । आकार—८" X १३ $\frac{१}{४}$ " । मापा—हिन्दी । लिपि—
 नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—संवत् १८ ३४ साल, फाल्गुन
 कृष्ण पक्ष, सोमवार ।

प्रारंभ—शतनाम

प्रथम ग्यान रतन मानल
दरीमा शाहब शत गुर शुकी
त हरा उबारन मुक्कति के
दाता नाम नीराल बनी छार
दीन दकाल शान शामथ क ॥

॥ शमा ॥

ग्यान रतन मनी मगल बीमल गुषा नीतु नाम
करो धावेक बीचारी कै जाए अमरपुर धाम ॥१॥

मध्य—बने मभीसन राम पहः तनी शकल परीवार
बहुरी भवन में आइक देखन लक दुआर ॥

अंत—गुर रो मम जनी राखतु मीली राद नीतु शार
शुकीत बचन बीनारीसा उतरी बहु भवपार ॥

विषय—इगुण निगुण भक्ति-प्रतिपादन, गानोपदेश, तथा सत्त्व में राम
रूप-पर्यटन ॥

टिप्पणी—प्रथम को स्थिति अच्छी है। कागज नवीन (फुलरूप) है। निवि
रूप एव आधुनिक है। निविज्ञान रूप नहीं ज्ञात होता क्योंकि
कागज की नवीनता और सम्बन्ध की प्राचीनता दोनों अलग-अलग हैं। यह
प्रथम परिपक्व-संप्रदान में सुराज्य है। संप्रदान में इसकी रचना
गुण्य २२ (ग) है। यह प्रथम धरणा (शाहाबाद) दरिया मठ
क महारथ गुरु चतुरा दास क गौत्रय स डा० धर्मेश्वर प्रजापति शास्त्री
द्वारा संप्रदान हुआ।

[६८] प्रथम विषय—प्रथम—संत कवि दरिया महारथ। निविज्ञान—दिलराम दास। साधु
अवस्था—गुरु, हाथ का बना प्राचीन भाग कागज। पृष्ठ-२-१७।
प्र० पृ० प सगमग-८। आकार—४ १/२" × ३ १/२" मापा—विहृत
रूपकृत। निवि—नागरी। रचनाकाल—४। निविज्ञान—शैव सुरी,
पंचम शुकवार।

प्रारंभ—प्रथम गुरुद्वारा नाम निविज्ञान भाष्य
के की मति शाहब शत गुरु नाम गत
गुरु अंग जिन दरिया शाहब भाष्य
गुरु प्रथम प्रथम अंग गुरु इस लक
कान प्रथम निविज्ञान गुरु गुरुद्वारा
अर्थन उपयुक्त न काल ॥१॥

मध्य— दीण दयाल दा आलशच, पमि पदरज मगायक्रम्
कारा कर्म मर्थे नाम च ईमि प्रभृता बल जाशितम् ॥

अन्त— पूर्व मन्द च भेद भेदो स्वेत ब्रह्म मरुपराम्
दरिया भाष्य तत्तुमारं ज्ञाण ब्रह्म निरूपणम् ॥

विषय— द्वैताद्वैतवाद, निगुण-मगुण ब्रह्मनिर्णय, विहगम-योग और पीपिलिक-
योग-वर्णन, नदगुण-कीर्तन तथा हिंसा और पातगुण बहिष्कार आदि ।

टिप्पणी—प्रथ सुन्दर अवस्था में है । लिपि अस्पष्ट है । मापा (विकृत)
संस्कृत है । हस्तलिखित प्रति हाल की है, परन्तु पोथी पुरानी है, क्योंकि
१६१० ई० में बुकानन ने डमका उत्खनन किया है । कुछ लोग इसे
कोकिल माहव की भी रचना मानते हैं । यह ग्रंथ परिपद्-
नप्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय में डमकी स्कव-संख्या—
५३ है । यह ग्रंथ वरकन्वा (शाहाबाद) के दरिया-मठ के महंथ
सातु चतुरीदाम के सौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा
संगृहीत हुआ ।

[६५] (क) ग्यान दीपक—ग्रंथकार—नत कवि दरिया माहव । लिपिकार—लोकुराज दाम ।
अवस्था—सुन्दर, हाथ का बना प्राचीन मोटा कागज । पृष्ठ-
सं०—१८८ । प्र० पृ० ५० लगभग—१७ । आकार—
४ $\frac{१}{४}$ " × ६ $\frac{१}{४}$ " । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× ।
लिपिकाल—सम्भवत् १६१३ वि० सन् १२६३ माल, चैत्र वदी
वृष्ण-पक्ष, नवमी, एतवार ।

प्रारम्भ— नतनाम
प्रथ ग्यान दीपक
भाखल दरीआ माहव हम
उवारन सुकृति के दाता दीन देयाल
॥ साखि ॥

प्रेम जुगूति नीजु सुल है ॥ गुर गमी करो सुधार
दशा दीपक जवही वरे ॥ दर्सन नाम अधार ॥

मध्य— छप लोक मे ममरेहउ ॥ सदा पुर्ख कए पान
तीनि लोक जम लुट्टीआ ॥ कोइनी मरी सके नाही दास ॥

अन्त— हीरा मनी नीजु दास है ॥ सभ दासन्ही को दास
सतगुर से परचै भइ ॥ ब्रीगमा प्रेम परनाम ॥

विषय— मृगुह और सत की कृष्णा । निर्गुण तथा त्रिगुण ज्ञान द्वारा मुक्ति । अमरपुर का वर्णन । पाषण्डों का उपहास ।

टिप्पणा— प्रथ की अवस्था अच्छी है । विषय का प्रतिपादन बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है । पाषण्डों का उपहास, आम निरोध, अहिंसा और इस्वर भक्ति आदि विषय पठनीय हैं । लिपि सुवाच्य है । यह प्रथ परिपद-महालय में सुरचित है । सप्रहालय में इसकी स्वर्ण-संख्या—५४ (७) है । यह प्रथ धरकंधा (शाहाबाद) स्थित तारिया-मठ के महथ साधु चतुरीण्य से डा० धर्मेश्वर ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सुगहीत हुआ है ।

[६५] (ग) भक्ति हेतु—प्रथकार—सत कवि त्रिया साहब । लिपिकार—हीरादास, लालराज दास । अवस्था—अच्छी, प्राचीन, हाथ का बना माया कागज । पृष्ठ-सं—६६ । प्र० पृ० ५० लगभग—१५ । आकार—४२ × ६५ । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—५१ । लिपिकाल—मार्च १९१० वि० माघ सुदी प्रतिपद् बुधवार ।

प्रारम्भ— “सतनाम ।
शान मुक्ति साहब प्रथ भागत हेतु भाग्य
ल दरीआ साहब मुक्ति क
दाता अगम ग्यान ॥ साखी ॥
ग्यान भक्ति नीतुरार है गुना मधन बीतलाए
धीनित भक्ति धीग्यान एह प्रथ अनुप देखाए ।”

मध्य— “अधीगती रूप ऊपार है काबरन तहीआय ॥
सन राख पहचानहिं नाइ बसही नीतुरगाव ॥”

अन्त— ‘सुतनाम गलिपाए कथा बहुत बीस्तार है
मनहि करो बाजार मस सकल बीसारी के ॥

विषय— अनेक उपाहरणों द्वारा ज्ञान भक्ति-विवेचन मृगुह-स्तुति और साधु अगाध वर्णन ।

टिप्पणा— प्रथ सुवाच्य है । कागज निकाल है । लिपि स्पष्ट एवं सुन्दर है । लिपिकार का यह अलण्ड का प्रकार के अक्षर लिखित है । यह प्रथ परिपद-महालय में सुरचित है । सप्रहालय में इसकी

‡ प्रथ के अन्त में प्रथका प्रथ सतुरज अमरगार तीयन भाग्य लिखा गया है ।

स्कंध-नर्या-५८ (ट) है । यह ग्रंथ वरकथा (शाहाबाद)-स्थित दरिया-मठ के महथ मायु चतुरीदाम के मौजन्य से डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा नगृहीत हुआ ।

[६५] (ग) ब्रह्म-विवेक—ग्रंथकार—मत्तकावि दरिया साठव । लिपिकार—लोकराजदाम फकीर । अथस्था—प्राचीन, हाथ का बना मोटा कागज । पृ० सं०—६७ उ० १०८ । प्र० पृ० ५० लगभग—१६ । आकार—४ $\frac{1}{2}$ " × ६ $\frac{1}{2}$ " । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—संवत् १६१३ वि०, मिति (२) पूज, चैत्र—शुक्ल, सोमवार ।

प्रारम्भ— "मत्तनाम ।

ग्रंथ ब्रह्म विवेक भारतल
दरिया साहब सुदूत के दाता
हंम उवारन ॥ मिति १ ॥

ब्रह्म विवेक ग्यान एह ॥ गीता सुमती सुवार
ग्यानी नमुष्मी श्रीचा रही ॥ उत्तरही भव जरा पार ॥"

मध्य— "मत्त के रत्न पटचीके ॥ नीत्रा मत्तपे तेही जानी
जय लागी राम पलट्टी टम आबही ॥ नीत्रा बचन लहुमानी ॥"

अन्त— "ब्रह्म विवेक ग्यान एह पटे मुनए चीतलाए
सुकृती पदारथ पाड है मत्त रहे मुनपाए ॥"

विषय— मत्तुनय-साहाय्य-वर्गन, पानगट-नगडन तथा महज-योग-प्रति-
पादन ।

टिप्पणी— ग्रंथ मुख्यस्थित है । लिपि स्पष्ट है । इस ग्रंथ की पृष्ठ-
नर्या पहले ग्रंथ ने सम्बद्ध है । शैली सुंदर है । यह ग्रंथ परिपद-संग्रहालय में सुरक्षित है । संग्रहालय
में इसकी स्कन्ध-नर्या—५४ (घ) है । यह वरकथा (शाहा-
बाद)-स्थित दरिया-मठ के महथ मायु चतुरीदाम के मौजन्य से
डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा नगृहीत हुआ ।

[६५] (घ) प्रेममूल—ग्रंथकार—मत्त कवि दरिया साहब । लिपिकार—लोकराज दाम
फकीर । अथस्था—प्राचीन हाथ का बना सुंदर मोटा कागज ।
पृ०-संख्या—१०६ में १२५ । प्र० पृ० ५० लगभग—१६ ।
आकार—४ $\frac{1}{2}$ " × ६ $\frac{1}{2}$ " । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी ।
रचनाकाल—X । लिपिकाल—संवत् १६१३ वि०, कृष्णपक्ष
नवमी, मंगलवार ।

प्रारंभ— 'मत्तनाम ।

सत मन्त्रित साहज

प्रथ प्रेम मुला भाव्यल

दरीआ साहब मुकुति क ७

ता हस उवारन ॥ सापि १

प्रेम कमल जल भीतरे ॥ प्रेम भर्म स वाम

हान प्रात मपुट चुले ॥ भान तेज परकास ॥”

मध्य— “कहें त्राया मतगुर खाआ ॥ सत सब्द ही करा बिचार

अवगुर समता जगत मे ॥ नीरमल भीला न सार ॥”

अंत— “भीया भवन बीच भमिन है रहे पीआ के पाम

मन उगम नाही चाहाए चर्न कमल की आस ॥”

टिप्पणा— प्रथ क कुछ पान पठ चुके हैं । लिपि स्पष्ट है । प्रथ के अंतिम

भाग के कुछ पृष्ठों को टीमकों न चाट लिया है । प्रथ में लिपिकार

न अपना पता नहीं दिया है । लिपिकाल में नाम-नाम निर्देश

सम्भवत नहीं है । यह प्रथ परिपद्-सप्रहालय में सुरक्षित है ।

सप्रहालय में इसकी स्वध-मग्या—५४ (ग) है । यह प्रथ धरकधा

(शाहावा) स्थित दरिया-मठ के महध साधु चतुरीदाम के मौजय

से डा० धर्म द ब्रह्मचारी शास्त्री द्वारा सङ्गीत हुआ ।

[६६] रामचरितमानम *—प्रथकार—तुलसीदास । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन,
देशी कागज । पृष्ठ-सं०—२३ । प्र पृ० ५० लगभग—
१६ । आकार—^८ ८ X १ । भाषा—हिंदी । लिपि—
नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—
‘चैरामअतासहीत चैकपीममुप्रीव
प्रनदीकहरीनाकरी भालुमाहावलमीव
चापाइ

धगगेककराचतुदीमधेरी सुखहीनीसानवजावहीभेरी

भऐउकोलाहलनप्रमकारा मुनउमाननअतीदकारी

देखहुवानरकेचत्रीठाइ बीहसीनीसाचरमैनवालाइ

अमकहाअस्त्रहाम मवकीहापवैठअहासीपीदीहा’

मध्य—(प्र स ४) “मुनिदवस्थरीमाननवतेइकी हमनहीवीचार

”

अंत—
‘नाकवानरातेहीजीअचारी पीराकोधमनभइगलानी
महनभामपुनावीतुसु तोनासा नेखतकपीदलउपजीनामा”

* मम सख्या ६० से १०० तक के प्रथ चौबे संग्रह [बैंगरी मोनिहारी (चपारन)
निसाली प गणेश चौबे द्वारा सङ्गीत और प्रदत्त] के हैं ।

विषय— रामचन्द्र जीवन-गाथा । गोस्वामी तुलसीदास के प्रसिद्ध ग्रंथ रामचरितमानस के लकाकाण्ड का खण्डित भाग ।

टिप्पणी— प्रकाशित अन्य प्रतियों से पाठान्तर । प्रकाशित प्रति के उनचालीमवें दोहे से छियामठवें दोहे के पूर्व की चौपाई तक । ग्रंथ की लिपि पुरानी है । प्रारंभ और पुष्पिका भाग के खंडित होने के कारण न तो लिपिकार का पता चलता है और न लिपिकाल का ही । यह ग्रंथ ५० गणेश चौबे, प्रा० बंगरी, मोनिहारी (चंपारन) के सौजन्य से प्राप्त ।

[६७] श्रीमद्भगवद्गीता—हिंदी-रूपांतरकार—भुवाल । लिपिकार—X । अवस्था— प्राचीन, देशी-कागज । पृष्ठ सं०—४४ । प्र० पृ० ५० लगभग— ८० । आकार—५ $\frac{1}{2}$ " X ६" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

दोहा

प्रारंभ— “आरजुन सो प्रभुभाखा गीता ग्यान अपार ।
जन भुआल के स्वामी करहु मोर उवार ॥

चौपाड

वीतरासकगजैशोफहृ व्रमछेत्र कुरुछेत्रजे अहट
ममसुतपोजैरनाहा उस समजुधी करे ...”

मध्य—(पृ० ५०-२२) “मोरीभगतीकुरुआरजुन दुरलभमीनार
ओरदेवतहीपुजैसोनहीउतरेपार”

अन्त— “गीतामहजोकहा वीचारी मोडभाखाप्रीस्त...
शुनतकाथाचीतभैउ अनदा गीताशुनत गऐस

दोहा

हरीजनगोकरोवीनती दोमनलावहु मोही
जन भुआलके स्वामी शावीधी से वार्तोही
उंतीश्री.भागवतगीता सुपनेख अमनुती ब्रम्हवीधि आजोम्य
क्रीसनआरजुन शंवाटेमन्यामिजोगवरनो नाम
आठाहभो अश्याए ॥१८॥”

विषय— प्रसिद्ध मस्कृत-गीता का दोहे-चौपाडयों में हिंदी-रूपांतर । कृष्ण और अर्जुन का संवाद ।

टिप्पणी— कवि भुवालस्वामी गोज में नये मिले हैं । नागरी-प्रचारिणी-मभा (काशी) को खोज में यह ग्रंथ मिला है, जिसमें लिपिकाल ५० १७६ वि० है । दे०-खो०-वि० '१६०६—१६११—प्र० ५०—१३२ । ग्रंथकार ने प्रारंभ या अंत में अपने मवध में स्वान, काल तथा रचना आदि का कोई भी संकेत नहीं किया है । दोहे-चौपाडयों में रूपांतरित यह ग्रंथ भाषा, रचना

तथा वर्णन की दृष्टि से सपहणीय है। प्रारंभ का प्रथम पृष्ठ जीणता के कारण अवाच्य है। लिपि-शैली पुरानी बंधी से मिलती-जुलती नागरी है। यह ग्रंथ ५० श्री गणेश चौबे के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

[६८] भक्त-त्रिवेक—ग्रंथकार—X। लिपिकार—X। अवस्था—जीण शीर्ष पुराना, देशी-कागज। पृष्ठ सं०—६४। प्र० पृ० ५ लगभग—२८। आकार—७^१/_४ X ६। भाषा-हिन्दी। लिपि नागरी। रचना काल—X। लिपिकाल—X।

प्रारंभ— “नामप्रतापतेभरेनधीरा नामभीभीखनरहापस्चारि
नामप्रतापतभऐयधीकारि भीलनीशवरी मलादनिखाना
नामप्रतापत कीवाप्रसादा”

मध्य—(पृ० सं० ४६) चौपाई। “कहेनारदशुनुकाशीपराइ भेखप्रतापकहीम गाइ
जनीमाहीकेकरमवकारा भेन्वप्रतापतातिकेतारा
हाशीहेतुवह कीहभुआरा”

अंत— ‘तेहीतेवानुमकलगवसारा भुत्कहृतजानहीसवका’
अस्तुतिनीदादुइसमहोइ गुरुमुखहातमननाकीने
भजन सुधानीरपीने”

विषय— रामनाम-महिमा-वर्णन और ‘गुरुमुख’ विरोधता प्रतिपादन।

टिप्पणी— ग्रंथ का प्रारंभ और अंत अर्द्धित है। ग्रंथकार और लिपिकार का नामो-नेल ग्रंथ के मध्य में नहीं हुआ है। ग्रंथ की यत्र-तत्र अवाच्यता का कारण ग्रंथ की जीणता है। दाहे चौपाइयों में लिखित यह ग्रंथ भक्तों की गाथा तथा भक्तिविशिष्ट-घातक कथाओं के उदाहरणों से भक्ति के महत्त्व को पुष्ट करता है। नागरी प्रचारिणा सभा (काशी) के स्नान-विवरण से अनुसार इस ग्रंथ के रचयिता बांधीदास हैं। उक्त सभा की खोज में उपलब्ध दो पाण्डु-लिपियों का लिपिकाल क्रमशः १६३ वि० और १६३ वि० है। सरभग साधुओं में भी एक बांधीदास दो लुके हैं, किंतु वे उनसे भिन्न प्रतीत होते हैं। द-खो-वि— १६०६ ३१ ६० ग्रंथ-संख्या ५५ आर ५५ (बी)।

ग्रंथ की लिपि पुरानी है। गणेश चौबे, बैंगरी, मोनिहारी (चपारन) के सौजन्य से चौबे-सग्रह के लिए यह ग्रंथ प्राप्त हुआ।

[६९] ज्ञानसंगो— ग्रंथकार—श्री चरनदास। लिपिकार—X। अवस्था—प्राचीन, मोग, देशी कागज। पृ० सं०—३२। प्र० पृ० ५० लगभग—१६।

भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—
फाल्गुन कृष्ण १२ । मवन्—१८७७ वि० ।

प्रारंभ—

“रामजी

श्रीगनंसाए नम. ।

सुखदेवजी नहाए ॥ ग्रंथ ग्यान सरोटै ॥ श्री चरनदाम क्रीत ॥

दोहा ॥

नमोनमो सुखदेवजी ॥ प्रनमो कुरु अनंत
तु प्रसाद नचर भेट को ॥ चरनदाम वरनत ॥

परमोतीम पर आतमा ॥ पुरन वीस्वो वीम
आदो पुरम अवीचल तंही ॥ ताही नवावो लीप ॥

कुंडलिया ॥

छरट्ट मो कहत है । अछर मो टंग जान
नीह अछर स्वामा रहीत ॥ ताही कोमन आन
नाही को मन आनी ॥ राता वीन सुरती लगावो
आप आप वीचारी ॥ औरन मीस नवावो ॥”

मध्य—(पृ० सं०-१६)

“हानी होई बहरै नही, आवन की नही आस
दहीने चलत न चलीऐ, दहीन पछीम जानी ।
जारे जाऐ बटरे नहीं तहाँ कहु आवै नाही
दहीने स्वर मह जाइऐ पुर्व उत्तर मत जी”

अन्त—

“प्रीथी के प्रगास मे जुधी करै जो कोऐ
टोउ दल रहे वरावरी हारी वाऐ मो होऐ
अग्नी मत के बहतही जुधकरन मती जाव
हारी होऐ जीते नही थोर आव तन धाव ॥”

विषय—

मत-साहित्य । कबीर-दर्शन से मिलती-जुलती भावना । नाद,
विन्दु, इडा, चक्र, अनाहतनाद, शब्द, वैन, पहिया, काल और
निकाम आदि का विवेचन । निगुण-विचारधारा की मीमासा
में श्रौत-प्रोत । देखिए—

“निराकार बलीकतु देही जानी अकार ।

आप न देही मानते ऐही तन तन् प्रसार ॥

देह मेरे तु अमर अविनासी त्रीवान ।

देह नही तु ब्रभ है व्यापो मकल जहान ॥”

योग की स्वर प्रक्रिया और गमनागमन से सम्बन्धित र्वास
के फलाफल का दिग्दर्शन । विभिन्न दिशाओं की यात्रा में दक्षिण,
वाम एवं मध्य र्वास की प्रक्रिया एवं आरोहावरोह के परिवर्तन
की विधि और उसका प्रभाव । पाप, पुण्य, सद्गति, सत्पुरुष,
नाम और परमलाभ आदि का पुन-पुन-प्रयोग और मोक्षधाम तथा
निर्वाण की विशिष्ट व्याख्या ।

टिप्पणी-- इस ग्रथ के प्रथम चरणान्त है। जैसा कि पुस्तक के नाम से ज्ञात होता है सम्पूर्ण पुस्तक स्वरप्रक्रिया-विधि का अवबोधन करती है। भाषा सरल है। हस्तलिखित प्रति अव्यवस्थित है। गद्यांश इण्डियन और चांपाईय तान प्रकार के हैं। इस पुस्तक में मिलने हैं। कबीर के समान 'अनह', 'मूढन आदि पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'ब्रह्म शब्द का प्रयोग ब्रह्म के अर्थ में किया गया है। स्वरप्रक्रिया का ब्रह्म प्राप्ति (निर्वाण) का माध्यम बताया गया है। देखा—

'आसन पदुम लगाइके ऐक ब्रह्म नीत साच ।

बैठ लेग डालत स्वास ही अवर राच ॥

ग्रथकार चरणान्ती संप्रदाय के प्रवर्तक और प्रसिद्ध संत थे। नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) का स्वाज विवरणिका के अनुसार इनका पहला नाम रणनीत था मुखदेव के शिष्य 'हरा (अलवर रावस्थान) निवासी जानि के धूसर बनियाँ, सहजोबाइ नाम की एक आ इनकी शिष्या थी। जन्मकाल स० १७०० वि० और मृत्युकाल स० १८३८ वि०। इनके अनेक अठारह ग्रथ स्वाज में नागरी प्रचारिणी-सभा का मिले हैं। देखिए—
स्वाज विवरण १६०५, प्र० स०—१७ १८ १९ १९ ६—८
प्र० स०—१४७ १६०६—११, प्र० स०—४५ १६१७—१६,
प्र० स०—३७ १६२०—२२, प्र० स०—२६ १६२३—२५
प्र० स०—७४ १६२६—२८ प्र० स०—७८, १६२६—११,
प्र० स०—८५ १६३०—३४, प्र० स०—३८। ग्रथकार ने स्वयम् एक ग्रथ में लिखा है—'चरनदास हित मूँ कियो ग्रथ अनक प्रकार। अष्टादस और चारका कालि लियो तत्तार ॥' यह ग्रथ प श्री गणेश चौबे ग्राम बगरी, जिला चंपारन के सांजन्य से प्राप्त।

०] स्वासागु जार—प्रथकार—X। लिपिकार—X। अवस्था—अच्छी प्राचीन देशी कागज, आदि संहित और मध्य का एक पृष्ठ भी। पृष्ठ-सं०—८०। प्र० पृ० प० लगभग—३४। आकार—५ $\frac{1}{2}$ ' X ७ $\frac{1}{2}$ '। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—X।

प्रारम्भ—'कामक्रोधममीतानपगानी ॥ अतकालमनजुगकरभेएड ।

चारीउजुगपरलैतरगएड ॥

ममौ

ऐकजुगकेवीतचारीजुगभेएनासा ॥ ऐकनादवारीजुगभाएनतजुगकी'हप्रास''

मध्य—(पृ० सं० १५५)

चौपद। 'ऐहीवीवीगहैसबदकाभासा नीमुवासरहमताकंपामा ॥

श्रुतीश्रुतीररनीरुहसुग करनीकीऐभीलैगुरुपुजा ॥”

अन्त— “जीभ्याकहौतो जगतरे ॥ प्रगटकहोनजाणे ॥ गुपतप्रवानदेतहौ ॥
राखीसीमबदाणे ॥ हंमातुमतीठरपी ॥ कालकौरुहसोपरती ॥
श्रमरलोकपहुचाहौ ॥ चलीहवभवजलजीती ॥ ऐतोगरंथस्त्रानागु
उदरेकमारसंपुरन ॥ जोपरतीदेखादेन्वासोलीवाममदोखनदीश्रतेपटीन
जनसोनीनतीमोरीट्टलअध्वरलेवसमजोरीसुभमस्तु”

विषय— श्वान के विचारों का वर्णन, गुरुपूजा का महत्त्व और मोक्ष-प्राप्ति के साधन का प्रतिपादन ।

टिप्पणी— यह ग्रंथ संस्कृत है । प्रारम्भ के ११८ पृष्ठों का अभाव । ग्रंथ के केवल मात्र श्रवशिष्ट ८० पृष्ठों के कलेवर ने ही सन्त-साहित्य के उत्तम-विचारों का प्रस्फुरण होता है । अन्त में ग्रंथकार, लिपिकार श्रववा ग्रंथ-रचनाकाल या लिपिकाल का संकेताभाव है । नागरी-प्रचारिणी-मभा (काशी) को कथोरकृत म्वासुगुंजार की प्रति खोज में प्राप्त हुई है । टं०—खो० वि०—१६०६-११; प्रथ-सं०—१४३ ख० । ग्रंथ की लिपि-शैली प्राचीन है । कहीं अक्षरों से मिलती-जुलती लिपि है । यह ग्रंथ देगरी (मोतिहारी)-निवानी ५० गणेश चौबे के मौजन्य से ‘चौबे-संग्रह’ के लिए प्राप्त हुआ ।

[७१] लक्ष्मी-चरित्र—ग्रंथकार—X । लिपिकार—मोहनलाल । अथवा—प्रचीन, हाथ का बना देशी-कागज । पृ० सं०—८१ प्र० पृ० ५० लगभग—२८ । आकार—६' X ५ $\frac{1}{2}$ " । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—१२७० साल (सं० १६१६ वि०, १८६३ ई०) ।

प्रारम्भ— “श्रीषोथीलछीमीचरीत्र ॥ चौपाड
जटामैपुरवीतमसैसाचीतयमैश्राऐचरनतुम्हमाची
जुगजुगमोहीचरनतुम्हआमातबहीदखजीपुख्यहीश्राना
लछीमीकारनराखेडनाउदाआकरहुरहोतुम्हठाड
मैथीरजनीतुम्हठाडुरमोरीवरनरुमलसेवकरजोरी”

मध्य—(पृ० ५०-५) “बोलैलछीमीप्रानपीश्रारी
कहहीचरनसोअश्रीत नारीमैतुमत्रीश्रामदाभगवामी”

अन्त— “... नगुन कजु न करीहै प्रगानी
वनवोहलछीमीकेमहीमाजनमीदेगुससार
दुखसुख लीखा वीधाता सोकोड मेटेपार
इतीश्रीलछीमीचरीग्रंथपुरनजोटेसामोलीखाममहोसनडीअते
पैहीतजनसेचीनतीमोरीट्टलआखरलेवसबजोरी”

पार्थदुखीतसरदारलीखनीहारमाहनतालबसोबासमौजे
दुमखानापालासरेआ ता० १ जेठ शन् १७७० शाल”

विषय— अवतरण और विष्णु का आत्मनिवेदन—समुद्र मथन से लक्ष्मी का जन्म-चर्चा । लक्ष्मी का पुलकित होना । लक्ष्मी का विष्णु से उक्ति । विभिन्न निधियाँ में लक्ष्मी-पूजन का महत्त्व बरण और नारी-सम्मान तथा पूजा की विशेष चर्चा ।

टिप्पणी— यह प्रथम खान में नवोपलब्ध है । प्रथकार का नामास्त्रलेख नहीं है । प्रथम समवत अथकाशित है । भाषा में यत्र-तत्र भाग्यपुर के भी शब्दों का प्रयोग हुआ है । प्रथम की लिपि पुरानी है । यह प्रथम श्री गणेश चौबे जी के दिग्गत पिता श्री प० भरथरी चौबे जी क द्वारा सहेदीत हुआ था । परिपद् महानयस्य चौबे सप्रह के लिए प्राप्त ।

७७] विहारी सतसह—प्रथकार—विहार लाल । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, देशी—कागज जीर्ण शीर्ण । पृ० सं०—१६ । प्र० पृ० ५० लगभग—४८ । आकार—८^१/_४ X २^१/_४ । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ— “श्रीगणेशाय नम ॥
मेराभववाधाहराराधनागरिसाद
आननकामाईपरतस्यामहरितयुतिहाइ १
नि'कदइश्रनाकनीकीकीपरीगाहरितरामते
तारगुविन्दवारकवारणतान
जमकरिसु हरिपरयौदहृषनहरिचितलाइ
विषै त्रेपापरिहरिभग्यौनरहरिकेगुनगाइ ३”

मध्य—(पृ० सं० १२)

“प्यासेदुपहरजेठकेरहेमतीरनसोधि
मरुचरपाइमतीरहीनाककहतपयाधि ॥६१४॥
बुसहदुरात्रप्रजानिकां क्यौनवन्दुखदंद ॥
अधिकअधरेजगकरतमिलिमावसरविचद ॥६१५॥”

अन्त— “इहीआसअन्क्यौरहेअतिगुनावकेमूल
देहेकेरिसततितुरनिहारनिवेदुल ॥६१८॥”

विषय— ५ गार-रस क दहों में ५ गार-रस-बर्तने ।

टिप्पणी— हिन्दी के प्रसिद्ध कवि, ग्वालियर राज्य के निवासी सं० १७३० वि० के लगभग वर्तमान, जयपुर नरेश जयसिंह मिर्जा के आश्रित महाकवि विहारीलाल (दास) की प्रसिद्ध रचना की संश्लिष्ट प्रति । पृ० सं०-३, ४, ७, ८, ९, १५-२२ नहीं है । पृ० सं०-२८ के बाद ग्रंथ खंडित है । ग्रंथ की लिपि पुरानी है । मध्य के पृष्ठ कीटाणुविद्ध है । यह ग्रंथ 'चौबे-संग्रह' के लिए ५० गणेश चौबे, बंगरी (मोतिहारी-चंपारन) से प्राप्त हुआ । श्री चौबेजी को उक्त संग्रहालय के लिए यह ग्रंथ सतवरिया (चंपारन)-निवासी श्री जीतन चौबे तथा उपेन्द्रनाथ मिश्र के सहयोग से मिला था ।

[७३] विज्ञान-गीता—प्रथकार—केशवदास । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना—देशी-कागज, जीर्ण-शीर्ण श्रीर संश्लिष्ट । पृष्ठ-सं०—५२ । प्र० पृ० ५० लगभग—३४ । आकार—८^१/_४ X ६" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—“दोहरा ॥ धीरसिंघत्रिपकीभुंजा । जयपिकेशवतूल
एकसाहिकौसूलसीएकसाहिकौभूल ॥२०॥

कवित्तु ॥ लूटिवेकेनातैपुरपदनुतौलूटीयतुतोरिवेकेनातैगडतोरिडारीयतुहै ॥
घालिवेकेनातैगर्वघालियतिराजनिकेजारिवेकेनातैअरिउरजारीयतुहै ॥
राजाधीरसिंघजूकेराजगुनीतीयतुहारिवेकेनातैअनजन्मुहारीयतुहै ॥
बाधिवेकेनातैतालबाधियतिकेसौराडमारिवे-
केनातैतौदरिद्भारीयतुहै ॥२१॥”

मध्य—(पृ० सं०-२६)

“कुसलप्रनसववृम्भिकैतववृम्भीनृपनाथ ॥
कश्यापतश्रवासकलकहौआपुनीगाथ ॥”

अन्त—

“किधौवत्सवत्सलजानियै ॥
अघनिधुअस्तकरयौअगस्तिसदाप्रसस्तिवपानियै ॥
मनमारकंडुविहीनहौमुनिमारकंडुपमानियै ॥”
(इसके आगे के पृष्ठ कीटाणुविद्ध होने के कारण अस्पष्ट है ।)

विषय— विज्ञान-गीता का पद्य में वर्णन । विभिन्न ऋतुओं पर रचना ।

टिप्पणी— श्रोरछा के सुप्रसिद्ध कवि केशवदास (मिश्र) के अन्य कई ग्रंथ खोज में मिले हैं । काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा की खोज-विवरणिकाओं में इनकी उपलब्ध पाण्डुलिपियों की चर्चा हुई है ।

यह पाण्डुलिपि आदि और अत में खण्डित होने के कारण लिपि काल का अवबोध नहीं कराती है । लिपि पुरानी प्रतीत होती है । आदि के ० पृष्ठ नहीं हैं । मध्य के भी कई पृष्ठ खंडित हैं । यह ग्रंथ 'चौबे-संग्रह' के लिए ५० गणेश चौबे (बेगरी चपारन) न सतवरिया (चपारन) निवासी श्री जीतन चौबे और श्री उपेन्द्रनाथ मिश्र के सहयोग से प्राप्त किया ।

[७४] रामचरितमानस—(बालकांड) प्रयकार—तुलसीदास । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन हाथ का बना, देशी कागज । पृष्ठ-४०—२६० । प्र० पृ० ५० लगभग—१४ । आकार—८" X ४^१/_२ । भाषा—हिन्दी (अवधी) । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ— प्रभुमुसकानाचरीत बहुतवीधीकी-हबहै ॥
कहीकयानुनाइमातुपूम्हाइजेहीप्रकारमूतप्रेमलदै ॥
मातापूनीबोलीसीमतीनेलीतजहृतातएइरूपा ॥
कीजैसीमूलीलाकृतीप्री असीला ॥”

मध्य— (पृ० सं० १०७)
साप्रभु जानहु अतरजामी । परब्रह्ममोर मनोरथस्वामी ॥
सकलदीवीहाऐमागुनीपमोही । ॥”

अंत— “वीस्ववीजैजमुजानकी पाई । आऐमवन व्याही सब भाई ॥
सकलमानुख करम तुम्हारे । केशलकौसीक क्रीप तुम्हारे ॥
जहीदीनगएउदुम्हैवीनुदेने । तेवीरंचीजनुपारहीनेखे ॥
दादा ॥ की-हसौ जयसहजमुची । सरीतापुनीत नेहाऐ ॥”

विषय— गो० तुलसीदास-विरचित रामचरितमानस का बालकांड ।

टिप्पणी— ग्रंथ की लिपि पुरानी है । प्रचलित रामायण से पाठभेद है । प्रथम संक्षिप्त है । 'चौबे-संग्रह' के लिए ५० गणेश चौबे (बेगरी-चपारन) द्वारा सृष्टीत और प्रदत्त ।

[७५] रामचरित मानस—(उत्तरकांड) प्रयकार—तुलसीदास । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज खंडित । पृ० सं०—२० । प्र० पृ० ५० लगभग—४२ । आकार—८^१/_२" X ४^३/_४" । भाषा—हिन्दी (अवधी) । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ— 'महीर्मन्तमन्नाचर श्रीत । साकेचचाप निरागवर ।”

मध्य—(पृ० सं० २५)

दोहा

“श्रीसीप्रसंगवीहंपथतीकीन्हकाकमौजाए ।
सोसबसाटरकहीहै । सुनहुउमाचीतलाए ॥”

अन्त—

“नमोभुतीमोटीप्रमासनी..... ।
सश्रुनीकलंक लोलनी.....॥”

विषय—

रामचरित-मानस का उत्तरकाठ (खंडित)

टिप्पणी—

इस खंडित ग्रंथ की लिपि-शैली पुरानी है । प्रचलित प्रतियों से पाठभेद है । ‘चौबे-मंत्रह’ के लिए बैंगरी (चंपारन)-निवासी श्री गणेश चौबे द्वारा प्रदत्त ।

[७६] सूर्यकथा—

ग्रंथकार—X । लिपिकार X । अवस्था—हाथ का बना देशी कागज, जीर्ण-शीर्षा और खंडित । पृ० सं०—२५ । प्र० पृ० पं० लगभग—२६ । आकार—५" X ६ $\frac{1}{2}$ " । भाषा-हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—

“तेजप्रतापहै आगीनी समाना । तुम आदीतपरमेस्वर स्वामी
अलंखरंजनीजनअंतरजामी । वरनीनजोई आदीतकै लीला
धरमधुरधर परम सुनीला
जोतीकलाचहुवोरवीराजै । जगमगकानन्हकुंठलछाजै
नीलचरनछ वीतुरगसवारी । ग्यान नीधानधरमप्रत धारी
जासुकधामै कहौनखानी । सोपुरुष है आगीनी समानी
महिमा आदीत अगम अपारा । तीनीभुअनमै जोतीउजीधारा

दोहा ॥ आदीतकथा पुनीत है गावही संभु सुजान ॥

तीनीभुअनछवीजोतीहै करो प्रताप बखान ॥”

मध्य—(पृ० सं०-१२)

“नीसीसमनप्रसकल अंध्यारा । उगहीनभानुनहीजोतीउजीधारा
तहाभासकलजुगकरहोई । तबसोपापमलीछ न सोई ॥
ऐहीवीधीरुवहीउगहीनभाना । मैतोहीवचनकहौ परीमाना ॥”

अन्त—

“अबसुनुऐहअस्थानन्हकहई । पाठजोगपुजाकह गहई ॥
वीधुधनदीवासरसुतीरा । वासी मंदीर उत्तीमनीरा ॥”

विषय—

पद्मपुराणातर्गत सूर्य भगवान् की कथा, माहात्म्य और व्रत-फल का वर्णन आदि ।

टिप्पणी—

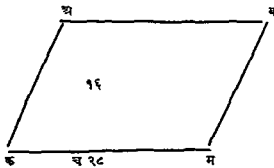
ग्रंथ का आदि और अंत खंडित है । नागरी-प्रचारिणी सभा के खोज-विवरण के अनुसार रामायण के रचयिता तुलसीदास से भिन्न तुलसीदाम की यह रचना है । उक्त खोज

विवरणिका में इस प्रथ के प्रथकार का रचनाकाल स० १८७० वि० (सन् १७१३ ई०) है । उक्त विवरण में दिये गये उद्धरणों से प्रस्तुत प्रथ के दाहे-चौपाइयों से तुलना करन पर कई पाठ भेद भी हैं । दे०—काशी-नागरी प्रचारिणी सभा का खो० वि० १२७६-२८ ई० प्र० स०—४८५ ए०, बी०, सी०, डी०, ई०, एफ् जी०, एच्, और आइ० । अब तक अप्रकाशित यह प्रथ खडित है । 'चौबे समूह' के लिए श्री गणेश चौबे (बैंगरी चपारन) द्वारा संगृहीत और प्रदत्त । यह प्रथ चौबे जी को अपने स्वर्गीय पिता (स्व भरथरी चौबे) से प्राप्त हुआ था, जिसे चौबे जी के पितामह (स्व० भगत चौबे) ने सकलित किया था ।

[७७] क्षेत्रमिति और पहेलियाँ—प्रथकार—X । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन हाथ का बना देशी कागज, बीर्छ शीर्ण और खण्टित । पृष्ठ-स०—५८ । प्र पृ० प लगभग—१२ । आकार—८" X ५' । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ—

“अर्थ विषमकोण और आज्ञात्यायत चतुरभुज के मापने के यह काम दाहे की किसी एक कोण से लंब करके लंब भुमी से गुण कर देने से क्षेत्रफल मालुम होता है जैसा (अ क म ब) क्षेत्र का (अ) कोण से (अ च) (१६) है और (क म) (२८) है तो क्षेत्रफल बताओ ।



$$\left. \begin{aligned} २८ + १६ &= १४४८ - ४०० = १०४८ \\ २४८ + २० &= १२५ \end{aligned} \right\} १॥२॥३ \text{ यही उत्तर हुआ}$$

(विषम चतुर भुज)

(दोहा) (६)

दोहे भुजा एकत्रररी श्रम ० कनीताही

(४) गुनहु युगल तम फल मिलै विषमचतुरभुज आदि ”

मध्य— (पृ० सं० २६) “(श्रंटाकृति के माप) श्रंटाकृति का क्षेत्र निकालने कायदा । (दोहा) (३०)

(१) “युगल व्यास के द्योत कर पुनि श्रुति नर वसु सुसात
रह दशमलने गुनन करी फल नु श्रंटाहोद जान”

अन्न— “घंटा के शुड (ऋ) घदी के मुद (ग) है जबघटा के शुड
(१) घटा चलता है तब मीन्ट १० घटा चलता है इसके
मालुम होता है के जब घटा के शुड १ घंटा चनेगा तो मीन्ट
१० बजा ।”

विषय— “ज्यामिनि-नागिर-रुवंगी दोहे-चौपाइयों में रचना और श्रम
तथा उदाहरण-सहित विवेचन । त्रिविध प्रामीण मंत्रों तथा
पहेलियों से युक्त ।

टिप्पणी— ग्रंथ संदित है । लिपि-जैली प्राचीन है । ग्रंथ संभवत
अप्रमशित है । ग्रंथ-संकलयिता पं० गणेश चौधे के अनुनार
उसमें सकलिन पहेलियों गुनरो की हैं और बिहारी के दोहे
मी । ‘चौधे-संग्रह’ के लिए बैंगरी (चंपारन)—निवासी
पं० गणेश चौधे ने सुंशी धनुषवारी लाल के संग्रह से उनके
कर्मचारी के सहयोग से प्राप्त किया ।

[७८] सिद्धांत पटल— ग्रंथकार—रामानंद (गुह) । लिपिकार—X । अवस्था—
प्राचीन, हाथ का बना-देगी कागज । पृ०-सं०—२५ । प्र० पृ०
पं० लगभग-१२ । आकार—६" X ४" । भाषा-हिन्दी ।
लिपि-नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ— “श्रीमंतरामानुजायनम श्रय सिद्धांतपटल प्रारंभ श्रौं श्रव जाले
श्रीरामानंद श्रवधूत शेली सिगीजंघजंघोटा . . . वडीद
छोटा एटाचमरश्रडानीदिडीश्रल . . . श्रचराटो
विरलाहोई कानकीकुं चशिसकेसनकादिक
मायेकासुकुटसिदुरकीश्रीश्रंगुरीकीश्रंगुठी हाथ का कडाजहा ” ”

मध्य—(पृ० सं०-१२) “श्रौप्रथमजगतहेतप्रगटेसनकादिकाकाहासे आयेकोनफुर
. वरग नसुश्रा . . . श्री गुरुशिषसुनीफुरगयेद्वरवासा
अपिश्वराये शोत्नकिलकडीसुरतिकामंडाररत्नाकर जानकी माता
इतियुगलभंडारविजमंत्र”

अत— अथमभुतिपलनमत्र
सेतसमुद्रतेतश्मदीरचोत्रधवद्धायाउल्लत भमुतीपलटतकाया
कोसिधनकाजोगसादी कपाया ललटेपलटे खडेराग श्रीगुर-
रामानदनी कहेवचासाचाचोग इति श्रीगुररामानदजीवीरचित
दिघातपटलसम्पुखम्'

विषय— 'गुररामनाथ के सिद्धांत । गुररामानंदनी रचमात्रा, गुररामा
नदजी का अमूपणबीजमत्र, अष्टीमत्र सनकादिकमत्र कूचीमत्र,
निर्जनमत्र, सिंदुरमत्र, यज्ञापवीतविधि, कानपरचदावनमत्र,
यज्ञापवीतसुद्धमत्र, ब्रह्मतारकमत्र, भर्तरीमत्र कामधेनुर्भद्र
बुल्हाचेतावनमत्र, सुयलभडारबीजमत्र, तिलकमत्र, भागवती
मत्र भणारमत्र धूनीमत्र, और पंचधूनीमत्र, पर आधारित
रचना ।

टिप्पणी— गुररामानंद विरचित यह ग्रंथ खोज में नया है । अथ खोज
विवरणों में इस ग्रंथ की चर्चा नहीं है । नागरी प्रचारिणी सभा
(कारी) के खान विवरण में 'सिद्धांत' नाम ग्रंथ का उल्लेख
मात्र हुआ है । द०—खो० वि —१९२६-२८ पृ० स -
७८३ । यह ग्रंथ 'चौबे-सग्रह' के लिए बैंगरी (चपारन)—
निवासी प० गणेश चावे स प्राप्त हुआ ।

[७६] कोकसार—ग्रंथकार—आनंद कवि । लिपिकार—रामलाचन । अवस्था—
अष्टी आदि-खंडित । पृ -सख्या—४२ । प्र० पृ० ६० लगभग—
१९ । आकार—६' X ६" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी ।
रचनाकाल—X । लिपिकाल—११ भाद्र, १२७० साल, सषत्
१८८३ वि० ।

प्रारम्भ— 'मदनाकुशनेशाचहत तोमुखहानसरीर काकसारभूमीउचरत
दोहा नहिनिशाकोरतीरुचीनाह पीयवीलसतजोताहि
भामीनीमूर्तीतनहोइकजु प्रीयासकनतवप्राहि
जाजनजानैकोकपदी करहामुजतनवीचार
अतिमुखन्पीनैरमनीको वृमुखमाननारि ।
अनरचितियपूर्वहिमीने कहेकाकयहमारि
जैसेराजीनीवका आखीमूदीपीवजाय १०॥
इतिआकवीआन दक तेकोकारभावापारतिभेदप्रित्तीयखड समाप्तम् ११'

मध्य—(पृ सं २१) दोहा

'सुरतीसमयसुखमन्त्रावे सुरतीकरैजोकाय
सुरतीसमयहारैनही सुरतीअरुकीतहाय : ६'

अन्त— “अथपदमीनीग्रामन चौपाइ .
 आसनजानीपरस्परनाम . ताकोकरतपुरुखओवाम
 पंचदसग्रामनरहेतेपुछवैकरावेकोकहै :

दोहा

मुनलरसीकजनस्रवनेधनी . कोकमारसुखनास
 चहैतचतुरमूनैचहैररतमुठअतिहाम
 इतीथीकोकसारकथास्मात्प्रतीजोदेखासोलीग्राममदोखनदीअवेसजन-
 जनसोवीनतीभोरीदुटलआखरपरहवजोरीलीखीरामलोचनजी . . ’

विषय— पुरुषों तथा स्त्रियों के भेद और उनके लक्षण, दिनानुसार शरीर के विभिन्न स्थानों में काम-निवास वर्णन, चुम्बन-श्रालिंगनादि-वर्णन, विभिन्न आसनों-सहित बन्ध्यावदोष-परिहारोपाय और विविध श्रोतवियों से अनेकविध उपचार-प्रक्रियाओं का निर्देश । पद्मिनी, चित्रिणी, शशिनी, हस्तिनी आदि स्त्रियों के लक्षण तथा ग्रामनों का वर्णन ।

टिप्पणी— ग्रथ के आठि दस पृष्ठ लखित हैं । कवि ने अपना परिचय नहीं दिया है । अध्याय-समाप्ति तथा ग्रथ-समाप्ति में ‘आनन्दकृते’ ऐसा लिखा है । ग्रंथ में कोकशास्त्र सम्बन्धी-विषयों का दोहे-चौपाइयों तथा अन्य विविध छन्दों में सविस्तर उल्लेख हुआ है । रचना हृद्य और पठनीय है । ग्रथ-अप्रकाशित है । कवि और कवि-कृतियों नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में मिली हैं । इनकी अन्य ‘कोकविलास’, ‘कोकमंजरी’ और ‘आसनमजरी’ नाम रचना उक्त सभा के अन्वेषकों ने प्राप्त की है । इनका रचनाकाल सोलहवीं शती का मध्य माना गया है । टं०—छो० वि०—१६०२, प्र० सं०—५; १६०६-८, प्र० सं०—१२६, १६१७-१६१९, प्र० सं०—७, १६२०-१६२२, प्र० सं०—६ ए०, बी०, १६२३—२५, प्र० सं०—१३, ए०, बी०, सी०, डी०, ई०, एफ्०, जी०, एच्०, आई० और जे०; १६२६-२८, प्र० सं०—१० ए०, बी०, सी०, डी०, ई०, एफ्०, जी०, एच्०, आई०, जे०, के०; १६२७-३१, प्र० सं०—११ ए०, बी०, सी०, डी०, ई०, एफ्०, जी०, एच्० ।

कवि की कृतियों जो खोज में मिली हैं और जिनका खोज-विवरणों में उल्लेख हुआ है; उनका रचनाकाल और लिपिकाल अधोलिखित-क्रम से है—

स्थानांश	लिपिकाल	श्लोक विवरण की प्र० सं०
१—काकसार (३८ प्रतियों)	१७३६ ई०, १७४८ ई०, १७६५ ई०, १७८१, १८४६, १८५३ ० १८८४ १६०१ ई ।	१६०, ५, १६०, ८, आर १६१७ १६, ६७ १६२३ २८, १३ डी, ६०, जी, एच्०, आइ, ज० ।
२—काकमजरी (१ प्रतियों)	१८१७, १८३५, १८६६, १८७५, १८६८, १६०१, १८२८ ई० ।	१६०३१ २८, १० मी, डी०, ६, एफ्०, जी, एच्, आइ० जे ।
३—कोकबिलास (१ प्रति)	१७३६ ई० १७६६, १८०६ ई० १७५३, १८६६ ई०	१६०० २२, ६ ए । १६२६ २८, १० ए०, बी० १६२६ ३१, ११ बी, सी० ।
४—आसन-मजरीसार (१ प्रति)	१७७१ ई०	१६०६ २८, १० के, १६०६ ३१ ११ एच् ।

उपर्युक्त विवरणों से प्रतीत होता है कि कोकसार के मथकार का रचनाकाल सोलहवीं शती का मध्य या सत्रहवां शती का प्रारम्भ रहा है। 'मिश्र-धु-विनोद' में मथकार का रचनाकाल १७११ ई० दिया गया है, किन्तु इसके किसी स्पष्ट प्रमाण का उल्लेख 'विनाद' में नहीं किया गया है। 'काकमार' की अबतक उपलब्ध प्रतियों का लिपिकाल १७३४ ई० से १६१६ ई० तक है। इस मथ का लिपिकाल है १८८३ वि (१८०६ ई०) मथ की लिपि शैली पुरानी है। प्रारम्भ भाग खरित है और अन्त में कुछ अर्थ दाहे लिखे गये हैं। मथ प्रकाशित है। यह मथ 'चौबे-सग्रह कं मथ दाता श्री गणेश चौबे (बैंगरी मोतिहारी, चपारन) को माण्डमर (बडुराज, मांतीपुर, जि—मुजफ्फरपुर)—निवासी श्री रामदयाल शोभा से मिला।

[८०] वीजक— ग्रंथकार—कवीरदास । लिपिकार—X । अवस्था—अच्छी, हाथ का वना कागज । पृ० सं०—१५८ । प्र० पृ० पं० लगभग—१६ । आकार— ६" X ३½" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल १२१२ साल (१६५१ वि०, १८०५ ई०) ।

प्रारम्भ—“दया गुरुकिलीष्यतेवीचारप्रथमाअनसारपदरमैनी
अंतरजोतीसहृदयक नारी ॥ हरी ब्रह्माताके त्रीपुरारी ॥
तेतीरीयाभगलिंगअनन्ता ॥ ते उनजानेउवादीअवंता ॥
वापरीयकविधातेकीन्हा ॥ बौटाठहरपाठसो लीन्हा ॥
हरिहरब्रह्मामहंतोनाउ ॥ तीनपुनीतीनवसावलगाउ ॥”

मध्य—(पृ० सं०—७६) “संतोजागतनीदनाकीजे ॥
कालनापाऐकल्पनहीवीआपेदेहजरानाहीछीजे ॥
नुलीटांगसमुद्रहिंसोपेसिस्रौसुरगरासे ॥
नौगृहमारीरौंगीआत्रऐठेजलमहंवेसुप्रगासे ॥”

अन्त—“हींदुतुरुककीवृटोवारा ॥
नारीपुरुपकीमीलिकरदुवीचारा ॥
कहिऐकाहिकाहानहीमाना ॥ दासकवीरनोइयेजाना ॥
वाहाहैवहिजानु हैकरगहेंचहुँवोरजौँकाहानाहीमानेतौ
देधकायकवौर ॥१ अतिवप्रमतीसीसपूर्ण”

विषय—कवीर के निर्गुण-दर्शन का प्रसिद्ध ग्रंथ ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ कवीरपंथ का प्रसिद्ध दार्शनिक ग्रंथ है । ग्रंथ की लिपि पुरानी है । ‘चौबे-संग्रह’ के लिए पं० गणेश चौबे से प्राप्त हुआ । चौबेजी ने पं० मथुरा चौबे द्वारा मठगोपाल के एक कवीरपंथी साधु से प्राप्त किया था ।

[८१] छप्पयराभायण—ग्रंथकार—तुलसीदास । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, हाथ का वना, मोटा देशी-कागज । आदि और अंत खंडित । पृष्ठ सं०—१२ । प्र० पृ० पं० लगभग—१७ । आकार— ६" X ४" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ—“अस्तुतिकरतकपोतनाथप्रनतारनहारी ॥
सोप्रभुवेरिगिदया लहोजोकपोतसरनअपना ॥
कीपाकरिअे श्रीराचचंद्रममहरिअे सोक संतापनो ३”

मध्य—(पृ० सं० ६) “चीत्रकूटवसि अमितकोल भीलन्हकितपावन ॥
रहेतहासुनिवृंदसकलभएसोकनसावन ॥

प्रमुहिमनावनमरतभापतशोचनमनमाही ॥
 पुरवाशीलीशेर्षगजा, पहुँचेप्रमु पाही ॥
 मीनेभरतअस्नातकरतसरनरापहुप्रभु आपना ॥
 किराकरिअेप्रीरामचद्रममहरिअेसोऊईतापना ॥१५२॥

अन्त— 'बीरदहननतपतश्रापुन्तिगपनिनेना ॥
 अवविलव जनिकरुगाआकहिआरतबैना ॥
 सकमुअननृगहेमजानुप्रभुवानप्रतापा ॥
 जानुकवधअवकानिकहामैसासरचापा ॥

विषय— गरुवामी तुलसीदासद्वारा रचित छप्पय छंद में रामायण का वर्णन ।

टिप्पणी—यह प्रथम प्रकाशित है और प्रसिद्ध भी । इसकी अनेक पाण्डुलिपियाँ विभिन्न अनुसंधान संस्थानों में सुरक्षित हैं । 'चौबे-सप्तह' के लिए ५० गणेश चौबे न साग (चपारन) निवासी ५० श्री भागवत ओमा से प्राप्त किया ।

[८८] विष्णु पुराण—प्रथकार—X । लिपिकार—रमनदास अवस्था—अच्छी, देरी कागज । पृ सं०—३० । प्र पृ ५० लगभग—२० । आकार—६½' X ४ । भाषा—हिंदी नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—१२ सावन ११३१ साल ।

प्रारंभ— ' सतगुम्फीनाआसलीपतेवासुनपुरान
 श्रीरामजी साहाए ॥ श्रीगनीजी सागाए ॥
 श्रीभावानी जी महाए ॥ श्रीसक्तादेवजी साहाए ॥
 श्रीपाथारीमुनपुरानलीपने ।

चौपाइ

कैम्ननुगयेतागरेड । कैठेध्याप्रकलनुगभएड ॥
 कैठे योचम अवनारा । कैठे गात्रिरे सकल पसारा ॥
 कैठेपानापवन अनुजारा । कैठे कलनुगलीह पैसारा ॥१॥

मध्य— (पृ० सं० १६)

मुनहराछनहरीक रनुगाइ ॥ कवनचरीत्रकीह रनुगाइ ॥
 नपधारीकाकीम्ननबासा ॥ दानपुचयसादासुपबासा ॥१॥

अन्त— "ईददवम्पबलही अगुअना ॥ इहपापाकैह यप्राना ॥
 राजाकइहीममईम उनागेइ ॥ अपनहच पालहुसोइ ॥
 तबजोगीस'सकैपारा ॥ स्वैहचप्रनायसुवारा ॥
 पदुचनहीजाहकाएड ॥ स्वैहचमैमुन भगेड ॥

॥ दोहा ॥

दोषनाभऐउजोगीका ॥... रजाए ॥

देहअभैत्रमागु ॥ जै जै जादोराए ॥”

“इतीश्रीहरीचरीत्रेवीस्नपुरानेजोगीटस्ननामत्रनो टमोमो श्रयाए
१० इतीश्रीवीमनुपुरान स्मपुरन जा देखा म्मदोपनादेते
सावसतकेवंदगीडडवत पहुंचेवारं मवाग पडीतजनमोवीनती मोर
दुडल बडल अद्रप्रदृवाजीर ।”

विषय— विष्णु पुराण पर आधारित कृष्ण चरित्र ।

टिप्पणी— दोहे-चौपाइयों में रचित इस ग्रंथ के आठि और अंत में अंश-
कार के नाम, स्थान तथा रचनाकाल का उल्लेख नहीं हुआ है ।
भाषा और कालपक्ष प्रथ का दुर्बल है, किन्तु पुराणातर्गत कथा का
रूपतर अच्छा हुआ है । प्रथ समस्त अप्रकाशित और खोज में
नवोपलब्ध है । लिपि पुरानी है । मूर्वन्य ‘प’ का प्रयोग ‘ख’
के लिए हुआ है । यह ‘चौवे-मंग्रह’ के लिए ५० गणेश चौवे
(प्रा० वेगरी, मोतिहारी, चपारन) को पं० मथुरा चौवे के
गहयोग से मठगोपाल के एक कवीरपंथी नाथु ने प्राप्त हुआ ।

[८३] ज्ञान-सम्बोध—प्रथकार—कवीरदाम । लिपिकार—मथुरा चौवे । अवस्था—अच्छी ।
पृ०-सं०—३८ । प्र० पृ० पं० लगभग—१६ । आकार—
८" x ६ १/२" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल—X ।
लिपिकाल—१ । १९०१ । १६३२ ई० ।

प्रारंभ— “सतनाम गती कवीर जी ।

श्रीसुनीत आठि अदली अजरअचित प्रु ...नाम कवीर सुरती
जोग्यभंताएनवनी वरमदाम... लिकादआते

गाथी ॥

संतसमाजसमधनीनहीं, सुनोमतचिलाए ।
पुरवीलपुन्यश्रमीतहोही तौमतसमाजेनेती
पवित्रेजुगजुगजीवे, जोसतो रं भाए ।
क्रमकोटीत्रीगुनफंदसो...श्रीतपीए अधाए ॥”

मध्य—(पृ० सं०-१६) “॥ मोरठा ॥

मनकैलहरी अपार, झीनमहदे उतपातकरी ।
बीहेबहुजाएगवार । वहरी रहै कोई सुरमा ।
जीमी सपने मह देखिये, लेई कोई शीशवीदारी ।
तीमीमनकौतुक भूठ हैए, करै अनेक पसार ॥’

अत—

“॥ साखी ॥

आक ग्यान विवेक है सा यह ग्यान विचार ।

और सकल जग अघर, बुझै ग्यान विचार ॥

३िथी० ज्ञानसम्पाद्य प्रथ सम्पूर्ण गुणस्तु जो देसना लिखा

मम दाप नहा गीयत । पंडित जनस जनती मोरी । दृष्टल अद्वर

नेव सब जोरी ॥ आ रामचन्द्राय नमः ॥

विषय— रतों की महिमा का वर्णन । सत-साहित्य (कबीर) का प्रथ ।

टिप्पणा—१-प्रसिद्ध सत कवि कबीरदास की यह रचना संभवतः अप्रकाशित है ।

इसका एक प्रात नागरी प्रचारिणी सभा, (काशी) का साज में

मिली है । द०—साज वि० १६ ६ ११, प्र० म —

१४३ । अथ किसी साज विवरण में कचारदास की कृतियों में

इसका नाम नग है ।

२—इसके साथ ही एक ही जिल्द में ‘गान्धीपत्र’ और ‘अनुभव-सागर’

भी क्रमशः १० और १३ पृष्ठों का है । मूल प्रति सं १६३२ इ०

में श्री गणेश चाबे के प्रयास से उपर्युक्त तीनों ग्रंथों की प्रतिलिपि

हुई । ‘अनुभव-सागर’ की मूल प्रतिलिपि का समय म

१८७७ वि है ।

३—प्रथ-लिपिकार न मूल प्रात से इकार, उकार आदि मानाओं का

प्रतिलिपि करने में विषय कर दिया है ।*

४—मूल प्रति बेलवनवा (चपारन) निवासी श्री धनुषधारी लाल के

पास सुराक्षित है ।

प्रथ की लिपि शैली अच्छी है । प्रात अथ प्रतियों से यत्र-तत्र

पाठ-भेद प्रतीत होता है । यह प्रथ ‘चाबे-समूह’ के लिए ५०

गणेश चाबे से प्रात ।

[८४] श्वासागु जार (सहस्रगु जार)—प्रथकार—गणेश चाबे । लिपिकार—गणेश चाबे ।

अवस्था—अच्छी । पृ० सं०—१७ । प्र पृ० ५० लगभग—२१ ।

आकार— $८\frac{1}{2} \times ६\frac{1}{2}$ । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी ।

रचनाकाल—X । लिपिकाल—१६३२ इ० ।

प्रारंभ— ‘सहस्रगु जार ॥ चापा —

सयनाम मुहल गुन गावी । अविचल बाह अग्रे पद पावी ॥

सगै हरित मग सा गाउ । सील रूप समझ के भाउ ॥

करै कालाहल इस उजागर । मोहरहित सम गुग वै सागर ॥

*५० गणेश चाबे (प्र-वर्गी से लिखरी चपारन) की लिखनी लिपि इस प्रथ की प्रतिलिपि में ।

तेहीपुर जुरामरन नाही । मनवेकार इन्दी तेहा नाही ॥
सन्वलीक हसन मुये होई । सो सुख इहा जानने कोई ॥
जाने सो जो उहाकर होई । इहा आएके करै बुझाई ॥”

मव्य—(पृ० सं०-२८)

“करि असनान पुरुष पगु परसै । निरमल जोति अरखडित दरसै ॥
जव फिरि चंड सरोवर आवै । बहुरि जीव सगटि फिरि जावै ॥
आवत जात बार नहीं लावै । पल पल जीव दरस तहाँ पावै ॥
कृष्णपल अमावस जव आवै । तव फिरिजीव नूरघर जावै ॥”

अन्त—

सर्मा

“एक जुग के वीते, चारो जुग भै नास ।
एकनाट चारी जुग खाये, सतजुग कीन्दे ग्राम ॥

चौपाई

किलक कमोद चंड से नेहा । कामत बंकव नूर उरेहा ।”

विषय—

श्वाम के जानने की रीति । कवीर-पंथ की योगनाथना का आन्या-
त्मिक विवेचन ।

टिप्पणी—

कवीरदास का यह ग्रंथ संभवतः अयाववि अप्रकाशित है । नागरी-
प्रचारिणी नमा (काशी) को भी नज्ज में यह ग्रंथ मिला है ।
उक्त खोज में प्राप्त पोथी का लिपिकाल है—१८४६ वि० ।
दे०—स्रो० वि० १६०७-१६११, ग्रं० सं०—१४३ जे० ।
ग्रंथ का नाम ‘श्वामायु जार’ है, किन्तु ‘सहमयु जार’ नाम से भी
यह मिलता है । ‘चौत्रे-सग्रह’ के लिए पं० गणेश चौत्रे (बंगरी,
मोतिहारी, चंपारन) से प्राप्त ।

[८५] भागवतभाषा—ग्रंथकार—कृपाराम । लिपिकार—महेशदास । अवस्था—

प्राचीन, हाथ का बना, देशी कागज । पृष्ठ-सं०—२४४ ।

प्र० पृ० पं० लगभग—१८ । आकार—६ $\frac{1}{2}$ " × ६ $\frac{1}{2}$ " ।

भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपि-
काल—१६५० वि० ।

प्रारंभ—

“॥१॥ श्री गणेशाय नम । श्री राधाकृष्णाय नम । श्री-
पोथी भागवत भाषाकृ० त्पकृपादासजी एकादशशकध पोथी
लीखलवा० महेशदास ।

शोरठा ॥

बन्ध्या श्री रघुरकृपाशैशुशततशुखद

प्रनतपालरणधिरदुखहरनदारिद्रमन

वाहा ॥

हरनमाहृतमन्द्र शव श्री गुम्पदकरीभ्यांन
रामकथावरणौवीमल अषहरनकरनक यान

सारटा ॥

मैमतीमन्मलीनतुररुप कलीमल चक्षा
जानौशनीशैनीनगु दक्षपालपावनकियाँ

मध्य—(पृ० पृ १००)

“श्री मक् देउवाच ॥

अथअध्यायसत्रद्वैमाही भकनीनक्षत्र अर धर्म कहानी
ब्रह्मचर्यअग्नेरुहवाशी तागुपर्मकहीहेशुपरासी”

अत—

‘मुने मुनावै पुनी कहै कृष्ण कथा मुस कन्द
सपत्र भक्ति अनयताहं भीष्टे जगत त्रय त्द
ध्याणयागतपानमन्पुनाअरुवरतनम
मकनसीपितहिहोइकल कृष्णकथावेबेम

इती श्रीभागवतेमाहापुरानेककारुध श्रीगुरुव परिछीन सवादे

/ भाषानीबध कृपारामकृतश्रीकृष्ण वैकूठपञ्चाननाम एकतीममा

अध्या ॥३१॥ मूसम्बत १६५० । शाके १८१५ ।

समयनाम कृष्णसम्यो भामवासरयोधी एकादश स्कध

समात सुपुरनभैनदशापनीवा महेशरत्नाशायु । समैनाम

अपङ्क ता । राजसुत्र क तेश्वर भएल जा देवा सो लीया मम

दापनदीअन । मूस सम्बत १६५० । शाके १८१५ । रन

१२१० साल माजेगीतुआ (बुग्गिआ) तापापगडा प्रगनाममौआ ।

पाधी दशपनीतापनरा महेशरदास साधू दसपत शहि ॥”

विषय—

भागवत क एकादश स्कध का अनुवाद । कृष्ण-कथा पणन ।

टिप्पणा—

इय प्रथ में इरवन्नाकेत का भागाम्य वर्णन हुआ है । कही

कही अमक्त ब्रह्म का निष्पण किया गया है । दन्तिता —

“तीन क तनर भग शन एका ।

ब्रह्म तार भए शहीन विरेका ॥”

भगवद्भक्ति से पूरा उपदेश अपानितित पदों में—

‘हरि वीनु रहित शकत ज करमां

तशबजानहु माणके मरमा

श्री सुर चातु कणा जगदिरा

तहै श्रीव त्रही वीधी करिरा ॥’

उद्भव का ज्ञानापदेश और गोपियों की अनन्य कृष्ण-भक्ति का वर्णन । अपूर्ण पोथी ३१ अध्यायों में विभक्त है । लेखक ने त्रिपयों का वर्गीकरण बड़े सुन्दर ढंग से किया है ।

(क) ईश्वर-गुणानुवाद, (न्य) जाना गारुड का वशुदेव कीर्ति; (ग) कवीनाम प्रथमे योगी ने बोले, (घ) हरी नामा नाम दूसरा जोगी बाने, (ङ) हम श्रौतार कथा, (च) भगवत उद्भव जी, (छ) मंता का हाल बरनन, (ज) उर्वीजी का नदरीकाशरम जाना ।

इसके प्रयत्नर हैं कृष्णराम । यह ग्रथ भागवत के एकादश-स्कंध का अनुवाद है । प्रारंभ मोरठा से हुआ है । सोरठा, दोहा, चौपाई और छंद प्रयुक्त हुए हैं । भागवत की कथा के अतिरिक्त ईश्वर के अव्यक्त स्वरूप का विस्तृत-विवेचन, भागवत के मूल पाठ का स्मरण दिला देता है । उपदेश और कथा-प्रसंग का निर्वाह सुंदर है । भाषा हिंदी के प्राम्भ-शाल की है । नागरी लिपि में कही-कही कैथी का भी प्रयोग हुआ है । पुस्तक मजिन्द है । यह ग्रंथ 'चौबे-अंग्रह' के लिए अंगरी (मोतिहारी-चपारन) निवामी पं० गणेश चौबे द्वारा सशुद्धीत हुआ ।

[८६] रसिक प्रिया— ग्रंथकार—केशवदास । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, देशी-कागज, खटित । पृष्ठ-सं०—६ । प्र० पृ० पं० लगभग—१६ । आकार—८" ८" X ४" ६" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ— श्रीगणेशायनम ॥ षड्वीर्वाचित्वं ॥
 एकरठनगजवदनसदनयुविमटकठनमुत
 गौरिनंदश्रानदंजगवदवदयुत
 सुखदायकदायकमुक्ति गननायकनायक
 खलदायकघायकदलिद्रलायकलायक
 गुरुगुणश्रंतभगवतभवभगवंतभवभयहरण
 जयकेशवदासनिवासनिधिलंबोदरअमरणमरण १
 दोहरा । नदीवेतवैतीरतहतीरयतुं गारनपुरनगरओल्लो
 बहुचस्यो धरनीतलमयवन्यर

मध्य—(पृ० सं० ८) "अथशठलनन दोहरा

सुहमीठीवर्तै कहै निपटकपटजियजानु
 बाहिनडरअपराधकोशठकरिताहिवषानु

अत—“प्रोङ्गाअधीरायथा ॥ पतिकोआत्थपराधगनिहितनरुहनिन्तिमानि
कहनिअधाराप्रान्तेहिकरात्रगम्बपानि ॥”

कावच-हितकैदूतदंभ्यौतुदेभ्यासवैहितुवनमुनोजुमुनीसवही है ।
तौकडुआरवेहै सबदा श्रवसोहकरातुकरीतुनही है
समुमाद्रकहाममुमीसवकरावभ्रसिस्वैहममोजुकहातह ॥

विषय— नायक-नायिका हाव भाव और शृ गार आदि रसों का वर्णन ।

टिप्पणा—क— प्रसिद्ध कवि कश्यपान-कृत रमिकाप्रसा का स्वप्ति पाडुलिपि ।
प्रायेष्टुष्ट पृष्ठ-संग्रहांतररिति । पुष्पका-भाग राहित । इस
(प्रथ की रचना कवि न म० १९८८ वि में की थी । समके
हस्तलेख नागरी प्रचारणा ममा (काशा) का मा स्वा न में
मिले ह । २०—स्वा वि १६० , प्र० म —५० १६०
प्र० स — ५६० • १६०३— प्र० म —८६ १६०८ प्र०
म —१०८ १६० —०५, प्र० म०—००० १६०६ ०८—
प्र० म —०३३ १६० और जी० । मन्लाल पुस्तकालय
(गया) क संग्रहालय में २१ पाडुलिपियों सुरान्त ह ३०—
रि तर राष्ट्रभाषा पारपद् (पटना) उ प्रकाशित प्राचान हस्त
लिखित पापयों का विवरण (दूसरा नद), प्रथ स० ५६
आर ५७ ।

ग—प्रथ की लिपि पुरानी है । ‘चाये-गग्र ह क लिण बैगरी
(भातिहारी, चवारन) निवासा प गणेश चाये क सौजय
स प्रथ ।

[८७] रामलीला—

प्रंकार—हरिदाय । लिपिकार—आश्विनारायण । अवस्था—
प्राचान, हाथ का बना देश कागज । पृ० १०—७ । प्र० पृ०
प लगभग—१० । आकार—१० $\frac{1}{2}$ × ६ । भाषा—हिन्दी ।
लिपि—नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—माघ,
पुसल द्वाशी, राववार स० १००७ ।

शारदा—

श्री गणेशायनम ॥
हरिदायन स्थान पधार १६ रात्रि वऽ अपिआर
परलला विगम तुलै बहुवेनी समनीपुनै
तादागारकरन मनकीदे नन्कोअरकरदिन
तापेकामेनाका मनजागे वृन्दावन भयब भागे

मध्य—(पृ १०१) ‘अररा’हरा’कमारी ॥ जाहा’अ’दुकेरेपुगण ॥
तुगरी’दु’की’ननारी ॥ अबद’नारागहमारी ॥

असकहीके जग नन्दाताला ॥ नभ मोड्टी मीन्दागीगारा ॥
कोडपीतपीतभरपहीरा ॥ जामेतागो मोनीवो हीग ॥”

अन्त—

“लरीकानजीयेजामो भाड ॥ एदगानररेजीवजाड ॥
एहलीला अगमअपारा ॥ भवमागरसे ररेपाग ॥
एहरामकीयोनंदलाला ॥ तामो गाप्रतपुरुपविसाला ॥
एहप्रेममगनहोड गाये ॥ नोटदिव्रपरमपदपार्वे ॥
एहसकृतसेहै भापा व नयोहैहरिध्रीडाना ॥
जाकोह्रुटीगयोभवत्रासा ॥ जाकेकीन्देविहागीके आना ॥
इतिश्रीकृष्णकृतरामलीलानुर्णम् ॥”

विषय—

राधाकृष्ण के विहार का वर्णन ।

टिप्पणी—

प्रथकार हरिदाम नवोपतद्व्य हे । नागरी प्रचारिणी नभा (कागी)
की नोज में राधाकृष्ण के विहार ने सर्वप्रथम 'हरिदाम स्वामी
का बानी' नामक रचना मिली है । किन्तु, ये उनसे भिन्न प्रतीत
होते हैं । टे० नो० वि० १६०५, प्र० न० ६७ और
१६०६—१६११, प्र० सं० १०६ बी० । प्रथ की लिपि-शैली
पुरानी है । यह प्रथ 'चौबे-प्रह' के लिए बनरी (मोतिहारी-
चपारन) निवानी ५० गणेश चौबे ने प्राप्त ।

[८८] समुद्रि (रमल)—प्रथकार—X । लिपिकार—शुकेश्वर शर्मा । अवस्था—अच्छी,
प्राचीन, देशी-कागज । पृष्ठ-सं०—१३ । प्र० पृ० ५०
लगभग—२४ । आकार—८^१/_४” X ५” । भाषा—हिन्दी । लिपि-
नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—पौष, शुक्ल एकादशी,
शनिवार, सं०—१६४२ वि० ।

प्रारंभ—

“पोथी रमल प्रारंभ श्रीगणेशयेनम
११४ येह सगुन आछा है सुलके बीचहै मस्वतिमीले
गाथीत्रसोमीलापहोगा तथा पत्रफूलहोगा तुम्हाकोतीन महीनामो-
आछाहोगा अपनःडप्टगुहःपूजाकरोगेमन कामना सुफलहोगातेरे
छातिआपेटर्पतीलवाहै सोदेपलेना ॥”

मध्य—(पृ० सं०-६) “२४४ ऐहसगुनसुनोधरमकाहैधमर्पतीतरहेगा
सर्वकामतेरासीधहोगातुम्हारकोधकादिनजाताहै
संतोषराखनाऐकत्रादमीतुम्हारासर्वकामवीगारताहै”

अन्त—

“४४४ऐहसगुनकाफलसुनीऐजोकामधीचारतेहोसो
मीधहोगाधनलाभहोगाकडपरत्रिमीलेगा सञ्जुतुमारा आडे-
कआपुपाऐलेपरेगावैपारमोलाभहोगा राजामानकरेगामनमो
बहुतपातिररापनातेरा इद्रीपरतीलहैसोदेखीलेना इति श्री पोथी
समुद्रि समाप्त-संपुरणा सुधवाअसुधवममदोखोनदीश्रतेजोदेपासो

लापामम रोपानगमने समाप्त सर्पुंसा मवत १६४२ साके १८०७
 पौष माघेसुफल पद्य ११ यंकादस्यावारेसनीक्रीतीकानद्वन
 लीपीत्वामुकरवैरसमाह सुभमस्तु ।”

निपय— रमल (ज्यातप्-शामुद्रिक) ।

टिप्पणा— यह प्रथम मात्र में नया है । प्रथकार का नामान्तरित संभवत प्रथ
 में नहीं हुआ है । प्रथ लापकार विहार क चपारल जिलातर्गत
 महेरी ग्रामवासी हैं । देखिए प्रथ पुष्पिका—
 ‘लीपीत्वामुकरवैरसमाह प्रामप्रदीतपैसिरवना
 रुजुमतापगानामहसीम’
 प्रथ की लिपि पुरानी है । यह प्रथ ‘चाचे-सप्रह क लिए थी
 गोरेश चौबे से प्राप्त ।

[८६] रमल — प्रथकार— X । लिपिकार— शुकरवर राम्मा । अवस्था— अच्छी, पुराना
 देही कागज । पृष्ठ स— ११ । प्र पृ प० लगभग— २६ ।
 आकार— ८ १/२ X ५ । भाषा— हिंदी । लिपि— नागरी । रचनाकाल— X ।
 लापेकाल— स १६४१ वि ।

प्रारंभ— “अ अ अ १ मुनो ये साहेब फलबुम्बो जा बुद्ध रिल मे रपेदासीआळा
 होमाअरमाचमतकरानीतहागा ॥१॥
 ॥ अ ज द ॥ मुनोयसाहेबफलकामतुम्हाराआझानहि है
 धाराराजसुबुरकरोत्र देसामतकरा ।”

मध्य— (पृ स० ८) ‘ द अ च ५८ मुनोऐदाहाकामतुम्हाराकनीनहै,
 हलाकीतकरगाजलदिमतकरोरामजीकावचनहै ।’

अंत— “दपत्र ६३ ऐपुद्धनवालामुनाकामतुम्हाराकरनाहाएतवजलदीकरोअछापाहुगे
 द अ प ६४ मुना ऐसाहेबकामशीलमेरखतहैसोडरमतकरानातीरजमा
 रसारेरामजीकधाक है धीरामचन्द्रकेकीतरमूलसमापतसुभ

निपय— पलित जवानप से सम्बन्धित प्रस्तावत क रूप में फनाफल का विचार
 आर सयुक्त वर्णन ।

टिप्पणा— १— यह प्रथ मात्र में नवीन है । प्रथकार का नामान्तरित नहीं हुआ
 है । प्रथ म० ८८ क लिपिकार न ही इस पाण्डुलिपि का प्रस्तुत
 किया है । दोनों प्रथ एक ही जिल्द में सुरक्षित हैं । प्रथ-पुष्पिका में
 लिखा है कि दक्षिण क राजा लखरवर रासण का पराजित करन
 क लिए चौंसठ-चौंसठ परिश्रमों की समा बुलाकर रामचंद्र न इस
 रमन प्ररन का उपपाय किया और रावण का मर किया । २ —
 “रामचंद्रजीसुपुष्पाअ आन्हा क मरकरनक चौंसठ चौंसठदिन
 मरन्तु मंहाजीरपपरन्धीनकरावनक चौंसतरहसरकरनसम ५हीन
 मीन हरेह्मगुजन उतामबनाआजननवानहुपुद्धनहाऐजतनवानके

पुछनेहोएमोडची मे मालुम होगा” । नगुन से सम्बन्धित प्रश्न तथा उनके फल-जान की विधि का उल्लेख—“वारपहलकालके दीपदान गुलकोवनावेपहीले अ लीगोटोमरपर ४ लीमितीमरपर ज लीमि चौवपर ६ लीमितीनवारके . . के देखताजा अ कौन-कौनहरफपरताहेतेकरवीचारकरे पुछनेवाताहोऐवीरत्रमकरेकीरामजी कावचनहै वीस्वामकरोमतमानी इतिश्रीरामचन्द्रकीतग्महल समापत संपु ररगमुभ”—हुश्रा है ।

२-प्रव की लिपि-शैली पुरानी है । ग्रंथ में प्रयुक्त गद्यशैली पुराने कथावाचक परिष्ठतों और ज्योतिर्विदों की भी है । यह ग्रंथ ‘चौबे सग्रह’ के लिए ५० गणेश चौबे के नौजन्य से प्राप्त ।

[६०] नौमाला— प्रवकार धर्मदाम X । लिपिकार—रूपदान । अवस्था—अच्छी । पृ० सं०—२४ । प्र० पृ० ५० लगभग—३६ । आकार—८' X ५' । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ— “मतनाम सतसुक्रीत आठ अदली अजर अचीता पुरुमसुर्निदि करुनामे कवीर सुरतजोगमं नताऐनवनी धमदान पुरामनीनामसुटसननामकुल पतनामप्रमोधगुरुवालाधीरकवलनामअमोलनामसुरतसनेहीनामहकनाम प्रफनामामाहेवपार गुरुवनावालीमकोटाआसोलीखते श्रीप्र यम नोचमाला—

चोपाड ॥

कथारीसालकहौकजुवानी बुकेनोहोऐत्रहग्यानी
ऐह गुरामसतकरी लखो प्रगटेववानतवयेरखो
अनभौआदीकलुकहोवखानीरुनहुमतगुरुगमकीवानी
अनंतकोटजुगअकहमलीगैएड टीकोठजुगअमेगैड”

मध्य—(पृ० सं०—१२)

“ताकरगुरुआनकरी लीन्हा नामरतनवनतीनकहदीन्हा
जवगुरुनाहीममनीकहाऐ भगतीहेतुकहकैसेकेजानी”

अन्त— “ताहाजाऐ अमरपदपावे गुरुकीसच्दहीहै समावे
कोटीनअसुरफीरेजवआइ हीटवीसवासतेजीनहीजाइ
ऐहेतेजाऐजोप्राना सतगोवीदजोममआना
कहहीकवीरऐहसच्दहेला गुरुपुरामेलाहोऐसुना

॥ दोहा

गुरुपुरालीखसुरावागमोररेनपदै
सतसुक्रीतकेचीन्हके असलकथारहजाऐ
ऐतीखीगरंयनौमाला समापत”

विषय— कवीर प्रथ से संबंधित रचना ।

टिप्पणी—मभवत धर्मशास्त्र-रुत यह रचना खाज में नई मिली है । अथ खाज-निवरणिकाओं में यह प्रथ मभवत उल्लिखित नहीं आ है । इसका माष ही अत में दो पृष्ठों 'गुरुअष्टका नामक प्रथ ही उक्त है । यह प्रथ चाये-प्रह के लिए ५० गणेश चावे से प्राप्त हुआ ।

[६१] नाममात्रा—प्रथकार—अवतार मिश्र । लिपिकार—गापाललाल । अक्षर्या—अक्षरी । पृ० स०—२७ (१७५) । प्र० पृ० प० लगभग—३४ । आकार— $८\frac{1}{2} \times ६\frac{1}{2}$ । भाषा हिन्दी । लिपि नागरी । रचनाकाल—१३१६ फमली (१६६४ वि०, १६०८ इ) । लिपिकाल—१६३० इ० ।

प्रारम्भ— “श्री गणेशाय नम । ॥ गणेश ॥१॥ दाहा—
गारीमुन द्वैमातु पुनि, धूमकंतु गणेशाच
मूपक वाग्नि करण, पूर्ण करिय मम काच ॥१॥
गणाधीप गणपति गणय गणनाथक मुगलेश ।
कपिल गजानन गजवन् विघ्नराज विघ्नश ॥२॥
द्वलन हेरम्बावनायको, लम्बोदर इभदत ।
नमो ग्नायक गणकगण अरुणाधिप इकत ॥३॥ ”

मध्य—(पृ स०—१३) “॥ शमन ॥ ६६ ॥ दाहा
मधु माषवी मदिरा ग्ना दाहनी मैरेय ।
सुरा बाहणी बुद्धिहा, कश्य प्रमन्ता जय ॥१॥
आसवमद कादम्बरी, सिन्धु नद जामय ।
गधातमा हनाहली तव अचगुण अनवद्वय ॥२॥ ”

अन्त—

“॥ गवैया ॥

मुन खातत मुखे शरीर गवै रखहु न मिथी नहि आशभगी ।
भगवान कनम इनम करी कभु नाहि लिया हिमसा समगी ॥
जपनाग मुसाधन नहि किया नवाना काचना तव प्रेम पगी ।
भया कात कहा जगजन तिय गरखति लगी न नवनि लगी ॥४ ॥

दाहा ॥

तरह सौ पाइस पण्डित ज्यन्मास मृगुवार ।
गुणपय नवमी तिथि पद का लिया उतार ॥”

विषय— विधान १७५ ग्ना के पद्यान-काय ।

टिप्पणी— चपारन त्रिना (पारंभारिया ग्राम) निवासी श्री अवतार मिश्र 'कान्त' की यह रचना सरल और सुबोध शैली में एक ही पद्यतर शब्दों के

पद्यार्थ के रूप में रची गई है । लिपिकारकी टिप्पणी के अनुसार यह रचना अपूर्ण है । 'चौबे-सग्रह' के लिए पं० गणेश चौबे के सौजन्य से प्राप्त ।

[६२] विरहमासा—अक्षर—परमानन्द । लिपिकार—गणेश चौबे । अवस्था—अच्छी ।
पृ० सं०—१० । प्र० पृ० ५० लगभग—३६ । आकार—६६' × ८६' ।
भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—१८५५ वि०,
१७६८ ई० । लिपिकाल—१६४१ ई० ।

प्रारम्भ— “विरहमासा परमानन्द के
बन्दी श्री गुरु गौरीगनेशायनमः । बन्दी ब्रह्मा विष्णु महेशायनम ॥
बन्दीगुरुपदकञ्जचरनसुरगुरु विमल । जामे पाटप्रेमपदारथ न्यानकल ॥
बन्दी नारदनारटजीशमुनीशमो । बन्दीरीनरीनेमर चन्द्रविनेजय ॥”

मध्य—(पृ० सं०-८) “मान फागुन
फागुन फाग मचावत आयेमृमसे ।
सखि नव हारी गेलहि बहुतहजूमसे ।
बरबरतालमृदंग परवाउजवाजरी ।
खेलहि फागवनाथ हरत मन गावहि ।
कोई सखिताल बजावहि हारी गावहि ।
कोई मखि देउडेउतालमृदंग बजावहि ।
आउर बाजे पावल म्मनमनकारिया ।
अकब चले गज चाल जोवन मतवालिया ॥”

अन्त— ‘मस्त भइ मठ अघर रस रसावहि ।
पीवनतीरछि नैन चितरि चोरावहि ।
मिलि जुनी गले लगाइ पलंग पर सो रही ।
कली सुगंध रस टानी एकमग होगही ।
एक ओर नारी नारी एक ओर होय रहे ।
बरम अकृता गरी गरीहोनी होयसेहोयहै ।
बहुभाति को आशा देखेके काम बडावहि ।
नारी वारि के मत्र अघाररसावहि ।’

विषय— वारहो महीनों पर आधारित शृ गार-रचना ।

टिप्पणी—१—इस ग्रंथ के कवि बिहार के साहाबाद जिलान्तर्गत कोरी ग्राम बानी
हैं । कवि के शब्दों में ही परिचय है—

“हिन्दुस्तान के भूमे में नूबे बिहार है ।

बाये साहाबाद सुजस सरकार है ॥

प्रगने पवारा के कारी में मेरो प्राप्त है ।

वदी परमा न हमारा नाम है ॥’

२-रचनाकाल के मन्वन्त में कवि का संकेत है—

‘सन् अठारह सो पचपन के सवत आइया ।

कहो कान्नी बिरह सो प्रेम पिलाइया ॥

रचना ह्य आर मनोहर है । नमें आइया, पिलाया छाइया, बातिया आर गरिया आद का प्रयोग विवेक है । एक पद देखिये—

‘ चोलत अनमाल पण्डित पाव पीव ।

कहा गये रिदुराइ हमार कत जीव ॥

कत गये परेश सभे सुख लेइ गये ।

छतिअनि बजर केवार जिरा दे गय ॥

ग्रन्थ की भाषा खड़ी बोली के प्रारम्भ-काल की है । समस्त ग्रन्थकार सदा मित्र के समकालीन थे । ग्रन्थ अप्रकारित है और विहार के साहित्यिक इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है । ग्रन्थ सकलियता श्री गणेश चौबे का यह ग्रन्थ श्री तारकेश्वर प्रसाद (मातीहारी, चपारन) के लाकगीतों की कावियों में मिला । इसके साथ ही चपारन जिनके अनेक अज्ञात तथा बेतियाराज से संबंधित कवियों की भी रचनाएँ हैं । दूल्मदान, चितामनि माधवास, हरिदास, माखनलाल, सुन्दर, आनंद (बेतिया के महाराजा) नवलकिशोर (बेतिया के महाराजा) रामनारायण (दामादपुर-गावि-दगज) और नवल प्रमुख कवि हैं, जिनके पद इस सग्रह में हैं । चौबे-सग्रह के लिए ५ गणेश चौबे (बगरी-मोतिहारी चपारन) के सौजन्य से प्राप्त ।

[६३] सूरज पुरान—ग्रन्थकार—X । लिपिकार—अवस्था-प्राचीन हाथ का बना त्रेरी कागज । पृ०-स०—१ । प्र० पृ० ९० लगभग-१७ । आकार—४½ X १० । भाषा हिन्दी । लिपि नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ— “श्रीगणेशानम श्री दोहा
घनाचरनजोरके भग्ती प्रेम लबलीन
महीमा आग अपार है जाहेबागानप्रवीन

चौपाइ

सम्पन्नदेवता गुमीरालाहा गुमीरत बवानबुधाहृमाही
जोतीशम्प आदीतबलवाना तेजप्रतापनुमश्रीनीशमाना

तुमही आदी परमेश्वरवामी अलखनीरंजन अंतरजामी
वरनी न जाइजोतीके लीला धरमदुरंधरपरमसुशीला”

मध्य—(पृ० स०—५) “दोहा

तवमुनीबोलवचनशोहाड वरीपदकमलशुरनगाए
कहेमुनीशशुनुर्पचनहमारे मोशेचुकीभएअतीभारे
एहअपरावछमहुप्रभुमोरी वीनतीनायदुबोकारजोरी
तवप्रभुकहएशुनहुममवानी इहाकेलोगशकलगुनखानी”

अन्त— “धरमकयाचलीहेदीनरातीनेमवरमचलीहेवहुभाती
वीप्रजेवाइ आयुतव खैटि नीशजेनामशुर्ज के गैहे
लछमीघरघरलेहीनेवाशा वरमकयातवहोएप्रगाशा
ओथावचनफोडनाकहीहे धर्मवीचारशुर्जतवकरीहे
द्वादशकलाजोतीलेकरीहे द्वादशकलातेइतवउगीहे
आदीततवहीआके पुरवजन्मके पातख कथाशुनतछएजइ
इति शुर्जपुरानशपुनोनाम. अघो अण्णाय ”

विषय— मूर्त्यकया और व्रत के फल का वर्णन ।

टिप्पणी— ग्रंथ संख्या ७६ की टिप्पणी देखिए ।

ग्रंथ महत्त्वपूर्ण और अप्रकाशित है । ‘चौबे-संग्रह’ के लिए श्रीगणेश-
चौबे (बंगरी, मोतीहारी, चंपारन) के मौजन्य से प्राप्त ।

[६४] हनुमानचालीसा—ग्रंथकार— X । लिपिकार— X । अवस्था—अच्छी, पुराना
कागज । पृ० स०—४ । प्र० पृ० पं० लगभग—१४ ।
आकार—३½" X ५" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी ।
रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ— “श्रीगनेसाग्रनम. ॥ अथ श्रीहनुमानजीकौअस्तोत्रलिख्यते ॥
वालसमैखमछकियौजवतीनौहुलोकभयौअधिआरौ
असीत्रासभईसवकौ अतसंकटकाहुपैजातनाटारौदेवनआइ
करीचिनतीजवछोडिदियौरविकष्टानवारौ
कोनहिजानतहैजगमैयहसंकटमोचननामतुमारो १”

मध्य—(पृ० नं०—२)

“रावनत्रासदशीसियकौ तवरछकसोकहिसोकनीवारौ
तेहीसमैहनूमानमहाप्रभुजाईमहारजनीचरमारौ”

अन्त— “त्रेधसमेततवैमहिरावनलैरछवीरपतालसिधारौ
देवीकौपूजभलीविधिजौवदानभ... ..”

विषय— हनुमान की शक्ति और उनके जीवन से सम्बन्धित स्तोत्र-
साहित्य । प्रसिद्ध जेगीयमान ग्रंथ ।

टिप्पणी— प्रसिद्ध द्रुमानचालीसा की खण्डित पाण्डुलिपि । अन्तिम पृष्ठों के खण्डित होने के कारण लिपिकार तथा लिपिकाल का प्रथम ज्ञान नहीं हुआ है । लिपि-शैली पुरानी है । 'चौबे सप्रह के लिए ५० गणेश चौबे से प्राप्त ।

[६५] बेतियाराज वर्णन—प्रथकार—X । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन । पृष्ठ सं०—४ । प्र पृ ५० लगभग—८ । प्राकार—३' X ५' । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—

दाहा

“गणपतिपदठरराखिके शिवाशीवशिरनाइ ॥
जगनाथरविबदिके खिलतकहौनृपगाइ ॥१॥
श्रवधनगर बरबेतिआ धरधरमगलचार ॥
मूलिरहेपुरकसम लखिनृपखिततमार ॥२॥
विधियतनृपनवलाइके निततितदियेठिकाइ ॥
मानानधवाग्रवनिमे ठवरठवररहछाइ ॥३॥”

मध्य०—(पृ० सं० ३)

“सकलदेशकेलागसभ लखततमाशाआइ ॥
मंगलमयबेतिआमये शोभावरणिननाइ ॥४॥
जुमगलमनलडिजुमधरि वसनअगलियेलाइ ॥
स्वाशसाधिनृपपरचने जुमिरतश्रीगणरा ॥५॥

अंत—

‘धनिधनिनृपकाशहरवर धानधनिधरमनरश ॥
धनिधनिकविकाविदकह धनिधनिदेसविदेस ॥६॥
धनिधनिसमअमत्ताचने नामशकौनद्विगाइ ॥
निमिशुरेशमाराग्ने विद्युधनामनकहाइ ॥७॥’

निषय—

बिहार के अंतर्गत चम्पारण जिले के प्रसिद्ध और अनक कवियों का आश्रयदाता बेतियाराज्य का वर्णन ।

टिप्पणी—

यह ग्रंथ संहित है । यद्यपि आदि और अन्त में प्रथकार का नामानेन नहीं हुआ है, किन्तु प्रथम पंक्ति 'जगन्नाथर विबदिक'—य प्रतीत होता है कि किसी जगन्नाथनामा कवि का यह रचना है । यह ग्रंथ बिहार के साहित्यिक इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है । 'चौबे-सप्रह के लिए ५० गणेश चौबे के सौम्य से प्राप्त ।

[६६] सूर्यमाहात्म्य—प्रथकार—X । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, जीर्ण-शीर्ण मंदिर । पृष्ठ-सं०—३२ । प्र० पृ० ५० लगभग—१४ ।

आकार—५" × ६" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचना-
काल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—

चौपाड ॥

“कहौं कवारविअमृतवानी ॥ मग अस्थिरकरिसुनहुभवानी
कुष्ठवरणहोइजाकेअगा ॥ सुनइमनुजसोमूर्त्यप्रमगा ॥
रविदिनभोजन करे प्रलोना ॥ पुणपुत्रामचढावैदोना ॥
विप्रबोलीरविहोमकरावै ॥ मोडभस्मलैअंगलगावै ॥
निश्चैकुष्ठवरणहोइजाड ॥ वनमहिमाआदित्यगोशाड ॥”

मध्य—(पृ० सं०-१७) चौपाट ॥

“गिरिजाकहैदोउकरजोरे ॥ एरुमदेहअपरमनमोरे ॥
उत्तरदिशिक्कहउगद्विगोशाड ॥ मो मोहिनायकहुहुमसुभाई ॥”

अन्त—

“ज्येष्ठमा,त्रीभावविवाठी ॥ तीनहि अंगुलजलअभ्याठी ॥
सामअमाडवतकोवरई ॥ तीनमिरिचत्रौलम्बनोउरई ॥
सावनमामवरतरत्रिनीका ॥ खादतीनपलहैसत्रहरिका ॥
भादोमानअमितसुसदाई ॥ त्रैअंगुल सुत्रहित्ताई ॥”

विषय—

सूर्य माहात्म्य की कथा और व्रतफल आदि का वर्णन ।

टिप्पणी—

प्रथमरत्या ७६ वी टिप्पणी के समान । इस प्रथ में अन्य
प्रतियों से पाठान्तर है । ‘चौवे-मंग्रह’ के लिए गणेश चौवे के
मौजन्य से प्राप्त ।

[६७] विज्ञान-गीता—प्रथकार—शिवदास । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन,
हाथ का बना देशी कागज । जीर्ण-शीर्ण और राडित ।
पृ० सं०-७० । प्र० पृ० ५० लगभग-३६ । आकार—
६" × ८ १/२" । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—

“॥ रति ॥ नगस्वरुपिणीछंदु ॥
प्रसिद्धपापिकारिणी । अक्षेपवंसहारिणी ॥
विलोकि सम्मिता भई ॥ किधौ असम्मतादई ॥२३॥
करैविनासु जुवैरको ॥ ताकौ नित्यनिवासु ॥
केसवदासप्रकास जग ॥ ज्योजहुवंसविवासु ॥२४॥
कामकहमौ तवकलहसौ ॥ दिल्ली नगरी जाइ ॥
दंभहिवैरुपट्टेसुपुनि ॥ प्रभुकेदेपहुपाइ ॥२५॥

इति श्रीभक्तिविधत्त केवपराविरचितायाचिदानन्दमगताया
विग्यानगीतायाकानरनिकलद्वयवाचवर्ननोनाम द्वितीयोप्रकाश ॥२॥

मध्य—(पृ० प २४) ॥ विचार सचेत ॥
‘कौनहुँ आयाकहा कहि केसबकोअपुनौपरिपूरनकाहे ॥
बंभुअबपुहियेसहिहेरतौजातेतुनेछितिसाधुसु ॥
आयाजहातैहाजागतहीअनचाकिमनाचयकाहुनमोहे ॥
निरयजनिवावचारकरैनिनसाविचारविचारमैशोहे ॥२३॥’

अत— ॥ दाहा ॥
‘भक्तिजोगनभूमिकाइहविषसाधतसाध ॥
धेपारसहारकैयद्विअनत अगाध ॥
(इसके आगे के पृष्ठ नहीं है)

विषय— विग्यान गीता का भाषा-पद्य में वर्णन ।
टिप्पणी— कवि केशवदास की यह प्रसिद्ध रचना सन्धि है । प्रारंभ के एक प्रकार का है ही नहीं, त्तिथय प्रकार के भी बीस पद सन्धि हैं । अत में भी प्रथम सन्धि है । प्रथ की निपि पुरानी और अरुप्य है । अदि और अत सन्धि हान के कारण निपिकार और निपि काल का उल्लेख नहीं हुआ है । यह प्रथ ‘चाबे सप्रह’ क लिए ५ गणरा चाब के साङ्ग से प्राप्त हुआ ।

[६८] रामचन्द्रिका—प्रथकार—रुशयदाउ । निपिकार—X । अवस्था— प्राचीन, हाय का रना, दरी कागज । पृष्ठसं०—१०३ । प्र० पृ ५ रगमग—२२ । आकार—१२”X५” । भाषा—हिन्दी । निपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल— मा० वदी अ० मी, स —१७६३ वि ।

प्रारंभ— ‘धीगणगायनम ॥ धीजणकीचलमाअयत ॥
॥ कविच ॥ वानकमणालनिगवौ तारिदा
उपवी ॥
विश्वरूपतहरिपद्मनिबेपणउमदरगवोपतालरनि
पठवेकनुउरौ ॥
दुरिदेकते —दीशक्तिपरायनहेकेकाग्य
दग्ने वसुधकी ॥

मध्य— (पृ सं २२) ॥ मुपगनात ॥
‘इहे लोडुवकेदनपिजने

वलीवेगुज्याँश्रापुहीङ्गमानै
करैसावनाऐकपरलोकहीकों
हरिश्चन्द्र जैसैगएँदमहीको
दुहँलोककोएरुमावैमयानै ॥
चिदेहीनिज्याँनेदवानीवपानै ॥
नटँ लोकरुदोउहठी ऐक श्रँमै
त्रिमकेहमे ज्यौं भलेड अनेमँ २२”

अन्त— “चचला ॥ असेपपुन्यपापकोकलापश्रापमेवहाई
चिदेहराजजौंसदेहभन्करामको कहाई ॥
लहैसुभुक्तिलोकएहि अन्तसुहि होइताहि ॥
पटैगुनैरुहैसुनैजुरामचन्द्रचक्रिकाहि ॥३६ ॥
इतिप्रीमत्मकललोकलोचनचकोरचितामनि श्रीरामचंद्र चंद्रिकाया-
कुशलवाटिपुत्रानाराज्याभिपेकवनसिद्धादानंनाय एकोनचत्वारिशतम
प्रकाश ॥३६ ॥ इतिकेशवदाम श्रीरामचंद्रकापुस्त ॥ नामाप्त ॥”

विषय— रामायण कथा का तुलसीकालोत्तर शैली में वर्णन ।

टिप्पणी— सं० १६०० ई० के लगभग वर्तमान कवि केशवदाम की यह प्रसिद्ध रचना है । इसके अत्र तरु जितने हस्तलेख प्राप्त हुए हैं, उनमें इसका द्वितीय स्थान है । नागरी-प्रचारिणी सभा, (काशी) को खोज में मिली प्रतियों में प्राचीनतम प्रति का लिपिकाल है सं० १६३१ वि० । मन्मूलाल पुस्तकालय, गया के संग्रह का लिपिकाल है—सं० १८३५ और सं० १६३७ वि० है । इस प्रति का लिपिकाल है—१७६३ वि० सं० ग्रंथ की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है । यह ग्रंथ ‘चौबे-संग्रह’ के लिए पं० गणेश चौबे (दंगरी मोतिहारी, चंपारन) के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

[६६] रामायण (बालकांड)—ग्रंथकार—तुलसीदास । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज । पृ० सं०—२३३ । प्र० पृ० पं० लगभग—१८ । आकार—१३" X ५" । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १६०६ वि० ।

प्रारम्भ—

॥ चौपाई ॥

“शुरुपदरजमृदुमंजुलश्रंजन ॥ नयनजामियदृगदोपविभंजन ॥
तेहिकरीविमलविवेकविलोचन ॥ वरनोरामचरितभवमोचन ॥
वंदोप्रथमहिमूरचरना ॥ मोहजनिंसयसवहरना ॥

सूनसमात्रसकलगुणखानि ॥ करौप्रणामसमे मसुवानि ॥
 साधुचरीतसुमसरीसकपासु ॥ निरमविषदगुनमयफलपासु ॥
 जोसद्विदुपप्रच्छिद्रदूरावा ॥ वयनियनेहिजगत्पावा ॥
 सुदमगलमयसंतसमासु ॥ जोनगत्नगमतिर्धरासु ॥
 रामभक्तिजहाभूरसरीधारा ॥ स्वरमतिरक्षविचारप्रचारा ॥”

मध्य—(पृ० स ११५) ॥ चौपाइ ॥
 “सौमैचरीतकहाअसगाइ ॥ सुनुपगपतीगीरीनामनलाइ ॥
 भासमादमणकहो पानी ॥ पगयतीसुनाप्रे मसुपमानी ॥
 जाहासेसदकृतहापहुचा ॥ करेगदुनीनधामधीपाइ ॥
 जानकेलीपानासमान ॥ नीतीदुछहरधुकुलमनीजाने ॥”

अत—
 ‘निचमीरापापनिकरनिकारणरामनुतुलमीनयो ॥
 रघुविरचरीतअपारवारविपारकविमोविदलछो ॥
 उपवितव्याहउद्धाहमगलमुनिहिजेसादरगाभेहि ॥
 वैदेहि जनमसुपयाबहि ॥
 मुनिगाकहोगीरीसकयाधन्यअधि ॥
 निवाहनेसप्रे मगावहिसुनहि ॥
 निहकहसदाउद्धाह मनस ॥ ३६४ ॥
 इतिश्रीरामचरितमानससकलकलिकलुप
 विज्ञानसपादनोनामप्रथमोसापानरूपेण’

विषय— रामचरितमानस के बालराइ की कथा ।

टिप्पणा— तुलसीदासविरचित रामायण की सं० १६६ वि की पाण्डुलिपि । प्रथ की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है । प्रारंभ के दो पृष्ठ खंडित हैं । यह प्रथ ‘चाबे सग्रह’ के लिए प गणेश चौबे के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

[१००] रसिक प्रिया—प्रथकार—केशवदास । निषिकार—X । अत्रस्था—प्राचीन आय शार्ण । पृष्ठ-३ —२५ । प्र पृ ५० लगभग— २ । आकार—८ १/२ X ४ १/२ । भाषा—हिंदी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । निषिकाल—X ।

प्रारंभ— “देविआगिलागीरूपमाणूकमन्दिरमरे घाईके
 नहानहासोरभायीभारणरानिनिकीसबहीकीदुठिगइलाज
 हायमायके ॥
 ऐसेमेडुअरकाहसारेदआबाहिरैकैरा।धकेजगाइऔर
 जुवतीजगाइके ॥

लोचणविशालचारुचित्रुकलिलारचुम्बिचंद्रेकीसीवाल
लाललीनीउरलाडक ॥”

मध्य—(पृ० सं०-२८) अथउत्तमालक्षणं ॥

“मातुकरैश्रयमानतेतजैमाननेमानु ॥

पिउदेपैमुपपावइताहि उतमाजानु ॥

॥ अथउत्तमा ॥

होतकहाअवकेममुकेममुकेनतवैजवहेममुकाए ॥

एकहिंद्रकविलोकमणिमाहयनेकयमोरुविकैकविनाए ॥”

अन्त— “॥ अथभारतीलक्षणम् ॥

वरनिएयामेवीररसअन्मिगाररसहाम ॥

कहिकेमवमव अथ मो भारतीप्रकास ॥

फाननिकनरुपत्रचक्रचमकतचारुदयकजुभूलीकालरनिश्रितसदाड ॥

कंगवद्ववीलोजुसीमफूलमारथीसोकैसरिकीउरुद्रध

राधिकारवीरनाड ॥

निरेहीनवेसरिकोमोतिनकीनाकएकहिविलोकति

गोपालातोगएविकाइ ॥

लोचनविसासाभालजडितपराइला..... मीननिकरेय

मनमयराय ॥”

विषय—

नायक, नायिका, रम-अनरस, हाव-भाव, शृंगार आदि का मनोरम वर्णन ।

टिप्पणी—

ग्रंथ खंडित, जीर्ण-शीर्ण और अस्त-व्यस्त है । प्रारंभ के पृष्ठ खंडित हैं तथा वर्तमान चार पृष्ठ अत्यन्त जीर्ण होने के कारण अपठनीय हैं । इसीलिए, प्रारंभ की पंक्तियाँ पृष्ठ संख्या—१६ से उल्लिखित हुई हैं । अन्तिम भाग के भी खंडित होने के कारण लिपिकाल का उल्लेख नहीं हुआ है । ग्रंथ की लिपि पुरानी तथा अस्पष्ट है । ‘चौबे-मंग्रह’ के लिए ५० गणेश चौबे (दंगरी-मोतिहारी, चंपारन) के सौजन्य से प्राप्त ।

प्राचीन हस्तलिखित सस्कृत पोथियों का विवरण

[१] मुद्रित चिन्तामणि—प्रथकता, देवज्ञानत मुत श्री देव राम । प्रथ लिपिकार सुसिंहल ।
अवस्था—प्राचीन देशी कागज । पृ० ४६ । प्र० पृ० ५ लगभग १३ । लिपि—नागरी ।
रचनाकाल—स० १५२२ । लेखनकाल— X ।

प्रारंभ— 'श्री गणेशाय नमः ॥ गौरीश्वर केतक पत्र भद्रमाहृष्य हस्तेन ददमुखाप्रे ।
विष्णु मुहूर्ताकृतद्वितीय दन्तप्रराहा हरतु द्विपारय ॥१॥
क्रिया कलाप प्रतिपत्ति हेतु' सच्चिन्म सारार्थ विलास गर्भम् ।
अतन्त देवत मुनस्स रामो मुहूर्त चिन्तामणिमातनोति ॥२॥'

अन्त— गिरीश नगरे बटे मुन मुनेषु च त्रेमि तेशके । विनिरवदिम खनु मुहूर्त चिन्तामणिम् ॥
इति श्री देवनामन्त मुत देव राम विरचित मुहूर्त चिन्तामणी गृहप्रवेश स्समाप्त ॥
समाप्तायम् ।
कार्तिके चाशिते पत्रे धूमाकगजमुद्र गिते विनेखि सुमिहानेन श्री मुहूर्त चिन्तामणि ॥
पाण्डित्युत्रके ॥ '

विषय—ज्योतिष शास्त्र का मूहृतभाषा का, प्रसिद्ध ग्रथ । ग्रथ में सिद्धांत से संबंधित चित्र भी दिये हुए हैं ।

टि०—निर्देशकार क निवासस्थान तथा काल आदि का संकत ग्रथ क आदि अथवा अन्त म
स्पष्ट नहीं है । अन्तरालक का 'धूमाक गजमुके मिते' स्पष्ट नहीं हाता है । यह
ग्रथ शिवचंद्रजी आर्य, (मिरजानहा, छत्रपतितानाव भागलपुर) से प्राप्त हुआ है ।
ग्रथ की लिपि पन्ना में ही की गई है क्योंकि 'पाण्डित्युत्रके' लिखा हुआ है ।

[२] रणदीक्षा—प्रकार—X । प्रंलिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन देशी कागज ।
पृष्ठ-स० ६३ । प्र पृ० ५० लगभग १७ । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
लिपिकाल—X ।

प्रारंभ— ततश्च व्याख्यान प्रकाशित देवतायर्थविरोधामत्रा केचनाध्यामिकाधिदैविकाधिमौतिका
नुपसंगानपाकतु' मनारथपथप्रवर्तमानानर्षाश्च साधयितु वाजसनेय सहिताया
समुचीयते यद्यपि मत्रानुकपाश्चिर्तरतन विविधप्रयोगसंबन्धबधुराप्रवधा सति तत्र तेषा
मत्राणाप्रतीकौपादानमात्र कृताथवादवसान व्यवहितिरवरयबोद्धव्या देवतायर्थ विरोधा
श्च भाष्या । तत्र तावत्प्रथम सर्वमत्राणाशिर शेषरीभूतस्य प्रणवस्यो
पादोच्यते यत्र द्रान्य पशूनां शन्त्रो न ध्रुवते तत्र गगा-व्यसुना-त्तगादिपुण्यच्छ्रेषु
शुद्धैक र्शुण्य प्राग्मुक्त करण्य करण्य करणपरिवेष्टित गृह कृत्वा करानीर
कुरवासा कुरायणीपनीन कुराहस्त शक्यावक पयोमघनेष्वचतमभाजन
विभिर्देविय पचनक्षत्राव नयेत् । अस्य प्रणवस्य प्रसाश्रयि गायत्री छद् परमागा

देवता सकल कल्मष विनाशनद्वारा सर्वमन्त्रसिद्धयर्थे विनियोग, इति विनियोगपूर्वजपित्वा दशाशक्तिमाज्यं जुहुयात् ॥ तत सर्वदेवा सर्वमंत्राञ्च सिद्धा भवन्ति अथ गायत्री नाच प्रसिद्ध ऋष्यादिका अतश्चात्रकेवलप्रातीतिक [समुदायार्थी लिख्यते वीमहि ध्यायाम चितयाम इति यावत् किं तन्मर्ग तेज. भृज्यते] अनेन । श्रुति स्मृति विहित कर्माणि कलप्रायस्त्वद्वारेणैति भर्गः अस्जो पाके अस्मादौष्णादिक अमुन प्रत्यय ग्रहिय्याव- वीत्यादिना नप्रमारण क्रीड्यं वरंरय वरणीय अभिलपणीयं ब्रह्मादिभिरपीत्यर्थः कस्यतन् प्रथमाया पृष्ठ्यात्रिपरिणामान् तस्य सचिदुद्वेस्य नर्वे ।”

अन्त— ‘अपि च एनं प्रथम प्रागेवात्र्यतिष्ठन् अविष्ठित अस्याश्वस्य रगुन गंवर्व. अग्रहृणर । इत्यादयेनमश्व स्तौमीत्यभिप्राय ॥२.६॥ अनेनाश्व नंकृदाहुतीना मृष्य सहस्र जुहुयात् चतुरश्वयुस्तं रथं लभते ॥३०॥ असियम इति तिलाहुती शतमद्वत्र जुहुयात् विपापो भवति ॥ ब्राह्मणमपिलजहोमेन तारयेत् ॥ इतिप्रकारः ॥ इति चतुर्थ पल्लव ॥”

विषय—शुक्ल-यजुर्वेद के चुने हुए मंत्रों के अर्थ, व्याख्या आदि मस्कृत भाषा में हैं । मंत्रों के पूर्व उनके ऋषि, देवता तथा विनियोग आदि भी हैं ।

टि०—(१) प्रारंभ के चार पृष्ठ नहीं हैं । ५वां पृष्ठ फटा हुआ है । प्रारंभ की पंक्तियों पृष्ठ ६ से लिखी गई हैं ।

(२) ग्रंथ का प्रारंभ अथवा अन्त देखने में कर्ता एवं लिपिकार का पता नहीं चलता है ।

(३) ग्रंथ कर्मकांडपरक है । हवन तथा बधे-बधे यज्ञों के संबंध में लिखा गया है ।

(४) ग्रंथकार ने इन वैदिक मंत्रों की व्याख्या के संबंध में अपना अभिप्राय प्रकट किया है । किन्तु, पृष्ठ फटे होने के कारण स्पष्ट नहीं होता है । ग्रंथ अनुसंधेय है । यह ग्रंथ श्री शिवचन्द्रजी आर्य (छत्रपति तालाब, मिरजानहाट, भागलपुर) के मौजन्ध से प्राप्त हुआ है ।

[३] श्रीदत्तात्रयन्त-ग्रंथकर्ता—X । प्रथलिपिकार—श्री सरयू प्रसाद । अवस्था—प्राचीन, साधारण कागज । पृष्ठ-मं०—४० । प्र० पृ० पं० लगभग २२ । लिपि—नागरी । रचना-काल—X । लेखनकाल—X ।

प्रारंभ—“श्रीगणेशायनमः ॥ अथदत्तात्रय लिख्यते ॥ श्री दत्तात्रय उवाच ॥

कैलासे शिखराशीनं देव देव महेश्वरं

दत्तात्रय परिप्रद्य शंकरं लीक शंकरं ॥१॥

कृताञ्जलि पुत्रो भूत्वा पृच्छते भक्तवत्सल ॥

भक्तानाञ्च हितार्थाय कल्पतन्त्रश्च कथ्यते ॥२॥

कसौ सिद्धि महाकल्पं तन्त्र विद्या त्रिवानकं

कथयति महादेवं देव देवं महेश्वरम् ॥३॥

सन्ति ना ना विद्या लोके मंत्र मंत्राभिचारिकं ॥

आगमोक्ता पुराणोक्ता ज्ञ सोक्ता डामरो तथा ॥४॥”

अत—‘विता शैव—शैवी तदनु चननी च मुहुः पिता शैव शैवी कुलमरिक्त शैवामति च ।
 शच शैवशास्त्रे शिवशरणपूजासुरण सुख शैवी वाणी भवतु भगवन् शिव शिवं ॥५॥
 इति श्री दत्तात्रेय तत्रे दत्तात्रेयस्वर सम्वाद इन्द्रजान समाप्त ॥
 यात्रा पुस्तक दृष्ट्या तादृश ललित मया ॥
 यदि तुद मनुद वा मम दाया न दीयताम् ॥१॥
 निमित्त पुष्पक तत्रै सरयू प्रसादेन धीमता ॥

विषय—तत्र शास्त्र—इन्द्रचालविद्या सपविषविमोचन, यात्रप्रभयानवारण आदि विषय इममें
 हैं । मया—३८ पृष्ठ में—‘त्रय मर्ष निवारण ॥
 अस्तिक मुनिरात्र च नमस्कार पुन ॥० ।
 स्वप्न मर्षभय नास्ति नायथा ०॥३॥
 यथा वा पुष्पकत्रे अमृत मूलक हरत् ॥
 यामाला धारयेत् कण्ठसप जाधा भय न हि ॥४॥
 अव्य व्याप्रभय निवारण ॥
 गृहीत्वा शुभनक्षत्रे धार मूलक हरत् ॥
 धारयद्दक्षिण कर्णे शरच्चक्राना भय न हि ॥

टि०—(१) सपूर्ण मय २० पत्र में समाप्त है ।

(२) प्रथकार का पना, आदि और अत में, नहीं मिलता है । किन्तु, यह सक्त है कि प्रथकार शैव ह ।

(३) लिपिकार न अपना ‘नाम लिखन क अतिरिक्त, अपन सन्ध में कुछ भी नहीं लिखा है । यह प्रथ श्री भागवत प्रसादजी (सुरापुर पटना) से प्राप्त हुआ ।

[४] गीत-गोविन्द—प्रथकार—श्री जयदेव कवि । प्रथलिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन
 देशा कागज, ढगा हुआ । पृष्ठ ७० ७८ । प्र ७० ५० लगभग १३ । लिपि—नागरी ।
 रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ—‘विहन्ति हरिहरिहरसवसत ॥

वृत्तयि युवति जनन सम सति विरहजनस्य दुरत ॥ प्रुपट
 समद मदनमनारथ पथिक वृजनजनित विलाप ॥
 अलिङ्गन लङ्गन सम सगृह निराङ्गल वृत्त कलापे ॥२॥
 मृग मद सौरभ भरस वसंपद नवल माल, तमाने ॥
 युवजन हृदय विदारण मनविज नखरथि किचुक जाने ॥३॥
 मदन महीपति कनकद्वराच करार कुमुम विकारा ॥
 निमित्त शिन्धीमुत्र पात्रे प ल हत रमरतूण विलास ॥४॥
 विगन्ति लज्जित जगदवलाकन तरणधरण हत हान ॥
 विरहादन इन्तन क तमुवाहृति क्ताक द्युर तास ॥५॥

अंत—‘श्री जयदेव भाण्डव विभवदि शुनीचन भूषणमार ॥
 प्रथमठ हदिविनिपाय हरि सुधिरं मुहनादयनर ॥८॥

विषय—श्री राधाकृष्ण के विरहवर्णन के साथ दशमी-सुषमा वर्णन ।

टि०—(१) गद्य पद्य के पूर्व 'द्रुवपद' आदि तान-निर्देश दिए गए हैं ।

(२) ग्रथ अग्रग है । प्रारंभ के २ पृष्ठ नहीं हैं । 'मान्सी' वर्णन नाम दशम सर्ग समाप्त करके ११ सर्ग का कुछ अंश है । आगे के ४ पृष्ठ नहीं हैं । प्रारंभ के ४ पृष्ठ पढ़े होने के कारण ऊपर का अंश पृष्ठ ८ में लिखा गया है । यह ग्रथ श्री शिवचन्द्रजी आर्य (मिर्जानगर, उपनिवेशालय, भागलपुर) ने प्राप्त है ।

[५] मारस्वतप्रक्रियाव्याकरणम्—ग्रथकार—X । लिपिकार—X । अवस्था—अच्छी । पृ० न०—६६ । प्र० पृ० प० लगभग १८ । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—'श्री गणेशाय नमः । आनन्दैः निर्गन्धप्रमत्तगयतरोरिषु ॥

दया निलपन वन्दे वन्दे विरदाने ननु ॥२॥

वासदेवतायास्वर्गायन्तमानन्तमान्ते ऋषिर्मातृवा ॥

श्री पुत्रुगञ्ज दुहन मनोज्ञा मारस्वतव्याकरणग्रंथ टीका ॥१॥

इहै ग्रंथकृतं कर्ता । नरस्वतव्याकरणग्रंथकारेण प्रविष्टानामुपदेशेनानामस्कारान्पसंगलाचरणपूर्वकं शान्तिप्रतिपातं तादात्म्यजन्यं चिन्तितं प्रत्यजानीति । प्रणम्य परमात्मानमिन्द्रादि ॥१॥ तत्र परमात्मानं प्रणम्य ॥ बान्दी श्रद्धासिद्धये ॥ नानिर्विस्तारम् ॥ नरस्वती प्रसिद्धा श्रुतं कर्तुं इत्यन्यथ ॥ प्रसिद्धं प्रकृतं प्रत्ययविभक्तिभागेन व्युत्पाद्यन्ते ज्ञेया अनया इति प्रसिद्धा ॥

नरस्वत्या प्रणीता या प्रसिद्धा ना नारस्वती प्रसिद्धा ना नारस्वती प्रसिद्धा श्रुतं प्रयोगानुवृत्त सूत्रकमा कर्तुं करिष्ये वर्तमान नामीष्ये वर्तमानवदेति मृदातन्करिष्ये इति स्थाने कर्तुं इति ॥”

अत—“आपत. स्त्रियाम् ॥ आकारान्तामात्र प्रिया वर्तमानादाप प्रत्ययो भवति ॥ आपि विहिते । आपर्गतेमेषोप । जाया माया श्रद्धा याना एवमादिषु स्त्रीप्रत्यय विशिष्टेषु बालाना लिङ्गविशेषज्ञान भवतीति लिङ्गविशेषाविविजाययित्तुक्तमेवोक्त्यतम् ॥ इत्यादिभ्यादि शब्दान् ॥”

विषय—नस्कृत के प्रसिद्ध व्याकरण की टीका ।

टि०—(१) इस ग्रथ के टीकाकार ने ग्रथ की टीका करते हुए उसे सरल बनाने का यत्न किया है । यद्यपि टीकाकार ने अपना परिचय नहीं दिया है तथापि प्रारंभ के 'श्रीपुञ्जराज' से प्रतीत होता है कि टीकाकार काट्ट पुञ्जराज हैं ।

(२) यह ग्रथ श्री भागवत प्रसाद जी (रुजपुर, पटना) के नोजन्य ने प्राप्त हुआ है ।

[६] वाजसनेय-सहिता—ग्रथकार—X । प्रयत्नलिपिकार—X । अवस्था—अच्छी । पृ० ३१ । प्र० पृ० प० लगभग १८ । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—“ये अनय नमनमोन्तराद्यावापुर्वीषीऽऽमे ।

गारदावृत्तऽ अभिकल्पमानाऽऽन्द्रमिवदेवाऽऽर्थाभनविशन्तु तथा देवतयाङ्गिरस्वद्भुवो-
चीदतम् ॥१६॥”

श्रुत—“अभिगात्राणि सहसा गाह्वराना ऽथा वार शतमपुरिन्द्र ॥

ऋषयवन पृतनायात्युद्धाम्नाम्नाऽत्र तना श्रवतु प्रयुस्तु ॥३६॥’

त्रिपथ—युक्त का गात्रा—वाजयनय-दाइता मूल ।

टि०—(१) ग्रथ की लिपि अज्ञानी नहीं है । प्रारम्भ रु १०१ प्रुठ नहीं ह । ग्रंथ प्रु १०० म प्रारम्भ हाकर प्रुठ १३६ में समाप्त हो गया है ।

(२) यह ग्रथ श्री परमानन्द मन्त्री (ग्राम चन्दनपुरा जमालपुर, मुंगर) क प्रयत्न म प्राप्त हुआ है ।

(३) ग्रथ अपूर्ण है । अन्तर्ण, लिपिकार का नाम नहीं पात हा सका । मंत्रों क साथ उपात अनुपात, स्वरित बोधक रिक्त भी लिख हुआ ह । ग्रथ के बीच बीच में अर्थात् समान हान पर अति वाचमनय सन्निपाठ लिखा हुआ है । ग्रथ १७ में अर्थात् तक हा है ।

[७] रुद्रयामल-त्रय—ग्रथकार—X । लिपिकार X । अवस्था—प्राचीन दही कागज । पृ ५० ३१ । प्र पृ ५ लगभग २० । लिपि—जागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ—“पूज्यगिरि पागाय नम । उद्भयान पीगाय नम ॥ कामरूप पीठाय नम । जालधर पागाय नम । अति मपूज्य षट्काणा षट्सपूज्य ॥ त्रिखन्त्र त्रिकाण्डद्वयोत्तर मपूज्य ॥ मध्य ॥ आचारशक्तये नम । अति मपूज्य ॥ त्रिकाण्ड गणै मत्रिका मस्थाप्य नम इति सामान्यार्थ्य त्रिनाम्न्युदय । यूसुचिष नम ॥ २ उष्मादे नम ॥ लं जलन्त्यै नम ॥ ध जलान्त्यै नम । ३ विष्कलिगायै नम ॥ ५ सुप्रथै नम ॥ ६ स्वल्पथै नम ॥ ६ कल्पनाथै नम ॥ लंहयवहाथै नम ॥ ७ कल्पनाहाथै नम ॥ इति मपूज्य ॥

श्रुत—“चक्रुः काचन कडलाग परानवद्धकाचाप्लज ।

य वा चतसि वद्गत स्रगमपि न्यायति कृयाभियगम् ।

तथा वरम सुक्लमादहर स्फाट मधयरिचर ॥

मायतु ऋणा ततस्तन्ना स्थैय भान त्रिय ॥१॥

त्रिपथ—तैप्रशास्त्र ।

टि०—(१) ग्रथ अपूर्ण है । प्रारम्भ प्रु १६ उ है । ४७ प्रु में समाप्त हुआ है ।

(२) यह ग्रंथ श्री गमनारायण जी ‘आन क ऋणा स (मन्त्री वैदिक पुस्तकालय मुसकपुर पटना) द्वारा प्राप्त हुआ है ।

[८]—प्र ऋणा—X । लिपिकार X । अवस्था—प्राचीन दही कागज । प्रुठ-म० २० । प्र० पृ ५० लगभग १६ । लिपि—जागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ— काचस्य प्रमुञ्च त्वारस्य ऋषम रज्ज्वरस्य कमण ॥ ऊ गापतिरिति । ऊ गौष्मिति । ऊ पद्मसि । ऊ शायति । ऊ मयापि । ऊ नावप्रथिति । ऊ विजगति । ऊ अर्धति । ऊ ऋषति ॥ ऊ स्वपामि । ऊ स्वाहाति । ऊ मन्तर स्थ । ऊ हविर्गति । ऊ पुष्पसि । ऊ कुचिर्गति । ऊ आ मकुल त्वनामि । ऊ वीरसि । तथा पिष्मनाथ ऋषमरामारभ्य ॥ ऊ भूमिष स्व ग्गपत त्दात्तु ऋ ऋषि । ऊ भूमिष स्व ग्गति

इहागच्छ इहतिष्ठ । ऊं भूभुवुर्व स्व.पद्मे इहागच्छ इह तिष्ठ । ऊं भूभुवुर्व स्व शचि-
इहागच्छ इह तिष्ठ । ऊंभूभुवुर्व रव धेमेइहागच्छ इह तिष्ठ । ऊं भूभुवुर्व स्व
सावित्रि इहागच्छ इह तिष्ठ । ऊं भूभुवुर्वस्व विजये इहाग... .. ।”

अन्त—“ब्राह्मण स्थापनं कृत्वा प्रणीता युत्तरेपरम् ।
जलपात्र निधायाथ प्रणीतापूरणादिभि ॥१॥
कृत्वाज्यभागपर्यन्त वह्नौ पचाहुतिस्तत ।
चरो. प्रजापतिहुत्वा भूय पचाहुतीश्चरो ॥
प्रजापतिस्त्रिजकृते व्याहृत्यादि घृतैर्न च ॥”

विषय—इसमें ग्रंथ का नाम नहीं है । ग्रंथ में श्राद्ध, तर्पण, पिरटदान, मातृकापूजा और
जातकर्म—निष्क्रमण-संस्कार की विधि लिखी हुई है ।

टि०—(१) ग्रंथ अपूर्ण है । प्रारंभ के ४५ पृष्ठ नहीं हैं । ४६ पृष्ठ से प्रारंभ होकर ६८ पृ०
में समाप्त हो गया है । ग्रंथ का अन्तिम भाग भी नहीं है । अतएव, ग्रंथ के लिपिकार
का पता नहीं है । अजरो से ज्ञात होता है कि इसके लिपिकार कोई बंगला भाषा-भाषी
पंडित है ।

(२) यह ग्रंथ श्री रामनारायणजी ‘आर्य’ (खुशपुर, पटना) के उद्योग से प्राप्त हुआ है ।

[६] राजनीतिशास्त्रशतकम्—प्रंथकार—आचार्य चाणक्य । लिपिकार—भीष्मदास ।
अवस्था—प्राचीन, देशी-कागज । पृष्ठ—६ । प्रतिपृष्ठ पंक्ति, लगभग—१२ ।
आकार-प्रकार—१३”×५” । भाषा-संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
लेखनकाल—संवत् १६२६ वैशाख, कृष्ण पूर्णिमा रविवार ।

प्रारम्भ की पंक्तियों—“श्री गणेशायनमः ॥ नीतिशास्त्र प्रवक्ष्यामि चाणुक्येन तु भाषितंयन
विज्ञानमात्रेण बुद्धिविक्सास्यते नृणाम् १

प्रथमे नाजिता विद्या द्वितीयेरेनाज्जित धनम् तृतीये नाज्जितो धर्पश्तयै किं
करिष्यति कृते च लिप्पते देशस्त्रेताया प्रम एव च द्वापरे लिप्पते भर्ता कलौ कतैव
लिप्पते कृते त्वस्थ गता. प्राण स्त्रेताया मास एव च द्वापरेष्वंड्यपा प्राणा कलौ
चाजगता परम् ४”

अन्त की पंक्तियों—“संतोषस्त्रिषु कर्तव्य सुदारे भोजनेधने त्रिषु चैव न कर्तव्यो दान तपसि
चाव्यतपेत्

सर्वप्यारम्भते काये मे कश्चित्ते न भाषितं एकाक्षर प्रदारं यो गुरु नाभिर्दंते
स्वानयोनि शतगत्वा चाडालेष्वपिजायते ६८

जुष्ठात चलति मेरु कल्पान्ते सप्तसागर. साधव प्रतिपन्नार्था न चलति कदाचन.
अध्वाजरादेहस्वतामनध्वावाजिना जरा अयमभोगा जरा स्त्रीणा संभोगः करिजरा १००

इति श्री राजनीतिशास्त्रं शतक समाप्तम् शुभ भूयात् ॥” (वस्तुतः यहाँ ‘अध्वा
जरा देहवतामनध्वा वाजिना जरा, असभोगो जरा स्त्रीणा, संभोग करिणा जरा’
होना चाहिए । यही शुद्ध श्लोक है ।)

विषय—साधारण व्यवहार क, प्रसिद्ध नीतिश्लोक ।

टि — १-प्रथम पुरानी शैली में लिखा गया है । यत्र तत्र अगुद्धर्षी भी है । लेखक न श्लोकों का भी कइ स्थानों में, प्रचलित पाठ से भिन्न लिखा है । कहीं-कहीं छंदाभंग भी है ।

२-यह प्रथम कबीरमठ रायदा क महत श्रीश्रवधदास साहबका क सौतय से प्राप्त किया ।

[१०] पञ्चदशा—प्रथकृष्ण-× । लिपिकार-× । अवस्था—प्राचीन, दशा कागज । पृष्ठ ५ — ५८ । प्र पृ० ५० लगभग-०५ । आकार प्रकार-१२×५५ । भाषा—मसूत । लिपि—नागरी । रचनाकाल-× । लेखनकाल-× ।

प्रारम्भ— 'ओं श्री गणेशाय नम ॥ ओं नमो भगवत् वासुदेवाय ॥ ओं नवा श्री भारती तीर्थ विद्यारण्य मुनारवरी प्रत्यहं च त्रिवेकस्य क्रियत पद दापिका ॥ प्राचीनतम्य प्रथस्याधिष्णन पारसमाप्ति प्रचयगमनान्या शिष्याचार परिप्राप्तमध्व दवता गुरु नमकारलक्षण भगलाचरण स्वेनानुभूत शिष्याशिष्यार्थ श्लोकनापानवप्राप्ति अध्यापय प्रयाजन च मुचयति नम इति

(मां अक्षरों में) — ओं नम श्री शंकरानन्द गुरुपादाम्बुजमन सविलासमहामाह
 प्राहप्राप्तैककर्मणो १ ॥

तत्पादाम्बु रुद्रद्व द्वे वा निमलचेतसाम् सुमवाधाय तत्त्वस्य विवकाथ विधीयत २

अन्त— तदि किमर्तदित्याशक्याह ब्रह्मविद्योऽय इय ब्रह्मावद्या कथमुपनशक्याह ध्याननति अलगतिच इन्द्रमाह विद्यायामिति भद्रकापाधिवर्जनादित्तुक्त तानि विभद्रकापाधिनाह शातति एतथा परिहार कनापायनयाशक्याह यागादिवेकति । कनितमां निरुपायानि त्रिपुगीनाम भावात् भूमान इत्युच्ययत प्रथमुपहरति (मां अक्षरों में)—

शान्तपारा तिलायारचभद्रकापाधयामता यागादिवेकनाचैषामुपाधीनामकृति । ६०
 निरुपायि ब्रह्मतर भावमान तय तय अर्द्धे त त्रिपुत्रिशास्ति भूमाननत उच्यत ६१
 ब्रह्मानदाभिय प्रथ पचमाध्याय इति त्रिपनामपन न द्वारगात प्राप्तययो ६४
 त्रियाद्वारिहरा नन ब्रह्मानदन सर्वदा पायान्य प्रशित सबान् स्वात्मान् बुद्धमादिन ६५
 (पत्ने अक्षरों में) ब्रह्मानद इति ६४, ५ इति श्रीमत्परमहंस पारमार्थकाचार्य श्री भारती तीर्थ विद्यारण्यमुनार विरक्ति करण श्री रामकृष्णाय विरानिन उपदेशप्रथविवरण विद्यावानद पचमाध्याय ॥

विषय— शान (वद त-दशन)

टि— १ वदात क प्राप्तद प्रथ पचदशी श्री गीका ।
 २ गीका अक्षरों में मूल प्रथ है । पत्ने अक्षरों में त्र्युका गीका है ।

[११] सूत्रपाठ—प्रथकार-× । निरुकार × । अवस्था—प्राचीन, शरी कागज । पृष्ठ ५ — ४ । प्र० पृ० ५० लगभग-०० । आकार प्रकार-१४×५५ । भाषा—मसूत । लिपि—नागरी । रचनाकाल-× । लेखनकाल-× ।

प्रारंभ की पक्तियाँ—“श्री गणेशाय नमः ॥ अ इ नु ञ् च त्वा नाना । इव गीर्णुत मेघ-
स्ववर्णा ३० ऐ श्रो शी र यत्तर्गा २ सुनेस्वरा, / अर्गाना नम ५ र य र
ल ६ न ग म ड म ७ उ उ ङ ङ न ८ - ९ द न य ६ न ङ ७ ठ य १० न
ड त ङ य ११ ङ य न १२ प्रयामा-न्यासु १३ अ स्वर्गादिदि १४ ॥”

अन्त की पक्तियाँ—“ने ट ति ३० स्वगतो वा ७८ म्यायी ३२ प्रस्तम्भोदञ्च ८० इ।।
शोडशञ्च ८६ श्रोपुनन्कुं क तुम् ८२ पूर्वोक्ता ८३ नमो ८५ ८८ पौन
पुण्येगास्प- द्विज ८१ लोकाद्वेष्य निर्दि ८२ ।
इति सूत्रपाठ सर्वज्ञ सरवा ६ / पंचगाय ॥ पठानि पूर्व पाठ, सूत्रपाठ अत्रान
दृष्टन् सूत्रपाठ । ”

विषय—संस्कृत-व्याकरण ।

टि०— पाणिनीय व्याकरण के अन्त में प्रसिद्ध व्याकरण के सूत्रों का कलन प्रतीय
होता है। यह ग्रन्थ अर्गाना नाम होता है, अन्त व्याकरण नाम २, तार्किक,
नमान, स्त्रीप्रत्यय, तिष्ठन् श्रीर सुवन् च ति ए मूत्रे का नभारंश टम्बे नडा है।
यह प्रय, स्त्रीर मठ, रोमडा (दग्भगा) २ महत आ अत्रघटाप गहन्ती ने प्राप्
क्रिया है।

[१२] मारस्वतप्रक्रियाव्याकरण—प्रयकार—X। निष्कार—वींमदान वैरागी। अग्रथा—
श्रीक, ग्रंथ अर्पूर्णा। पृष्ठ ५०-१६। प्र० पृ० ५०-लगभग २७। भाषा—
संस्कृत। निष्पि-नागरी। रचनाकाल—X। लेखनकाल—भवत १६२० आश्विन
कृष्ण, अमावस्या, रविवार। आकार-प्रकार—१४ १/२ X ५ १/२”।

प्रारंभ की पक्तियाँ—“श्री गणेशाय नमः ॥ अथात्रान्त प्रत्ययानि पृथक् वेतो। वच्यमाणा
प्रत्यया वीतोर्जाया अत्रादि भुनक्त्यामिन्यादि शब्दोघानु नञो भवति धानुत्वाति-
पाठय न च त्रिविध आत्मनेपदी १ परस्मैपद्युभयपदी चेति आटनुटात्तिति
अनुत्तेत्तोत्तितश्च धातोर्गणित्यात्मने पठे भवति निस्वर्गरेतेत्तुभे जित स्वरितेत्तश्च
धातोरात्मनेपठपरस्मैपठे भवत आत्मनामि चेतस्लमात्मनेपठपरगानिचेत्क्य
परस्मैपठ प्रयोक्तव्यमन्वयान् परतोऽन्यत् पूर्वोक्त निमित्तिरिपुगदन्यस्नाद्वातो
परस्मैपठे भवति न चेटपाम् तिवादीनामघटादश मर्याकानामथानि न वचनानि
परस्मैपठ मंजानि भवन्ति परगद्यात्मने पठानि”

अन्त की पक्तियाँ—“रुच्यकारम् इत्यंकारम् भुवोभावे क्यप् द्रव्यभूयं गत लक्ष्मीमट्त्व लक्ष-
दर्शनाकृतयो लक्ष्मी स्त्यायते स्त्रीत्वादृष्टितोप संयोगात्तस्यलोप द्वित्वादीप्-
रैस्यै शब्द मघातयो स्त्री वर्णान्कार राट्को वारेफ रकारादीनि नामानि
श्ववर्तो मम पार्यनिमत. प्रसभतामेति रामनामाभिषक्या १ लोकाद्वेष्यसिद्धि यथा-
मातारादे इति हृत्य प्रक्रिया स्वपान्तोऽनुभूत्यादिः शब्दो भूयत्रसार्थक
उमस्करि शुभाचके प्रक्रिया चतुरो चिताम् १ अवत्ताद्वोयश्रीव कमलाकर इश्वर
सुरासुरनराकार मद्ययापीतपकज ॥२॥ इति श्री मारस्वती प्रक्रिया यादश पुस्तके
दृष्टं तादृश लिपतं मया यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥१॥ इदं पोस्तक
लिपीतं भीष्मशास्त्रे ॥” “श्री सरस्वत्यै नमः । श्री गणेशाय नमः ॥”

विषय—संस्कृत व्याकरण की एक शाखा । मारम्बत प्राग्भा सम्पूर्ण नहीं है । क्वचल तिङन्त प्रकरण ह ।

टि०— प्रथ में अधिक अशुद्धियाँ ह । पाठ-भेद भी प्रतीत होता है । प्रथ में पूरा विराम या, अर्थात् राम क प्रयोग का अभाव है । यह प्रथ श्री अवधदान साहबजी, महत, कदीर-मठ रोमड़ा (दरभगा) क सौचय से प्राप्त किया ।

(१३) श्रीमद्भगवद्गीता—प्रथकार— श्री वेत्स्याम जी । लिपिकार—रामभक्त । अवस्था ठीक, दशरी कागज । पृष्ठ—४० । प्र० पृ० ५० लगभग—२ । आकार प्रकार—१ १/२ × ५ १/२ । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचना काल—X । लेखन काल—मार्च १९२२ मंगलवार, द्वितीया ।

प्रारम्भ की पक्तियाँ— श्री गणेशाय नमः ॥ अस्य श्री भगवद्गीतामालामत्रस्य श्री भगवाचेदं ज्ञापयतु दुष्पुं हृद ॥ श्री कृष्ण परमात्मा देवता अशांयानवशाचरत्न प्रनामदाश्च भाषयति वीचम् ॥ सर्व धम्मान् परित्यज्य मामेक शरणं व्रजत शास्त ॥ अत्वा सर्व पापान्या मोक्षयिष्यामि मा तुचति कालत्रम् ॥ नैन द्विदान्त शस्त्राण नैन दहात पाषक इत्यद्युष्ठाभ्या नमः ॥ न चैन कनेदयत्यापो न शापयात मारुत इति तजनाभ्या नमः ॥ अ हृदयमदक्षायामकनेयाशाश्व एव चति मध्यमान्या नमः ॥ नित्य सवगत म्याणुरथ लाय मनातन इत्यनामकान्या नमः ॥ परथ मे पार्थ म्पाणि इति कनिष्काभ्या नमः ॥'

अत का पक्तियाँ—“राजन् संसृज्य रूपमत्यदभुत हर विमस्यो म महान् राजन् कृष्याम च पुन पुन ७ यत्र यामेश्वर कृष्णे यत्र पायो धनुधर तत्र श्री विजया भूतिध्रुव नीतर्मतिर्म ७७

इति श्री मद्भगवद्गीता मूपावपतु ब्रह्मावदाया यागशास्त्रे श्री कृष्णानुन सवादे मात्र सवासायाग नामाष्टादशाध्याय १८ ॥ इति श्रीकृष्णानुन गीता सपूर्ण ।

विषय—कमयाग शास्त्र

टि०— पाथी की लिखावट में प्राचीन शैली अपनाई गई है । लिखावट अच्छी है । यत्र तत्र अशुद्धियाँ रद गई ह । पाठ-भेद भी है ।

यह प्रथ श्री अवधदान साहबजी, महत कदीर मठ, राउड़ा, दरभगा से प्राप्त किया ।

(१४) धातु-पाठ—प्रकार—X । लिपिकार— । अवस्था—अच्छी है प्राचीन हाथ का बना दशरी कागज । पृष्ठ—८ । प्र० पृ० ५० लगभग—१८ । आकार-प्रकार—१३ × ५ १/२ । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचना काल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ का पक्तियाँ— श्री गुरुवे नमः ॥ भूषनात्मा ॥ चिन्ता गगाननुतर् आसचन श्रुतिर रक्षण मेष विनाशन क्षाय पथि लथि माथ दिना कनेशनयो पिषु गत्याम् पिषु शाये मात्राय च मन्स्यैष्ये विनाया च गद व्यक्ता वापि ॥”

अत की पक्तियाँ— काप चलन लथि आय मत्र पुता भ्रमणे मृगविनायाम् कुल सक्षयान चिक भ्रन विमानो मन् आकाशायाम् नुत्र नषन पुप वृद्धो भूवज मयन इति धातुगणपाठ ॥ ॥ श्री ॥ ॥'

विषय—संस्कृत व्याकरण के धातु (क्रिया) गणों की सूची तथा उनके अर्थ ।

टि०— १—इस पोथी की लिखावट बहुत ही अच्छी और साफ है । सभी अक्षर पृथक्-पृथक् हैं ।
इस ग्रंथ में भी वर्तमान सुद्धित ग्रंथों में पाठ भेद-सा प्रतीत होता है । समस्त
वृद्ध धातु नहीं भी दिये गये हैं ।

२—यह ग्रंथ श्री अवधदान 'साहजजी' महत करीरमठ, रोमड़ा, दग्भगा के मौजन्म
से पाया ।

(१५) धातुपाठ—प्रकार— । लिपिकार × । अवस्था—अच्छी अवस्था, हाथ का बना देगी
जागज । पृष्ठ—७ । प्र० पृ० ५० लगभग—२४ । आकार-प्रकार—१४" × ५ $\frac{१}{४}$ " ।
भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचना-काल—× । लेखन-काल—× ।

प्रारंभ की पंक्तियों— 'श्री गणेशाय नमः ॥ भू मत्तायाम् चिती गजानं च्युतिर् आसेचने
श्च्यतिर् द्धारणे मय विलोचने वृत्ति पुवि लुत्ति हिमा संक्लेशनयो पिपु गत्याम् पिपू
शास्त्रे माह्वत्ये च नद स्वय्ये हिमाया च गद व्याप्तया वाच रदविलेखने नाद
अव्यक्ते शब्दे अर्द्धगती याचने च अत मातस्य गमने खादु मद्धारणे अद अदिधधने
दुरादि ममृद्धौ चदि आह्लादने ।'

अत की पंक्तियों— "ऋषि चलने लवि आग्र सने पुण भ्रमणे मृग हिमायाम् पुल मत्याने
चिद् भेदने त्रिद भेदने विडभाती नवः आकाद्यायाम् भुज सचने यूप उद्धी मखज
मधने इति धातुगणपाठ ॥०॥ श्री ॥"

विषय—संस्कृत व्याकरण के धातुओं (क्रियाओं) की सूची ।

टि०—ग्रंथ प्राचीन है । लिखावट की शैली भी पुरानी है ।

यह ग्रंथ श्री अवधदानजी, महंत, करीरमठ, रोमड़ा से प्राप्त हुआ है ।

[१६] वैराग्य शतक—प्रकार—श्री भर्तृहरि ॥ लिपिकार भीष्मदान, वैरागी, कबीरपथी ।
अवस्था—अच्छी है । पृष्ठ—११ । प्र० पृ० ५० लगभग—२० । आकार-प्रकार
—१३" × ५ $\frac{१}{४}$ " । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—× ।
लिपिकाल—संवत् १६१०, आषाढ कृष्ण त्रयोदशी—१३ ।

प्रारंभ की पंक्तियों— "श्री गणेशाय नमः श्री तत्सद्ब्रह्मणे नमः अपार नमार नमुद मध्ये नमज्जतो
मे नरण किमस्ति गुरो कृपाला कृपया वदत । (प्रश्नोत्तरी के कुछ भाग
समाप्त करने बाद) श्रीराम कृष्णाय नमः अथ वैराग्य शतक मारभ्यते चूडोतं
मितचन्द्रचारु कलिका चचच्छिखा भासुरो लीलादग्धविलोलकामशालभ श्रीयोदशाय
स्फुरन् अतस्कूर्जद्वारमोहतिभिरप्राप्तस्मुच्छेद वच्चेत स नमानयोगिना विजयत
ज्ञानप्रदीपो हरः ।"

अत की पंक्तियों— "पाणीपात्र पवित्र भ्रमण परिगत भैक्षमज्ज्यमन्न विस्तीर्ण वस्त्रमाशा
सुदशकमलमल्पमस्त्वल्पसुवीं येषा निःसंगताना करणपरिणति स्वातः ॥
सतोपिणस्ते धन्या संन्यस्त दैन्यव्यतिकरनिकरा कर्म निर्मूलयति ॥१००॥
इति श्री भर्तृहरियोगीन्द्र कृतो वैराग्यशतके अवधूतचर्या निष्पणो नाम दसम
दसकं ॥ इति श्री भर्तृहरिकृत वैराग्य शतक संपूर्णम् ॥"

विषय—वैराग्यपरक, दार्शनिक, मननशील विचार । यह ग्रथ प्रसिद्ध है ।

टि०— ग्रथ में दो प्रकार के कागजों और लिपियों का समावेश है । इससे प्रतीत होता है कि दो-व्यक्तियों न मिलकर ग्रथ पूरा किया है । प्रथम प्रश्नोत्तरी और वैराग्य शतक के दा पृष्ठ के अक्षर तो एक व्यक्ति के हैं और कागज भी एक समान है किन्तु बाद के अन्य पृष्ठों के कागज और लिपि में भी अक्षर हैं । प्रथम के अक्षर स्पष्ट तथा सुपाठ्य हैं, किन्तु शेष अक्षर अस्पष्ट और 'पिचपिच' हैं । यह ग्रथ श्री अरघदास साहबजी, महत, कबीरमठ, रोसका (दरभगा) की कृपा से प्राप्त किया ।

[१७] श्रीमद्भगवद्गीता—प्रथकार—श्री वेदव्यास जी । लिपिकार—वैष्णव श्री प्रेमदासजी । अवस्था—अच्छी है । ग्रथ के बीच के अक्षर, पानी गिरने से अस्पष्ट हो गये हैं । देशी कागज है । पृष्ठ २४ । प्र० प ५० लगभग—३० । आकार प्रकार—१२ X ६½ । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—संवत् १६७१ फागुन, कृष्ण एकादशी, सोमवार ।

प्रारंभ की पंक्तियाँ—“ओं श्रीमते भगवन्निम्बादित्याय नमो नम । ओं अस्य श्री भगवद्गीता माता-मनस्य भगवावेव्यास्य ऋषि अनुपुच्छद श्रीकृष्ण परमात्मा देवता प्रसायानवशाचस्त्य प्रज्ञावादाश्चमापयेनिबीज ॥ सर्वधर्मापरित्यज्य मामेकं शरणं त्रनेति शक्ति ॥ अहं एवा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच इति कीलक ॥ नैनं त्रिंशति शान्नाणि नैनं दहति पावक इत्यगुंठाम्या नम ॥ न चैनं कनेदस्त्यापा न शापयति मासत इति तजर्जनीभ्या नम ।

अंत की पंक्तियाँ—“रात्रन्ममय सवादिममभुत ॥ केशराज्जु नया पुगय हृष्यामि च सुदुसुदु ॥७ ॥ तच्च स्मय स्मत्य रूपमत्यद्भुत हर ॥ विभयो मे महान् रात्रन् हृष्यामि च पुन पुन ॥७७॥ यत्र यागेद्वर कृष्णो यत्र पार्था घनुद्धर ॥ तत्र श्री विनया भूतिर्मुवा निति मनिर्मम ॥७६॥ इति श्री भगवद्गीतानुपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया यागशास्त्र श्रीकृष्णार्जुन संवाद मातृगन्यासयोगो नाम अष्टादशोऽध्याय ॥ लिखित दगेश हलासीमये नृसिंह ठाडूर समीप ॥ लिखित वैष्णव श्री प्रमदास जी पत्रार्थी स लिखित ॥ शुभमस्तु भगव भवेतु ॥’

विषय—कर्मयोग दर्शन ।

टि०— इसमें बहुत सी अंगुदियाँ हैं । लेखन शैली प्राचीन है ।

यह ग्रथ श्री अरघदास साहब जी, महत कबीर मठ, रोसका (दरभगा) से प्राप्त किया ।

(१८) अपरोक्षानुभूति —प्रथकार—श्रीमच्छंकराचार्य । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, देशी कागज । पृष्ठ—२० । प्र पृ ५० लगभग—३२ । आकार प्रकार—

१८" × ७½" । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
लेखनकाल—X ।

प्रारंभ—(पतले अक्षरों में) “श्री गणेशायनम श्रीदक्षिणामूर्त्ये नमः ॥ स्वप्रकाशश्च हेतुर्यं
परमात्मा चिदात्म चितस्वरूप अपरोक्षानुभूत्याख्य. मोहमस्मि परं सुख ॥१॥
ईशगुर्वात्मभेदय सकल व्यवहारभू औपाधिक स्वचिन्मात्र सोऽपरोक्षानु-
भूतिक ॥२॥ तदेवमसुसंवाय निर्विघ्ना रवेष्टदैवता अपरोक्षानुभूत्याख्यामा-
चार्योवितं प्रकाशये ॥३॥

(मोटे अक्षरों में) श्री हरि परमानंदमपटेष्टरमीश्वर व्यापकं सर्वलोकाना कारणं तं
नमाम्यहं ॥१॥ अपरोक्षानुभूतिवैप्रोच्यते ॥”

अंत—(पतले अक्षरों में) “इदानीमुक्तं स्नाभिमतं योगसुपगंहरति राभिरिति किंचित्स्वरूपं
पद्मवाद्गवा मला रागाद्यो येषा तेषा हृद्योगेन योगेन पातज्जलोत्थेन प्रसिद्धे
नाष्टांगयोगेन सायुतेर्य वेदातेको योग इति शेषं रपष्ट ॥४३॥ अयमेव केषा
योग्य इत्याकाक्षाया सर्वग्रंथार्थसुपसंहरत्नाह परिपक्वमिति येषा मत परिपक्वं
मलरागादि रहितमिति यावत् तेषामित्यव्याहार—

(मोटे अक्षरों में) राभिरंगैः समायुक्तो राजयोग उदाहृतः ॥ किंचित्पक्वकपायाणा हृद्योगेन
संयुतः ॥४३॥

परिपक्व मनो येषा केवलो पंचसिद्धिदः ॥ गुरु दैवत भक्ताना सर्वेषा सुलभो
भवेत् ॥४४॥ इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचित अपरोक्षानुभूतिः सम्पूर्णा ॥राम राम॥

(पतले अक्षरों में) तेषा जितारिवहर्गाणा पुरुष धुरधराणा केवलं पारंजलाभिमत योगनिरपेक्ष-
अर्थ वेदाताभिमत योगसिद्धि द प्रत्यगभिन्नब्रह्मापरोक्षज्ञान द्वारा स्व स्वस्था-
वस्थान लक्षणमुक्तिप्रदः चकारोऽवधारणे नान्येषापरिपक्वमनसामित्यर्थः ॥
ननु परिपक्व मनस्वमिति दुर्लभमित्याकाक्षायामस्यापिसावकत्वादतोप्यतरंग साधन-
माह गुरुद्वत भक्तानामिति जवादितीश्रीघ्रमित्यर्थ. सर्वेषामिति यत्नेन
वर्णाश्रमादि निरपेक्ष मानुष्य मात्र गृहीतव्यं ॥ अतएव गुरुदैवत भक्ते रतरंगत्वं तथा
श्रुतिः यस्य देवे पराभक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ॥ तस्यै ते कथिता ह्यर्थाः प्रकाश
ते महात्मन इति ॥”

विषय— वेदान्त-दर्शन । ‘अपरोक्षानुभूति’ की ‘ग्रंथराज-प्रदीपिका’ टीका-सहित ।

टि०— श्रीशंकराचार्य-विरचित वेदान्त-दर्शन पर यह मूल ग्रंथ टीका-सहित है । ग्रंथ की
टीका अच्छी है । मोटे अक्षरों में मूल ग्रंथ है । मूल ग्रंथ बीच में, श्लोकवद्ध है ।
पतले अक्षरों में ग्रंथ की टीका है ।

इस ग्रंथ के टीकाकार श्री विद्यारण्य जी हैं । ग्रंथ और ग्रंथकार के संबंध में
टीकाकार के निम्नलिखित विचार हैं—“पूर्णां य म परोक्षेण नित्यात्मज्ञान का सि का
अपरोक्षानुभूत्याख्यान ग्रंथराज प्रदीपिका ॥१॥ नमस्तस्मै भगवते शंकराचार्य
रुपिणे ॥ येन वेदात् विद्ये यमुद्धृता वेद सागरात् ॥२॥ यद्यं शंकरः साक्षाद्दे-
दाताना भोजभास्करः नो निस्पृतिर्हि का कथं व्यासादि सूत्रित ॥३॥ अत्र

यत्नमत्त किञ्चित्तद्गुरोरेव मे न हि ॥ अमृतं तु यत्किञ्चित्तं ममैव गुरोर्नहि ॥४॥”
पाथा के अत में जानी महिमा रुद्रह लाक नामक एक पृष्ठ का ६ पद्यों का
ग्रथ है। जीकाकार न इसकी भी जीका की है। इसमें तीर्थयात्रा आदि के
विषय में लिखा गया है।

यह ग्रथ श्री अक्षय्याय साहवनी मत्त कीरमठ, रोसडा, (दरभगा) की कृपा
से पाया।

[१८] आथर्वणी पुस्तक सुनोधिनी—प्रयत्ना—X । लिपिकता—वैष्णव श्री गामती दास जी
प्रबन्धा—प्राचीन, देशी कागज पर, सभी पृष्ठ अलग अलग हैं। पृष्ठ—१५।
प्र० पृ० ५० लगभग—३ । आकार प्रकार—१३” X ६” । भाषा—संस्कृत।
लिपि—नागरी। रचनाकाल—X । लिपिकाल—मवत् १८७६, कार्तिक कृष्ण
प्रतिपदा गुम्बार ॥

प्रारम्भ— श्री राधाष्टकाभ्यां नमः श्री अम्य श्री विष्णु परस्तोत्रमन्त्रस्य श्री नारद
श्रुतिरतुष्टु छन्द श्री विष्णु परमात्मा देवता अहं विनमो शक्तिं श्रीं ही
कलक मम सर्वं देह रक्षणार्थं जपे त्रिनियोग नारद ऋषिये नमः शिरसि अनुष्टुप्
छन्द से नमः मुञ्जे श्री विष्णु परमात्मा देवताय नमः हृदये अहं वीन गद्गले सोह
शक्तिं पात्था ओ हा कीलकं पादायै श्रीं हा हीं हं हीं हं”

अन्त— “अवर्णा मन्त्र पवस्तु शोभा न जानाति विष्णु न जानाति महता न जानाति ब्रह्मा
न जानाति इन्द्रो न जानाति चन्द्रमूर्या न जानाति इन्द्रो न जानाति वरुणो न
जानाति दशदिग्पालो गण गंधव मुनि विक्करोचति ॥ इत्यायवैष्णीं पुरप सुनोधिनीया
तत्त्वबोधना पचन्ता प्रगठक ॥१५॥

लिखित गौरीदेरो ह्यामी मध्ये श्री श्री ठाडूर नृसिंह जी समीपे श्री श्री महत
राधिका दामजी के म्यानमध्ये गङ्गा श्री वेतनातटे कार्तिक मासे कृष्णपक्षे तीथी
प्रतिपदाया गद्यपाठर सन् सन् १८ स ट्यासी ७६ लिखित वैष्णव श्री गोमती
दासजी परनार्थ वैष्णव प्रेम दास ।”

विषय— इस ग्रथ में श्री कृष्ण के जीवन की चर्चा प्रतीत होती है। कृष्ण के जीवन की
अनक परनाओं का वर्णन है। कृष्ण को लक्ष्य में रखकर स्तुति भी की गई है।
इसमें बुद्धत्व भी सम्बन्धित विषय प्रतीत होता है।

टिप्पणी— इस ग्रथ में ऐश्वर्य लिखे गए हैं, जिन्हें पढ़ने में कठिनाई मानूँगी होती है। ग्रथ
का विषय और नाम दोनों का तुलनात्मक अध्ययन अवचित है। यह ग्रथ,
कीरमठ, रोसडा, (दरभगा) के महत से प्राप्त किया।

[२०] गौरीगोविन्द—प्रकार—जयदेव । लिपिकार—वैष्णव प्रमदाय । अवस्था—
प्राचीन देशी कागज । पृष्ठ—१५ । प्र० पृ० ५० लगभग—२८ । आकार प्रकार—
१३” X ६” । रचनाकाल—X । लिपिकाल—स० १८७१, भाद्र, कृष्ण द्वादशी,
गोमवार ।

प्रारंभ— “ओं श्रीमते भावद्विम्बादित्याय नमः ॥ सर्वैर्मेदुरसंवरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैर्नक्त
भीहरयंत्वमेव तदिमं रावे गृहं प्रापय । इत्पं नंदनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यङ्कुञ्ज द्रुमं
राना माधवयोर्जयंति यमना कूलेरह केलयः ॥१॥ वाग्देवता चरित्र चित्रीत
चित्र सट्टा पदमावती चरण चक्रवर्ती ॥ श्री वासुदेव रति केलि कथा समेतमेतं
करोति जयदेव कवि. प्रथमं ॥२॥

यदि हरिस्मरणे सरस मनो यदि विलान कलासु कतूहलं ॥

मधुर कोमल कात पदावली शृणु तदा जयदेव सरस्वती ॥३॥”

अन्त—

“श्री भोजदेव प्रभवस्य रामादेविसुस्यास्य स्या कवित्वं ॥

पराशरादि प्रीयवर्ज कठे सुप्रीत पीतावरमेतदसु ॥”

विषय—साहित्य, कृष्ण-विषयक काव्य

टि०— यह ग्रंथ १२ सर्गों और २४ प्रथमों में समाप्त हुआ है ।

ग्रंथ के अन्त में कवि ने अपना भी परिचय दिया है ।

यह ग्रंथ श्रवणदास साहव, महत, कवीरमठ, रोसवा (दरभंगा) से प्राप्त किया है ।

(२१) आत्मबोध—ग्रथकार—श्री स्वामी शंकराचार्य । लिपिकार—X । अवस्था—अच्छी
हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ १० । प्र० पृ० ५० लगभग—३५ । आकार X ।
लिपि—नागरी । भाषा—संस्कृत । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—(पतले अक्षरों में) “ओं श्री गणेशाय नमः श्री गुरवे नमः शतमखपूजितपादंशतपथमन-
सोगोचराकारं विकसितजलदहनेत्रमुमाद्याया कमाश्रये शंभुं ?

इह भगवान् खलु शंकराचार्यः उत्तमाधिकारिणं वेदात्प्रस्थानत्रय निर्मायदवलोकने
समर्थानां मन्वुद्धिना अनुग्रहार्थं सर्व वेदात् सिद्धातमंत्रं आत्मबोध्याख्यं प्रकरणं
निर्दिदर्शयिषुः तं प्रतिजानीते तपोभिरिति कृष्ट्याद्रायण नित्यनैतिक उपासना धनु-
ष्ठानरूपैस्तपोभिः क्षीणानिपापानिरागद्यंतः करणदोषा ज्ञेया ते नित्यनैतिकैरेव
कुर्वन्ते दुरिताजायमान्प्रोतीति वचनात् अतएव शातानाम् जोमिताशयाना वीतरा-
गिणा इहाद्युत्तर्ष फलभोगरहितानामुमूञ्जुणासंसारत्रधि भेदनेकृत प्रयत्नाना-
शुभोक्त साधन संपन्नना श्रयमात्मबोधोभिर्दीतयते विविमुखेनावश्यकतया प्रतिपाद्यत
इत्यर्थ . १

(मोटे अक्षरों में) ओं तपोभि क्षीणपापाना शतना वीतरागिना मुमूञ्जुणासंसारत्रधि यो-
भिधीयते ॥१॥

बोधोहि साधनेभ्योहि साक्षात्मोक्षैक साधनं पाकस्य बह्विवत्ज्ञान विनामोक्षो न
सिध्यति ॥२॥

अविरोधितयाकर्म विद्यात्विनिवतयेत् विद्याविद्यानिदृष्यवतेजस्तिमिरसंधवत् ॥३॥

(पतले अक्षरों में) ननु तपोमंत्र कर्मयोगाधने कमाधनेषु सत् सुमोक्ष प्रतिबोध एव
किमितिप्राधान्येनोच्यत इत्यत आह ॥ बोधो इति तपोमंत्र कर्मयोगादिसाधनानि
परंपर्याक्रमेण ज्ञान द्वारा मोक्षं साधयंति ज्ञानं तु स्वजन्म मात्रादेवा ज्ञानं नि.शेष
नाशयित्वासुमुञ्जुं स्वराज्येऽभिषेचयति अतोऽन्यसाधनेभ्यो ज्ञानस्यप्राधान्यं सुक्तं

तदेव दृष्टान्तं दृश्यति पाकस्येति यथालोके पाचन क्रियाया काष्ठजलभाडादि साधनषु सत्स्वपिबद्धिविना पाका न सिष्यात तद्वत् चान् वना मोक्षान् न सिष्यतीत्यर्थः ॥२॥

अन्तः—(पतले अक्षरों में) 'पुनस्तद् ब्रह्म ज्ञानात् स्लोकरयण पृथक् पृथक् निरूपयति यदिति यद्वस्तु भासा अर्कादिभिमास्यते ततद्भासा र्कादिभर्त्तु न सृष्टे न सृष्टयोर्योभाति न चन्द्रतारकनमावियुता याति कुता यानाग्निस्तमेवभात यनुभाति सर्वं स्य भासा सर्वं मिन् विभाति इति श्रुते येन सर्वमिदं भूतभौतिक भावरूप जगद्भातितद्गृह्येत्यत वधारयन् जानीयान् ६१॥ तप्तापसं विद्वन् स्वयमेववातवर्हिर्त्यप्यभासार्कखिलं ब्रह्म प्रकाशत इत्याह स्वयमिति स्वयमतर्गतमितिस्य ६२ पुनस्तदेवाह जगद्विलक्षणमितिसर्वं ब्रह्मैव सत्यं तथापि जगद्गुणपरयति तदा न गृह्यते इत्याह जगद्गुणस्येन तत्कायत्वेन विचार्यतत्त्वज्ञानं शक्यं ब्रह्मणोरपक्ष विद्यते यदिततोयन् दृश्यते यत्किंचनानुसृष्टैव मरुमरीचिका जलवदित्यर्थः ६३ पुनस्तदेव स्फुटं निरूपयति दृश्यत इति चक्षुषा दृश्यते श्रोत्रेण श्रूयते यमनसास्मर्यतयचवाचा अभिधीयेतत्तत्त्व जानात्सर्वं ब्रह्मैव सच्चिदानन्दमद्वयं ब्रह्मणोऽयं किंचिदस्तीत्यर्थः ॥६४॥

(भाटे अक्षरों में)

अतएव स्थूलमहस्वमदीर्घमजमरयथ अल्प गुणवणात्वं तद्ब्रह्मेत्यवधारयेत् ६० ॥
 पन्माशाम्भयनर्कादिर्भास्यैर्यथावभास्यते येन सर्वमिदं याति तद्ब्रह्मेत्यवधारयेत् ६१ ॥
 स्वयमतर्गतं व्याप्यभासयन्निखिलं जगत् ब्रह्म प्रकाशतेवद्धिप्रतप्तापसं चक्षुः ६२ ॥
 जगद्विलक्षणं ब्रह्मब्रह्मणो यच्छिञ्चनं ब्रह्मायज्ञानिचेमिष्या यथा मरुमरीचिका ६३
 दृश्यते श्रूयतेयद्यद्ब्रह्मणो यच्छिञ्चनं तत्त्वानात्त्वतद्ब्रह्म सच्चिदानन्दम ६४
 सर्वं सच्चिदानन्दं जानन्नचक्षुः निरीक्षते अज्ञानं चक्षुर्नेच्छेत् मास्वत भातुमपवन् ६५
 स्मरणादिभिस्सदीप्तता ज्ञानाग्निपरितापित जीवसवमलानमुक्त स्वणविन् यातयेत्स्य ६६
 हृदाशैशाधितोक्षान्या घोषमानस्तमापहृत् सर्वव्यापी सवधारी येन सर्वं प्रकाशते ६७
 दिदेश कालाधनपद्मं सर्वं ग शतादिभिनित्यं सुखनिरञ्जनं
 य स्वालतीर्थं भजते विनिष्क्रियं ससवचित्सवगतो मृतो भवेत् ४६

(पतले अक्षरों में) ननु यदि सर्वाणां ब्रह्मतत्त्वत्वे किञ्चन परयत इत्याशक्यं च चक्षुःरादिभिर्नक्ष्यत इत्येनयाऽप्या प्रतिपादयति न चक्षुषा गृह्यते नापिवाचा नाचैवेह त परया कर्मणा वा चानप्रसादेन विदुःदृष्टवस्ततस्तुत परयति निष्फलप्याय मन इति सर्वगमिति यं सतज्ञानचक्षुः सवगतमपि सच्चिदानन्दं ब्रह्म परयति यस्त्वा ज्ञानचक्षुः सम् परयति यथा प्रकाशमानमपिमनु अघो न परयति चानप्रसादेनचक्षुषा विशुद्धसव निवृत्ताविद्यं सदा सच्चिदानन्दं परयति न चक्षुषा परयति कश्चिदेन हृदा ममीषामनसामि हृत्ना मृतामृतं भवतीति श्रुत्वापि तस्य प्रमाणतरविषयत्वमव्यायतवर्थं ६५ एवमुक्तरीत्यानुभवस्यस्यपितदामासरहितस्य वासना वशान् किञ्चिदज्ञानं समयत तत्परिहाराथं पुन स्मरणादि क्रियादिनाह स्मरणादिनि जीव प्रयागामा एतत्प्रकरणाथ स्मरणादिभिर्ननादिभिर्दृष्टैर्दीप्त प्रकाशितं चानमवाग्निस्तन परितापितो भागी शानते इत्यथ सवस्यारगूल

भूता ज्ञानमलान् युक्त. स्वयमेव गम्यन् प्रकाशते यथाग्निपरिनापितः स्वर्ण-
श्रौपाधिकं उर्वनादिकं हित्वा स्वप्नेणा प्रक गते तद्वदित्यर्थ ६६ ॥ एव मंशोबितो
जीव परमात्मा हृदयाकाशेनुदितः सन् तम अज्ञानमुपमंहरन् भानुपत्पूवस्वप्नप
प्रकाशत इत्याह हृदिति बोधएवमनु गर्हस्यावारभूतत्वात्मव्यव्यापि सर्वधारी
च शेषं स्पृष्टं ६७ न न्व तमनोजान प्रतिबंधक दुरितपरिहाराय प्रयागादि तीर्थ
यज्ञोद्योग कर्तव्य इत्याशंक्या आत्मतीर्थस्नातस्य न किंचित्कर्तव्यमित्याह
द्विग्वेदेति यो विनिक्रियः परमहंसः स्वात्मतीर्थं भजते सर्वप्रित्तनर्वजः सर्वत्र
परमात्मस्वरूपत्वात् अमृतोयुक्तो भवेत् कथंभूतं स्वात्मतीर्थं दिग्देशकालाद्यन-
पेक्ष्यमेव नर्वगंशीतादि द्वेऽट्टु खानिहस्तीतिशीतादिहृन्निष्पसुखं मोक्षानंदप्रायकत्वान्
इतस्तीर्थेषु तद्विपरीत द्रष्टव्यं तस्मादात्मतीर्थं स्नातस्य न किंचिदवशिष्यत
इतिभावः ६६”

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य गोविंदभगवत्पूजपादशिष्य श्रीमच्छंकराचार्य्य
विरचितात्मबोध संपूरनम्”

वि०— दर्शन ।

टि०—१—यह ग्रंथ अनुसंधेय है । श्री शंकराचार्य के ‘आत्मबोध’ की बड़ी ही विशद व्याख्या
इस टीका में की गई है । टीकाकार ने अपने सम्बन्ध में कुछ भी नहीं लिखा है ।
मूल ग्रंथ मोटे अक्षरों में, बीच में है । व्याख्या पतले अक्षरों में है । लिपिकार
के नाम का भी ग्रंथ के प्रारंभ या अन्त में निदर्श नहीं है । लिपिकार कोई कबीरपंथी
साधु प्रतीत होते हैं, यह पोथी के प्रारंभ में ‘गुरवेनम.’ ने स्पष्ट होता है ।

२—पोथी की समाप्ति के बाद ३ पृष्ठ का ‘तत्त्वबोध’ नामक लघुकाय मूल ग्रंथ है ।
यह भी श्री शंकराचार्य जी का ही है । इसमें मोक्ष-प्राप्ति के साधन का नमुल्लेख है ।
ग्रंथ ध्येय है । अन्त में ‘इति श्री तत्त्वसार सदीपनक्रमचित्तनम्’ लिखा है ।

३—लिपि की शैली प्राचीन और अस्पष्ट है ।

यह ग्रंथ कबीर-मठ, तेषड़ा (मुँगेर) से प्राप्त किया ।

(२२) श्रीमद्भगवद्भक्तिरत्नावली—प्रवकार—परमहंस विष्णुपुरी । लिपिकार—वैष्णव श्री
प्रेमदास । अवस्था—अच्छी, प्राचीन, देशी कागज । पृष्ठ—१६ । प्र० पृ० ५०
लगभग—३० । आकार X । लिपि—नागरी । रचनाकाल—फाल्गुन शुक्ल, २ द्वितीया,
१३५५, शक्र-सं०, मंगलवार । लिपिकाल—चैत्र, शुक, ६ नवमी सं० १८६८
शनिवार ।

प्रारंभ— “ओं श्रीमते भगवन्न्वादित्यायनम ॥ ॐ ऊपक्रायंतु भूतानि पिशाचा सर्वतो दिश ।
सर्वेषामविरोधेनब्रह्मकर्मसमारयेत । अपसर्पंतुये भूता ॥ ॐ भूताभूमिसंस्थिता
विघ्नकर्तारस्ते नश्यंतु शिवाज्ञया ॥

ओं अपवित्रं पवित्रो वा सर्वावस्थागतोपिवा ॥ यः स्मरेत् पु ङरिकाज्ञं सनायाः यातर
शुचिः ॥

ओं पुंढरीकाज्ञाय नमः ॐ ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिः परमात्मा देवता गायत्री छंदः ।
अभिषेके विनियोगः ॥

ओं भृगुदिमहान्याहृतीनां प्रजापति ऋषि ॥ अग्निर्वायु मूर्धो देवता ॥ गायत्री
त्रयष्टुप्लवति ॥

अर्थाभिषेक मन्त्र ॥ ओं । वष्णु विष्णु वाक् वाक् ॥ प्राण प्राण ॥ चक्षु चक्षु ॥ ।
। प्राण प्राण ॥ नाभी हृदय । कठ ॥ शिर ॥ शिखा । बाहुन्या ॥ यशोवत् ॥
इति महाकाव्य ॥

ओं आत्म उपगतकटुरितक्षयाय ॥ ब्रह्मा प्राप्यै प्रातमध्योपासनमह करिष्ये
तत्क्षत्रितुरिति प्रजापति ऋषि स्मिता देवता गायत्री छद् ॥ अभिषेके विनियोग ॥
ओं पुनातु । ओं भू पुनातु ॥ ओं भुव पुनातु ॥

ओं स्व पुनातु ॥ ओं मह पुनातु । ओं तप पुनातु ॥ ओं सत्य पुनातु ॥ ओं भूर्भुव
स्व पुनातु ॥

ओं वृक्षवित्रुर्विरण्य भर्गो देवस्य धीमाहधियो यान प्रचोदयात् ॥

ओं सर्व पुनातु ॥ तत्र उदक ग्रहित्वा ॥ ओं भूर्भुव स्व रितिभूव प्रक्षिपेत् ॥

अन्त— 'एकादशे उदववाभ्य भगवत प्रति ॥ तापत्रयेणामिहितस्य धारे सतप्यमानस्यमवा-
चिनीरा ॥

पर्यामि नायस्वरण तवाप्रेन्द्रातपत्रदमृताभिवर्षनात् ॥६॥

दशम सुचुङ्ग दवाङ्ग्य भगवत प्रत ॥ चिरमिह राजन्तिस्थप्यमानोनुतापैरिविनृस्य
पन्मिरोत्पवशाति कथाचन ॥

शरणदशमुपेतस्त्वत्पदावन् परात्मज्ञ भयमृतमशोद् पाहिमापन्नमीश ॥१०॥'

त्रिपय— श्रीमद्भागवत का सत्वेप ॥

टि०— प्र यकार श्री विष्णुपुरी नी ने प्रथ की समाप्ति पर निम्नस्य शब्दों म अपना अभिप्राय
प्रष्ट किना है ।

विष्णुपुरी वाक्य ॥ एव श्री श्रीरमणभवतायत्समुत्पिताह चाचयेवा सकनत्रिपय
कारनिर्दारणे वा ॥

आत्मप्रजाविभव सृष्टीस्तत्र यत्तौ मेतै ॥ साक मक्तै रगति सुगततुष्टि म
हितमेव ॥१॥

सामूना स्वत एव समतिरिह स्यादेव भक्त्याग्निना मालोच्य प्रथनभ्रमच च विदूपा-
मरिमन्थवेदानुर ॥

ये केचि परवृत्त्युपभ्रुतिपरास्तानर्ध येमत्कृति मुयोपीक्ष्यवदत्ववय मिहचेसावा-
सनास्यास्यति ॥१२॥

एष स्यामहमत्प बुद्धि विमात्रोप्ये कापिकोपिभ्रुवम् मध्ये भक्तजनस्य मन्कृतिरिय
नस्यादवनास्पद ॥

किं विद्याधरपा किमु बलबुद्धा किं पारया किं गुणा ॥ रतत किं सु दर मादरेण
सदिकैर्नापीयततमधु ॥१३॥

इत्येषा बहुयन्त कृतवता श्री भक्ति रत्नावली वृष्टीत्यैवतध्वस प्रकृतितात्क्रीत
मालामया

यत्र श्रीवरमंत मौक्तिलिखते नूनाधिकं यन् भूतं तत् जंतुं स्वधियोर्ह्यस्वरचना,
लघ्वस्यमे चापलं ॥१८॥”

२—ग्रंथकार ने ग्रन्थ-रचनाकाल और स्थान के संबंध में—“महायज्ञशर प्राणशशके
गुणते शके फाल्गुणे पक्षस्य द्वितीयाया सुमगने ॥१५॥

वाराणस्थामहेशस्वमन्त्रिवैहरिमंदिरे ॥ भक्ति रत्नावली मित्रा साहिता कालि-
मालया ॥१६॥

इति श्रीमत्पुरुषोत्तमचरणारविन्द कृपामकरंदविदु प्रोन्मीलितविवेकतर सुमत
परमहंसविष्णुपुरी त्रीथीताया श्री भागवतामृताविलम्ब श्री मद्भगवद्भक्तिरत्ना-
वल्या भगवत्शरण नाम त्रयोदश विरचनं ॥१३॥ संपूर्ण ।

“शुभमस्तु मंगलं ॥” लिखा है। इससे प्रतीत होता है कि ग्रंथकार बनारस के
निवासी थे।

३—ग्रंथ की भाषा यत्र-तत्र ठीक नहीं है। व्याकरण की अशुद्धियाँ तो हे ही साहित्यगत
दोष भी हैं। यह ग्रंथ श्रीमद्भागवत के आवार पर लिखा गया है, जैसा कि
ग्रंथकार ने स्वयं स्वीकार भी किया है। नारद, शुकदेव, ब्रह्मा, नारायण, व्यास,
शुकदेव आदि के परस्पर वार्तालाप, प्रश्नोत्तर आदि के रूप में, दार्शनिक
चर्चाएँ हैं। ग्रंथ अनुसंबन्ध है।

४—लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है। प्रतीत होता है ग्रंथ में विशेष अशुद्धियाँ लिपिकार
के प्रमादवश हे। ग्रंथ को समाप्त करते हुए लिपिकार ने लिखा है—“लिखितं
देष्याव श्री प्रेमदान ॥ शेई पठित ॥ शन्ममत अठारस ॥१८॥ अठारस १६८॥
चैत्रमासे शुक्ल पक्षे रामनवम्या जनीवाररे ॥ श्रीमते भगवन्निम्बार्कार्य नमोनम
श्री राधाकृष्णाभ्या नमः ॥”

५—यह ग्रंथ श्री कबीर मठ, तेघड़ा (सुंहर) के माधुजी के नौजन्य से प्राप्त किया।

[२३] व्याकरण और छंद—ग्रंथकार—X। अवस्था—अच्छी, देशी भागज। पृष्ठ—१०।

प्र० पृ० प० लगभग २५। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—X।

प्रारंभ—‘श्रीमते रामानुजाय नम वदे ब्रह्मा शिवं वदे वदे देवीं मरस्वती लक्ष्मी वदे हरिवादे
वन्दे सिद्धार्थ देवता

सूत्रसप्तमत्तंयस्म वदौ साक्षात्परस्वती २ नुभूतिस्वरूपाय तस्मै श्री गुरवेनम २

अल्पाक्षर मयादिग्वं मारवद्विद्वतोमुख अस्तोम्यमनवद्यं च मूर्त्तं मूर्त्तविदो विदु ३

मजा च परिभाषा च विविर्नियम एव च प्रतिषेधो विकारश्च पट्टिनयं नूत्र लक्षणं ८

अतिदेशोनुवादश्च विभाषाच निपातन एतच्चतुष्टयं शिक्षा दशवाकैश्चिदुच्यते ५”

अन्त—“आयोत्तराद्दं तुल्यं प्रथमाद्दं मपि प्रयुक्तचेत् कामिनि तामुपगीति प्रकाशयते महाकवय

५ हे अमृतवाणि अमृद्वाणी यस्या सा अमृतवाणी तस्या सवोधने हे अमृतवाणि

तदानीं तस्मिन्काले छंदोविदः छंदशास्त्र

वेत्त तानीति भाषंते तदानी कदा यत्र तस्मिन्काले आर्यापूर्वाद्दं समपूर्वे च तदद्दं च

पूर्वाद्दं आर्याया

॥४२॥ मया ते कथितं राजन् पवित्रं पापनाशनं ॥ कीर्तयस्व महाबाहो
गर्जेन्द्रस्य महात्मन ॥४३॥
चरितं पुण्य कर्माणि पुष्करं वदते यश ॥ प्रीतिमा—”

विषय—भक्ति (स्तोत्र)-साहित्य ।

टिप्पणी-१-यह पुस्तिका महाभारत का ही एक अंश प्रतीत होती है । इसके प्रारम्भ का अन्त में ग्रंथकार, लिपिकार और समय आदि का निर्देश नहीं है ।

२-ग्रंथ की लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है । ग्रंथ मोनपुर के कवीर-मठ के महंत जी की कृपा से प्राप्त हुआ है ।

[२५] भागवत-तत्त्व-सार-सदीपन—ग्रंथकार—× । लिपिकार—× । अवस्था—प्राचीन
हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ—६६ । प्र० पृ० पं० लगभग—२६ ।
भाषा—मंस्कृत । लिपि नागरी । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।

प्रारंभ—‘ हे मुने पुरातीत भवेपूर्वस्मिन् यन्मनि अक्षवेदत्रयिना ऋष्याञ्चन दास्या
पुत्र इतिशेष पुत्रोभव मोहं प्राशुपवर्षाकाले निर्निवीक्षता योगिना
भगवत्पादारविदशरणं योग्येषामस्तीति योगिन तेषाप्रपत्तियोगिना
शुभ्रूपेण स्वामिनी निस्नपित बालक एवतौ द्वर्जैरनुमोदित तेषाशरणा-
गतयोगिना उद्धृष्टलेपाभंसकृत्स्नं भुंजेत्यतस्मात् अपातकिनिय
अस्मिन्कल्पेन ह्यपुत्रोस्मीत्यर्थं श्री नारद अहंपूर्वजन्मनिप्रपन्न प्रसाद ।”

अन्त—“मार्कंडेय. सीसान्नाकार भगवतंचरदं वरमप्रार्थ्यपरमपद मस्ययाचितो
भूत्वातत्पादारविदशरणं गत्वाप्रपत्ति रेवपरमपदं ददातीति प्रपत्यनुबंधान
मेवचकारतस्मात् प्रपन्नाना भगवतपरमपदं तयाचितव्यंप्रपतिरेवपरमपदं
ददातीतिप्रपत्यनुबंधानमेवकर्तव्यं अस्मिन् प्रबंधे यत्र यत्र देवादय-
ऋषय राजान. भगवतं शरणवदते तत्रतत्रते द्वयमंत्रोच्चारणं जग्युरिति
वेदितव्यं तैश्चारणजग्युरिति वेदिव्यं तेषाशरणं मंत्रं सी वेदव्यास
रहस्यमत्रस्य प्राकृतनोचितमिति शरणं पपावितिश्लोकूपेण कृतवान्
तर्हिचेत् प्रह्लादादयः विभीषणादयः दुर्वासादयः मार्कंडेयनारदादि ।”

विषय—भक्ति-काव्य ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ श्रीमद्भागवत महापुराण की टीका है । ग्रंथ के खरिडत होने के कारण (प्रारम्भ और अन्त के पृष्ठ फटे होने से) ग्रंथकार, लिपिकार तथा रचनाकाल, टीकाकाल और लिपिकाल का पता नहीं चल पाता है । टीका की भाषा और शैली प्राचीन एवं अपरिष्कृत है । ग्रंथ की लिपि स्पष्ट और साफ है । किन्तु अक्षरों से लिपि की प्राचीनता स्पष्ट प्रकट होती है । यद्यपि काल निर्देश का अभाव है, तथापि पोथी लगभग एक सौ वर्ष की प्राचीन प्रतीत होती है । यह पोथी श्रीअवधेन्द्रदेव नारायण, दहियावाँ, छपरा से प्राप्त हुई है ।

[८६] राशि शास्त्र और स्तोत्र—प्रथकार—X। निरिकार—X। अक्षरस्था—प्राचीन देशी
कागज। पृष्ठ-५०—३७। प्र पृ० ५० लगभग—३२।
भाषा—संस्कृत। निधि—नागरी। रचनाकाल—X। निधिकाल—X।

प्रारम्भ—“श्रीगणपतिजयति ॥ यस्तस्यात्रपुलाकाप्यति ॥ यत्स्यसागराणामिति ॥
यत्सत्य कृष्णधनूनामात्रे ॥ ऊँ नमो भगवात कूर्मादिनीत ॥ महादव
नमस्कृत्यति ॥ एवमनन मत्र पाठास्ति तस्याक्षरस्यसप्तवारजपेत् ॥ तत
गुडमानस सप्तवारत्रयमत्र निपातयेत् ॥ तत शुभशुभ्रयाशाश्रकार्या
विचारणा। तस्यपुत्र निपतति य श्रद्धासम्विता भक्तियुक्तो
भवति तथाहि ॥१११॥
५८ पद पदचैव पातत शोभनस्तदा ॥ शुभ द्रु हरयत तत्र सर्वांगभेपु
वितित ॥ सचार्थताभावा व्यवहार समागमे ॥ शोभनचैव वक्तव्य
होराज्ञानस्यचित्तै ॥११२॥ पद ५८ द्विक चैव ॥

अन्त—“सुवन चद्रकातनमहनीसै शिरोरुहै ॥
पादाभ्यापघणभ्यारजेरत्ननयीवसा ॥११५॥
तद्रक्षत्र यदिमुदिताशशिक्रयान्चेत् स्मितका मुधा
तच्चद्रु यदिज्ञरित कुवलयेस्वारवेदिगरोदिव मधु ॥
पिक्त दपधनुत्रु वीर्यादचतकिवावदुमूहे ॥
यत्सत्यपुनरुक्तवप्रविमुम सर्गक्रमावेधस ॥११६॥
शौरम्यमृगलाह्वनयादमवेदिनीवरवक्त्र ॥ ता
माधुर्ययादवि मेतरलनार्कदर्चापायदि ॥
रमायां यदिविप्रनीपगमनप्राप्तोपमानतदा ॥
नद्रक्षत्र तदीचणनदघरस्तदुभ्रस्तस्त्रुग ॥११७॥
यतोयतोगादपयातिकचुकम्नतस्तत स्वणमरीचवीचय ॥
यता यताभ्यानेननि दृश्य ५१तस्त म्यामसराणवृष्य ॥११८॥
अकृशानेर्ब भागचाम मध्यसमुन्नर्न कुचयो ॥
अयायतनयनयामम जीवितमतदायाति ॥११९॥
आभ्याजप्रु दीता विज्ञाननाद्रुतेन यात्रयता ॥
उपकृष्टिगा विधाया बाण कमस्य विपदग्घा ॥१२०॥
वेदी विद्वेष मत्तमपुनगालीमगाकराति गुणमैदवमास्यमस्या ॥
बाहू मृगाननर्तिकाश्रियमाश्रयतपु खानुपु खयति कामशरान्कृत्वा ॥२१॥
तदात्तगम्यविमानैविग्रमविनेपनामादमुच स्पुरद्रुष ॥
दरस्पुररुक्ताचिनहनधीलामुग्गनभ्यनिशौरभयति ॥२२॥
द्रुपन्तवधनुर ।

विषय—दाम्य ।

टिप्पणी—१—यह ग्रन्थ संस्कृत-साहित्य के नायिका-भेद से मर्धावत प्रतीत होता है। खण्डित तथा अन्त के पृष्ठ के नहीं होने के कारण ग्रंथकार और लिपिकार के नाम आदि का पता नहीं चलता है। ग्रन्थ के बीच में भी कहीं ग्रन्थकार ने अपने विषय में उल्लेख नहीं किया है।

२—प्रथ सुपठ्य है। इसमें नारी के विभिन्न अंगों का बड़ा ही सुन्दर और साहित्यिक वर्णन किया गया है। जैसे—पृष्ठ ३३ में—

“अथरोमावली ।

गंभीरनाभिद्रुमसनिधाने रराज नीला नवरोमराजी ॥

सुखेंदुभीतस्तनचक्रवाकद्र द्वोज्ज्मताशैवलमशरीव ॥१६॥

लावण्यानृतमंपूर्णानाभिकूपात्प्रवर्तिता ।

रंजे कुल्येव रोमाली सेकुं यौवनकाननं ॥७॥

अथनाभिः ॥

मन्ये समाप्त लावण्य रसगर्भेनृगीदृशा ॥

अपूरयन्वेगवतो नाभिरंध्रं चतुसुखे ॥८॥

कुचकुंभौ समालव्य तरती कातिका निम्नगा ॥

प्रमादतस्ततोत्रष्टादृष्टिर्नाभौ निमज्जति ॥९॥”

एक स्थान पर और भी देखिए कि कवि ने कैसा वर्णन किया है—

“अथ स्त्रीसेवाप्रकारः ॥

सेवनं योपिता कुर्याद्बुधोबुद्ध्या यथाक्रम ।

बालरूढ़ातियोगयानानृतरागविभावनात् ॥१॥

बालेतिगीयतेनाम यावद्वर्षाणिषोडश ॥

तस्मात्परंचतसृणीयावतस्त्रिंशतिर्भवेत् ॥२॥

तदूर्ध्वमतिरूढास्याद्यावत्पंचाशत् भवेत् ।

शृद्धा तत्परतो ज्ञेया सुरतोत्सववंचिता ॥३॥

निदाघशरदोर्वालापथ्यापर्यंकणो भवेत् ॥

हेमते शिशिरं योग्या प्रौढा वर्षावन्तयोः ॥४॥

नित्यं वा सेव्यमानापि वातावर्षयतेवलं ॥

चय नयति योग्या स्त्री प्रौढा जनयते जरा ॥५॥”

पूरे ग्रंथ में नारी-सम्बन्धित कामशास्त्र की चर्चा की गई है। प्रतीत होता है, यह रतिशास्त्रविषयक कोई रचना है। इसमें रघुवंश कुमारसंभव तथा शिशुपालवध आदि के भी श्लोक उद्धृत हैं।

३—प्रथ की लिपि स्पष्ट, किन्तु प्राचीन है। यह ग्रंथ प्रो० श्री भागवत प्रसाद जी, एम्० काम०, गया कालेज, गया से प्राप्त हुआ।

[२७] महाभारत और भागवत के मिश्रित रस—प्रथकार—X। लिपिकार—X।
 अवस्था—प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ-सं०—८५। प्र० पृ० प०
 लगभग—३२। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X।
 लिपिकाल—X।

प्रारम्भ— जुका यदाह भगवविष्णुरातापशखेत
 सौख्याणामासिनामिना नावसाते सप्तक ॥२७॥
 तथा नामानि कर्माण्य सयुक्तानामधीश्वरै ॥
 ब्रूहि न श्रद्धधानान्ना म्रह्मसूर्यस्मिनो हर ॥२८॥
 मूल उवाच ॥ श्रनाद्य विशया विष्णोरात्मन सर्वदेहिना ॥
 निर्मिता लोकषु परिवर्तते ॥२९॥
 एक एवहि लाकाना सूर्य्य आत्माहृद्दरि ॥
 सर्ववेदक्रियामूल भूमिभिर्बहुधादित ॥३०॥
 पातो देश क्रिया कर्ता कारण कार्यस्यागम ॥
 द्रव्य फलमिति ब्रह्म तववोक्तो जुषा हरि ॥३१॥'

अन्त—' तावाप्यमाणा पतिभि पितृभिर्भ्रातृवधुभि ॥
 गाविंदापहृतात्माना न यवत्त मोहिता ॥
 अतर्ग्य हगता कारिचद्गोप्योलध्वावनिर्गमा ॥
 कृष्णं तद्भावनायुक्तादप्युर्मालितलोचना ॥६॥
 दुःसहभ्रं प्रविरहतीवतापधुनाशुभा ॥
 ध्यानप्राप्ता युतास्नेप निष्ट त्यात्माणमगला ॥१०॥
 तमेव परमात्मानाखुद्म्यापिसगता ॥
 जहृगुणमय देह सय प्राचीण बधना ॥११॥
 राजावाच ॥ कृष्णं विदु पर कान नतु ब्रह्मतया मुन ॥
 गुणप्रवाहा परमस्तासा गुणाधिया कथ ॥
 श्री शुक उवाच ॥ उह पुस्तादेतत्ते चय सिद्धि मयागत ॥
 द्विपन्नपि हृषीकेश किमुताप्लावजप्रिया ॥१३॥
 नृणानि त्रैलोक्यार्थाय यकितभगवतो नृप ॥
 अत्ययस्याप्रमेयस्य निगुणस्य गुणात्मन ॥१६॥'

विषय—भक्ति काव्य ।

टिप्पणी—इस प्रथ में अनेक छाटे-छोट उपप्रथों का संग्रह है। उपप्रथ क प्रारम्भ और अन्त क अश खण्डित होन क कारण इसक नाम का पता नहीं चलता। इसी प्रकार प्रथकार और लिपिकार के नाम का भी सकत नहीं मिलता है।

पूरे ग्रंथ में निम्नलिखित उपग्रंथ हैं—(इनके पृष्ठ भी अलग-अलग हैं, किन्तु नये कम से पृष्ठ दे दिये गये हैं ।)

१—निम्बादित्यप्रमाणपद्धति	१ पृष्ठ से ३ पृष्ठ तक ।
२—ननत्कुमारसंहिताया सरस्वतीस्तोत्रम्	४ पृष्ठ से ५ पृष्ठ तक ।
३—रहस्य-मीमामा	५ पृष्ठ से ६ पृष्ठ तक ।
४—मुदर्शनतत्रे रगदेवीस्तवराज	६ पृष्ठ से ७ पृष्ठ तक ।
५—महाभारते शतसहस्रसंहितायाभीष्मस्तवराज	७ पृष्ठ से ८ पृष्ठ तक ।
६—ब्रह्मतंत्रेब्रह्मप्रोक्तम् महादेवपार्वतीसवादे श्रीरार्धकाशतनामस्तोत्रम्	६ पृष्ठ से १३ पृष्ठ तक ।
७—गुरुदेवस्तोत्रम्—ब्रह्मोपनिषद्	१३ पृष्ठ से १५ पृष्ठ तक ।
८—महाभारते श्रुतुस्मृति	१५ पृष्ठ से १८ पृष्ठ तक ।
९—सुदर्शनकल्पे रगदेवीकवच परममन्त्रम्	१८ पृष्ठ से २० पृष्ठ तक ।
१०—महाभारते शांतिपर्वणि विष्णुनामसहस्रकं	२० पृष्ठ से २२ पृष्ठ तक ।
११—निम्बादित्याचार्यविरचित प्रातस्तवम्	२३ पृष्ठ से २६ पृष्ठ तक ।
१२—गुरुकवचस्तोत्रम्	२६ पृष्ठ से २७ पृष्ठ तक ।
१३—रामनारायणप्रभासित गुरुकवचम्	२७ पृष्ठ से २८ पृष्ठ तक ।
१४—गोतमोतंत्रे गोपालहृदयस्तोत्रम्	२८ पृष्ठ में ।
१५—बिल्वमंगलविरचितम् गोविदस्तोत्रम्	२९ पृष्ठ से ३१ पृष्ठ तक ।
१६—श्री सुकुन्दमहिम्न	३२ पृष्ठ से ३३ पृष्ठ तक ।
१७—विष्णुमहिम्नस्तोत्रम्	३४ पृष्ठ से ३६ पृष्ठ तक ।
१८—निवामाचार्यविरचित लघुस्तोत्रम्—निम्बादित्यप्रोक्ता चतु श्लोकी	३८ पृष्ठ से ३९ पृष्ठ तक ।
१९—निम्बार्काचार्यविरचितम् कृष्णस्तवम्	४० पृष्ठ से ४३ पृष्ठ तक ।
२०—भागवतमहापुराणे द्वादशस्कन्धे द्वादशोऽध्याय	४४ पृष्ठ से ४५ पृष्ठ तक ।
२१—काशीखंडे अन्नपूर्णापञ्चरत्नम्	४६ पृष्ठ से ४७ पृष्ठ तक ।
२२—निम्बार्कशरणपतिचतुष्क	४७ पृष्ठ से ४८ पृष्ठ तक ।
२३—भागवतमहापुराणे द्वादशस्कन्धे आदित्यव्यूहविचरण- नामैकादशोऽध्यायः	४९ पृष्ठ से ५० पृष्ठ तक ।
२४—ब्रह्मगायत्री	५० पृष्ठ से ५३ पृष्ठ तक ।
२५—पद्मपुराणे महालक्ष्मीस्तोत्रम्	५४ पृष्ठ से ५६ पृष्ठ तक ।
२६—भविष्योत्तरपुराणे निम्बार्कब्रह्माडस्वाभिप्रादुर्भाव	५६ पृष्ठ से ५७ पृष्ठ तक ।
२७—भागवतमहापुराणे दशमस्कन्धेभगवन्वेषणानामत्रिंशोऽध्याय- पृष्ठ ५८ में ।	५८ पृष्ठ में ।

- २८—स्कन्दपुराण नवप्रहरताम्रम् पृष्ठ ४८ से ५६ पृष्ठ तक ।
 २९—भागवतमहापुराण चतुर्लोकभागवतम् पृष्ठ ५६ से ६६ पृष्ठ तक ।
 ३०—निवासाचार्योक्तचतुर्भूईस्ताम्रम् पृष्ठ ६१ से ६४ पृष्ठ तक ।
 ३१—सुदर्शनचित्रम् पृष्ठ ६४ में ।
 ३२—स्तोत्रसंघम्—निम्बार्कमंगलाष्टकम्—व्यानदेवराजामंत्र
 रात्रस्वरूपा पृष्ठ ६४ से ६६ पृष्ठ तक ।
 ३३—नक्षत्राक्षरम् पृष्ठ ६७ से ६८ पृष्ठ तक ।
 ३४—निम्बार्कप्रमाणपद्धति—(क० स० १ का शेष) पृष्ठ ६६ से ७१ पृष्ठ तक ।
 ३५—विष्णुसहस्रनाम पृष्ठ ७० में ।
 ३६—भागवत महापुराण द्वादशस्कन्ध प्रवादशाब्दाय पृष्ठ ७३ से ७५ पृष्ठ तक ।
 ३७—भागवतमहापुराण द्वादशस्कन्ध रासक्रीडावर्णनम् ७५ पृष्ठ से ७६ पृष्ठ तक ।
 (इन्में निम्नो है—स० मन् १८७१ ॥ शुभमस्तु ॥)

इस ग्रन्थ की शिष्ट में पृष्ठ ३४ पर उधर हो गय है । प्रथम ५ ३७ क अन्त में निर्दिष्ट
 सक्त् लिपिकाल का है । निधि २१४, किन्तु प्राचीन है । लिपिकाल १६ वीं शताब्दी है । प्रथ
 अनुसंधेय है ।

यह ग्रन्थ भी कानरनाथ जी चारगिया (गया) क साजय से प्राप्त किया । प्रथ बिहार
 राज्यभाषापरिषद् क सहायत्व में सुरक्षित है ।

[२८] रत्नमालिका—संस्कार—श्री बंदात भावनाचार्य । लिपिका—X । अक्षर—
 प्राचीन, हाथ का बना दही कागज । पृष्ठ ५—६४ । प्र पृ ५६
 लगभग—२८ । भाषा—संस्कृत । लिपि—जागरी । रचनाकाल—
 मागरीय, कृष्ण छतमी से १८०७ वि० ।

प्रारम्भ—“व्यादाविदानेदवाद्यया जी सन्नागिण्य आचारतत्पादाविद्व इत्य
 सभतकस्य भग्दावशय न विदुमहेत्यथ एव प्रकारण भागवतीपु
 शारदगतामुत्तरीषु भगवन् धी कृष्ण एककालीय शरणागतान भवति
 तदपि शरणागताना श्रिया यचिति विद्वत् चरमशास्त्रागतस्य
 कृतस्य अत्राय इति धीपशुभुसुभ्य पधीता यव वैष्णव मन्त्र तनैवत
 प्रवर्तन्तिनिदिम्ना परमममिति ६१ शायार्थ विराथ भवती तदिद्विचिते
 निषाय भागवतस्य पराधिनमस्तिनागशास्त्रस्य अनन जी शरणगति
 धरन्त्यति पुत्रविश्रमृत्तनेवकादय भगवन्तराद्य प्रान् पतिरव
 मार्पादा रचित भवति विद्वत्तमना इत्युक्तन शरणागतस्य शर
 पुरा शरणे गच्छन्तु पुत्र मन्त्रकृतनेवकपरवादय
 मन्त्र रक्षण प्रत्य परमपदं कर्तुं कर्तुं कर्तुं ।

अन्त—“गृहस्थमन्यामलक्षणा च रहस्यत्रयार्थज्ञान भक्तिवैराग्याणि च श्री
 वैष्णवपादरजो वैभवं च श्री पादतीर्थभवं च श्री वैष्णवाचाराश्च प्रपन्ना-
 चारोश्च एकातिनामाचाराश्च परमैकातिनामायाराश्च अन्याश्रमस्य संपंच
 श्रवयुताश्रमस्य संपंच विशद्रीकृत शोधनेकृते मति प्रकाशयति श्रीमद्रामानुज
 मुनिचरणारविद्व्यानाल्लक्ष्मणानिन श्रीरुदाल भावनाचार्याभिवानोऽहं
 एता शरणागतरत्नमालिका श्रीमहाभागवत पुराणे आलोडय श्रीवेद
 व्याममुनिना यथा कृष्ण तथैव कृतवानस्मि एषा शरणागतरत्नमालिका
 श्रीवैष्णवाना प्रपन्नाना अनुदिनमनुसंधेया अस्या अनुमवानमात्रेण अस्तु
 इत्युक्तपरमार्थिकशरणागतनिष्ठा भूत्वा भगवत दिव्यश्रीपादार
 विंदानदंष्ट्रा देहाते परमपदं प्राप्नोति श्रीनिवासाग्निशुद्धं
 श्रीरगगुरुमाश्रये १ श्री रामानुजाचार्य दिव्याजा प्रतिवासरमुज्ज्वला
 दिगंतव्यापिनी भूयात्साहिलोऽहितैषिणी २ नखेरीवर्द्धताकान्तेवर्द्धतु
 वामव श्रीरगनाथोजयतु श्रीरग श्रीश्चवद्धता ३ श्रीमन् श्रीरग
 श्रीयमनुपद् वामनुदिनमवद्धे ४ अज्ञ सर्वज्ञहेरिसक्तिमर्वशक्तिन्कारुणिक
 ५ सापराधत्त्वत्परतंत्रं स्वर्तंत्रं परिपाहि श्रीशैलपूर्णाशोवदुग्धमिधु
 सुधाकराय ५ सुधाकरात्माश्रयत्येपनारायण देशिकार्य्य वदेद्यदावेकद
 देशिकेऽं श्रीमद्वादिभयंकरगुरवेनम ६ श्रीमतेरामानुजायनम ।”

विषय—भक्ति-काव्य । वैष्णवमत-सम्बन्धी सैद्धान्तिक विवेचन ।

टिप्पणी—१—यह ग्रंथ किसी वैष्णव मत के सिद्धान्त-सम्बन्धी ग्रन्थ की टीका है ।
 इसमें यत्र-तत्र अन्य दार्शनिक तथा श्रीमद्भागवत-सम्बन्धी प्रमाण दिये
 गये हैं । ग्रन्थ अनुसंधेय है ।

२—ग्रन्थ में ग्रंथकार का नाम नहीं है, किंतु अन्त के ‘श्रीकंदालभावनाचार्य्य-
 भिवानोऽहं एता’ आदि वाक्य से प्रतीत होता है कि कोई कदाल-
 भावनाचार्य्य नामक वैष्णव ने भागवत पुराण के आधार पर लिखित
 ग्रन्थ की ‘रत्नमालिका’ नाम की टीका की है । टीका की शैली प्राचीन
 तथा असम्बद्ध है ।

३—ग्रन्थ के लिपिकार ने अपने नाम का उल्लेख नहीं किया है । ग्रन्थ की
 लिपि स्पष्ट तथा प्राचीन है । लिपि-शैली मध्यकालीन मानूम होती है ।
 यह ग्रंथ श्री श्रवणेन्द्रदेव नारायण, दहियावाँ (छपरा) के सौजन्य
 से प्राप्त हुआ ।

[२६] नैषध-चरित-टीका—ग्रंथकार—श्री हर्षकवि । टीकाकार—श्री ८० नारायणजी ।
 लिपिकार - X । अवस्था—प्राचीन हाथ का बना देशी कागज ।
 पृष्ठ-सं०—१२८ । प्र० पृ० पं० लगभग—२२ । रचनाकाल—X ।
 टीकाकाल—X । लिपिकाल—X । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी ।

प्रारम्भ— 'महेति ॥ नाम प्रमिद्धो साधव स्वनामना ददते कथयति । इहरी महाजना नामाचारपरम्परा यत । अत कारणात् तत्स्वनाम अभिधानु वक्तु नारसहेनछामि । हुल कथित नाम न कथनीवमित्यर्थ । अत्र हतु किल यस्मा ज्ञन आचारमुच पुरुष पुनविगापयति निंदति । अतो न कथयत इत्यर्थः । आत्मनाम गुणनाम नामापि कृपणस्यच । आयु कामी न गृह्णीयाज्ज्येष्ठापयकनत्रयारिति सदाचारामूल । आददते आहा दो नाम्नाविहरणे इति तद् ॥१३॥ 'प्रद इति अमनलाऽद पूर्वोक्तवचनमालप्याकृत्यानुष्णीवभूत् । किमुज शारदो निपुण द्विधाप्रदावाऽनयाहता शत्रवस्तैपामपकारक । क इव शारद शरत्सर्वा शिखीव मयूरहता । यथाहीना सर्पाणा ताप करानि एष भूतामयूर प्राग्नि स्त शृत्वा शरदि मूची भवति । अग्नतरच ।'

अन्त— 'मदन्त्येति । ममअयस्मनत्व यतिरिक्तापवरायानत्कृतृ कानन प्रति चहिरयपितुनिवागेनत्याक्पनार्शकृतर्क एषा तावत् कपनास्वनीयते दिवे दिवे चेतहित्व निशापि रात्रेपि मोमाच द्राहितरोय कात प्रियस्तस्य शका अस्थवेदस्य अत्रे सरपुरावर्ति न्द्वेदस्यात्रेसर आदौ ओंकारो भवति रात्रेश्चद्रादय काता न तथा नलातिरिह्य ममेत्यर्थ कानृ काननवा अत्रेसर पुरोप्रतोप्रेषुसर्तिरिति अजायदतमितिपूवनिपात शृत्वाप्रशब्दस्य परनिपातकरण सप्तम्येकवचनन दतत्वार्थ यूथ तदप्रसरमित्यादय प्रयोगाचाप्रत सरति अप्रेषेवेति समर्थनाय ॥ शरोजिनीति हे हस सराजिन्या कमलिना मानसराग अत करणानुराग स्तस्य प्रतो मद्भावस्वस्थिने अनर्केश मूर्यादयेन सह सपक् सवप्य अतर्कयित्वा अविचार्य तवेयं ममान्येननलव्यक्तिरिक्तेन पाणिप्रह परिणयस्त ।

विषय—ऽऽत काव्य ।

टिप्पणी—यह प्रथम प्रमिद्ध 'नैषध चरित -काव्य की टीका के रूप में लिखा गया है । टीकाकार न सर्गों के अन्त में कपना परिचय निम्नलिखित शब्दों में दिया है— इतिथी वेदरकरापनामधीमधरसिद्धिद्वितामजनारामण शृत नैषधीय'कारो तृतीय सर्ग । शुभमस्तु ॥ टीका का 'नैषधीय प्रकार' नाम है । टीका अच्छी है । इसमें व्याकरण की टिप्पणियों भी यथामान दी गी हैं । टीका का शैली प्राचीन है । प्रथम की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन है । प्रथम मंडित है । प्रारम्भ के पृष्ठ पर हान के कारण प्रारम्भ की पंक्तियों पृष्ठ-० ५ से दी गई हैं । सभी सर्गों की पृष्ठ-गणना पृष्ठ-० पृष्ठ-० दी गई है । इसमें १, २,

६, ७, ६, १०, ११, १६, १७, १८, १९ प्रौर २० वों सर्ग नहीं है। जो सर्ग है, उनके भी पृष्ठ बीच-बीच में कटे हैं और कुछ तो विच्छेद नहीं हैं—दूसरे सर्ग में केवल पाँच ही पृष्ठ हैं। पूरे पृष्ठ मिलने पर हम ग्रन्थ की एक अच्छी टीका का उद्धार हो सकता है। यह ग्रंथ श्रीश्रवधेन्द्रदेव नारायण, दम्बियावों (छपरा) के मौजन्व ने प्राप्त हुआ।

[३०] रामकृष्णकाव्यम्—प्रथमः—×। लिपिकार—×। अवस्था—प्राचीन, देशी कागज। पृष्ठ-सं०—४०। प्र० पृ० ५० लगभग—२०। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—×। लिपिकाल—×।

प्रारम्भ—“श्री रामतो मव्यमतोदिवेनवीरोनुजम्प्रवतीवगटा नारावतीवग्गवशं-
निषेधी नचेदितो म यमतोमरात्री. = ॥५॥ (मूल) अथमायापलस्य
समन्व रथातु न शकनोतीति शद्वातुमधानेन मायातिरस्कारादत्युक्त
तन्त्रान्मजाने महानामन श्रीगमनेनाप्रातुविद्याप्राप्ती तप्राप्तिकालम्बजान
निराशादति विपमाया रथेन्द्रज्ञयाह श्री रामदुतिवा दत्यर्थं वामनुष्मा-
वृषीर. येनानिश श्रीरामतोम यमतो श्रीरामतो निमित्तभूताश्रद्धं मध्यं
श्रवनी समानं प्रपंचारयं श्रनोदिनाशिनं न एव धीर इत्यर्थं । किं भूता
श्रीरामत- वश्यवतीचरान् वश्यंनेतु समर्थम् । वश्यंरूपं तद्वतीजानकी
तस्या वरान् । (टीका)”

अन्त—“समवश्यमवंचयेकहेतोस्मितसत्तेशविधास्थतोस्सहार्धम् ॥ रिपुराध..
प्रकृतिप्रत्ययोरिवानुवन्व ॥ अथदीपितया ।”

विषय—काव्य । जीवन-चरित्र ।

टिप्पणी-१—यह ग्रंथ महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। मूल ग्रंथ श्री रामकृष्ण-काव्य है और साथ में ग्रंथ की टीका भी है। राम और कृष्ण के जीवन पर मुक्तक रचना की गई है। संस्कृत-साहित्य में इन नाम की तथा इस प्रकार की किसी अन्य रचना का पता नहीं है। ग्रंथ विवेच्य और अनुसंधेय है।

२—ग्रंथ की लिपि अत्यन्त अस्पष्ट और प्राचीन है। गड़ित होने के कारण ग्रंथकार, टीकाकार तथा लिपिकार के न तो नाम का ही पता चलता है और न रचनाकाल या लिपिकाल का ही। ऐसा प्रतीत होता है कि यह ग्रंथ अवश्य १७ वीं-१८ वीं शताब्दी में लिखा गया है। यह ग्रंथ श्रीश्रवधेन्द्रदेव नारायण, दम्बियावों (छपरा) के मौजन्व से प्राप्त किया।

[३१] सिद्धान्तचन्द्रिका—प्रथकार—श्री रामाऽमाचाय । लिपिकार—गुरुप्रसाद दीक्षित ।
 अवस्था—अऽली, प्राचीन दशै कागज । पृष्ठ सं०—१६ । प्र पृ० ५०
 लगभग—२० । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी ।
 रचनाकाल—X । लिपिकाल—वैशाख, वदी पचमी ४० १६२१,
 मंगलवार ।

प्रारम्भ—‘श्री गणेशाय नमः कृत्कतरि वक्ष्यमाण प्रत्यय कृत्सञ्जक स च कर्तारि
 तृणुगौ घातो यक्ता कृत वसादे इ इत् भविता कुट् कौत्ल्ये कुत्लि
 गोपायिता गापिता गोसा संहिता सोऽपि एपिता एडा युषोरनाकौ याचक
 पाचक भावक दापक घातक जायत जनयातवा जनक जनिक्ष्योर्न
 रुदि घन्क मातस्यसेगेनवृद्धि दरिद्रायक कोऽक रामक
 नियामक ।

अन्त—“भावनाशार्थप्रत्ययातेव्यर्थेकृत्वोत्कारणमौ नानाकत्वानानाकृत्य गत नाना
 क्त्वा नानाकार विनाकृत्य विनाक्त्वा विनाकार नानाभूतानाम्त्वा
 नानाभावन् एकधाकृत्यएकधाकृत्वा एकधाकार अनकद्रव्यमेकभूत्वा
 एकधा भूयएकधाभूत्वा एकधाभाव प्रत्यय ग्रहणोक्तिहिसाकृत्वा तुष्णीं
 ऽदेभुव त्कारणमो तुष्णींभूयगतऽतुष्णींभूत्वातुष्णीभाव अवकशब्देभुव
 त्कारणमो अनुकृतागम्ये अवग्भूयास्ते अवग्भूत्वा अवग्भाव अवग्रत
 पारैत पृष्ठतोवानुकूलोभूत्वास्ते इत्यर्थ अनुकृत्ये किं अवग्भूत्वाति
 पृष्ठतोर्भूवर्थ वर्णोत्कार अकार इकार धकार रादिकोवारेक
 रकार लाकाङ्क्षेपस्यसिद्धिर्यधामतिराऽ ।

इति श्रीरामाऽमाचार्यविरचिताया सिद्धान्तचन्द्रिकायामुत्तरार्द्धं समाप्त
 उभभूयान् ॥ श्री शिवाय नमः श्री सीतापनयेनमः ।

विषय—चाद्रव्याकरण ।

टिप्पणी—यह ग्रन्थ प्रसिद्ध संस्कृत-व्याकरण ग्रन्थ है । अन्त में लिखा है— ‘य
 पोथी शहर बनारस में दिवाकर छापाखान में साक्षीन मोहल्ले भद्रेनी
 कान्नी महल क पास शिवचरन के इहाँ चद्रिकाकृतसहित छापाकल
 गुरुप्रसाद दाक्षित व छापनवाने मातादीन य पोथी जिसको लेना
 हाइ सा चादनीचौक मेडु जगली के फाऽक के पश्चिम तरफ रामचरन
 के दुकान पर मिनेगी श्रीसम्बन् १६२१ मिति वैशाख वदी पचमी वार
 मंगरवार तृतीय ग्रहरे समाप्तम् ।’ प्रतीत होता है, ग्रन्थ का लीयो
 टाप किया गया है, किंतु लिपिकार न ‘व’ के लिए (व) ‘व’ के
 नीचे विऽदु ऽकर और व क लिए ‘य का प्रयोग किया है । ग्रन्थ में
 पूर्णविराम अर्धविराम आदि चिह्न उपेक्षित हैं ।

यद् ग्रन्थ मोक्षमा के गकरवार टोला-निवामी पं० श्री केशवप्रसाद
गर्मा जी के नाजन्य ने प्राप्त हुआ ।

[३२] सिद्धान्तचन्द्रिका—(सुबोधिनो-सहित)—अथकार—श्रीरामाश्रमाचार्य । टीकाकार—
श्री गदानन्द । लिपिकार—X । अथवा अर्द्धी है, हाथ का बना
ट्रेजी कागज । पृष्ठ-सं०—१२१ । प्र० प० पं० लगभग—३६ ।
भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—वैराख
शुक्ल तृतीया, म० १६३५, रविवार ।

प्रारंभ—“ओं श्रीगुरवे नमः । ओं नमस्कृत्य महेशान मतं बुद्धापतंजले
वाणीप्रणीतं नृवाणा कूर्वे सिद्धान्तचन्द्रिका १ अदुःखलुगमाना अनेन
क्रमेणैतेवर्णा ज्ञेया ते च समानमज्ञा स्युः ॥२॥

नैतेपुनश्चेपुनधिरनुमधेयोऽविचक्षितत्वाद्विचक्षितस्तुर्भवंतीति नियमान्
ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदा नवर्णाः । एतेषा ह्रस्वदीर्घप्लुता नजातीया परस्पर
सवर्णा भग्यते ऋलुवर्णा च एकमात्रो ह्रस्व ।

ओं श्री गणेशायनमः पुराणपुरुषंध्यात्वानत्वाचार्हतनायकम् सिद्धान्त
चन्द्रिकाश्रुतिचर्करीवित्तरीमहम् १ विद्यारत्नपगोनिधौखरतराम्नाये
जगत्पूजके । श्रीभट्टारकसंपदगुणगणैः स्तुत्यावरन्पुरायवान् ॥

पूज्यश्रीजिनभक्तिनूरिधिपोवर्षतिविशानिधि । सोयंशीत करायते च
यशसामुरायते तेजसा २”

अन्त—“चार्ये द्वन्द्व इति निपातनात्पुंस्त्वमपि ॥ शेषा निपात्या- क्त्यादयः ॥
का संख्या चेपाते कति दाविक शाशक । दात्यौहः । दार्धसत्र ॥
आयस ॥ इतिश्री रामाश्रमाचार्यविरचिताया सिद्धान्तचन्द्रिकायाम्
पूर्वार्द्धे सम्पूर्णम् ॥

अण् दित्यौहः इट दात्यौहः बहुवौ इत्यौत्व निपातनात् अण् दीर्घसत्रे
भवं दार्धसत्रं अण्थेयसि भवंश्रायस अणिति तद्धित प्रक्रिया । श्री
मत्यानकवर्षे भक्ति विनया विख्यात कीर्ति प्रभा राजेन्द्रैः परिपूजिता-
मुकृतिनः पुंभाव वाग्देवता मंतारोजगता पतिगुण गणैः विप्राजमाना-
सनत् संवेगादियुजो जयतु मतत पडशास्त्रविद्याविद १ तेषा शिष्यः
सदानन्दस्तदनुग्रहभूषितः ॥ सिद्धान्तचन्द्रिकाश्रुति पूर्वार्द्धे चर्करीदिमाम् ॥
इतिश्री सिद्धान्तचन्द्रिकाव्याख्याया सदानन्दकृतो पूर्वार्द्धः
समाप्तिमगात् ॥”

विषय—चान्द्रव्याकरण ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ सप्तम कृत महत्त्वपूर्ण व्याख्या से सवालत है । इसकी लाप पुरानी तथा अस्पष्ट है । यह ग्रंथ माकामा क शकरवार टाना—निवादी धी कशवप्रसा रामा क सौत्र्य से प्राप्त हुआ है ।

[३३] नलोपाख्यानम्—प्रथकार—ग कालिकाव । निषिकार—X । अवस्था—साह्य, प्राचान हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ—४०—१६ । प्र० पृ० ५० लगभग—२० । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । आकार—१२' X ५" । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ—“(टीका) नामानचपाठतानि वार वार श्हीतानिस्त्रामानि गाविदादनी दैस्तपाठनसन्नामान यद्वा यास्मन् मा लक्ष्मी से सनासुनिक । समारनिस्त्रामानसुनिकृष् सनीऽवन्त्यमर तना दरदशांतरवर्तित्व विशिष्टा समीपस्थितति यावत् आसन शत आठ उपसर्ग साह्य अय निरुपसर्ग च पुन पाठत सनामाना भवभावा नस्यु ३

(मूल) —स्मनिदा नव ना सज्जन तानिबुल यथैव दान व नाशम् द्विरदा दाननाश जगयलभत यत सदा नाव नाशम् ४

(टीका)—समाने जनन तनसमूह यता राज श कत्याण लभत प्राप्नोति च पुन जगत् दानवाना दैत्याना नाश श्चु यता लभत कीर्णो जनता सम निदा तवनाग स्तुता धातुल्लुगु नवनं स्तुत निदा च नवन च निन्दा नवन सम निन्दा नवन यस्या सा जगत् कीर्णो सता अनवनाश अनवरक्षण तस्य आशा अनवाशा न विद्यत अवनाशा यस्यतन् अनवनाश यथा अलिबुल कन्व हस्ति सकाराददानवनाश प्राप्नोति दानन दानत्रल तस्य आशय आशस्त्रानराश सार्यमाशयतद्र ४

अन्त—“(मूल) गुप्त महिमा परमात्मभयानल एव य सातना परमाया त्रियया उपरमाया स्वरुपनगुयश्रन अनापरमाया ॥२३॥

(टीका)—गुर्वा एव नल त्रियया भैम्या अमग्रहतस्यपुर स्वनगरमापप्रस्वाद् नामभिधानां सहायै इतिदम च्छीष्ट गुप्तमहिमामहताभा महिमागुर्वा महिमायस्यस एव परमायास्त्रिभौपरयां शश्रुयां वा माया तस्या स्त्रिभौपरिबद्ध नाश सत्यं कीर्णो स्वपरं परमाया उत्कृष्टाया रमाया तदस्या वन्तिरूपन ताकिम् यत्रपुरे आया घनागमनानि अमा परसहिष्णुतायीऽनलनगु प्राय ॥२३॥

(मूल)—शशिनासमहाममहानगेरजनतासमहास्तमुट्टम
अतिभासुरयासुरयाव्यहरथननात्सुरयागमपि ॥५८॥

इति बोधिनी टीका महिते श्री कालिकृते सक्ताव्ये नलोपाख्यानप्रथमोच्छ्वास ॥१॥”

(टीका)—शशिनंति जनता जनसमूहः नगर नलपुरे मुट्ट हर्ष समहास्तप्राप ओहतु.
गतावित्यस्यवातो प्रयोगः विगन्थथास्ते प्राप्यथर्थाज्ञानार्थाश्चिन्मिभूता
जनता शशिना चन्द्रेणममदासमहानस्य महस्तंजो यस्याः मा
महश्चोत्सवतेजमोरित्यमर' एवं न महामहेन उत्सवेन सह वर्तमाना
सा एव सुरया शोभतोऽय गच्छो यस्या सा सुरया पुन जनतैव सुरया
मदिरया व्यहरत चिक्रीड सुरयाग मपि सुरार्चनमपि व्यतनोन् अकरोन्
कीदृश्या सुरया भासुरया स्वच्छया ५४ इति तत्वबोधिनीटीकाया ॥१॥”

विषय—संस्कृत-काव्य ।

टिप्पणी-१—यह ग्रंथ खंडित है । शरंभ का १ पृष्ठ नहीं है । प्रथम उच्छ्वास की समाप्ति के पश्चात् दूसरे उच्छ्वास का १ पृष्ठ नहीं है । प्रथमोच्छ्वास के अन्त में ग्रंथकार का नाम 'कालि' लिखा हुआ है । खंडित होने के कारण लिपिकार का नाम तथा रचनाकाल, लिपिकाल, स्थान आदि का संकेत नहीं मिलता है ।

२—यह ग्रंथ अप्रकाशित है । संस्कृत-साहित्य में, संभवतः इस ग्रंथ का ग्रंथकार श्री कालि कवि का नाम नवीन है । ग्रंथ में कवि ने श्लेष, अनुप्रास, यमक और अन्य विविध अलंकारों में समीचीन रचना की है । इनमनलिरियत श्लोकों में देखिए—

“अथरतिरेकान्तेन प्रापि नलो नात्र मन्दिरेकान्तेन ॥
ताम्पुनरेकान्तेन प्राप्त. वतारिषु मदा तरेकान्तेन ॥१॥
वभौ ससार सागरश्चकाश सार सद्घी
मधु ससार सारवस्तदा ससार सार्तवः ॥२॥”

किस प्रकार यमक और अनुप्रास का समन्वय कवि ने किया है ।

३—ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट और पुरानी है । लिपि ठीक नहीं होने के कारण कहीं-कहीं छन्दोदोष भी आ गया है । ग्रंथ में 'य' के लिए 'ज्ञ' का प्रयोग किया गया है । शेष अक्षरों के प्रयोग भी सामान्यतः अन्य हस्त-लिखित पोथियों-जैसे ही हैं ।

यह पोथी भोकामा (पटना) के शकरवार-दोला के प्रसिद्ध जनहितैषी ५० श्री केशवप्रसाद शर्मा के सौजन्य से प्राप्त हुई ।

[३४] महाविद्यास्तोत्र—प्रथकार—X । लिपिकार—त्री लक्ष्मणराम । अवस्था—अच्छी पुराना हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ-म -१०। प्र० पृ० ५०-लगभग-१६ । आकार—७' X ३½ । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचना काल—X । लिपिकाल—मा. शुक्ल, तृतीया सं० १६२० वि० शुक्रवार ।

प्रारम्भ— 'श्री गणेशाय नम ॐ महाविद्यास्तात्रस्य अथमा अर्पिदेवी गायत्री छन्द जगती श्री शदाशिव देवता श्री शदाशिव साहित्यर्थे जपे विनियोग ॐ महाव्याघ्रदयामि महादेवेन निर्मिताम् चिंतता वा राष्ट्ररूपेण मानिणा हृदयत - - ।

अन्त— 'ॐ सिपारक्षतु ब्रह्माणासिररक्षतु माहेरवरी मुखरक्षतु कौमारीकंठरक्षतु वैष्णवी भुपरक्षतु वाराह ॐ दूररक्षतु, द्राणी कर्गरक्षतु चानुगपा दौरक्षतु महालक्ष्मी ॐ हा ह्रीं हूं किं द्रो धु हुं फ्र स्वाहा ॐ नमा भगवते परनामे महाविद्या महादेवस्य सन्निधा एकविसतिवारण पश्चीत विष्णुमाथया आरण्यश्चैव सर्वप्रहृतित्रारण सर्वकार्येषु सिध्यति शांतिवर्म्मविशेषितम् इति श्री महाविद्यास्तात्रस्य समाप्तम् ॥

विषय—तत्र-साहित्य ।

टिप्पणा—यह लघुकाय पुस्तिका तत्र-सम्बन्धी है । प्रथम क प्रारम्भ के श्लोकों में इस तंत्र का उपयोग बताया हुआ सभी प्रकार के ज्वर शमन तथा सर्व व्याधिविनाशार्थ लिखा है । यथा—“ॐ बेलोज्वररात्रिज्वर तित्रज्वर वृत्ततिज्वर अग्निज्वर राक्षसज्वर भूतज्वर पिशाचज्वर दृष्टिज्वर स्फोटज्वर तित्रज्वर मातृप्रयोगादिविनाशायस्वाहा ॐ आंचशूल कंचिशूल वचिशूल कणशूल घ्राणशूल गन्धशूल गलशूल सिरशूल शिराद्दशूल सर्वाङ्गशूल विनाशायस्वाहा सर्वव्याधिविनाशाय स्वाहा सर्वशत्रु विनाशायस्वाहा सर्वभ्रष्टविनाशायस्वाहा ॐ आत्मारक्ष परमात्मारक्ष अग्निरक्ष प्रत्यग्निरक्ष उत्तपाबालक ६धास

इससे प्रतीत होता है कि इन उपयुक्त प्रयोजनों के लिए इस तंत्र की सिद्धि की जाती थी । यह प्रथम माकामा (५ ना) के र करवार गेला निवासी श्री कशानमसाद शम्भा के साधन्य से प्राप्त किया ।

[३५] संध्याविधि—प्रथकार—X । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, जीर्ण शीर्ण, हाथ का बना मांग कागज । पृष्ठ सं०—X । प्र० ५० ५० लगभग—२० । आकार—८½' X ४½' । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—सं० १७८८ वि० ।

प्रारंभ—“ॐ अस्य उपनयने विनियोग ॥ शिरसः प्रजापति ऋषि ब्रह्माग्नि-
वायु मूर्ध्नि देवता प्राणायामे विनियोग ॥ इति ऋष्यादिकं
स्मृत्वावद्वासेन मग्मीलित नयनो मौनीप्राणायामत्रयं कुर्यात् ॥
वारिणा पुनरात्मानं वेष्टयित्वा ॥ वायोरादानकाले पूरक नामा
प्राणायामः ॥ तत्र नीलोत्पलदलज्यामं चतुर्भुज विष्णु ध्यायन् ॥
दक्षिणहस्तागुष्ठेन दक्षिण नाशापुटं निनुन्धन् प्राणवायुमाकर्षयन् ॥
ॐ भू स्वाहा ॐ भुव स्वाहा ॐ महः ॐ जनः ॐ तप ॐ सत्यं
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो न प्रचोदयात् ॥
ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥ इति मंत्रत्रि उच्चरेत् ॥
एवं वारणकाले कु मरुः तत्र कमलासनं रक्तवर्णं च तम्मुगं ब्राह्मणं
हृदिध्यायनमध्यभागं ल्यावामनाशपुटमपिनिनुन्धन् ॥”

अन्त—“ॐ भूर्भुवस्वर्नेत्राभ्यावौषट् ॐ भूर्भुवः स्वरस्त्रायकट इति यथाशक्ति
क्रम हृदयं सिरसि शिखासर्वाङ्गनेत्रद्वये करतलेऽङ्गन्यासं कृत्वावारत्रयं
वामकरतलेदक्षिण करागुलीभिस्तालत्रयपूर्वं कृतकं तर्जन्यंगुलद्वयोरेण
सशब्ददिवन्धं कुर्यात् ॥ ततस्तेजोसिति देव ऋषयः श्रुतिदैवतं
गायत्र्यावाहने विनियोगः ॥ इति संध्याविधिः समाप्तः ॥ शुभम् ॥”

विषय—कर्मकारण्ड ।

टिप्पणी—१—यह संध्याविधि है । इसमें प्रचलित संध्याविधियों से कुछ अंतर है ।
प्राणायाम की विधि विस्तार से बताई गई है । ग्रन्थकार के नाम का
ग्रंथ के प्रारंभ या अंत में उल्लेख नहीं है ।

२—इस ग्रंथ के साथ ही प्रारंभ में १ पृष्ठ का ‘कृष्णकवचम्’ नामक पुस्तक है ।
उसके अंत में भी लिपिकार ने लिपिकाल ‘सं० १७८८ वि०’
लिखा है । संध्याविधि के अंत में प्रथम के लिपिकाल की कोई भी चर्चा
नहीं है । यह ग्रन्थ मोरामा (पटना) के शंकरवार टोला-निवानी
पं० श्री केशवप्रसाद शर्मा के सौजन्य से प्राप्त किया ।

[३६] अहिलचक्रम्—ग्रंथकार—X । लिपिकार—X । अवस्था—खंडित, प्राचीन, देशी
कागज । पृष्ठ-सं०—४ । प्र० पृ० पं० लगभग १८ । आकार—
१० १/४" X ४ १/४" । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचना-
काल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—“श्री गणेशाय नमः अथ अहिलचक्रं चन्द्र क्षेत्र सूर्य क्षेत्र विचार करना
अथ प्रथमे चन्द्रक्षेत्रे एतानि चक्राणि शोषणे चन्द्रदेनाह रेवति० मतभि०
अश्व० आद्रा० श्लेषा० भरणी० पुनर्व० पुर्वाषा० पुर्वभाद्रपद० कृत्तीका०
पुष्य० श्रवणा० उत्राषा० इति चन्द्र ॥

अथ मूर्ध्वक्षेत्र एतानि नक्षत्राणि—वयु उपजातिवृद्धदेनाह ॥ ॥
 रोहिणी० पूषा० गुणी चित्रा० अनुराधा० ज्येष्ठा० मृगशिरा०
 उत्तराशा० गुरी षाति ज्येष्ठा मघा हस्त विशाखा० मूल० इति
 मूर्ध्व ॥ अथकिंकास्वानुभावे पुषाभिमुखीववल्गुम् टीका अर्थ
 यस्मिन्मये महा नक्षत्रानोरनितत्समयमारभ्य० ॥ १'

अत—“मूर्ध्वं स्वर्गं १ सुतु । चन्द्रीयं २ भौमेताम्रं ३ बुधेपीतरं ४
 गुरुगाराहा ५ मुकेकाम्यं ६ शनीलोहं ७ राहुणाधीसं ८ केतुना
 जम्ता ९ ताकालेचन्द्रवदेत् ॥”

विषय—ज्योतिष शास्त्र ।

टिप्पणी—१—यह लघुकाय पुस्तिका ज्योतिषशास्त्र से संबंध रखती है ।
 इस भाग का प्रथम श्री लामश श्रृंग प्रणीत ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध
 और प्रकाशित है । इसमें यत्र-तत्र पाठ भेद ठी प्रतीत होता ही है ।
 ६।५ ही, गीका भी है । प्रथम के प्रारंभ या अंत में अक्षर या लिपिकार
 का नाम नहीं है । प्रथम गणित है । अंत में प्रथम की समाप्ति ८ बाद
 निम्नलिखित पहिर्वा लिखी है—(एक रत्ना खीचकर उसके नीचे)
 “गावीरण तु सपथ्य तिनकाद्रन रानिका वृणवीन च सपथ्य निशाया
 च निदिश्यत्सु ग्रणेनापो भवत् यत्र प्रातस्तप्रनिधिदिशेत् ॥१॥
 प्रातुर्नम्य कवम्ब यकम्ब (भुनेरपी) सादिरम्यच महावृष
 (ब्रह्मगणनाम अररा) पद्मार्ण्य काजकनैवरणयत् निशायां लेपयन्भूमौ
 कप्यम्रेण अथये प्रातर्लापा न पद्माभ्य तत्रेव निधिमदिशत् ॥२॥
 उमात्निमत्रि सयुक्त किरां तत्र पूजयत् तत्र हामो प्रकृत्या निशाया
 पत मुगुनै प्रभात तदिर्गण चक्रिरे स्तव मुनिश्चित ॥३॥
 (ॐ नमो भगवत र्द्राय कल्पनेपाजनं दशाय दशान रवाहा ठः ठ)
 मनन सपाचनमप्रमंश्रयत् ॥इति॥

२—प्रथम की लिपि अक्षरपट्ट द्वार प्राचिन है । लिपिकार न अथ हस्त
 लिपित लिपियों श्रेया ही ष, क, य द्वार न का प्रयोग किया है ।
 प्रथम पन्नीय है ।

यह पाथी माहमा (पन्ना) क शहरवारगता-निवासी प०
 भादुराज-साद शर्मा के सौजन्य से प्राप्त हुई ।

[३७] सारस्वत प्रक्रिया-संदर्भ—१ अनुभूतिव्यवधानाय । लिपिकार—X । अथम्ब—
 अतः प्रथम, हाथ का बना मंग दश कण्ठ । पन्नीय—१६ ।

प्रारभ—(मूल) 'श्रागशेराय नम' मेघैर्मेढुर्मम्बरम्बनभुव श्यामास्तमालद्रुमै
 नक्तम्भीररयत्वमवतदिम राधेष्टहम्प्रापय ॥ इत्थ
 न'दनिदेशत'चलिनया प्रत्यश्वकुञ्जुमम् राधामाधवयो जयति
 यमुनाकूने रह केलय ॥११॥'

(टीका)—“श्रीगणेशाय नम' भद्राय भवता भूयात्कृष्ण सद्भक्तिभावित ॥
 कानिदीजल सशर्गिमेपरयामोऽति सुन्दर १ पिपासूना भक्तियोगाय
 धीकृष्णचरिताऽनृतम् ॥ लिप्यत जय देवेन गीत गोवि'द
 पुस्तकम् ॥२॥ इहकवि प्रारिषितस्य श्रयनिर्विघ्नेनपरिसमाप्यर्थ
 श्रीकृष्णम्बरणम्प वन्मुनिर्देशलक्षण ॥३॥ मगल तावदम्बरति ॥
 मेघैरिति राधामाधवयो रह केलयो यमुनाकूने जय'तीत्य'वय
 राधाकृष्णयो रह केलय एका'त क्रीडा यमुनातीरे जयति सर्वात्कपेण
 वर्तन्ते कथ भूतयो राधा माधवयो प्रत्यश्वकुञ्जुर्मम् अश्वनि मार्गे
 कुञ्जे लताशृङ्गे द्रुमेवृक्षे च इत्यमर इत्थ इति न'दनिदेशतो
 न'दागयाचलितया प्रस्थितयो यद्वा अश्वकुञ्जुमान् प्रत्युद्दिश्य
 चलितया इतीति किमूहे राधे अम्बरम् अकास मेघैर्मेढुरसान्द्र
 व्याप्तमित्यथ वनभुवस्तमाल शृङ्गे श्यामा अश्वकृष्ण नक्त रात्रौ मीह
 भयेन शीलत्वान् ततस्तमात्कारणात् त्वमेव इम परोवर्तिर्न कृष्ण शृङ्गे
 प्रापय नय एव प्रकारेण न'दस्य अयस्मिन् विरवासाभावान् ॥११॥”

अन्त—(मूल) वसत रागेण'पकाने ॥ ललित लवणलता परिशीलन
 कोमल मलय समार ॥ मधुकर निकरकरवित कोकिल वृजित कुञ्ज
 कुन्ती विहरति हरिररह सरस वसते नत्यति युवतिजनेन सभसनि
 विरहि जनस्य दुरते १ उ'मद मदन मनोरथ पथिक यधू जनजनिष
 विलापे अतिकुल सकुल कुमुम समूह निराकुल वै कुल कलापे २ मृग
 मदसौरभ रमसवश यदन बदल मालत माने युवजन हृदय विदारण
 मनसिज नख रुचि कि'पुक जाने ३ मदन मदी पतिकनक दण्डरुचि
 सर कुमुम विक्रामे निलित शिलीमुख पागलि पल्ल शृतस्मरतूर्ण
 विलास ४ विगलित लज्जित जगदवलोकन तरण करण शृतशम्भे
 विरहिनिहृ तन कु त मुगाहृति केतकि -नुरिताये ५'

माधवि का परिमल ललिते नवमानिक्रयाति मुगधौ ॥ माहन कारिणि
 सरणा कारण वंधा ६ स्फुरदति मुक्तनतापरि रमण मुकुलित पुलकित
 चूत ॥ गृन्दावन विपिन परिसर परिगत यमुना जल पूते ७ धीजयदेव
 भण्डिद मुदयति हरिचरणमृत्तिसार ॥ सरस वसत समय पर वर्णन
 मनुगत नग्न विहारम ८

(टीका)—श्री जयदेवेति श्री जयदेव कवेरिदं भणितं उदयति उदय प्राप्नोतीत्यर्थः
हरिचरणयो स्मृतिरनुचितन सारो मुख्यं यत्र मरमं सुमनोहरं वसंत
समय वर वर्णन यत्र अनुगतोऽनुमृतोऽनुकृतो मदनविकार काम
विलासो यमिन् ८”

विषय—संस्कृत-काव्य ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ प्रसिद्ध गीतगोविन्द का गणित भाग है । प्रकाशित ग्रन्थ से
इसकी टीका कुछ और ही प्रतीत होती है । ग्रंथ की टीका-शैली
प्राचीन अस्पष्ट तथा ग्रन्थिल है । ग्रंथ खंडित होने के कारण टीकाकार
तथा लिपिकार के नाम का संकेत नहीं मिलता है । यही कारण ग्रंथ
के लिपिकाल के लिए भी है । ग्रंथ की लिपि और कागज देखने से
ग्रंथ मौ वर्ष से अधिक पुराना प्रतीत होता है । ग्रंथ का मूल भाग
मोटे अक्षरों में और टीका पतले अक्षरों में है । यह ग्रंथ श्री वासुदेव
प्रसाद गुप्त, नवीन प्रकाशन-मन्दिर, लक्ष्मीसराय (सुं गेर) द्वारा प्राप्त
किया । ग्रन्थ परिपद-संग्रहालय में सुरक्षित है ।

[३६] सिद्धांत-चंद्रिका—ग्रन्थकार—श्रीरामाश्रमाचार्य । टीकाकार—पं० श्री सदानन्द जी ।
लिपिकार—X । अवस्था अच्छी, हाथ का बना देशी कागज ।
पृष्ठ-सं०—५५ । प्र० पृ० पं० लगभग—२४ । आकार—
११^१/_८" × ४^१/_८" । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X ।
लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ—(मूल) “श्रीगणेशायनम कृत्कर्तारिवच्यमाणा प्रत्यय कृत्संज्ञकास्तेच
कर्तारि भवति तृ सुणौ धातो पला कृत वसादे कृत इट् कृटिता एधते
इति एयिता गोपायिता गोपिता गोप्ता साहिता सोढा एयिता एष्टा
युवोरनाकौ पाचक भावक आतोयुक् दायक घातकः जनक घटक.
दरिद्रायक कोटक शमक नियामक क्रमे कर्तव्याद्विषयात्कृतइटन
प्रकृन्ता ॥

(टीका)—श्री गणेशायनम श्री मरस्वतैनम प्रतोष्टय्य जगन्नाथं सदानंदेन-
सन्मुदा सिद्धांत-चन्द्रिका वृत्ति क्रियते कृत प्रकाशिका १ कृत्कर्तारि
उत्सर्गत कर्तारोतिबोध्यं तृसुणौधातोदेतौत कर्तारितृपप्रतये भारु-
पचतीति विग्रहेचो कुरितिक वृत्तद्वितेति नाम संजायास्यादिविभक्ति. ॥”

अन्त—(मूल) “उजेर्दलवलोप. ओज. त्रिबश्शिर. किच्चशिर अर्तेकर उरः
अर्तेव्यावौनुट् अर्था उदकेनुट् अर्था. इण आगसि एन सू रीभ्या तुट्

स्रोत रेत पतिरुदकेत्यु पाथ अदेर्मक्तेधनोमुच अघ आप उदके
ह्रस्वोनुम्भौ अम्भ नभविम नभ इण अगेऽपराधे आग ॥

(टीका)—नम नमो योम्निनमा मेघे श्रावणे च पतन् प्रहेप्रणमृणाल सूत्रे च
वपासुच नम स्मृत इति विश्व नम ग श्रावणा नभा इत्यमर
नमन् नमसा सार्द्धमिति द्विरूपकोश इण आगपराधे इण
गतावस्मादसु स्यात् अपराधेवाच्येधोऽराणोदशस्य आग
पापापराधयोरिति विश्व आगपराधो मनुश्चेत्यमर अनहुँके
अमगत्यादावस्मादसु स्यात् घाताहुँगागमश्च अन्ति गच्छयवस्ताद
ननति अह दुरित रमेरव रमुक्तीशायामस्मादसु स्यात् द्यातोहुँगागम
श्चरह वेग देशे वाच्यरमेरसु स्यात् घातोर्मस्यहश्चरह रहस्तत्वेरेते
गुणे निति मेनिनि रज्यादे किन्तु असुस्यात् सचकिन् रजरागेकित्पभोलप
इतिनालोप रज रज क्लीबं गुणात्तरे श्रातवेच पराग च रेणुमात्रेपि
दृश्यते इति मदिनी कप्रत्यये अकारातोपि रनापिरनसा सार्द्ध स्त्रीपुष्प
गुण धूलिधिवत्य जयकोश ।”

विषय—सरकृत-व्याकरण-शास्त्र ।

टिप्पणी—यह प्रथम प्रसिद्ध सिद्धांत-चन्द्रिका की टीका है। टीकाकार ने प्रथम के
सरल रूप का और भी विकृत तथा कठिन बना दिया है। प्रथम का
मूल भाग माटे अक्षरों में और टीका भाग पतले अक्षरों में लिखा है।
प्रथम की टीका अस्पष्ट और असबद्ध है। निधि भी अस्पष्ट
और पुरानी शैली के अनुसार है। प्रथम खण्डित है। प्रारम्भ या अन्त
में लिपिकार के नाम तथा टीका के काल (समय) का संकेत स्पष्ट
नहीं है। यह प्रथम श्रीशंकर प्रसादजी बरबीषा (मुँगेर) के सौजन्य
से प्राप्त किया।

[४०] अष्टाध्यायी—प्रथमकार—श्री पाणिनि मुनि । लिपिकार—श्री महादेव भट्ट तिलक
अवस्था—अच्छी, प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ-सं०—४७।
प्र० पृ० प लगभग—२२ । आकार—११ १/२" × ४ १/४" । भाषा—
संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—चैत्र, १३ सं० १९३४,
(शरम्भ) आषाढ़, कृष्ण, सोमवार, सं० १९३४ वि० (समाप्त) ।

प्रारम्भ—‘श्री गणेशाय नम ॥ श्री पाणिनीयाय नम ॥ येनाच्च समाप्तायमधि
गम्यमहेश्वरात् ॥ शूरान व्याकरणप्रोक्त सस्मैपाणिनये नम ॥ येन
धोतागिरि पु साविमर्ते शब्दवारिभि ॥ तमरचापानजन्मिन्तम्भै
पाणिनये नम ॥२॥ योगेन चित्तस्यपदेनवाचात्मलंशरीरस्य च
वैदकेन ॥ या पाकरोत्प्रवरम्मुनीनापतञ्जतिरानतोऽस्मि ॥३॥’

अन्त—“उदात्तादनुदात्तस्यस्वरित ८।८।६६ नौदात्तस्वरितोदयमगान्यकाश्यप
गालवानाम् ८।८।६७ अथ ८।८।६६ रपाभ्यासुभौण्डुनोदोऽष्टौ ।
इत्यष्टमाध्यायस्यचतुर्थ पाठ ॥ इत्यष्टमोध्यायस्नमात् शुभम् ॥

विषय— संस्कृत-व्याकरण-शास्त्र ।

टिप्पणी— यह श्री पाणिनि मुनि का प्रसिद्ध अष्टाध्यायी ग्रन्थ है । इसे काशी के 'होजकटरा' सुदल्ले के 'श्रीरामदास दासाव' के मकान में 'श्रीहजारीलाल गनेस प्रसाद' ने लीथो में मुद्रित किया है । यह जिन हस्त-लिखित ग्रन्थ से तैयार किया गया है, उसके लिपिकार हैं प० श्रीमहादेव भट्ट तिलक । ग्रन्थ की लिपि, शुद्ध, स्पष्ट और सुन्दर है ।

यह ग्रन्थ वरवीषा (मुँगेर)-निवासी समाजसेवी श्रीशंकर प्रसाद जी के मौज्ज्या से पाया ।

[४१] हनुमत्कवचम्—अकार—श्री रामभद्र चिन्तानिधि । लिपिकार—X । अवस्था—
प्राचीन, हाथ का बना मोटा देशी कागज । पृष्ठ-सं०—७ । प्र० पृ०
पं० लगभग—१६ । आकार—६ १/४" X ४" भाषा—संस्कृत ।
लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—आरिवन, कृष्ण
सं० १६३१ वि० ।

प्रारंभ—“श्री गणेशायनमः ॐ अस्य श्री पद्मसुखहनुमन्मन्त्रस्यब्रह्मात्मपिर्गायत्री
द्वन्द्व पद्मसुखविधि हनुमान्देवता ह्रीं वीर्जं सः शक्तिर्भौ वीलक
कुक्कुचं ह्रीं आन्नायपपष्ट् इतिदिव्यंवनम् इश्वर स वाच अथ ध्यानं
प्रवक्ष्यामि-वृराउसर्वात् सुन्दरी यत्प्रभुत देवदेवेशिष्यानहनुमतः प्रियम् १
पद्मवक्त्रमहाभौमंत्रियज्वनयनैर्युत वाहुभिर्दशभिर्युक्तंसर्वाकामाय
निद्धिदम् ॥२॥”

अन्त—“पट्टवारपठे नित्यं सर्वदेवशीकर सप्तवारं पठेन्नित्यं सर्वसौभाग्यदायकं
अष्टवारपठेन्नित्यं ईष्टकामार्थसिद्धिदम् नववार त्रिसप्तकेन राज्यभोग्य
समारभेत् दसवारं त्रिसप्तकेन त्रैलोक्यज्ञानदर्शनम् एकादशवारं पठेन्नित्यं
सर्वसिद्धिभवेन्नर कवचं स्मरेत्तैव महालक्ष्मी समन्वित ॥”

विषय—स्तोत्र-मन्त्र ।

टिप्पणी—इन लघुकाव्य ग्रन्थ से हनुमान् के विभिन्न रूप और गुण की चर्चा है ।
स्तोत्र के अतिरिक्त पूजाविधि भी है । यत्र-तत्र कुछ ऐसे भी
पद हैं, जो पूजा की प्रक्रिया में तत्र की पद्धति से लिखे गये हैं । ग्रन्थ
की लिपि अस्पष्ट है और लिपि-शैली पुरानी है । ग्रन्थ सम्पूर्ण है,

किंतु प्रारम्भ या अंत में लिपिकार का नाम नहीं है। ग्रथकार का नाम भी स्पष्ट नहीं है। ग्रथ के अंत में— 'इति श्री रामभक्त चिन्ता मनाक्ल' लिखा है। इससे ग्रथ और ग्रथकार दोनों का बोध हो सकता है। यह ग्रथ वरवीधा (सुँगेर)-निवासी श्री शङ्करप्रसादी के सौजन्य से प्राप्त किया।

[४२] सूर्याण्वर्णविपाक-राशिफल—ग्रथकार—X। लिपिकार—X। अवस्था—प्राचीन हाथ का बना देशी कागज। पृष्ठ-सं—१८। प्र० पृ० ५० लगभग—१८। आकार—१४' X ४'। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। रचनाकाल—X। लिपिकाल—X।

प्रारम्भ—“अथ शृपराशि कथ्यते नारद उवाच शणु रात्रि विचित्र त्वं शृप राशिषु यं स्फुल तं स्फुलं च वदिष्यामि तवाग्रे च नृपोत्तम १ धमात्मा ब्राह्मणा ह्येक वसते न गरे शुभे पवते वेद शास्त्राणि त्रिकालज्ञं तुचिभेवेत् २ भिक्षा भोज्यं च कुरते सवि प्रापाम याजक एकं तत्तु प्रिया स्तस्य प्रेतं हस्तेषु भाञ्ज ३ आनी तं बद्ध्या इत्य सख दा भाजनं कृतं अणु मात्रं न दत्तं वै लुघोमलयुतस्तथा ४ अपर शणु शयस्य यत्कर्म कुरु ते द्विज युतं कम रतो नित्यमानीत हात्क पर ५ एष वदुतिथे काले सवि प्र ६ च तां गतं यम पाशैर्दृढं षष्वा आचिप्तो वदुकदमे ६’

अन्त—“ब्राह्मणस्य सुर्वर्णस्य प्रतिमा कारपद्मै ॥ गा सचैव सवत्सा च पच रत्नानि स्युता ॥२ ॥ ब्राह्मणाय प्रदीयते तेषां दोषा विनश्यति ॥२ ॥ नाराद उवाच ॥ क न कर्म भवेत्तद्धमी राय के न कर्मणा वशरुद्धि भवत्केन ताम विस्तरतो वद ॥२३

विषय—ज्योतिष शास्त्र।

टिप्पणी—१—यह ज्योतिष शास्त्र से सम्बन्धित खंडित ग्रथ है। इसमें जो भाग है उसका सबंध राशियों के फल से है। ज्योतिष शास्त्र में इस नाम का ग्रथ प्रकाशित रूप में अब तक देखने में नहीं आया है, किन्तु श्रीमोतीलाल बनारसीदास, जो प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता हैं, उनके ग्रंथ-सूची पत्र में एक ग्रथ उद्धृत सूर्याण्वर्ण कम विपाक, नाम का है। (चिन्ता मूय १२) बारह रुपये दिया गया है। संभव है उक्त बड़े ग्रथ का यह कोई खंडित रूप हो अथवा इसका खण्डित भाग। मिल जान पर पता चने कि यह ग्रंथ वस्तुतः कितना बड़ा है।

२-ग्रथ के खण्डित हान के कारण ग्रथकार और लिपिकार के नाम नहीं

ज्ञान हो पाते हैं । ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन है । यह ग्रन्थ बरवीरा (मुर्गेर)—निवासी श्रीशंकर प्रसादजी के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

[४३] लघुजातकम्—ग्रंथकार—X । टीकाकार—श्री मयुरानाथ । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, हाथ का बना जीर्ण-शीर्ण, कागज । पृष्ठ-सं०—१८ । प्र० पृ० प० लगभग २८ । आकार—१०" X ६½" । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारंभ—“अथ मुहुर्तप्रदीप अथ कालवेला विचार आशोष्य भागो दिवसाधिपस्य ततः परं पट् ६ परिवर्तनेन यस्मिन्विभागेरविमुन्द्रवेला कान्यपु सर्वत्र न सोभना सा ८१ पंच युग्म रसा रामा मुनिवेदाख्य नूर्यतः ॥ कालवेला शनेर्वारे प्रातः सायं द्वयोर्भवेत् ८१ रात्रौ पच परावृत्या वारवेला विनिर्मिता ॥ रवेरद्वे गवेला । चन्द्रम्यामृतवेला । भौमस्य रोगवेला । बुवस्यलाभवेला । गुरोः शुभवेला । शुक्रस्य चलवेला । शने कालवेला । इति वेलामामानि अथ रजोदर्शनम् वैशाखे फालगुणे माघे मार्गस्यश्रावणेष्विने पक्षे शुक्ले शुभाहे च सिद्धि लग्ने तवादिवा ८४ श्रवस्त्रयेनुराधायाः रविति द्वितये मृगे हस्तत्रये च रोहीणया अश्लेषे चोत्तरासुच सितवस्त्रं सुभंस्त्रीणा प्रथमे पुष्यदर्शनम् ॥”

अथ जन्म के वस्तु में खडका पिता घर रहा या विदेश रहा इए विचार करते हैं चक्र इति । जन्म लग्नकों चंद्रमा देपत रहै देव ते होयतो उसके पिता जन्मे समय परदेस कहना । औ बुध शुक्र के विच में चंद्रमा होय तो तौवभि पीता परदेश हिमें कहना । या जन्म लग्न में शनैश्चर होय तौ भी परदेश कहना । औ जन्म लग्न मे सात ७ ए घर में मंगल होय तौ भि परदेश ही ने कहना ॥”

अन्त—“अथ जातक स्वल्प चन्द्रमा नंगल साथ होय तो कट्टा होय । याने बाजार की चीजों का बेचनेवाला होय । औ बुध के साथ होय जो प्रिय बोलनेवाला होय । औ बृहस्प से युक्त होय तो अपने कुल में सबसे अधिक होय । औ शुक्र के युत होय तो वस्त्र के व्यवहार को जाननेवाला होय । फुल खेलने वाला होय । औ शनैश्चर से युक्त होय तो पुनर्भू से पैदा करै कहना । पुनर्भू वह कहलाति है । जो विवाहित पति के छोड़ के तविअत से अपने विरादर फीर करे वह अजत हो या जत हो उसका सस्कार फीर करे वही मंगल बुध इत्यादि दसापर है । औ बुध बृहस्पति साथ रहै इत्यादि उस वपत जिसका जन्म होय ।

तिस्का स्वप्न एक आर्षा करके कहत ह । मलेति मंगल बुध के साथ होय तो मल हाय । और मंगल ग्रहस्पति के साथ मे होय तो नार का रचक होय । आ शुक स गुरु हाय तो परदारा में रत रहे । आ शनैश्चर से युक्त होय तो दुःख स युक्त होय ।”

विषय—ज्यातिय ।

टिप्पणी—यह ग्रन्थ खण्डित, पर महत्त्वपूर्ण है । इसमें मूल ग्रन्थ की हिन्दी-गीका भी है । यद्यपि यह ग्रन्थ प्रकाशित है, किन्तु इसकी टीका भिन्न है । ग्रन्थ के प्रारम्भ आरम्भ के पृष्ठों के फटे रहने और लिपि के अस्पष्ट होने के कारण ग्रन्थकार एवं लिपिकार का नाम ज्ञात नहीं होता । टीका सक्षिप्त और सुन्दर है । यत्र-तत्र टिप्पणी-मात्र दी गई है । ग्रन्थ की अवस्था जीण शीर्ण है ।

३—ग्रन्थ की लिपि शैली प्राचीन है । लिपि के अस्पष्ट और पुरानी होने के कारण मूल ग्रन्थ पढ़ने में कठिनाई होती है । लिपि से प्रतीत होता है कि ग्रन्थ १६ वीं शताब्दी के अन्तिम अथवा २० वीं शताब्दी के प्रथम अर्ध में लिखी गई है ।

यह ग्रन्थ बरबीया (मुँगेर) निवासी श्री शंकरप्रसादजी के साक्षर स प्राप्त किया ।

[४१] चान्माकि रामायण—ग्रन्थकार—महर्षि वाल्मीकि । लिपिकार—५० वीं प्रताप नारायण जी । अवस्था—अच्छी प्राचीन, हाथ का बना मोनी देशी कागज । पृष्ठ-५०—११ । प्र पृ० ५०—१६ आकार—८½ × ४ । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचना-काल—x । लिपिकाल—फाल्गुन, शुक्ल, १३, सं १६१६ वि० सोमनार ।

प्रारम्भ—‘श्री रामराजेश्वराय महाकाशिकाय रघुनन्दनाय नम ॥ जयति रघुवशतिलक कौशल्या हृदयनन्दनो राम दशवदन निधनकाशी दासरायि पुण्डरीकाक्ष ॥१॥ वृजन्तं रामरामे तिमधुरमधुराक्षरम् ॥ आरभ्य कविता शास्त्रात् देवात्मिक काकिलम् ॥२॥ वाल्मीकेषु निषिद्धस्य कविता वनचारिण ॥ शृगवन् रामकथानां को न जानि परागतिम् ॥३॥ य पितृन् सतत रामचरितानृत-सागरम् ॥ अतृप्तस्त मुनि वदे प्राचेतसमकामपम् ॥४॥

अन्त—‘नवा सुदृश्य किञ्चिद् तस्कर मय तथा नगराणिव राष्ट्राणि धनधान्य सुतानि न निय प्रमुदिता सर्वे ययाहृत युगे तथा

अश्वमेध शतैरिष्ट्वा तथा बहु सुवर्गकैः गवाकोट्ययुतं दत्त्वा
 निद्वन्द्वयो विविपूर्वम् अमंग्रैर्यं धनं दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यो
 महायशाः नर्जर्वशाद्यन् गुणान् स्थापयिष्यति रात्रि च चातुर्वर्ण्यं च
 लोके सिमन्स्वेस्वे धर्मे नियोक्षति दशवर्षं सहस्राणि दश वर्षं
 मतानि न रामोराज्यं मुपावित्वा ब्रह्मलोकं प्रयास्तति इदं
 पवित्रं पापघ्नं पुण्यं वेदैश्चम्युतम् य पठेद्रामचरितं नर्षपापै
 प्रमुक्ष्यते एतद्व्याख्यानमाप्रत्यं पठन् रामायणं नर न पुत्रपौत्र-
 मरणं प्रेत्यस्वर्गंमहीगते पठन् द्विजो बाल्यपत्नमीयात्स्या
 त्तत्रियो भूमिपति र्दमीयात् वर्णजजनः पण्यपनिदमीयात्जजन-
 श्चशूद्रोपिमहत्वमीयात् इत्यपि श्रीमद्रामायणे वाल्मीकिये आदि-
 काव्ये बालकाउं नारद नास्ये मंचोपवर्गंनोनाम प्रथमः सर्गः ।”

विषय—रामकाव्य ।

टिप्पणी—यह ग्रन्थ प्रसिद्ध आदिकाव्ये वाल्मीकि रामायण के बालकाउ
 का प्रथम नर्गमात्र है । ग्रन्थ के लिपिकार ने यत्र-नत्र कुछ
 पाठान्तर भी कर दिया है, ऐसा प्रतीत होता है । ग्रन्थ की
 लिपि स्पष्ट है ।

यह ग्रन्थ बरबीषा (सु नर)-निवाधी श्री शंकरप्रसादजी
 के सौजन्य से प्राप्त किया ।

[४५] स्वरूपोपनिषद्—ग्रंथकार—X । लिपिकार—Y । अक्षर—प्राचीन, हाथ से बोंड
 का बना टेशी कागज । पृष्ठ-सं०—४ । प्र० पृ० सं०
 लगभग—१५ । आकार—६" X ३ १/२" । भाषा—संस्कृत ।
 लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—स० १७६० वि० ।

प्रारम्भ—“श्री गणेशाय नमः ॥ प्रातः काले समुत्थाय गुरुस्मरणानंतरंगुण-
 पदिष्टज्ञानेन सहज सिद्ध मजयाजपं तत्तदेवताभ्यः समर्पयेत् ॥त्तक्रमः॥
 ॐ अथाहोरात्रोच्चरितमुच्छ्रवासात्तिशवासात्मकं पट्सताधिकमेक-
 विशतिसहस्रमंख्याकम् जपाजप मूलावारस्वाधिष्ठान मनिपूरका नादे
 विशुद्धाजात्रहारत्रेपु ॥ पट्दल ॥ दशदल ॥ द्वादशदल ॥
 श्री गणेशाय नमः ॥ अथ स्वरूपोपनिषत् ॥
 अहमेव परंब्रह्मवासुदेवाख्यमव्ययं
 इतिस्यादिश्चित्तो मुक्तोवद एवान्यथा भवेत् ॥१॥
 अहमेवपरं ब्रह्म न चाहं ब्रह्मणः पृथक् ॥
 इत्येव समुपासीता ब्रह्म न चाहं ब्रह्मणिश्रितः ॥२॥”

अन्त— मयिषां च लय याति तद् ब्रह्मास्म्यहमद्वय ॥
 सत्रनाह्वयनात् सन्देश सर्वशक्तिमात् ॥२४॥
 आनन्द सत्यबोध इति ब्रह्माण्डचित्तम् ॥
 अथ प्रथमो निष्कैव सत्यम् वदाम्यहम् ॥२५॥
 हाते स्वरूपापनिषत्प्रनामम् ॥ १

विषय—उपनिषद्-साहित्य ।

टिप्पणी—यह लघुकार पुष्पिका प्रसिद्ध और प्रचलित उपनिषदों से भिन्न है । इस नाम का किसी भी उपनिषद् का पता प्रायः अब तक नहीं मिला है । इनमें कवन मात्र ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन किया गया है । ग्रथ में मानिष्ठता का अभाव है । ग्रथ की लिपि स्पष्ट, किन्तु प्राचीन है । ग्रथ के अन्त में स० १७६० लिखा हुआ है । यह— समय निर्देश ग्रथ के निर्माण-काल के लिए है अथवा लिपिकाल के लिए, यह स्पष्ट नहीं है । ग्रथकार और लिपिकार ने ग्रथ में यथा-समय प्रपन नाम और समय आदि का कोई भी निर्देश नहीं होने दिया है । ग्रथ में यदि स० १७६० का समय लिपि का है, तो ग्रथ अवश्यमय प्राचीनतम है । ग्रथ बौद्ध के बने कागज पर लिखा हुआ है और वह जीर्ण शीर्ण हो गया है । ग्रथ अनुसंधेय है ।

यह ग्रथ बरबीचा (मुँगेर) निवासी श्रीशंकरप्रसादजी के सीजन से प्राप्त किया ।

[४६] विष्णुपत्रस्तोत्र—प्रथकार—X । लिपिकार—X । अवस्था—प्राचीन, हाथ बना, भांग, देशी कागज । पृष्ठ-स०—५ । प्र० पृ० प० लगभग—१२ । आकार—५"X३" भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—पौष शुक्ल, ५ स १८१६ वि०, बृहस्पतिवार ।

प्रारम्भ—“श्री गणेशाय नमः ॐ अस्य श्री विष्णुपत्रस्तोत्रमन्त्रस्य नादश्रुति अनुसृष्ट्वा श्री विष्णु परमात्मा देवता अर्वाञ्च सोई शक्ति इही कीलक ॥ मम सर्वे दे आत्म रक्षाये जये विनियोग ॥ नाराद श्रुत्यनमः शरणि ॥ अनुसृष्ट्वादेवे नमः ॥ सुखे ॥ श्री विष्णु परमात्मा देवतायै नमः ॥ हृदये अहं बीज एते ॥ सह शक्तिपादयो ॥ इही कालक पादाप्र ॥”

अन्त—“विद्यार्थी तमन रिश माचार्यी तमत गति ॥
 आपदा हरत नित्य विष्णुस्तार्पण सर्वदा ॥ २३ ॥
 जने विष्णु सने विष्णु विष्णु पर्वतम त्तके ॥

ज्वालमाजाकुने विष्णु ॥ सर्वविष्णु मन्त्र जगत् ॥२८॥
 गरित्पठं पठते स्तोत्र विष्णुपञ्चरसुतमे ॥
 मुच्यते सर्वपापिभ्यो विष्णुलोके न गच्छति ॥२५॥
 “इति श्री ब्रह्माण्डपुराणोऽष्टादशोऽध्यायः ॥”

विषय—तत्र-नाहिन्य ।

टिप्पणी—यह लघुकाय पुस्तिका तत्र से ग्रंथ रमती प्रतीत होती है ।
 इसके प्रारंभ में तांत्रिक प्रक्रियाएँ लिखी हैं और अन्त में
 स्तोत्र-पाठ का फल दिया गया है । यह ग्रंथ प्रकाशित और
 प्राप्य है । इसकी लिपि प्राचीन है ।

यह ग्रंथ शैलपुरा (मुनेर)-के श्रीमज्जनन्दनप्रसाद सिंह
 से प्राप्त हुआ ।

[४७] रुद्रयामलतन्त्र—ग्रंथकार—X । लिपि—X । अक्षर—अच्छी, पुराना,
 देशी कागज । पृष्ठ-सं०—५ । प्र० पृ० पं० लगभग—१६ ।
 आकार—६" X ४" । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी ।
 रचनाकाल—X । लिपिकाल—आपाद, शुक्र, १५, सं०
 १६३७ वि० ।

प्रारंभ—“श्रीगणेशायनम अथ महाविद्यास्तव पुरश्चरण पटल विधिलिख्यते
 शिव क्षण्डव तान्त्रोक्तं शिव उवाच ।
 भूत प्रेत पिशाचाञ्च उक्त्वा नक्षत्राक्षस
 पाठयेत्तन्मन्त्राणां ७ हवन त्रय मुत्तमम्
 शाकल्या पायस द्रव्यं कटु तैलं सपर्षस्तथा
 दिवामेकं त्रयं पाण्ठी ६३ पाठं सर्वसिद्धिः
 महा होमं दशाशेन दशा सेत्तप्यं तथा
 दशा से ब्राह्मणं भोज्यं दशा ने चैव दक्षिणम्”

अन्त—“अथ डामर तान्त्रोक्तो महाविद्या पुरश्चरण विधानम्
 प्रथम गणेश आवाहनं पूजनं
 महादेव अष्टमूर्ते गक्ति विष्णु अंजनी कुमार
 उत्तमं गण आवाहनं पुञ्ज च तथा विधि.
 अरुणं पुष्प अरुणं वज्र द्रव्यं पुष्प द्रव्यं वज्रं
 पित्तपुष्पं पीत वज्रं उष्णवज्रं गोघृते च शाकल्यम्
 इति डामर तान्त्रो महाविद्या पुरश्चरण पटल विधि समाप्तम् ॥”

विषय—तंत्र शास्त्र ।

टिप्पणी—इस नाम का तंत्र-ग्रन्थ ११ भागों में प्रकाशित और प्राप्य है । किन्तु यह उससे भिन्न सा प्रतीत होता है । समभव है यह उसका सञ्चित रूप हो । इसमें क्रमशः निम्नलिखित भाग हैं—
२—महाविद्यास्तव पुरश्चरण पञ्च विधि, २—प्रेत शान्ति महाविद्यास्तव पुरश्चरण विधि, ३—महाविद्यास्तवपुरश्चरण विधि ४—क्राडा तंत्र महाविद्यापाठ फलम्, ५—लिंगार्चा विधि, ६—वाराहतंत्रोक्त लिंगार्चा विधि, ७—कोणतंत्रे पात्र विधि । ग्रन्थ अनुसंधय है । ग्रन्थ की लिपि स्पष्ट, किन्तु प्राचीन है । प्रारम्भ या अन्त में लिपिकार का नाम नहीं दिया गया है ।

यह ग्रन्थ शेषपुरा (मु गेर)—निवासी श्रीव्रजनन्दन प्रसाद सिंह के सौजन्य में प्राप्त किया ।

[४८] विज्ञान-नौका, सिद्धान्त विन्दु—प्रकार—श्री शंकराचार्य । लिपिकार—श्री प० उवालादत्त त्रिपाठी । अवस्था—अच्छी मोटा, देशी कागज । पृष्ठ-सं०-१० । प्र-पृ०—पं—लगभग-१२ । आकार—५ $\frac{1}{2}$ " × ३ $\frac{1}{4}$ " । भाषा—संस्कृत । लिपि—जागीरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—X ।

प्रारम्भ—'श्री गणेशायनम तपोयज्ञ दानादिभि शुद्धबुद्धिर्विरक्तो
मृपादी पदे तुष्ट बुद्ध्या
परित्यज्य सर्वं यदाप्नोति तत्त्व
परब्रह्म नित्यतदेवाहमस्मि १
दयानु शुद्ध ब्रह्म निष्ठ प्रशांतं
समाराध्य महत्या विचारस्वरूप
यदाप्नोति तत्त्व निदिध्यास्य विद्वान् परब्रह्म०२
यदान्दरूपप्रकाशस्वरूप निररत प्रपञ्च परिच्छेदशून्य
अहमज्ञ हृत्सक गम्य तृतीय पर ब्रह्म० ३'

अन्त—'अधिव्यापकरवादितात्त्वप्रयोनारत्नवत पुद्गमावादनन्याभयत्वात्
नगनुच्छमेतत्सस्तदयस्तदे० ६
नवैकनदयद्वितीयशुद्ध स्यान्नवाकेषुलक्ष न वा
केषुलक्ष न शून्यनचशून्यमद्वैतकत्वात्कथं सप
वेदांतमिदं प्रवीमि १
'ति श्री सिद्धान्त विदुसपूणम्'

विषय—वेदान्त-दर्शन ।

टिप्पणी—यह श्रीशंकराचार्य का प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसकी मुद्रित प्रति प्राप्य है, किन्तु मंगवतः मंप्रति वह दुर्लभ है। इसमें ग्रन्थकर्त्ता ने वेदान्त-मत के अनुभार ब्रह्म के रूप को सिद्ध किया है। दो ग्रन्थ—विज्ञान-नौका, सिद्धान्त-बिन्दु—एक साथ ही हैं। किन्तु, प्रतीत होता है कि शंकराचार्य के प्रसिद्ध ग्रंथ का या तो यह लघु रूप है या उस नाम पर अन्य किसी की रचना है। ग्रंथ अनुसंधेय है। 'विज्ञान नौका' के अंत और 'सिद्धान्त-बिन्दु' के प्रारंभ की पंक्तियों कमज. निम्नलिखित रूप में हैं—

“यदानदपिबौ निमग्न. पुमान्
स्यादविद्या विलानैः समस्तं प्रपंचं
नदातस्फुरन्व द्रुतं तज्जिमित्त परंब्रह्म०८
स्वप्नपानुसधानं नृपा स्तुतियः
पठेदादराद्भक्ति भावै र्मनुष्यः
शृणोतीह नित्य समासक्त चित्तो
भवेद्विष्णुरत्रै चवेदप्रमाणात् ६
इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं
विज्ञान नौका संपूर्णं”

“न भूमिर्नतोयंनतेजोन वायु-
र्न खं नेद्रियं वा न तेपा समूहः
अनैकातकत्वान् सुपुत्रै क शुद्ध
स्तदेको विशिष्टः शिवः केवलोहं १
न वर्णन वर्णश्रिमाचार धर्मा-
न मे धारणा ध्यान योगादयोपि
अनात्माश्रयोहं समाध्यासहाना तदे० २”

विज्ञान-नौका' में 'ब्रह्म' के रूप की और 'सिद्धान्त-बिन्दु' में 'शिव' के रूप की विवेचना या चर्चा की गई है। ग्रंथ की लिपि स्पष्ट, किंतु प्राचीन है। लिपिकार ने ग्रंथ के अंत में लिपिकाल का कोई भी संकेत नहीं किया है। केवल “लिपितं ज्वालादत्त त्रिपाठिना पठनार्थं पडराजस्य राम राम राम” लिखा हुआ है। ग्रंथ की लिपि तथा कागज देखने से ज्ञात होता है कि ग्रंथ एक सो वर्षों से अधिक प्राचीन है।

यह ग्रंथ शेखपुरा (मुँगेर)—निवासी श्रीव्रजनन्दनप्रसाद सिंह के सौजन्य से प्राप्त किया।

४६] शिवताण्डवतत्र—प्रथकार—×। लिपिकार—×। अरस्या—अग्नी हाथ का बना मोग, देशी कागज । पृष्ठ न०—२ । प्र० पृ ५० लगभग—२२ । आकार—१"×३" । भाषा—हिंदी । लिपि—नगरी । रचनाकाल—×। लिपिकाल—आषाढ कृष्ण, पष्ठी, स० १८६३ वि , सोमवार ।

प्रारभ— श्री गणेशायनम श्री बटुक भैरवाय नम ॥
 मेरु पृष्ठे सुखा चीन देव देव त्रिलाचनम्
 शहर परिपत्रद्ध पार्वती परमेश्वरम्
 श्रीपार्वत्युवाच भगवत्सव धर्मन सर्वशास्त्रागमा दिपु
 आप्तुद्वारण मन्त्र सर्वसिद्धि प्रदत्तुणा २
 सर्वेषा चैव भूताना हितार्थम्वाञ्छितम्मया
 विगपनस्तु राज्ञा वै शाति पुष्प प्रसाधनम् ३
 अन्नयास करयास देहयाम समचितम्
 बहुमर्हसि देवेश ममहय विवर्द्धनम् ४
 इश्वरवाच शृणुष्वेवि महाम त्रमापदुद्वारहेतुकम्
 सय दुःख प्रशमन सवशानु विनाशनम् ५
 अपस्मरादि रागाणा ज्वरादीना निशेषत
 नाशन स्मृति भाश्रेण मन्त्रराजमिमम्प्रिये ६”

अन्त— ‘कण्ठिधर कण्ठिनाथो देव देवाधि नाथ
 द्विनिधर द्विनिनाथो विरवेताल नाथ
 निधि पति निधि नाथा योगीनी योग नाथा
 त्रयति बटुकनाथ विद्धिद साधकाना १
 अनील कमल चक्र रक्त वर्ण मौनी कृत
 कृतमनाग मुखारविद्य कथयण कीर्तिकमनीय
 कपालपाणि वन्दे महाबटुकनाथमभीष्टसिद्धिम् २’

विषय—तंत्र शास्त्र ।

टिप्पणी—यह ग्रंथ तंत्र शास्त्र का उल्लिखित श्री बटुकभैरवस्तोत्र है । इसमें ‘देविरहस्य’ नाम का भी ग्रंथ है । ग्रंथ अनुसंधेय है । ग्रंथ की लिपि अक्षरप्रकार और लगभग ११० वर्ष प्राचीन है । इस नाम का ग्रंथ तंत्र शास्त्र में यथासंभव नहीं है किन्तु एक स्थान पर लिखा है—‘इति श्री रत्नयानले तंत्रे विरचकारे आप्तुद्वारण भैरवस्तोत्र समाप्तम्’ इससे प्रतीत होता है कि यह रत्नयानलेनाथ का ही काश् भाग है । ग्रंथ में

लिपिकार का नाम-निर्देश भी नहीं है । यह ग्रन्थ शेखपुरा (मु गेर)-निवासी श्रीमज्जनन्दनप्रसाद मिहर्जी के सौजन्य से प्राप्त किया ।

[५०] पट्टपञ्चाशिका—प्रयकार—भीष्मदत्त । लिपिकार—X । अवस्था—अच्छी, प्राचीन हाथ से बना, देशी कागज । पृ०-सं०-१६ । प्र० पृ० पं० लगभग—१८ । आकार—११ $\frac{1}{4}$ " X ४ $\frac{1}{4}$ " । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—अगहन, शुक्ल, त्रयोदशी, सं० १८५८ वि०, सं० १७२३ शक शालिवाहन ।

प्रारम्भ—“टीका—श्री गणेशाय नम ॥ इत्तामय मात्वारो यच्छास्त्र प्रारभेध्वभिमत देवता नमस्कारं कुर्वन्ति श्रवन्त्याचार्य्य मगद्विज वराह मिहिराचार्य्यात्मज पृथुयशना नन्तिस्त ब्रह्म विद्या सुविस्तरैः कर्तुं कामः ॥ आटावेव भगवतः सूर्य्यस्प नमस्कारं स्व नामा रयापन० चार० ॥ प्रणि पत्येति ॥

(मूल) प्रणिपत्य राव सुन्दरी वारह मिहिरात्मजेन नय श सा० ॥ प्ररने कृतार्थ गहना परार्थ सुद्दिश्य पृथु यश मा० ॥१॥”

अन्त—“(मूल) शंशका. जायते द्रव्यं द्रेष्काणैस्तस्करादयः ॥ राशिभ्यः काल दिग्देशो व यो जातिभ्य लग्न पात् ॥५६॥ (टीका) एव शंशकाजायते द्रव्यं द्रेष्काणैलग्नत्रिभागैस्तस्करा माताशचौरासृता. ॥ यादृशी द्रेष्काणस्याकृतिस्तादृशीतस्करा-कृतिर्वक्त्र्या० ययामेपस्य प्रथमद्रेष्काण पुरुष कुरन रक्तेत्रश्चौर. ॥ द्वितीयः स्त्री लोहिताम्बरा० स्थूलोदरी० दग्गपदा० द्वितीयोनर. कलापिंगला गलशकटकमणीयकुजालौटहत्यादिति. मिथुनस्य प्रथमः स्त्री रूपान्विता रजस्वला० हीनप्रजा० भरण कार्येकृत क्रमात्, द्वितीये पुरुष उद्यानसंस्थ. धनुर्पाणि ॥ तृतीयेषु पुमान् रक्त्विभूपित पंडित. धनुर्पाणिः ॥ ऋकटस्य प्रथम पुरुषो वीरः हस्तीशरीरः शूकरमुख द्वितीय. स्त्री यौवनोपेता आरारापसंस्था० ॥ तृतीय. पुरुषः सपर्ववेष्टितो लौह सुवर्ण भरणवित ॥ सिंहस्य प्रथमः संकुलीहस्तः शालमलिमंस्यो गृद्धजम्बुकमुखः द्वितीय. पुरुष. धनुर्पाणि उद्यताग्रनास ॥ तृतीयोजन. कुंचितकेश. चतुर्हस्त ॥ कन्याया. प्रथमः पुरुष आशानवीयो रस्थाः ॥ द्वितीय. पुरुषो गृद्धतुल्यमुखो घटोन्वितः क्षुधितः तृपितश्च ॥ तृतीयः पुरुषो दीर्घमुखो धनुर्पाणि ॥ वृश्चिक प्रथम. स्त्रीभग्नानना स्थानच्युता. नर्पविदपादा मनोरमा. ॥ द्वितीय स्त्री भर्तृ कृते भुजंगावृत्त

शरीर । तृतीय पुरुष वनज्याया पृथुन चिबुका वन्य ॥ धनुषा
 प्रथम पुरुषाधनुर्हस्त ॥ द्वितीय स्त्री स्वप्ना गा लवर्णा ॥ तृतीय
 पुरुषा दण्डहस्त कुर्णी ॥ मकरस्य प्रथम पुरुषा लामश
 स्थूलदत्ता रौद्रवदना ॥ द्वितीय स्त्री श्यामा लकाराविता ॥ तृतीय
 पुरुषा दूर्ध्वमज्जा धनुर्बाणे ॥ कृमस्य प्रथम पुरुषा गृध्रवदन
 द्वय सकम्बल ॥ द्वितीय स्त्री रक्तम्बरा तृतीय पुरुष श्याम
 सरामर्दण्य ॥ मीनस्य प्रथम पुरुषा नैस्य द्वितीय स्त्री गौरा •
 तृतीययवनन पुरुष भीरुः सर्पवेष्टता • इति एतं बृहज्जातक •
 शुभमस्तु विद्विस्तु शुभ भूयान्नेत्रक पाठकया ॥ शुभ
 संवत् १८१८ शक शालवाहनस्य गताब्दा १७२३ ॥
 अग्रहणस्यासिते पक्षे त्रयोदश्या शुद्धवासरे • ॥ पञ्चाशिका
 समानेखि भीष्मदत्तेनपामता ॥ श्री रामाडवनुतराम् ।

विषय—ज्योतिष शास्त्र ।

टिप्पणी—यह ज्योतिष का प्राच्य ग्रन्थ पञ्चाशिका की टीका है । इसमें
 टीकाकार ने टीका की प्राचीन प्रणाली से काम लिया है और उसे
 बोधिल बना दिया है । इस उपयोगी टीका का अनुसंधान रूपान्त है ।
 ग्रन्थ का प्रारम्भ या अन्त में टीकाकार का नामालेख नहीं है ।
 ग्रन्थकार श्री बरह मिहिशाचार्य क पुत्र हैं । टीका की भाषा में
 भी यत्र-तत्र अशुद्धियाँ हैं । ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट और पुरानी है ।
 ग्रन्थ का लिपिकाल लगभग १५० वर्ष प्राचीन है । इस टीका
 के अनुसंधान से समब है, मूल ग्रन्थ और ज्योतिष शास्त्र क कुछ
 मतव्यों पर नवीन प्रकाश पड़े ।

यह ग्रन्थ ५० श्री गिरीराजत पाण्ड्य जी, प्रा० पण्डित लागों का
 रामपुर, महाराजगञ्ज (छपरा) क सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

[५१] ज्ञातकामरण्यम्—ग्रन्थकार—श्री देवचन्द्र त्रिराज । लिपिकार—श्री ५० महादेवजी ।
 अवस्था—अच्छी प्राचीन, देशी कागज । पृष्ठ-सं०—८५ । प्र
 पृ ५० लगभग—१० । आकार—१० $\frac{1}{8}$ " X २४ " । माप—
 संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल—X । लिपिकाल—माप,
 कृष्ण, दादरी, सं० १३१४ वि ; शक १७७७, शुद्धवार ।

प्रारम्भ—'श्री गणेशाय नमः श्री देवदाह हृदयारविदे पादार विदे वरदस्य हृदे
 मदीपि यस्य स्मरणेन सदा गीर्वाणधायमता समेत १
 उदारधी मरु भूषणे प्रमथ्य होरागम विष्णु राजम्
 श्री द्विराज इह त क्लिप्तार्थामार्यानिमलाक्षित रत्ने २'

अन्त—“कामं स्वामी प्रेम वृद्धस्त नस्यै वक्ष्ये देशा व स्थिते प्रात्य हपे
 पत्युश्चिन्ता नददृद्धोच नामी गुण्यस्ये स्यान्मन्मयाविक्रयमुच्चैः ३०
 गोदावरी तीर विराजमान पार्थीमिवान पुष्टभेदनचयत् सद्गोल
 विशामलकीर्तिभाजा मत्पूर्वजाना व सती स्वलं तत् ३१
 तत्रस्य दैवज्ञ वृनिह सुतुर्गजाननाराधनताभिधान
 श्री दु ढिराजो रचयावभूव होरागमेतुक्रममादरेरन ३२
 इति श्री दैवज्ञ दु ढिराज विरचिते जातका भरणे स्त्री जातकाध्याय
 शुभमस्तु सिद्धिरस्तु शुभभूयात् ”

विषय—ज्योतिष शास्त्र ।

टिप्पणी—१—यह ग्रंथ गोदावरीतीर-स्थित पायिबपुर पुरग्राम के पंडित
 श्री दु ढिराज शास्त्री द्वारा विरचित है । यह अद्यावधि अप्रकाशित
 है । इसमें जन्मपत्री-निर्माण विधि के साथ-साथ, जन्म
 से संबंधित ग्रहों और राशियों पर विचार करते हुए, उनके
 फलाफल का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण दिग्दर्शन कराया गया है । ग्रंथ
 की भाषा सरल और रचना हृद्य है । संपूर्ण ग्रंथ पद्य में है ।
 यदि इस ग्रंथ का अनुशीलन और प्रकाशन किया जाय, तो
 संभव है, ज्योतिष-संबंधी प्रकाशित अन्य ग्रंथों पर नवीन
 प्रकाश पड़े ।

२—ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन है । लिपिकार ने यत्र-तत्र
 ऐसी अशुद्धियों की हैं, जिनसे ग्रंथ की भाषा और विषय में दोष
 आ गये हैं । ग्रंथ पठनीय है ।

यह ग्रंथ प० श्रीगिरीशदत्त पाडेय जी, ग्राम-पंडित लोगों
 का रामपुर, महाराजगंज (छपरा) के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

परिशिष्ट

- ★ अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ
- ★★ ग्रन्थों और ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका
- ★★★ महत्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण



परिशिष्ट-१

ग्रन्थों की रचनाकारों की कृतियाँ

(ग्रन्थों के सामने की सरयाएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं)

क्र० सं०	ग्रन्थों का नाम	विषय	रचनाकाल	लिपिकाल	विशेष
१	आत्म प्रबोध (३६)	दर्शन			
२	गद्द बोध (२३-ग)	कबीर साहित्य		स० १६३१ वि०	
३	दुलसीमानोपनिषद् (३०)	धर्म			
४	भक्त-विवेक (६८)	भक्ति			
५	भौपाल बोध (७-ख)	दर्शन		१२७८ साल	
६	रमल (८६)	ज्योतिष		स० १६४१ वि०	
७	लक्ष्मी चरित्र (७१)	भक्ति		स० १६१६ वि०	
८	विचार सागर (३१)	दर्शन			
९	विष्णुपुराण (८०)	कृष्ण चरित्र		११३१ साल	
१०	सतनाम (७-क)	भक्ति		१२७८ साल	
११	सतनाम (१२)	दर्शन			
१२	समुद्रि (८८)	ज्योतिष		स० १६४३ वि०	
१३	सुमिरन दानलीला (२३-ख)	कबीर साहित्य			
१४	मूरनपुराण (६३)	भक्ति			
१५	सूर्य-कथा (७६)	भक्ति			
१६	स्वासा-गु जार (७)	योग			
१७	हनुमानचालीसा (६४)	स्तोत्र			
१८	छेत्रमिति और पहेलियाँ (७७)	गणित			

संस्कृत-ग्रन्थ

(ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई संस्कृत-पोथियों की क्रम-संख्याएँ हैं)

क्र० सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	रचनाकाल	तिथिकाल	विशेष
१.	प्रह्विलचक्र (३६)	ज्योतिष		१८७६ वि०	
२.	आद्यवर्षणी पुरुषसुमेधिनी (१६)	स्तोत्र			
३	गजेन्द्रस्तोत्र (२४)	स्तोत्र			
४	दत्तात्रय-तंत्र (३)	तंत्र			
५.	पद्मश्री (१०)	वर्णन			
६	व्याकरण और छंद (२३)	व्याकरण, छंद			
७	भागवततत्त्वमार-नटीपन (२५)	भक्ति			
८.	महाभारत और भागवत के मिश्रित गूढ (२७)	भक्ति			
९.	महाविद्या-स्तोत्र (३४)	स्तोत्र			
१०.	रणदीक्षा-प्रकार (२)	तंत्र			
११.	रामकृष्णकाव्य (३०)	काव्य			
१२.	रीति-शास्त्र और स्तोत्र (२६)	स्तोत्र			
१३	रुद्रयामल तंत्र (७)	तंत्र			
१४.	रुद्रयामल तंत्र (४७)	तंत्र			
१५	लघुजातक (४३)	ज्योतिष			
१६.	वाजसनेय-सहिता (६)	वैदिक शा०			
१७	विष्णुपञ्जरस्तोत्र (४६)	स्तोत्र			
१८.	शिवताण्डव-तंत्र (४६)	तंत्र			
१९	स्वल्पोपनिषद् (४५)	उपनिषद्			
२०	संध्याविधि (३५)	कर्मकारण			
२१.	सूत्रपाठ (११)	व्याकरण			
२२	सूर्योर्णव, कर्मविपाक, राशि-फल (४२)	ज्योतिष			

परिशिष्ट--२

ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

(ग्रन्थों क सामने की सरयाएँ विवरणिका म दी गई क्रम सरयाएँ है)

अप्रधान—११-ख ५०-छ, ५३-ग, ५७-घ	बेतिया राज श वर्णन - ६५
अमरसार—४५-ख, ५०-छ ६०-ग	भक्तमाल—६, १० ११
असु सागर—३७	भक्त विवेक—६८
अनिशनामा—५८	भक्ति हेतु—४५-ग, ५१-क, ५० घ
असृजन-मुख चपेटिका—८	६१-ख, ६५-ख
आत्मबोध—३६	भागवत भाषा—८५
कबीरभासुप्रकाश—३३	भौपाल बाध—७-ख
काकसार—७६	मूर्ति -लाइ—५५
गणेश गोष्ठी—५५-फ, ५४	यज्ञ समाधि—६०-घ
गणेश गोष्ठी—५-ख	युगल स्तोत्र—१४
गहन बाध—२३-ग	रमल—८६
गोरख गोष्ठी—२३-ख	रसिकप्रिया—८६, १
ग्यानदीपक—५७-ख, ६५-क	रामचरितमानस—१८, ४ ४२, ६६,
ग्यानमूल—५६	७४ ७५
ग्यानरतन— ७-ख	रामचंद्रिका—६८
चित्तौरीद्वार—२०	रामजन्म—१६-क
छुप्पय रामायण—८१	रामरतनगीता—१६-ख
तुलसीमालोपनिषद्— ०	रामायण—२, ३, ४, ५, ४१, ६६
दरिदासागर—४५-ग, ५७-क, ६०-ख,	राममाला—३४
६१-क, ६२-क	रामलीला—८७
दुगात्रे मत्तरगिणा—७४	लक्ष्मी-चारत्र—७१
नन्दकोप—६	विचार गुणावली—३८
नाममाला—६१	विचार सागर—३१
निर्भयज्ञान—४५-ज	विनय पत्रिका—३६
नौमाना—५७-ग, ६०	विरहमासा - ६०
प्रेममूल—५२-क, ६-क, ६५-घ	विवेकसागर—४८, ५१-ग
प्रेममूला - ४५-छ	विवेकसार—५२-घ
विहारी सतसई—७२	विष्णुपुराण—८२
बीजक - ८०	विज्ञानगाथा—७२ ६७
ब्रह्मचैतय—६४	वैद्यरत्नाखण्ड—१६
ब्रह्मविवेक—८५-घ, ५२-ग, ६०-ग, ६५ ग	राद—७७ ४४

शब्द श्ररजी—४६, ५०-क

शब्द कवित्त—५०-ग

शब्दावली—३२

शिवपुराणरत्न—२१

शिवसागर—२५

शवाना गुजार—८४

श्रीब्रह्मनिपण—२६

श्रीनद्भागवत (हरिनरित्र)—१

श्रीमद्भागवद्गीता—६७

श्रीरामार्णव—२८

सतनाम—७-क, १२

सतनाम त्रिहम—१५

समुद्रि (रमल)—८८

सहस्रानी—५६

सिद्धान्त-पटल—७८

सुमिरन दानलीला—२३-घ

सूरसागर—४३

सूरजपुराण—६३

सूर्य-श्या—७६

सूर्य-नाट्याम्प—६६

सामा गुजार—३०

सं-सु-शिवी—२६

हनुमान चालीसा—६४

हनुमानचोव—२३-क

दिलोपदेश—२२

चंद्रमाला श्री/ परलिनो—७७

ज्ञानमीपक—१०, ११-क, ६६, ६७-ग

ज्ञानप्रकाश—२३-क

ज्ञानमूत्र—५२-ग, ५३-ग

ज्ञानरत्न—३५, ६३, ४७-क

ज्ञानरोडे—६५-घ

ज्ञानसरोडे—६६

ज्ञानचोव—८३

—

संस्कृत-ग्रन्थ

(ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका की पृष्ठ-सं० १५१ से प्रारंभ संस्कृत-पोथियों की क्रम-संख्याएँ हैं)

अपरोक्षानुभूति—१८

अष्टा यायी—४०

अहिवलचन—३६

आत्मबोध—२१

आयर्वणी पुरपुत्रोविनी—१६

गजेन्द्रस्तोत्र—२४

गीतगोविन्द—४, २०, ३८

जातकाभरण—५१

धातुपाठ—१४, १५

नलोपाख्यान—३३

नैपवचरितटीका—२६

चदशी—१०

व्याकरण और छंद—२३

भागवत तरवारनदीपन—२५

भगभारत प्रार भागवत के मिश्रित गज—२७

नहाविद्या स्तोत्र—३४

सुहृत्त चिन्तामणि—१

रत्नमालिका—२८

रणदोला-प्रकार—२

राजनीति-शास्त्रशतक—६

रामकृष्णकाव्य—३०

रुद्रयामल-तत्र—७, ४७

रीति-शास्त्र और स्तोत्र—२६

लघुजातक—४३

वाजसनेय-महिता—६

वाल्मीकिरामायण—४८

विष्णुपत्तनरत्न—४८
 विज्ञान-नौका, विज्ञान-विट्—६८
 राज्यशास्त्र—१६
 प्रिवतागन्व-तन—६६
 शीदतात्रय-सत्र—३
 धामद्वयवद्गीता—१३, १७
 धामद्वयवद्भक्तिरत्नावली—२०
 पद्मचरिका—२०

सध्यात्रिनि— ५
 स्तम्भोपनिषद्—६८
 सारस्वत प्रक्रिया—५, १०, १७
 सिद्धात चन्द्रिका—२१, ३०, २६
 मूनपाठ—११
 मूयारव कर्मविपाक, राशिफल—४३
 हनुमन्कवच—६१

**
 **

ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका

(ग्रन्थकारों के सामने की सरपाएँ निवरणिका में दी गइ क्रम-सरपाएँ हैं)

श्रवतार मिश्र—६१
 श्रवथ किरार वमा—२०
 श्रानद कवि—७८
 कबीरदास—२३-क, २७, ३०, ८ ८३ ८४
 कुजनदास—२१
 कृपाराम—८५
 कृष्ण (कारख) दास— ८
 केशवदास—७, ८ ६७ ६८, १०
 केशवानन्द गिरि—३५
 गुरुनानक साहब—१५
 गान्धारी तुमसीदास—२ ३ ६ ५, १८,
 ३६ ४०, ६१ ६०, ६१, ७४ ७८, ६६
 चरनदास—६६
 भामदास—२८
 घमदास—२, ४, २३-उ, २६, २६ ३७, ६०
 नगनारायण सिंह—२५
 नन्ददास—६
 नामा जी—१
 नामा स्वामी—६, ११
 पदुमनदास—२०
 परमानन्द—६०
 परमानन्ददास—३३
 विगीताल—७२
 मुवाल—६७

रामानन्द—७८
 रामप्रसाद गुक्त—१६
 रामाशमाचाय—८
 लालचदास १, ८०
 शिवनाथदास—२५
 श्रीनन्दान कवि—१६-अ
 धामर—१४
 श्री सत मूयदास जी—१६-क
 सतकवि दरिया साहब—१७ ३५, ४४ ४५ क
 ६५-ख, ४५-ग, ४५-घ, ४५-ङ,
 ६५-च, ४५-ज, ४५-ट, ४६ ४७-क,
 ४७-ख ४८, ४६ ५० क, ५ -ख,
 ५०-ग, ५१-क, ५१-ख, ५१-ग,
 ५०-क, ५०-ख, ५०-ग, ५०-घ
 ५०-८, ५०-च ५०-छ, ५०-क,
 ५३-ख ५३-ग, ५८, ५५, ५६, ५७-क,
 ५७-ख, ५७-ग, ५७-घ ५८, ५६,
 ६०-क, ६०-ख, ६ -ग ६०-घ,
 ६१-क, ६१-ख, ६०-क, ६०-ख,
 ६०-ग, ३ ६४, ६५-क, ६५-ग
 ६५-ग, ५-घ

मूरदास—४२
 हरिदास—८७

**
 **

संस्कृत-ग्रन्थकार

(ग्रन्थकारों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई
संस्कृत-पौथियों की क्रम-संख्याएँ हैं)

अनुभूतिस्वप्नपाचार्य—५, १२, ३५

कदागभायनाचार्य—२८

कालिकवि—३३

चाणक्य—६

जयदेव कवि—४, २०, ३८

दैवराम—१

दैवज हुडिराज—५१

पाणिनिमुनि—८०

भक्तृ हृदि—१६

भीष्मदत्त—५०

रामगद्रचिन्तामणि—८१

रामाश्रमाचार्य—३१, ३२, ३६

विष्णुपुरी—२२

याज्ञिक—४८

वेदव्यास—१३, १५

जंकराचार्य—१८, २१, ४८

हृदि कवि—२६

परिशिष्ट-३

महत्त्वपूर्ण हस्तियों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

क्र.सं.	प्रयुक्त	प्रथम नाम	प्रगत प्रथमों के लिपिकाल एवं खोज विवरणिकान्तगत प्रथम संख्या		विशेष		
			लिपिकाल	खोज सं. वि. प्र.		प्र. सं.	
१	आनन्दकवि*	कावतार	१७३४ ई० १७४८ ई० १७६८ ई० १७८१ ई० १८४६ ई० १८५३ ई० १८८४ ई० १९१६ ई०	ना० प्र. सं. का " ; " ; " ; " ; " ; " ; " ;	१६३ १६६ १६१७ १६२३ १६१७ १६२३ १६२३ १६२३	५ ८ ६७ १३ बी, ई, जी, एच्, आर्, ए।	प्रयुक्त की अन्य रचनाओं— कोर मंजरी, काकवितास और आनन्दमञ्जरीसार— की चारह प्रतियाँ नागरी प्रचारिणी सभा (काशी), को राज में मिली हैं। इस प्रथम की ३८ प्रतियाँ उक्त सभा को खोज में प्राप्त हुई हैं।

क्र.सं.	अवकाश	अवकाश-नाम	विधिप्रकार	पाठ ग्रन्थों के विधिकाल एवं नोट्स-विषयान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या	निशेष
				विधिप्रकार	विधिप्रकार
				गानं वि० सं०	सं० सं०
१.	आनन्दकवि	कोरतार			
				१८१७ ई०	परिपत्र-समवाय में कोर
				१८३७ ई०	के पाठ तीन ग्रन्थ सटीक
				१८६६ ई०	हैं। कापी-नामही प्रचारिणी
				१८७५ ई०	सभा को सम्मन्वय के गठानने
				१८६८ ई०	ग्रन्थों की प्रकृतियों की प्रतिस
				१९०१ ई०	सोप म लिखी है। दे०—
				१९०८ ई०	'रखनिविपिन्दीपुलको का
				१८८३ वि०	मजिद विरल', जला भाग
				१८८५ वि०	सं० सं० १८, १८सिद्धि
२.	कबीरदास	१ शम्भुदासी		१८०६ वि०	विन्दीप्रभो का चौदहवों
				गानं प० सं०, गानं १६०६८	पंचमिक विर १, प०-सं०
				" १६०६-२१	२६ 'धर्मपत्र'ों के पारिक
				वि० सं० भा० प० १ ग०	विर ५, प० सं० ४३१
				गानं प० सं०, गानं १६००-२३	'शुभाशुभ' नामक ग्रन्थ
				" १६२३-२७	'शम्भुदास' नाम से भी
				" १६२६-३१	लिखता है।
				वि० सं० भा० प० १ ग०	
				गानं प० सं०, गानं १६०६-११	
				१६३३ ई०	
				वि० सं० भा० प० १ ग०	

३	दुताराम	भागवत भाषा	१६५ रि	मां प्र स०, का १६५ वि रा० भा० प० १ स	६ ८५
४	केशवदास	१ शिक्षामतीता	१८६६ १८६१	मां प्र० स, का० १६ " " १६०५ " " १६२ २२ " " १६१३ २५ " " १६२६ २८ " " १६२६ ३१	५५ १२७ ८६ सी, २ ७ २३२ प, ख , १६२ जी, ७३, ६७
		२ रगिरमिया	१८५६ वि० १८१५ वि०	वि० रा भा० प १ स ना प्र स, का० १६०३ " " १६५ " " १६१७ १६ " " १६२ २२ " " १६२३ २५ " " १६२६ २८	८६ १२८ ६६ सी, ८६ की, २ ७ २३३ एफ, जी, ८६, १०
		३ रामचंद्रिका	१७८५ वि १६३१ वि	वि रा० भा० प १ स ना० प्र० स, का १६०२ " " १६३ " " १६२३ २५ " " १६२६ २८	२५२ २१ २ ७ २३३ द,
५	गोरखानी जुलमीदान	१ रामचरितमानस	१७६३ वि० १६५७	वि रा भा० प १ स ना प्र स का १६०	६८ १

प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल एवं खोज-विवरणिकावन्तर्गत ग्रन्थ-संख्या विशेष

ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	लिपिकाल	ना० प० सं०, का०	खो० वि० प्र०	अ० सं०
५. गोस्वामी तुलसीदास	१ रामचरितमानस	१६०४	ना० प० सं०, का०	१६०१	२२
		१६७४	"	१६०१	२८
		१७६७	"	१६०३	१६७, १६८, १३६
		१८१८	"	१६०४	१४४
		१६०४	"	१६२०-२२	१६८ ए०
			"	१६२३-२५	४३२
			"	१६२६-२८	४८२ ए, बी, सी, डी, ई, एफ्, जे, के।
			"		एन्, आर्द, जे, सी, जी, के।
			"		३२५ ए, बी, सी, डी, ई, एफ्, जी, के, एन्, आर्द, जे, एल, एम्, एस्, पी, क्यू, वी, डब्ल्यू, टी, यू, वी, डब्ल्यू, एम्स, आर्द, जेन्, ३२५ ए२, बी२, सी२.
			१८३४ वि०	१६२६-३१	

गोदराली मुन्गीदास १ रामचरितमानस

१६११ वि
 १८७८ वि०
 १८७६ वि०
 १७६० वि०
 १८७६ वि०
 १७६ वि
 १८८२ वि
 १८८७ वि०
 १६ ४ वि
 १६ ६ वि०
 १८६२ वि
 १६ २ वि
 १७६० वि०
 १८७२ वि०
 १८८८ वि०
 १६३२ वि०
 १६२२ वि०
 १८४७ वि
 १८१२ वि०

वि० रा भा० प० १ ख०
 " " १
 " " १

डी२, ६२, ए५२, जी२,
 ए५२, आ६२, जै२, के२,
 ए५२, ए५२, ए५२, ओ२ ।

२
 ३
 ६

१	परमराज	ज्ञान सरोवर	१६१८ वि	ना प्र० स० का	१६२० २२ १६२३ २५ १६२६ २८ १६२९ ३१	२९ ७४ ७८ के ६५	उल्लू एक्स, भारें, जेड।	२६ बी
२	नाभादास	भक्तमाल	१७१२	वि रा० भा प	१ स०	६६		
३	पदुमनदास	हितोपदेश	१८७४ वि	ना प्र स, का	१६ ६ ११ १६१७ १६ १६२२ २५	२११ ११७ २८६		
४	परमानंद दास	सचीरमानुसंकाश	१६१६ वि	वि रा० भा प	१ स०	६		
			{ १८७७ इ०, १६१४ वि			१, ११		
			१८७४ वि	ना० प्र स०, का०	१६२६ २८	३३६		
			१६१६ वि	वि रा० भा प	१ स०	२२		
				ना प्र० स, का	१६२६ ३१	२६२		

२ का०—स १७६६ =
१७०६ ई (ना प्र स, का०)
२ का०—स १७२८ (वि०
रा० भा० प, १ स०)
प्रथम की श्रय—
काव्य मजरी, भावा भूषण—
दो खनाए मिली है।
२० का—स १६२५ =
१८७८ ई (ना प्र० स०, का०),

क्र.सं.	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	ग्राम स्थलों के विधिकार एवं मोचन-विपरिणितानामंत प्रत्यक्ष-व्यवस्था	विशेष
			विधिकार	मोचन-विपरिणितानामंत प्रत्यक्ष-व्यवस्था
६.	परमार्थदेवराज	कबीरसाधुवक्तव्य	१६३६ वि० = वि० म० भा० प० १ म० १३	२० म०-५० १६३५ (वि०) २०-५०० प०, २०० १ ।
१०.	विहारीलाल	विपरी साधुदे	१३१८ प० प० म०, म० १३ १ १३८० " " १६०१ ४२,७५ १३६६, १३६८ " " १३ ७ १३८३ " " १६३३ १३३, १३३५ " " १६०० ३७ " " १६०० ६१ " " १६०० ३० " " १६००-३३ ३० मी. " " १६३३ ३२ म०, मो० १६६ " " १६६३ ३० ६६ म०, मो० १६६ " " १६६३ ३१ १ ० ५, १६६ " " वि० म० भा० प०, १ म० ३०	
१२.	तानाजी	हरिवरिचरित	वि० प० म०, म० १६-३-३५ " " १६३३-३६ ३६३ प०, मी.	१६३३-३६ ३६३ प०- विपरिणितानामंत प्रत्यक्ष-व्यवस्था

शालाचरित्र	शालाचरित्र	वि	रा	भा०	प	१	रा०	४४५
१ शूद्र	१८५८ वि०	ना	प्र०	ग	का	प	१८०६ ११	४४५
२ शानदीपक	१८५५ वि	वि	रा	भा	प	१	रा	४४५, ४६, ४० ४० (ग)
३ दरियासागर	१८५६ फ	ना	प्र	ग	, रा	१	रा	४४५ आदि
४ भक्तिहेतु	१८५६ वि०	वि	रा	भा०	प०	१	रा	४४५ (क) ४६, ४०, ४७ (स) ६८ (क)
५ शान सरादे	१८५६ फ०	ना	प्र	स	, का	प	१	४४५ इ
६ प्रेममूला	१८५६ वि	ना	प्र	स	, का	प०	१	४४५ (स), ४७ (क), ६ (ग), ६१ (क), ६२ (क)
७ ब्रह्म विवेक	१८५६ फ०	वि	रा०	भा०	प०	१	रा०	४४५ सी
८ अमरसार	१८५६ फ	ना	प्र	ग	, का	प	१	४४५ (ग), ४१ (क) ४२ (ग), ६१ (स), ६४ (ग)
	१८५६ वि०	वि	रा	भा	प	१	रा	४४५ एफ
	१८५६ फ	ना	प्र	ग	, का	प०	१	४४५ (घ)
	१८५६ वि०	वि	रा	भा	प	१	रा	४४५ (क), ४२ (ग), ६ (क) ६४ (घ)
	१८५६ फ	ना	प्र	ग	, रा	१	रा	४४५ सी
	१८५६ वि	वि	रा	भा	प	१	रा	४४५ (स)
	१८५६ वि०	ना	प्र	ग	, का	प०	१	४४५ (ग), ६२ (ग)
	१८५६ फ	वि	रा	भा	प	१	रा	६४ (ग)
	१८५६ वि०	ना	प्र	ग	, का	प०	१	४४५ ए

पाण्डु ग्रन्थों के विधिकृत एवं मौखिक विवरणिकात्मक संक्षेपसूची

पृष्ठ

प्रणेतार	ग्रन्थ नाम	विवरण	पानों की संख्या	पृष्ठ संख्या
१२. नंद वसिष्ठायाम्	६ यमस्मृत्यार	१०६७ पं.	१०० पानों का १ भाग	६८ (अ)
	६ जामल्लन	१२८६ पं.	"	५० (क), ६० (ख)
		१८६६ पं.	नानु सं. १०, को. ११-१३-११	३० एच
		१२७८ पं.	६० पानों का १ भाग	६० (ग), ६२ (घ)
	१० संयोगार्थी	१०३४ पं.	"	५३
		१२१० पं.	"	३५
		१६५१ पं.	नानु सं. १०, को. १६, १७, ११	६६ गी,
		१८६८ पं.	६० पानों का १ भाग	६० (घ)
	११ अर्थात्तानाम्	१८६८ पं.	"	१३ (१), २४
		१८६० पं.	नानु सं. १०, को. १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२	८८
१८६३ पं.		"	"	
१८६० पं.		६० पानों का १ भाग	६०	
१८६३ पं.		नानु सं. १०, को. १६, १७	६३	
१८६६ पं.		"	३४ (अ), ३४ (ब)	
१३. मूर्त्तयाम्	१८६६ पं.	"	३४	
	१८६६ पं.	"	३४ (अ), ३४ (ब)	
	१८६६ पं.	"	३४	
	१८६६ पं.	"	३४	
	१८६६ पं.	"	३४	
	१८६६ पं.	"	३४	

इन पाण्डुग्रंथों का यह संक्षेपकृतिका
 श्री अश्वमेध-प्रयोगशाळा, पणजी,
 म.प्र., अहमदनगर, अहमदनगर,
 महाराष्ट्र, अहमदनगर ये
 संस्थानों में प्रकाशित की गई है।
 १३

संस्कृत

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज विवरणिकाओं में उनका उल्लेख का विवरण

क्र.सं.	प्रकार	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थों के लिपिकाल एवं खोज विवरणिकांतगत प्रथम सर्वा		विवरण
			लिपिकाल	खोज विवरणिकांतगत प्रथम सर्वा	
१	अनुभूतिस्वरूपार्थ	सारस्वतप्रक्रिया	१८६३ वि०	श्री शा.भ.ज.प्र.	प्र १४१
			१७७६ वि०	"	२
			१८३८ वि०	"	३
			१८४० वि०	"	४
				"	५
				"	७
			१८७३ वि०	"	८
				"	९

दसक लिपिकार न महाराजा
दौलतराय सिंधिया का उल्लेख
किया है।

पन्नाङ्क	ग्रन्थ नाम	लिपिकाल	पाठ ग्रन्थों के लिपिकाल एव नोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ सख्या	निर्देश	
			गो० वि० ग्र०	ग्र० सं०	
अनुश्रुतिरूपचार्थ	१ सारस्वतप्रक्रिया	१६६२ वि०	आ० शा० भ० ज० ग्र०	२	बालबोधिनी टीकासहित, टी० का० प० मिश्र, चागव कम्पउ लिपि में लिखित ।
जगदीश	गीतगोविन्द	१६२७ वि०	क० ग्र० ता० ग्र०	१०१, ६६८	
		शक-सं० १७०५	जै० सि० भ० आ० सू०	छ० गो० ५१०, ५१८, ५४०	
		शक-सं० १७६६	वि० रा० भा० प०	१ सं० (सं०) १२, ३७, ५	
		= १२५५ फ०	वि० रि० सो० सा० डि० कै० (मि० II)	३६ ए, वी, सी, डी	
		१२२२ फ०	"	३६ ई०	
			"	३६ एफ्	
			"	३६ जी, एच्	
			"	३६ आई, जे, के, एल्	
			नी० सी० पट०	आई, पी १५३	
			पट०	११	
	पी०	३१			
	पट० III	पी० ३३			
	सी० एस्० सी० सं० ५	पी० २०-२१ ए, सी			
	पट० आई०	पी० १४			
	एच्० पी० एस० खं० I	पी० १६			
		१६०५			

